



ॐ ओम् ॐ

# कुरआन्

[ मूल और भाषानुवाद ]

[ जिसमें अक्षराफ, अन्पाडल्, तौबा, यूनुस, हूद, यूसुफ, रऊद—  
और इत्राहीम ८ सूरेतें हैं ]

—:०:—

अनुवादक तथा सम्पादक—

मुहम्मद मीसांसा—मुहम्मद साहब का विचित्र जीवन,

देवदूत दर्पण ( जव्त ) आदि अनेक पुस्तकों के

लेखक, कुल्लियात आर्य मुसाफिर के

हिन्दी अनुवादक—

श्री गेमशरण जी प्रणत,

आर्य-प्रचारक ।



प्रथम  
संस्करण

सर्वाधिकार सुरक्षित

Publishers:—

The Manager

Prem Pustakalaya Agra.

## द्रष्टव्य !

कुर्द्यान् का का अनुवाद

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी हरद्वारी के

आदेशानुसार माननीय महात्मा गान्धी के विचारों से प्रेरित होकर हिन्दू जनता को कुर्द्यान् की शिक्षा का परिचय कराने मात्रके उद्देश्य से तय्यार किया गया है।

Printer:—

J. S. Printing Press

Agra.

# समर्पण



पतितोद्धार प्रेमी, शुद्धि और संगठन के सहायक  
और हिन्दू जाति के सच्चे हितैषी, दानवीर  
श्री सेठ जुगलकिशोरजी विडला  
के कर कमलों में यह पुस्तक सादर  
समर्पित की जाती है। आशा है  
कि वह इस भेट को  
अवश्य स्वीकार  
करेंगे।

प्रेमशरणा आर्य,

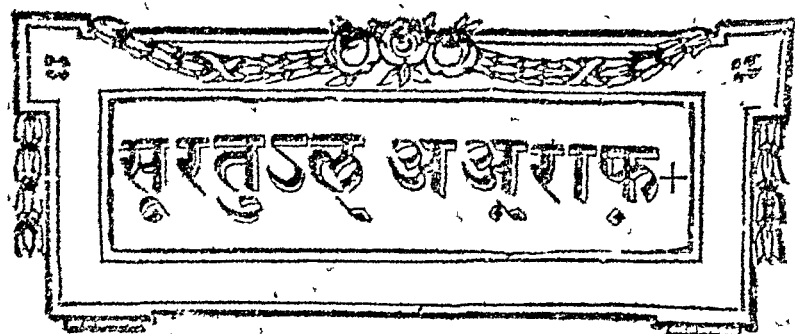
## नम्र निवेदन ।

कुर्बान् का चतुर्थ खण्ड अपने सहृदय पाठकों के संमुख प्रस्तुत करते हुए, बिलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी होना अति आवश्यक प्रतीत होता है। और इसीलिये कुछ शब्द नम्र निवेदन के रूप में यहां प्रस्तुत किये जाते हैं, जिससे हमारी बिलम्ब विषयक विवशता पाठकों पर विदित होजावे।

कुर्बान् का सारा अनुवाद एक साथ छप जाता, परन्तु धन के अभाव से ऐसा नहीं हो सका और आगरे के जिस प्रेस को कुर्बान् के लिये पेशांगी रुपया दिया था वह अभी तक न रुपय वापिस करता है और न पुस्तक ही छापता है। इसके अनिरीक "देवदूत दर्पण" पुस्तक के जन्म हो जाने से भी भारी क्षति उठानी पड़ी; अन्यथा वह पुस्तक इतनी अच्छी थी कि उसकी अभी तक मांग बनी हुई है। सच पूछो तो "देवदूत दर्पण" विचित्र जीवन से भी प्रमाण पूर्ण पुस्तक थी, क्योंकि विचित्र जीवन में तो केवल मुहम्मद साहब का आलोचनात्मक जीवन दिखाया गया था परन्तु देवदूत दर्पण में ईसाई और मुसलमानों के सभी मान्य पैगम्बरों की कलाई खोलकर रख दी गई थी और वह भी ऐसे सभ्य और प्रमाणिक ढंग से कि यदि धन होता और हमारी ओर से तनिक भी उद्योग किया जाता तो इसकी जन्ती रह हो सकती थी। वह तो दूर अब भी धन के अभाव से हमारे पास बहुतसा उपयोगी साहित्य रुका हुआ है। वह शनैः शनैः अपने प्रेमियों की कृपा और सहायता से ही प्रकाशित किया जा सकता है। आशा है हमारे आर्य साहित्यप्रेमी उदार सज्जन इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे।

विनीत-प्रेमशरण आर्य,

अनुवादक ।



## वलड् अन्नना-पारा, शेषांश ।

[ मं० २, पारा ८, सू० १।१० ]

( १ ) [ अलिफ लाश्म्वीरैम् स्वाद् ]

नोट—इन अक्षरों के अर्थों के सम्बन्ध में मननशील मुसलमानों की धन्तव्य है कि इनका अर्थ केवल अल्लाह ही जानता है। फिर भी, कुछ मनुष्यों की कल्पना है कि अलिफ अल्लाह के लिये, लाम जिब्राईल के लिये और नीम् मुहम्मद के लिये आते हैं \* और कुछ लोग इन अक्षरों को इस अर्थी वाक्य के धादि अक्षर बतलाते हैं—“अमरा लि मुहम्मद सदाक” जिसका अर्थ है, “इस प्रकार सच्चे मुहम्मद ने मुझ से कहा।”

+ अअराफ का अर्थ है, बहिर्गत और दोजल के नव्य की भेदक भित्ति। मुहम्मद साहब की पैगम्बरी की सातवीं साल से उनकी हजरत के समय तक आनी मन् ६१६ ई० से ६२२ ई० तक के दमियान में यह आयत सक्के में उतरी है इसमें २४ लूख और २०५ आयतें हैं।

कत फखीर इतिक्रान् अहमदी प्रेस से प्रभावित के पृ० ४४६ पंक्ति २ में जलालुद्दीन सेवनी लिखते हैं—“सूखे अअराफ पा० ८, सू० २ का प्रारम्भ वर्तमान कुरआन में ‘अलिफ लाश्म्वीरैम् स्वाद्’ ले होता है। यह वास्तव में केवल अलिफ लाश्म्वीरैम् तीन अक्षर थे उनमें एक अक्षर ‘स्वाद’ इस लिये बड़ा दिया गया है कि इसमें नवियों के क्लिप्तों का वर्णन है।

(२) कितानुन् उन्जिला इत्युका फलाऽ यहुन् फी  
सद्रिका हर्जुम्मिन्हु लि तुन्जिरा दिही व डिक्का लिल-  
मुअमिनीन् ॥

( हे पैगम्बर ! यह ) पुस्तक तुम पर उतानी गई है । शान्त  
इससे तेरा हृदय संकुचित न हो, जिस से कि तु इसके द्वारा  
(काफ़िरों को अल्ला के आतङ्क का) सूचना दे; और डिक्का-  
लियों ( ईमान वालों ) को शिक्षा मिले ।

( ३ ) इत्तविज्जऽ माश्उन्जिला इत्तबुह्निर्गव्विहुम्  
व लाऽ तत्तविज्जऽ मिन्दुनिहीरे अउलियाश्शा, कुलीलऽ-  
म्माऽ तज्जकरुन् ॥

जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से उतना है, उतनी  
पर चलो; और उसके प्रतिरिक्त शान्त मित्रों के पाँछे मत  
चलो; परन्तु तुम कुछ काम ध्यान देते हो !

( ४ ) व कम्मिन् कर्म्मिन् अहलवनाहाऽ फ  
जाश्अहाऽ वअसुनाऽ वयाऽतज्ज अउहुम् काश्शुन् ॥

और, हमने कितने ( हाँ ) नगरों का नष्ट कर दिया ! फिर  
रात को या दौपहर को, जब कि वे (नगर-निवासी ) निद्रा में  
निमग्न थे, उन पर हमारा प्रकोप पहुँचा ।

( ५ ) फ माऽकाऽना दअवाहुम् इज्ज जाश्अहुम्  
वअसुनाश् इत्तलाश् अन् काऽलूश् इन्नाऽ कुन्नाऽ  
जालिमीन् ॥

सूर्ये अश्रु राफः—म०; २; पारा; ८ र०; ३१ । ५१३

वस, जिस समय, उन पर हमारा प्रकोप हुआ तो उनका यही एक आर्त्तनाद था, कि वे बोल उठे, “वस्तुतः हम ही अत्याचारी हैं ।”

( ६ ) फ लनस् अलन्नऽल्लजीना उर्सिला इत्यहिम्  
व लनस् अलन्नऽल् मुर्सलीन् ॥

फिर जिन लोगों की श्रौर पैगम्बर प्रेषित किये गये थे, उनसे हम ( क़यामत के दिन ) अवश्य प्रश्न करेंगे, और स्वयं पैगम्बरों से भी अवश्य पूछेंगे ।

( ७ ) फ लनक़स्सुन्ना अत्यहिम् विइल्मिब्ब माऽ  
कुन्नाऽ गारइवीन् ॥

फिर, हम उनको अपने ज्ञान से वृत्तान्त सुनावेंगे; और हम कहीं उनसे अनुपस्थित न थे ।

( ८ ) वऽल् वज़्नु यउमा इज़ि (नि) ऽल् हक्कु,  
फ़मन् सकुन्ता मवाऽज़ीनुहू फ उलारेका हुमुऽल्  
मुफ़्लहून् ॥

और ( कर्मों की ) तोल, उस दिन, ठीक न्यायतः—होगी ।  
फिर जिनके ( शुभ ) कर्मों का बोझ भारी होगा, वही लोग  
नेक होंगे ।

( ९ ) व मन् ख़फ़त् मवाऽज़ीनुहू फ उलारेइकऽ  
ल्लजीना ख़सिरूश् अन्फ़ुसहुम् विमा काऽऽन् वि  
आयातिना यज़्लमून् ॥



और, जो तोल में हलके हैं, उन्हीं ने अपने जीवन (व्यर्थ) नष्ट किये; क्योंकि उन्हीं ने हमारी आयतों पर अत्याचार किया।

( १० ) व लकड़ मकनाकुम् फिऽल् अजि व  
जअल्नाऽ लकुम् फीहाऽ मआऽयिशा, कलीलऽम्माऽ  
तश्कुरुन् ॥

और, हमने तुमको पृथिवी में स्थान दिया; और उसी में तुम्हारी जीविका स्थापित करदी; फिर भी तुम बहुत ही कम धन्यवाद देते हो !

[ मंजिल २, पारा ८, सूकत्र २ । १५ ]

(१) व लकड़ खलकनाकुम् सुम्मा सव्वर्नाकुम् सुम्मा  
कुन्नाऽ लिल्पलाऽइकतिऽस्जुदूऽ लि आदमा फ सजदूऽ  
इबलाऽ इब्लीस; लम् यकुम्मिन—स्साजिदीन् ॥

और, हमने तुम्हें पैदा किया; फिर सूरत दी; फिर फिर-  
शतों से कहा, “आदम के आगे शिर झुकाओ”—तो सिवाय  
शैतान के—जो प्रणाम करने वालों में नहीं था—सबने (अज्ञा-  
से ) शिर झुकाया ।

(२) काऽला माऽ मनअका अल्ला तस्जुदा इज्  
अमर्तुका, काऽला अना खयस्मिन्हु खलकतनी  
मिन्नाऽरिव्व खलकतहू मिन्तीन् ॥

( उल्लेख ) कदा—“तुम को क्या प्रतिबन्ध था कि जब

मैंने आकाश दी, (तूने) सिजदा न किया, अर्थात् सिर न झुकाया ? वह बोला—“मैं इससे श्रेष्ठ हूँ; मुझ को तूने अग्नि से रचा है; और उसको मिट्टी से बनाया है ।”

(३) काऽला फऽह वित् मिन्हा फऽमाऽ यकूनु लका अन्ततकन्वरा फीहा फऽख् ज् इन्नका मिन-स्सागिरीन् ॥

(अल्ला ने ) कहा—“तू उतर यहां से, तुझ को (ऐसा अवसर ) न मिलेगा कि तू यहां अभिमान करे । अतः निकल; तू पामर है ।”

(४) काऽला अन्जिनी३ इला यउयि युवअसू न् ॥

(उसने) कहा—“मुझे ( उस समय तक ) अवसर दे (जब तक) कि लोग ( कयामत में ) जी उठें ।”

(५) काऽला इन्नका मिनऽल् मुन्जरीन् ॥

(अल्लाह ने ) आकाश दी—“तुझ को छुट्टी है ।”

[६] काऽला फऽ विमा३ अग्वयतनी ल अकूउदन्ना लहुम् सिराऽतकऽल् मुस्तकीम् ॥

उसने कहा—“फिर जैसे तूने मुझे कुमार्गी बनाया है (वैसे ही उन्हें कुमार्गी बनाने के लिए ) मैं उनकी प्रतीक्षा में तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा ।”

[७] सुम्मा ल आतियन्नहुम्मिन् वय्नि अय्दीहिम् व मिन खल्फिहिम् व अन् अय्मानिहिम् व अन् शमा३ इ लिहिम् ; वलाऽ तजिदु अक्सर हुम् शाकिरीन् ॥

फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिने से और बाँये से आऊँगा; और तुझे उन में से प्रायः कोई कृतघ्न न मिलेगा ।

[ ८ ] काऽलऽखुज् मिन्हाऽ मजूजमऽम्मद्दुहुरऽन्,  
लमन् तविअका मिन्हुम् ल अम्लअना जहन्मा  
मिन्कुम् अज्मईन् ॥

(अल्लाह ने) कहा—“निकल यहाँ से, धूर्त ! दूर भाग ! !  
उन में जो कोई तेरे अनुयायी होंगे, मैं (उन्हें और) तुम्हें,  
सब को, एकत्रित करके दोड़ाख को भरूँगा ।

[ ९ ] व या ३ आदमुऽस्कुन् अन्ता व ज़जुकऽल्  
जन्नता फकुलाऽ मिन् हयसु शिअ्तुमाऽ वला ऽ तक़वाऽ  
हाज़िहि-शशजरता फ़ तकूनाऽ मिन्-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और, हे आदम ! तू और तेरी स्त्री (दोनों) इस बहिश्त  
में बसो; और दोनों जहाँ से चाहो, खाओ । एवं उस वृक्ष के  
के पान न जाओ; अन्यथा तुम पापी हो जाओगे ।

[ १० ] फ़ वस्वसा लहुमऽ-शय्तानु लि युब्दिया  
लहुमाऽ माऽवूरिया अन्हुमाऽ मिन्सर् आतिहिमाऽ व  
काऽला माऽ नहाकुमाऽ रब्बुकुमाऽ अन् हाज़िहि-शशजरति  
इल्ला ऽ अन्तकूनाऽ मलकयूनि अर्त्तकूना मिन्ऽल्  
ख़ालिदीन् ॥

फिर उनको शैतान ने बंधका दिया; और जो (अंग उनका) गुप्त था, उन पर प्रगट कर दिया; और कहा—“तुम्हारे पालनकर्त्ता ने इस वृक्षके (ऊपर से) खाने को इसलिए वर्जित किया है कि ऐसा न हो कि तुम फरिश्ते बन जाओ अथवा अमर हो जाओ।

[११] व काऽ सम हुमा३ इन्नी लकुमाऽ लमिनः—आसि, हीन्— ॥

और उनके सामने शपथ खाकर कहा कि मैं तुम्हारा शुभचिन्तक हूँ।

[१२] फदल्लाहुमाऽ वि गुरुरिन् फलम्माऽ जाऽकऽ—रशजरता वदत् लहुमाऽ सड्त्रातु हुमा व तफिकाऽ यक्सफानि अल्यहिमा सिव्वरकिस्लू जन्नति, व नाऽदाहुमाऽ रव्वु हुमा३ अलम् अन्हकुमाऽ अन्तिल् कुमऽ—रशजरति व अकुल्लकुमा३ इन्न-रशय्ताना लकुमाऽ अहुवुम्मुवीन् ।

फिर उनका अपने फरेव में फांस लिया; और जब उन दोनों ने उस वृक्ष से खाया; तो उन दोनों को अपने गुप्त स्वल्प (नग्न) दिखायी दिये। और, वहिश्त के पत्तों को सीं के अपने आपको छिपाने लगे, और उनके पालनकर्त्ता ने कहा—“(कदा) मैंने तुम्हारे (खाने के लिये) इस वृक्ष को वर्जित नहीं कर दिया था?, और तुम्हें कह न दिया था कि शैतान तुम्हारा साक्षात् शत्रु है?”

[ १३ ] काऽत्लाऽ रब्बनाऽ जलम्नाऽ अन्फुसना, व  
इल्लम् तगि, फ़र्लनाऽ व तर्ह, म्नाऽ लनकूनना मिनऽल्  
खासिरीन् ॥

वह बोले, "हे हमारे पालकर्ता ! हमने अपनी अन्तरात्मा  
पर अत्याचार किया है। और, यदि तू हमको क्षमा न करे और  
हम पर दया न करे: तो हमारा सर्वनाश हो जायगा ।

[ १४ ] काऽल्ऽह् वितूऽ वअजूकुम् लिवअज़िन्  
अदुब्बुन्, व लकुम् फ़िऽल् अज़ि मुस्तकरुव्व मताउन्  
इला, हीन् ॥

कहा--"तुम यहाँ से उतरो, तुम परस्पर-एक एक के-शत्रु  
हुये, और तुम को भूमि पर निवास एवं एक विशेष समय  
तक भोजनार्थ पदार्थ मिलेंगे ।"

[ १५ ] काऽत्ला फ़ीहा तह्य, उना व फ़ीहा तमूतूना  
व मिन्हा तुम्ज़ून् ॥

कहा--"उसमें तुम जीवित रहोगे; और उसही में तुम  
मरोगे, एवं उसी से निकाले जाओगे ।"

[ पारा ८, मं० २, सू० २ ]

[ १ ] या वनीऽ आदमा कद् अन्ज़ल्ना अलयकुम्  
लिवासऽय्युवारी सद् आतिकुम् वरीशन्; व लिवास-

तक्या जालिका खय्खन्; जालिका मिन् आयातिऽल्लाहि  
लअल्लहुम् यज़्ज़कख्खन् ॥

हे आदम के वंश ! हमने तुम्हारे लिये वस्त्र उतारे, जिससे  
कि तुम अपने गुप्त अंगों को ढको और ( जिस से ) शोभा  
हो । और ( यह स्मरण रखो कि ) संयम के वस्त्र यह कल्या-  
णकारी है, यह अल्लाह के चिन्ह हैं कि कदाचित् तुम्हें  
ध्यान हो ।

[ २ ] या वनीऽ आदमा लाऽ यफितनना कुषु-  
शराय्तानु कमाऽ अख्खा अववयकुम् मिनऽल् जनति  
यन्ज़िउ अन्हुमाऽ लिबाऽस हुमा लियुरिया हुमा सऽ  
आति हिमा, इब्हु यराकुम् हुवा वे कबीलुह मिन् हयसु.  
लाऽ तरडनहुम्; इजाऽ जअलनऽ-शशयातीना अऽ-  
लियाऽआ लिऽल्लज़ीना लाऽ युअमिनून् ॥

हे आदम के वंशजो ! तुम को शैतान विचलित न करदे,  
जिस प्रकार कि उसने तुम्हारे माता-पिता (पूर्व पुरुषाओं) को  
( विचलित करके ) बहिष्कृत कराया, उनके वस्त्र  
उनसे उतरवाये, जिससे उनके गुप्त स्थल उन को दिखाई देने  
लगे, जहां से कि तुम उन्हें नहीं देख सकते, वह और उसकी  
जाति तुमको देखते हैं । हमने उन लोगों के, जो (इस्लाम पर)  
ईमान नहीं लाते, शैतान साथी नियत किये हैं ।

[ ३ ] व इजाऽ फअलूऽ फाऽहि, शतन् काऽलूऽ वजद्रा

अल्यहारे नाऽवल्लाहु अमरना विहाऽ कुल् इनऽल्लाहा  
लाऽ यअ् युरु विऽल् फह् शाऽइ अतकूलूना अलऽल्लाहि  
माऽलाऽ तअलमून् ॥

और, जब कुछ निम्न ( अश्लील ) कर्म करें, ( नो भय )  
कह देंगे कि हमने अपने पिता प्रपितामहों को इस प्रकार  
करते देखा और अल्लाह ने हमको इस ( के करने ) की आज्ञा  
दी है । ( हे पैगम्बर ! ) तुम इन्हें बतलाओ कि अल्लाह अश्लील  
आचरणों की आज्ञा नहीं देता: अल्लाह पर क्यों ( ऐसे )  
असत्य आरोप लगाते हो, जो तुम्हें ज्ञान नहीं ?

[ ४ ] कुल् अमरा रब्बी विऽल् किस्ति व अकीमूऽ  
बुजूहकम इन्दा कुल्लि मस्जिदि व्वऽइऽहु मुस्लिमीना  
लहुदीना; कमाऽवदा अकुम् तऽदून् ॥

( हे पैगम्बर ! तुम इन्हें ) बतला दो, मेरे पालनकर्त्ता ने  
न्याय ( दीन इस्लाम की शिक्षा ) की आज्ञा दी है, प्रत्येक नम'ज  
के समय अपने मुख सीधे करो और केवल उसी को पुकारो ।  
उसके आलापुवर्त्ती होकर ही तुम जैसा तुमको पहले बताया,  
वैसे बनोगे ।

[ ५ ] फ़रीक़ऽन् हदा व फ़रीक़ऽन् हक़का अल्य-  
हिम्-ज़लालतु, इन्नहुमुऽत्तख़जुऽ-रशायातीना अज-  
लियाऽआ भिन्दूनि-ल्लाहि व यहून्नुना अन्नहुम्मुद्तदून् ॥

एक समुदाय को मार्ग बताया, और दूसरे समुदाय को

मार्ग-च्युत ठहराया, उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को सखा स्वीकार किया और [ फिर भी ] समझते हैं कि [ ठीक ] मार्ग पर हैं !

[ ६ ] या३ वनी३ आदमा खुज़ूऽ जीनतकुम् इन्दा कुल्लि मस्जिदिव्वकुलूऽ वश्रवूऽ वलाऽ तुसिफूऽ, इन्हू लाऽ सुहिब्बुऽल् सुसिऽकीन् ॥

हे आदम की ओलाह ! प्रत्येक नमाज़ के समय (बख़्तों से) अपनी शोभा खजाबत कर लिया करो ❀ और खूब खाओ पीओ, और (व्यर्थ धन) मत उड़ाओ, (क्योंकि) वह (अल्लाह) (व्यर्थ) उड़ाने वालों से लसक नहीं होता ।

( पारा आठवां मं० २, सूकू अ . ४ । ८ )

(१) कुल् मन् हर्मा जीनतऽल्लाहिऽल्लती अखूजा लिइ वाऽदिही व-त्त मियवाति मिन-रिज़िक्क; कुल् हिया

❀ सीरतुरसूल नामक सुहम्मद-चरित्र में कहा है कि शरव वासियों के हृदय में कावा तथा अन्य पवित्र स्थानों को अधिक प्रतिष्ठा पैदा करने के लिए कुरैश लोगों ने जलूस के समय में खाने पीने की सनाही कर दी थी और वह प्रथा प्रचलित कर दी थी कि मक्कावासियों से मांगे हुए कपड़ों के अतिरिक्त यात्रियों को कुछ न पहिनना चाहिये अथवा जो कपड़े वह अपने पहने हों उन्हें पवित्र ससभकर अल्ला के अर्पण कर दें । यही कारण था कि बहुत से हाजी इन पवित्र स्थानों का, नितान्त नंगे होकर दर्शन करते थे । इस आयत द्वारा यह प्रथा निषिद्ध निरिधत की



लिज्जतीना आमनुऽ फिऽल् हयाति-हुन्याऽ खालि  
 सनय्यउमऽल् क्रियामति, कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल्  
 आयाति लिक्कउमि य्यअलमून् ॥

(हे पैगम्बर ! तुम इन लोगों से) पूछो कि अल्ला ने जो  
 (वस्त्र-भोजनादि) सजावट की और खाने की पवित्र वस्तुएँ,  
 अपने भक्तों के लिए, उत्पन्न की हैं, उन्हें किसने निषिद्ध किया ?  
 इनको कह दो कि जो लोग सांसारिक जीवन में (इन वस्तुओं  
 पर) विश्वास रखते हैं कि उन्हींके लिए विशेषतः (यह वस्तुएं)  
 क़ियामत के दिन मिलेंगी। जिन लोगों को बोध है, उन्हें हम  
 अपनी आयतें इस प्रकार (स्पष्ट रीति से) बतलाते हैं।

(२) कुल् इन्नमाऽ, हर्रमा रब्बियऽल् फ़वाऽ, हिशा माऽ  
 ज़हरा मिन्हाऽ वमाऽ वतना वऽल् इ.र.मा वऽल् ब.ग्या  
 विगय्रिऽल् हक्कि व अन्नुथ्रिकूऽ विऽल्लाऽ, हिमाऽल्म  
 युनज़िज़ल् विही सुलतानऽव्व अन्तकूलूऽ अलऽल्लाहि  
 माऽलाऽ तअलमून् ॥

उन्हें कहो कि मेरे पालनकर्त्ता ने—अश्लील, निर्लज्जता  
 पूर्ण, कार्य जो प्रगट हों अथवा गुप्त, और पाप और व्यर्थ  
 अत्याचार, और यह (बात) कि अल्ला के साथ किसी और को  
 साझी (शरीक) करो जिसका उसने (कोई) प्रमाण नहीं उं-  
 तारा, और यह कि अल्ला पर, जो तुम्हें विदित नहीं, ऐसा  
 मिथ्या आक्षेप लगाओ, यह सभी बातें निषिद्ध ठहराई हैं।

(३) व लिकुल्लि उम्मतिन् अजलुन्, फइजाऽ  
जाऽआ अजलु हुम् लाऽयस्तअखिरुना साऽअतव्वलाऽ  
यस्तकदिमून् ॥

और, प्रत्येक जाति की एक नियत अवधि है; और फिर जब उनकी अवधि आ पहुँचे तो, न एक घड़ी भर की देर करें और न शीघ्रता ।

(४) या वनीरे आदमा इम्माऽ यअतियनकुम्  
रुमुलुम्मिन्कुम् यकुस्सूना अलयकुम् आयाती फमनिऽत्तका  
व अस्तह,। फलाऽ खड्फुन् अलयहिम् वलाऽहुम् यहजूनून् ॥

हे आदम को औलाद ! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से कोई पैगम्बर पहुँचे—तुमको मेरी आयतें सुनावें, तो जिसने सन्तोष और सुधार स्वीकार किया, उसे न भय है; और न वह (किसी प्रकार) संताप—संतप्त ही होगा ।

(५) वऽल्लजीना कफ़ज़बुऽ विआयातिना वऽस्तका-  
वरुऽ अन्हारे उलाऽइका अस्था,बु-नाऽरि, हुम्फी,हा,  
खालिदून् ॥

और, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य समझीं; और उनकी ओर से अभिमान किया, वह नारकीय हैं; और सदा वहीं रहेंगे ।

(६) फमन् अज़लमु मिम्मनिऽफ़तरा अलऽल्लाहि  
कज़िवऽन् अड् कफ़ज़बा विआयातिही, उलाऽइका यलाऽ

लुहुम् नसीदुहुम्मिनऽल् कित्तावि; ह, ताऽ इजाऽ जाऽ अत्-  
हुम् खुलुनाऽ यतव, फ़ुडनहुम् काऽलूऽ अयना माऽ  
कुन्तुम् तइऊना मिन्दूनिऽल्लाहि, काऽलूऽ जल्लूऽ  
अन्नाऽ शहिदूऽ अलाऽ अन् फ़ुसिहिम् अन्नहुम् काऽनूऽ  
काफ़िरीन् ॥

फिर उससे अधिक अत्याचारो कौन होगा, जो अल्ला पर असत्य आक्षेप आरोपित करे अथवा अल्लाह के आदेश को असत्य ठहरावे ?—वह लोग, जिनकी प्रारब्ध पुस्तक में (लिखी) है, (उसे तो) प्राप्त करेंगे (ही) यहाँ तक कि जब हमारे प्रेषित (सृष्ट्यु के दूत) उनके प्राण निकालने को पहुँचेंगे तो (उनसे) पूछेंगे—“वह (प्रतिमा कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त बुलाते थे ?” वह बतलायेंगे—“हम से अलोप हो गई,” इस प्रकार वह अन्तरात्मा के विरुद्ध स्वयं साक्षी हो गये कि वह काफ़िर थे।

(७) काऽलूऽ इ खलूऽ फ़ीऽ उगमिन् क़दख़लत् मिन् क़बिल कुम्मिनऽल् जिन्नि वऽल् इन्सि फ़ि-न्नाऽरि, कुल्लमाऽ दख़लत् उम्मतुल्लअनत् उरक़तहाऽ; ह, ताऽ इजाऽऽदाऽरक़ूऽ फ़ीहाऽ जमीअऽन् काऽलत् उस्त्राहुम् लिऊलाहुम् रव्वनाऽ हाऽ उलाऽइ अज़ल्लू नाऽफ़आति-हिम् अजाऽवऽन् जिअफ़ऽम्मिन-न्नार । काऽला लि कु-ल्लिन् जिअफ़ुव्वला किऽलाऽ तअलमून् ॥

(इस पर अल्ला क़यामत के दिन उनसे) कहेगा कि जिन्न और मनुष्य (आदि) अन्य जातियों के साथ, जो तुम से पूर्व हो चुकी हैं, नर्काग्नि में प्रवेश करो, जहां एक जाति प्रविष्ट हो कर दूसरी जाति को धिक्कारने लगे, यहां तक कि उसमें समस्त जातियां प्रवेश कर चुकें। (फिर) पश्चात् आने वाले पूर्व वालों के सम्बन्ध में कहने लगेंगे—“हे हमारे पालनकर्त्ता ! हमको इन्हींने मार्ग भ्रष्ट किया है, अतः तू इनको दोज़खाग्नि का दुःसह दुःख दूना दे ॥” (तब अल्ला) कहेगा—“दोनों को दूना है, परन्तु तुम नहीं जानते।

(८) व काऽलत् जलाहुम् लि उखाहुम् फ़याऽ  
काऽनाऽ लकुम् अलयना गिन् फ़ज़िलन् फ़जूकुऽल्  
अज़ाऽवा विमाऽ कुन्तुम् तविसावून् ॥

और पहले आने वाले पश्चात् आने वालों के पश्चात् आने वालों से कहेंगे—“तुमको हमसे क्या उत्कृष्टता प्राप्त हुई ? अतः अपनी करनी का फल चखो ॥”

[ मज़िल १ पा० ८ रु० ५ ]

[ १ ] इन्न ऽल्लज़ीना कज़्ज़वूऽ वि आयातिनाऽ  
वऽस्तक्वरूऽ अन्हाऽलाऽ तुफ़त्तहु. लहुम् अव्वाऽबु-  
स्समाऽइ व लाऽ यद् खुलूनऽल् जन्नता ह. ता यलिजऽल्  
जमलु फ़ी समिाऽल् खियाऽति; व कज़ालिका नज़्ज़िऽल्  
मुज्ज़िमीन् ॥

निस्सन्देह, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य बतलाईं और उसके समस्त गर्व किया, उनके लिए आस्मान के द्वार म खुलेंगे; और (वे उस समय तक) बहिश्त में प्रविष्ट न किये जायेंगे; यहाँ तक कि ऊँट लुई के नाके (छिद्र) में प्रवेश करे; और इस प्रकार हम अपराधियों को फल देते हैं।

[ २ ] लहुम्पिन् जहन्नमा मिहाऽदुव्व मिन् फउ-  
किहिम् गुवाऽशिन् ; व कज़ालिका नज्ज़ि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

उनका दोज़ख (नर्काग्नि) की दरियां देंगे और (उनको) (अग्नि के) ओढ़ने भी और इस प्रकार हम अत्याचारियों को बदला देते हैं।

[ ३ ] वऽल्लज़ीना आमनूऽव अमिलु-स्सालि हाति  
लाऽ लुकल्लिफु न फसऽन् इल्लाऽ वुसऽअहाऽ, उलाऽइका  
असहायुऽल् जन्नति, हुम् फीहा खालिदून् ॥

हम किसी पर उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं डालते; और जिन्होंने (अल्ला और उसके पैगम्बर मुहम्मद अथवा मुहम्मदी मन्तव्यों पर) विश्वास किया और शुभ कर्म किये वह बहिश्त के मनुष्य हैं, वह वहाँ (ही) सर्वदा रहेंगे।

[ ४ ] व न ज़अना माऽ फी सुदूरिहेन्निन् गिलिन्  
तज़ी मिन्तह तिहिमुऽल् अन्हारु, व काऽल्लुऽल् हम्दु-  
लिन्लाहिऽल्लज़ी हदानाऽ लिहाज़ाऽ वमाऽ कुनाऽ  
लिन्ह तदिया लज़्ज़ाऽश्न हदानऽल्लाहु, लकद जाऽअत

रुम्लु रविना विऽल्ल, हन्निक; व नूदूर अन्तिल कुमुऽल्ल  
जन्नतु ऊरि, स्तुमूहाऽ विमाऽ कुन्तुम् तत्रमलून ॥

और, हम उनके मनों से समस्त द्वेष दूर कर देंगे, उनके पैरों के नीचे नहरें बहेंगीं और वह कहेंगे - "अल्लाह को-जिसने हमें यहां पहुंचा दिया है-धन्य है; क्योंकि हम सन्मार्ग ग्रहण न करते, यदि अल्लाह हमें सन्मार्ग न सुझाता । निस्सन्देह, हमारे पालनकर्त्ता के पैगम्बर हमारे पास सत्य बात लेकर आये थे ।" और यह आवाज आई कि यह बहिश्त है, तुम अपने कामों के परिणाम-स्वरूप उसके संरक्षक (नियत) हुए ।"

[५-६] व नाऽ दाऽ अरुह, लुऽल्ल जन्नति अरुह, ऽव-  
न्नाऽरि अन् कइ वजद्दाऽ माऽ वज्रदनाऽ रब्बुना हककऽन्  
फहल्ल वजत्तुम्माऽ व अदा रब्बुकुम् हककऽन् ; काऽल्लऽ  
नअम्, फअज्जना मुअज्जितुन् वय्नहुम् अन् तत्रन-  
तुऽल्लाहि अल-ज्जालिमीनऽल्लजीना यमुहूना अन्  
सवीलिऽल्लाहि व यव्गन्हाऽ इ वजन् व हुम् विऽल्ल  
आखिरति काफ़िरन् ।

और, जशन वाले दोज़ख वालों को पुकारेंगे-जो हमारे पालनकर्त्ता ने हमसे प्रनिष्ठा की थी, उल्ले हम यथावत् प्राप्त कर चुके; और तुम भी, जो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुमसे प्रनिष्ठा की थी, उल्ले वत् प्राप्त कर चुके ।" (बि) उत्तर देंगे, "हां"

फिर उनमें से एक, घोषक \* डिंदोरा पीटेगा—“(उन) अन्या-  
चारियों को अल्लाह की (शोर सं) धिक्कार है कि जो अल्लाहके  
के मार्ग से रोकते हैं और उसमें दोष ढूँढते हैं और जो आस-  
रत (परलोक) पर विश्वास नहीं करते।”

( ७ ) व वय्न हुमाऽ हिजाऽवुन्, व अलऽज्ज  
अअराऽफि रिजाऽज्जु म्यअरिफूना कुल्लज्जु विसीमाहुम्,  
व नाऽदऽअस्ताऽवऽज्जु जन्नति अन्सलामुन् अलपकुम्  
लम् यदखुलूहाऽ व हुम् यत्मज्जु ॥

और दोनों के मध्य में एक भित्ति है और उसके सिरे  
पर मनुष्य है, जो प्रत्येक को ( परस्पर ) उसके चिन्ह से पह-  
चानते हैं और वहिश्त ( स्वर्ग ) च.लों को पुकार कर कहेंगे  
कि तुम्हें सुख शान्ति हो । अभी वहिश्त में प्रविष्ट नहीं होंगे;  
यद्यपि वे उमके इच्छुक हैं ।

( ८ ) व इजाऽसुरिफत् अब्साऽरुहुम् तिल्काऽआ  
अस्तावि-नाऽरि काऽज्जुऽ रब्बनाऽ लाऽ तज्जुल्लाऽ  
मअज्जु कज्मि-ज्जालिमीन् ॥

कुछ इस घोषक अर्थात् डिंदोरा पीटनेवाले से तात्पर्य इसाफील  
फरिश्ता बतलाते हैं ।—स०

\* इस भित्ति का नाम ‘अअराफ’ है वहाँ से वहिश्ती और दोजखी  
दोनों देख पड़ेंगे ।

वहिश्त वाले अपने चहरों के सफेद रंग से पहचाने जायेंगे और  
दोजखी वाले अपने काले चहरों से ।

और बज उनकी दृष्टि से दोज़ख वालों की ओर फिरी तो बोले, "हे हमारे पालनकर्ता ! हमको अत्याचारी लोगों के साथ न कर ।"

[ पारा ८, मं० २, सू० ६।६ ]

( १ ) व नाज्दारे अस्हाबुऽल अश्रूराऽफि रिजाऽल्लं  
व्यश्रिफूनहुम् विसीमाहुम् काऽल्लुऽमाऽ अग्ना अन्कुम्  
जम्ऽकुम् वमाऽ कुन्तुम् तस्तविवरून् ॥

और अश्रूराफ अर्थात् भित्ति के सिरेवालों ने उन लोगों को पुकारा जिनको यह चिन्हों से पहचानते हैं । कहा, तुम को एकत्र करना क्या काम आया और जो तुम गर्व करते थे ।

( २ ) अहारेऽल्लाऽइज्जलज़ीना अक्सम्तुम् लाऽ  
यनाऽल्लुहुमुज्जलाहु विरहतिन् ; उदखलुऽल्ल जन्नता  
लाऽ खऽफुन् अलयकुम् वलाऽ अन्तुम् तहू जन्नून् ॥

क्या यह वही लोग हैं, जिनके विषय में तुम शपथ खाके कहते थे कि उन पर अल्लाह अपनी अनुग्रह न करेगा । तुम बहिश्त में प्रवेश करो; तुम्हें न भय है और न तुम शोवानुर ही होगे ।

( ३-४ ) वनाज्दारे अस्हाबु-नाऽरि अस्हाबुऽल्ल  
जन्नति अन् अफ़ीजूऽ अलयनाऽमिनऽल्ल माऽइ अउ मिम्माऽ  
रज़कुमुज्जलाहु; काऽल्लूरे इन्नऽल्लाहा हरम माऽइ



अल्लु काफ़िरीनऽल्लज़ीनऽतम्बज़ऽ दीनहुम् लह वऽव्व  
 लह वऽव्व गररत हुमुऽल्ल ह्यातु-हुन्याऽ फऽल्ल यउमा  
 नन्साहुम् कमाऽ नसूऽ लिकाऽया यउमिहिम् हाज़ाऽ वमाऽ  
 काऽनूऽ विआयातिनाऽ यजुदूदून् ॥

और दांड़खी यहिश्त-वासियों को कहेंगे कि हम पर  
 खल्प जल वहःओ अथवा जो भोजन तुमको अल्लाह ने प्रदान  
 किया है। वह कहेंगे कि अल्लाह ने दोनों द्वार काफ़िरों पर  
 बन्द किये कि जिन्होंने अपना मत हंसी आर खेल समक  
 रक्खा है और ( जो, ) सांसारिक जीवन पर मुग्ध है  
 अतः आज हम उनको उसी प्रकार भुला देंगे जैसे वह  
 अपने उस दिन का मिलना भूले और जैसे वह हमारी आयतों  
 को अस्वीकार करते थे।

( ५ ) व लक़द जिअनाहुम् विकिताविन् फऽसल्लनाहु  
 अला इल्मिन् हुदऽव्व र हतल्लिकऽमिय्युअमिन्नून् ॥

और हमने उनको पुस्तक पढ़ा दी है जो ज्ञान की विस्तृत  
 विवेचना करती है और विश्वासियों को समुदाय को सन्मार्ग  
 और दया दिखाती है।

( ६ ) हल्ल यन्जुरूना इल्लाऽ तअवीलहु; यउमा  
 यअती तअवीलहु यकूलुऽल्लज़ीना नसूहु मिन्कब्लु कदजा-  
 अत् रुडुलु रबिनाऽ विऽल्ल हकिक्क फहल्लनाऽ मिन्शु-  
 फऽआश्अ फयऽरकऽकऽ लनाऽ अइ लुरहु फनअमला गयरऽ-

ल्लङ्गी कुत्राऽ नत्रमलु; कद् स्वसिरुऽ अन्फुसहुम् वजल्ला  
अन्हुम्माऽ काऽनूऽ य. फतरुन् ॥

क्या प्रतीक्षा करते हैं, केवल यही कि इसका स्पष्टीकरण (तावील) हो और जिस दिन इसका स्पष्टीकरण होगा तो जो उसको भूल रहे थे, कहने लगेंगे—“निस्सन्देह, हमारे पालन-के प्रेरित (पैगम्बर) सत्य सन्देश लभ्ये थे। अब क्या कोई हमारा प्रशंसक है कि जो हमारे निमित्त प्रार्थना करे, अथवा हम (संसार में) पुनः प्रेषित किये जावें, जिससे हम जो पूर्व करते थे, उसके विपरीत आचरण करें। निस्सन्देह, हमने आत्म हानि की और जिस मिथ्या (मन्तव्यः) को माना था, वह भी उनसे नष्ट हो गया।

[ मांज़िल १ पा० ८ ६० ७।५ ]

(१) इन्ना रव्वकुमुज्जलाहुज्जलङ्गी खलक—समावाति  
वज्जल अर्जा फी सित्ति अय्याऽमिन् सुम्पस्तवा अलज्जल  
अर्शि युगु शिज्जलयल—नहाऽरा यत्तुबुहू हसीसऽव्व-शम्सा  
वज्जल क़मरा व—नुजूमा सुसख़्वरातिन् विअभिर्ही  
अलाऽ लहुज्जल खलकु वज्जल अत्रु; तवारकज्जलाहु  
रन्नुज्जल आलमीन् ॥

तुम्हारा पालनकर्ता अल्ला है, जिसने धरती और आ-  
काश को छः दिन में रचा, फिर बह्त (अर्श) पर आसीन

के अल्ला के अतिरिक्त अन्व को मानना।

हुआ, जो रात्रि को दिन में बदलता है और सूर्य, चन्द्रमा और तारागण उनकी आत्मानुकूल आचरण करने हैं। सुना, (सृष्टि का) प्रजन और आज्ञा प्रदान करना यहाँ का कार्य है। अल्नाह का-जो सन्पूर्ण अन्तार का आगो है-अनेकनेक अन्व-याह है।

( २ ) उइजऽ रुवकुम् नजरीअज्व सु फगतन ; इयाह लाऽ युदिल्लु-ल् मुअनदीन ॥

अपने पालनकर्ता का शिक्तिमाने हुए (निनयपूर्वक) अय-कट में (अथवा पकान्त में) आवाहन (आवाहन) करो; क्योंकि उस अत्याचारी के प्रिय नहीं।

( ३ ) व लाऽ तुअसदऽ फिल्लु अत्रि वअदा इस्ताअदिहाऽ नऽइजऽ सुवफज्व तपअज्व ; इमारअनऽ न्ताहि करीमुम्मिनज्व मुदसिनीन ॥

और पृथिवी में, सूर्यार होने के उपरान्त उपग्रह उपग्रह न करो, और उसका आशङ्का तथा आकांक्षा पूर्वक आवाहन करो। निस्सन्देह, अल्नाह का अनुग्रह उपकारियों के उपान्त उपस्थित है।

( ४ ) व हुन्वअन्तजी युसिलु-री हा अकुथज्व वयना

अत्याचारी का तापन उन लोगों में है जो प्रार्थना के मसल परस्पर अगिष्टाचरण करें अथवा मोलाहसकारी स्वर में अथवा व्यर्थ में बार बार कहकर शब्दों की भरमार करें।

कुराम की किन्हीं किन्हीं प्रतियों 'अभन' के स्थान पर 'अधन' है जिसके अर्थ 'बिहामा, फैलाना' (Spread abroad) होते हैं।

यदयूर, ह्यतिही; हत्तार इजाः अकल्लत् स हाऽवऽन्सिकाऽ  
लऽन् सुवनाहु लिवलदिम्मयितिन् फ अन्जन्नाऽविहिऽल  
माऽत्रा फ अस्त्रज्जाऽविही भिन् कुल्लि-स्समराति, कजा-  
लिका नुस्सिजुऽल मत्ता लअल्लकुम् तज्जक्खन् ॥

और, वही है जो पवन को पहले ही से अपनी प्रसन्नता का प्रशस्त समाचार देकर अपने अनुग्रह के साथ भेजता है, यहाँ तक कि वह ग्रहराती हुई घटाओं वाले घन उठा कर (घुमड़ा घुमड़ा कर) मृतक (शुष्क) भूमि की ओर ले जाती हैं और फिर हम उससे वारि वर्षा करते हैं। इसी प्रकार हम (मुसलमानों) प्रलय के दिन मृतकों को उठावेंगे, जिससे तुम शिक्षा ग्रहण करो।

( ५ ) वऽल वलदु-त्तियवु यस्सुजु नवाऽत्तुह वि-  
इज्जि रविही, वऽल्लज्जी खत्तुसा लाऽ यस्सुजु इल्लाऽ  
नकिदऽन्; कजालिका नुसरिफुल आयाति लिक्कड्धि-  
य्यक्खन् ॥

उर्वरा भूमि बनस्पति को अपने पालनकर्ता की आज्ञा से उत्पन्न करती है, और जो निरुद्य है, वह कुछ उत्पन्न नहीं करती। हम अपनी आयतों का अल्पांश-मात्र उलट फेर कर उस जाति के सम्मुख वर्णन करते हैं जो कि धन्यवादी हैं।

[ मं० २, पारा ८, ६० ६।८ ]

( १ ) लक्कइ अस्सन्नाऽ नूहऽन् इत्ता कज्मिही

फ़काऽला या क़उमिऽअबुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्बिन् इला-  
हिन गय्कह; इन्नीरे अस्वाऽफु अलयकुम् अज़ाऽवा यउमिन्  
अज़ीम् ॥

निस्लन्देह, हम ही ने नूह  $\text{☉}$  को उनकी जाति वालों के  
पास (पैगम्बर बना कर) भेजा तो उन्होंने (लोगों को जाकर)  
समझाया कि भाइयो ! अल्लाह ही की उपासना करो; उसके  
अतिरिक्त अन्य (कोई) तुम्हारा उपास्य नहीं। (और यदि  
तुम मेरी आज्ञा न मानोगे तो) मुझ को तुम्हारे सम्बन्ध में  
(प्रलय के) बड़े (भारी) प्रकोप का भय है। वह लोग, जो  
उस की जाति में पैदा हुए थे, कहने लगे कि हमारे निकट तो  
तुम बिल्कुल भ्रम में पड़े हो।

(२) क़ाऽलज्जलज्जिन् क़उमिहीरे इन्नाऽल न राका  
फी ज़लालिम्मुवीन् ॥

उसकी जाति के मुखिया उससे कहने लगे “हम तुम्हें  
देखते हैं, तू साक्षात् भ्रान्त है।”

$\text{☉}$  नूह, मुसलमानों के मतानुसार, उन छः पैगम्बरों में से एक था,  
जिन्हें इलहाम मिला है। यद्यपि उसने अपने इलहाम को पुस्तक का रूप  
नहीं दिया। अपने शुरुआती उदरस के चरचात् वह प्रथम पैगम्बर था। अल-  
जमखदरी का कथन है कि नूह बड़े थे क्योंकि उसने नौका निर्माय किया  
और ५० वर्ष की आयु में पैगम्बर बना। कोई ४० वर्ष की; आयु में बतलाते  
हैं। विशेष दिवरब हमारी पुस्तक ‘देवदूतदर्पण’ बहने वालों को चिदित  
होगा।

(३) कास्ता या कउ मि लयसा वी जलालतुचवला

किन्नी रमूलुम्मिरन्विऽत् आलमीन् ॥

वह बोल, "हे जातीय पुरुषो ! मैं किञ्चित् भ्रम में नहीं।

परन्तु संसार के स्वामी का भेजा हुआ हूँ।"

(४) उवत्तिगु कुम् रिसालाति रन्वी व अन्महु,

लकुम् व अत्रलमु मिनऽन्लाहि माऽलाऽ तत्रलमून् ॥

और अपने पालनकर्त्ता के सन्देश तुम्हें पहुंचाता है और

[ तुम्हें ] उपदेश करता है; और अल्लाह की ओर से [ बतलाई

हुई ऐसी २ ] बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।

(५) अ व अजिव्तुम् अन् जारेअकुम् जिक्कुम्मिरन्वि-

कुम् अला रजुलिम्मिन् कुम् लियुन्जिरकुम् वलिततकऽ

वलअल्लकुम् तु, ह्मून् ॥

क्या तुम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से

तुम्हीं में से एक मनुष्य के द्वारा शिक्षा आई है, जिससे वह

तुम्हें भय सुनावे और जिससे तुम संयम से रहो और कदा-

चित् तुम पर अनुग्रह हो।

(६) फ कज्जबूहु फ अन्जबनाहु वऽल्लजीना

मअहु फिऽत् फुन्कि व अगूरकनऽऽल्लजीना कज्जवूऽ

वि आयातिनाऽ; इन्नहुम् काऽनुऽ कउमऽन अमीन् ॥

स्वप्नों कि 'आद' वह लोग कहते थे कि यदि अल्लाह की इच्छा होती तो वह मनुष्य न भेदता; प्रत्युत एक फरिश्ता भेज देता। क इस्लामों के समय में ऐसा कोई दयान्त नहीं था।

तब बन्होंने उसे झूठा बताया, अतः हमने उसकी औ जो उसके साथ नौका में थे, उनकी रक्षा की; और उन्हें हमारी आयतों को असत्य बतलाते थे—डुबो दिया; (क्योंकि वह मनुष्य थे ही अन्धे)।

(परा आठवां मं० २, सूक्त्र ९।८)

(१) व इला आगदिन् अखाहुम् हूदऽन्; काऽला या कऽमिऽअबुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्पिन् इलाहिन् गुरूहऽ अफलाऽ तत्तकून् ॥

और आद ॐ की ओर उनके भाई हूदा को भेजा। (उसने) कहा, "हे भाइयो! अल्लाह की आराधना करो। उसके अति रिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं। क्या तुम को भय नहीं?"

(२) काऽलऽल मलऽऽल्लजीना कफरूऽमिन् कऽमिहीरे इना ल नराका फी सफाहतिव्व इना ल नजुनुका मिनऽल् काज़िबीन् ॥

उसकी जाति में—जो अविश्वासी मुखिया थे—बोले, "हमें

ॐ आद अरब की प्राचीन और चलशाली जाति थीं उसका मूर्ति पूजा में महान् चिन्वास था।

हजरत हूद इसी आदि जाति के सुधार के लिए भेजे हुए पैगम्बर कहे जाते हैं इनका विशेष हाल 'पैगम्बर प्रकाश' में दिया जायगा।

सूरये अमराफ; मं०; २, पारा; ८, ६०; ६। ५३७

तो निश्चय पूर्वक देखते हैं कि तुझमें बुद्धि नहीं और हमारे विचार में तू भूटा है।”

(३) काऽला या कऽमि लयसा वी सफाऽहतुव्वला  
किर्नी रसुलुम्मिरंविऽल आलमीन् ॥

(नूह) बोला—“हे जाति वालों! मैं कोई निर्बुद्धि नहीं; किंतु मैं संसार के स्वामी का प्रेरित (पैगम्बर) हूँ।

(४) उवल्लिगु कुम् रिसालाति रबी व अनाऽ  
लकुम् नाऽसिहुन् अमीन् ॥

मैं तुम्हें तुम्हारे पालनकर्ता के सन्देश पहुंचाता हूँ और विश्वसनीय उपदेष्टा हूँ।

(५) अ व अजिन्तुम् अन्जाऽअकुम् जिऽक्रुम्मिरंविऽकुम्  
अला रजुलिम्मिन् कुम् लियुन्जिर कुम् वऽज्जुरुऽ इजू  
ज अलकुम् खुलफाऽआ मिन् वऽअदि कऽमि नूहिऽव्व-  
जाऽद कुम् फिऽल खल्कि वस्ततन्, फऽज्जुरुऽ आलाऽ  
अऽल्लाहि लऽअल्लकुम् तुऽपिल हून् ॥

क्या तुम आश्चर्य करते हो कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की आंर से तुम्हीं में से एक मनुष्य के द्वारा शिखा आई कि (वह) तुमको (अल्लाह के आतंकर का) डर सुनावे और स्मरण रखो कि किस प्रकार उसने तुम्हें नूह की जाति के पश्चात् (उसका उत्तराधिकारी) मुखिया बना दिया और उसने तुम्हें शरीर में विशाल कर दिया। अतः अल्लाह



के उपकारों का स्मरण करो, कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

(६) काऽल्लुः अजिअतनाऽ लिनअबुदऽन्ताहा  
बहूदह व नज़र माऽ काऽना यअबुदु आबाऽऽनाऽ, फ-  
अतिनाऽ विमा तइ, दुनाऽ इन्कुन्ता मिन-स्सादिकीन् ॥

घोले—“क्या तू हमारे समीप इसलिये आया कि हम केवल अल्लाह की आराधना करें और (उन देवों का) परिचय कर दें, जिनको हमारे पुरुषा (पिता-प्रपितामहादि) पूजते रहे ? फिर यदि तू सच्चा है, तो यह वचन लेआ, जिससे हमें भय दिखाता है।

(७) काऽला कइ वक्रया अलयकुम्पिरन्विकुम् रिज्मु  
व्य गज़नुन् ; अतुजाऽदि लूननी फीऽ अमुमाऽऽन् सम्प-  
यतुमूहारे अन्तुम् व आवाऽऽकुम्माऽ नज़ज़लऽन्ताहो  
विहामिन् मुल्तानिन् फऽन्तज़िरुऽ इन्नी मअकुम्पिनऽल्  
मुन्तज़िरीन् ॥

उसने कहा—“तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता के यहां से आपत्ति और कोप प्रगट हो चुका है। मुझ से अनेक नामों के लिए—जो तुमने और तुम्हारे पुरुषाओं (पिता-प्रपितामहादि) ने रक्ष लिए हैं, जिन का अल्लाह ने कोई प्रमाण पत्र नहीं उतारा—क्यों विवाद करते हो ? अतः ( प्रकोप को ) प्रतीक्षा करो और मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।”

(८) फ़ अन्नज्यनाहु वऽल्लज़ीना मज़हू विर, ह्मति-  
म्मिना ऽ व क़तज़ूनाऽ दाऽविरऽल्लज़ीना कज़ज़ुऽ वि  
आयातिनाऽ वमाऽ काऽनुऽ मुअ्मिनीन् ॥

फिर हमने उसको और जो उसके साथ थे, उनको अपने अनु-  
ग्रह से बचा लिया और जिन्हों ने हमारी आर्यातों को असत्य  
टहराया था; और जो विश्वासियों में नहीं थे, उनको समूल नष्ट  
किया ।

[ मं० २, सिपारा ८ रुकूअ १० | १२ ]

(१) व इला समूदा अस्वाऽहुम् सालि, हऽन् काऽला  
या क़ुमिऽअनुदुऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् गय-  
रुह; क़द् जाऽअत् कुम् वथिनतुम्मिरन्विक्कुम्; हाज़िही  
नाऽक़तुऽल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ज़रुहाऽ तअकुल् फ़ीऽ  
अज़िऽल्लाहि वलाऽ तमस्सुहाऽ विसुऽइन् फ़ यअखुज़  
कुम् अज़ाऽवुन् अलीम् ॥

और हमने समूद (समुदाय) की ओर उनका सगा  
सालद भेजा । उसने कहा—“हे जातियालो ! अल्लाह की  
आराधना करो । उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी  
नहीं । तुमको तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से प्रमाण प्राप्त ही  
सुका है । यह सँदती अल्लाह की तुम्हारे लिए प्रमाण है ।  
अतः इलको छोड़ दो कि वह अल्लाह को भूमि में चरे; और

इसे कष्ट पहुंचाने के नाम पर स्पर्श (तक) मत करो; अन्यथा  
 देवी दण्ड का दुःख तुम्हें निग्रहीत करेगा ।

(२) वऽज़्ज़ुः इज़् ज़अलकुम् खुलफ़ाःआ मिन  
 वअदि आऽदि व्व वव्वअकुम् फिऽल् अज़ि तत्तखिजून  
 मिन्सुहूलिहाऽ कुसूरऽव्व तन् हितूनऽल् जिवाऽला बुयूतऽन्,  
 फऽज़्ज़ुः आलाःअऽल्लाहि वलाऽ तअसउऽ फिऽल्  
 मुफिसदीन् ॥

और वह ( समय ) स्मरण करो जब कि तुमको आद के  
 पश्चात् उन ( लोगों ) का उत्तराधिकारी बनाया और भूमि में  
 निवास दिया । इससे स्वच्छ भूमि में दुर्ग रचते हो और पर्वतों  
 को काट काट कर गृह-बनाते हो । अतः अल्लाह के अनुग्रह  
 का स्मरण करो और पृथिवी में उत्पात उत्पन्न न करते फिरो ।

(३) काऽल् मलऽज्ज़ीनऽस्तक् वरूऽ मिन्कउ-  
 मिही लिऽज्ज़ीनऽस्तुज़् इफूऽ लिमन् आमना मिन्हुम् अ  
 तअलमूना अन्ना सालिहऽम्मुर्सलुम्मिरऽब्विही; काऽल्  
 इन्नाऽ विमाः उर्सिला विही मुअ्मिनून् ॥

उसकी जाति के वह प्रधान पुरुष—जिन्हें अहंकार था,  
 जाति के उन निर्बल पुरुषों से, जो विश्वास रखते थे—कहने  
 लगे, “यह तुमको विदित है कि सालह अपने पालनकर्ता का  
 प्रेषित ( पैगम्बर ) है ।” वह बोले—“हमको, जो उस पर और  
 उसके द्वारा भेजा गया है, विश्वास है ।”

(४) काऽलऽल्लज़ीनऽस्तक्वरुइ इनाऽ विऽल्लज़ीः  
आमन्तुम् विही काफिरुन् ॥

परन्तु जो अहंकारी थे, कहने लगे—“जो तुमने विश्वास किया, सो हम स्वीकार नहीं करते।”

(५) फ़ अक़रुऽ-नाऽक़ता व अतउऽ अन् अम्रि  
रन्विहिम् व काऽलुऽ या सालिहुऽअतिनाऽ विमाऽ त,इ-  
दुनाऽ इन्कुन्ता मिनऽल्लमुर्सलीन् ॥

फिर (अल्लाह की) उंटनी (के पैरों) को काट डाला, और अपने पालककर्ता की आवाज़ से पराङ्मुख हो गये, और कहने लगे—“हे सालह ! यदि तू प्रेषित ( पैग़म्बर ) है, तो जो भय दिखलाता है, उसे लेआ।”

(६) फ़ अख़ज़तुहुमु-रज़फ़तु फ़ अस्वऽहुऽ फ़ी दाऽरि-  
हिम् जासिमीन् ॥

तब भूकम्प \* ने उन पर आक्रमण किया; अतः प्रातःकाल ही को अपने गृह में आँधे गिर कर मर गए।

(७) फ़ तवल्ला अन्हुम् व काऽला या क़ल्मि लक़इ  
अवलगतुकुम् रिसाऽ लता रब्वी व नसहूतु लकुम् वला  
किल्लाऽ तुहिन्नुन-नासिदीन् ॥

फिर ( खालहने ) उनसे मुंह मोड़ा और कहा “हे जाति-वालो ! मैं तुमको अपने पालनकर्ता का सन्देश पहुंचा चुका

\* किन्हीं किन्हीं का कथन है कि यह जिब्रैल का शब्द था।

और ( मैंने ) तुम्हाप शुभचिन्तन किया, परन्तु तुम्हें शुभ-  
न्तक प्रिय नहीं लगते ।

(८) व लूतुञ्ज इन्काऽला लिङ्गमिही ३ अतश्चतुनः  
फाऽद्विशता माऽ सवककुम् विहाऽ मिन अ इदिम्मिनऽ  
आलपीन ॥

और [ स्मरण करो, जय ] लूतने अपनी जाति से कहा  
"क्या तुम ऐसा आदमी [ निन्द्य ] कार्य करते हो जो तुम  
पूर्व संसार में किसी ने नहीं किया ।

(९) इन्नकुम् लनश्चतुन-रिजाऽला शइवतम्मिनद्धनि  
निगाऽइ; वल् अन्तुम् कऽमुम्मुस्त्रिफून् ॥

तुम तो महिलाओं से मुख मोड़ कर, मदनमत्त हो, मनुष्य  
पर मरते हो; किन्तु तुम लोग मर्यादा पर स्थिर नहीं रहते ।

(१०) व माऽ काऽना जवाऽवा कऽमिही ३ इल्ला ३  
अन्काऽलू ३ अस्त्रिजुहुम्मिन कऽर्यतिकुम्, इन्नदुम् चना-  
ऽसुय्यत तह्हरून् ॥

और उसकी जानि-वालों ने कुछ उत्तर नहीं दिया; परन्तु  
[ इसके विपरीत परस्पर यह ] कहने लगे कि इन्हें अपने नगर से  
निकालो; क्योंकि ये पवित्रता चाहते हैं ।"

(११) कऽ अन्नयनाहु व अहह ३ इल्लाऽऽम्ना अतह्  
फाऽनत् मिनऽल् गाविरिन् ॥

फिर हमने उसकी और उसके गृहियों की रक्षा की; परन्तु उसकी स्त्री मरनेवालों में सम्मिलित हो गई ।

(१२) व अमर्ताऽ अलयहिम्पतरऽन्; फऽन्जुर  
कयफा काऽना आऽकितुऽन्मुजिमीन् ॥

और इन पर [ पत्थरों का ] भेद बरसाया; अतः देव,  
अपराधियों का क्या अन्त हुआ !

[ मंजित १ पा० ८ रु० ११।६ ]

(१) व इत्ता म्दयना अखाऽहुम् शुअयवऽन्; काऽत्ता  
या कउमिऽअ बुदुऽऽन्लाहा माऽ लकुम्मिन् इत्ताहिन् गय-  
रूह; कइ जाऽअतऽन् वयिनदुम्मिरन्विबुम् फऽअउ फुऽअत्  
कयत्ता वऽत् गीजाऽना वलाऽतव्वसुऽ-नाऽसा अरयाऽ  
अदुम् वलाऽ तुऽपिसदुऽ फिऽत् अजि वअदा इस्ताऽहिहाऽ;  
नात्तिकुम् खपरल्लकुम् इन्कुन्तुम्मुअयिनीन् ॥

चार मर्दियों \* में हमने उनके भाई शूषेव को ( पैगम्बर  
बना कर ) भेजा । उसने कहा—“हे जातिवालों ! अब्बलाह की  
आराधना करो । उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी  
नहीं । तुमको तुम्हारे पालकजनों की और से प्रमाण प्राप्त हो  
चुका है । अतः नाप तोल पूरी करो; और मनुष्यों को उनको  
वस्तुएँ न्यून मत दो; और न पृथिवी में ही, उसके सुधार के

\* निदियत है जाज में एक नगर था । वहाँ के निवासी मर्दियत कह-  
लाते थे ।

उपरान्त, उपद्रव उत्पन्न करो, यदि तुमको विश्वास है। यह तुम्हारे लिए हितकर है।

(२) वलाऽ तकूडूऽ विकुन्लि सिराऽतिन् तूइदूना व तसुइना अन् सबीलिऽज्लाहि मन् आमना विही वत-  
गानहाऽ इवजऽन्, वऽज्जुरुऽ इज् कुन्तुम् कलीलऽन्  
फकऽसरकुम् वऽज्जुरुऽ कय्फा काऽना आऽकिवतुऽल्  
मुफिसदीन् ॥

और प्रत्येक मार्ग पर न बैठो और अल्लाह के मार्ग से उनको, जो उस पर विश्वास लाते हैं, भय दिलाते हुए और उसमें दोष ढूँढते हुए न रोको; और उस समय का स्मरण करो जब कि तुम अल्प संख्यक थे, तो तुमको (अल्लाह ने) बहु संख्यक किया और देखो अन्त में उत्पातियों की कैसी अवस्था हुई !

(३) व इन् काऽना ताऽइफतुन्मिन्कुम् आमनूऽ  
विन्लजीऽ उर्सिन्तु विही व ताऽइफतुन्लाम् मुअमिन्ऽ  
फऽस्विरुऽ हत्ता यह कुमऽज्लाहो वयनना व हुवा स्वय-  
रुऽल् हाकिमीन् ।

और जो मेरे हाथ भेजा गया है, उसे यदि तुममें से एक समु-  
दाय ने स्वीकार किया है और दूसरे ने नहीं, तो उस समय तक धैर्य धारण करो जब तक कि अल्लाह हमारे मध्य निर्णय करे और वह सर्वोत्तम न्यायकारी है।

## पारा [९] कालऽलमलाऽ

(४) काऽलऽल् मलऽल्लज्जिनऽस्तक्वरुऽमिन् कड्-  
मिदी लनुञ्जिजमका या शुश्रयवु वऽल्लज्जिना आमनुऽ  
मशका मिन् कर्यतिनाऽश्चल् लतऽहुआ फी मिल्लतिनाऽ,  
काऽला अव लड् कुआ कारिहीन् ॥

उसकी जाति के वह लोग—जो कुलीन थे—कहने लगे, “हे  
शुषेय ! हम तुम्हको और उनको—जिन्होंने मे तेरे साथ विश्वास  
किया है—अपने नगर से निश्चय बाहर निकाल देंगे; अन्यथा  
तुम हमारे मत में पुनः आजाओ !” उन्होंने उत्तर दिया—“क्या,  
हम उससे विमुक्त हों तो भी ?”

(५) कदिऽ फवरयनाऽ अलऽल्लाहि कज्जिवऽन् इन्  
उदाऽ फी मिल्लतिह्वु वऽहुआ इज् नज्जानऽऽल्लाहु  
मिन्हाऽ; वमाऽ यहुवु लनारे अन्नऽदा फीहारे इल्लाऽ  
अग्यशाऽश्चऽल्लाहु रब्बुनाऽ; वसिआ रब्बुना कुल्ला  
शय्इन् इत्मऽन्; अलऽल्लाहि तवक्कल्लाऽ; रब्बन्ऽऽ-  
न्तह् वयन्नाऽ व वय्ना कड्पिनाऽ विऽत्त हकि व  
अन्ता खय् रल् फाऽतिहीन् ॥

बदि हम तुम्हारे मत में पुनः मिल जायं तो हम अल्लाह  
पर बसत्याक्षेप आरोपित करेंगे। अब अल्लाह हमको उससे





अब्लगतुकुम् रिसालाति रब्वी व नसहतु लकुम्, फ  
कयफा आसा अला कड् मिन काफिरीन् ॥

फिर वह उनसे पृथक् हुआ और बोला "हे जातीय पुरुषो!  
तुमको मैं अपने पालनकर्ता का प्रतिशासन प्रदान कर चुका  
और तुम्हें शुभ शिक्षा भी सुना चुका हूँ, फिर मैं क्यों अविश्वासी  
लोगों से शोकातुर होऊँ ?"

[ मंजिल २, पारा ६, सूक्त १२ । ६ ]

(१) व मा अर्सलनाऽफी कर्यतिम्मिन्नविद्यिन् इल्ला रे  
अखज्ना रे अहलहाऽ विस्त वअसा रे इ व-ज्जरा रे इ  
लअल्लहुम् यज्जरेज्जन् ॥

और हमने किसी नगरी में नबी नहीं भेजा; जब तक कि  
हमने वहाँ के लोगों को क्लेश और विपाद के पाश में असित न  
किया हो, ( जिससे ) कदाचित् वह धिधियावें ।

(२) सुम्मा वहल्लाऽ मकाऽन-स्सय्यिअतिऽल् हसनता  
हत्ता अफउऽव काऽल्लूऽ कद् मस्सा आवा रे अनऽज्जरा रे उ  
व-स्सरा रे उ फ अखज्नाहुम् वगतत व्वहुम् लाऽ यशउरून् ॥

फिर हमने उनकी दुराई को भलाई के रूप में परिवर्तित  
कर दिया; यहाँ तक कि उनकी वृद्धि हुई और वह कहने लगे  
कि हमारे पिता-प्रपितामहादि को भी हानि और प्रसन्नता  
प्राप्त होनी रही हैं । अतः हमने उन पर अकस्मात् आक्रमण  
किया और उन्हें शांत न था ।

( ३ ) वलड् अन्ना अह्लुऽल् कुरा३ आयन्  
 वऽत्तकड् लफतहऽ अलय्हिम् वरकालिश्मिन-स्तमा३इ  
 वऽल् अजिं वला किन् कज्जबूऽ फ़ अख्जनाहुम् विमाऽ  
 काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

और कभी इन नगरों के निवासी हमारा विश्वास और भय करते तो हम उन पर, निस्सन्देह, आकाश और पृथिवी की आशीर्वादेँ खोल देते; परन्तु वे हमारी आयतों को असत्य निश्चित करने लगे। इसलिये हमने उनसे उनकी इति का प्रतिकार ग्रहण किया।

( ४ ) अ फ़ अभिना अह्लुऽल् कुरा३ अय्यअतिय  
 हुम् वअसुनाऽ वयाऽतऽव्वहुम् नारेइयून् ॥

अतः क्या उन नगरों के निवासी निर्भय हैं कि उन पर हमारा प्रकोप सायंकाल के समय, जब कि वे सोते हों, नहीं आवेगा ?

( ५ ) अब अभिना अह्लुऽल् कुरा३ अय्यअतियहुम्  
 वअसुनाऽ जुहऽव्वहुम् यलअबून् ॥

अथवा क्या ( इस बात से ) नगर-निवासी निर्भय हैं कि हमारा प्रकोप उन पर प्रातःकाल—दिन चढ़े—जब खेलते हों, नहीं आवेगा ?

अथवा आयत उस आकाश की ओर संकेत करती है जो मक्का में पड़ा था और जिसका वर्णन १२७ वीं आयत में आगे आता है।

( ६ ) अ फ अमिनुऽ मक्रऽल्लाहि, फ लाऽ यअमनु  
मक्रऽल्लाहि इल्लऽत् कऽमुऽत् खासिरुन् ॥

क्या, फिर, अल्लाह के कपट से निर्भय हो गये ?-अतः  
उन लोगों के अतिरिक्त-जो नष्ट होंगे-अन्य लोग अल्लाह के  
कपट से सुरक्षित नहीं ।

[ मं० २, पारा ६; रु० १३ । ६ ]

( १ ) अ व लम् यहदि लिज्जलीना अरिसूनऽत्  
अर्जा मिन् व अदि अहलिहार अल्लऽ नशाऽउ अरा-  
न्नाहुम् विजुनूविहिम्, व न.त्वऽ अला कुलूविहिम्  
फहुस्ताऽ यस्मऽन् ॥

क्या उन लोगों से शिक्षा नहीं मिली, जिन्होंने पृथिवी पर,  
उसके अधिकारियों के पश्चात्, स्वतंत्र खियर किया, जिससे  
यदि हम चाहें तो उनको उनके पापों के कारण पकड़ें और  
उनके मनों को मुद्राबद्ध (छुहर) कर दें जिससे वह सुन न सकें ।

( २ ) तिक्कऽल्कुरा नकुश्शु अलयाका मिन अन्  
चारऽइहाऽ, व लकऽ जाऽअत् हुम् रुमुलुहुम् विऽत् वयि-  
नाति फ माऽ काऽन्ऽ लियुअमिनुऽ विमाऽ कऽज्जबुऽ मिन  
कब्बु, कजालिका यत्वऽऽल्लाहु अला कुलूविऽत्  
काफिरीन् ॥

यह नगर है कि जिसका कुछ समाचार हम तुमको सुनाते हैं; और उनके समीप उनके पैगम्बर प्रमाणों लेकर पहुंच चुके। अतः यह कदापि नहीं हुआ कि जो बात पहले मिथ्या-फद् चुके, उस पर विश्वास करलें। इस प्रकार, अल्लाह अविश्वाली लोगों—मुनकियों—के मनों को मुद्राङ्कित (आधीन) करता है।

( ३ ) वमाऽ वजद्रा लि अक्सरिहिम्मिन् अहदिन्,  
व इव्वजद्राऽ अक्सर हुम् लफ़ासिक्कीन् ॥ १०० ॥

और हमने उनमें से प्रायेण सब को नियम पर निश्चित नहीं पाया और उनमें से प्रायेण सभी अनियंत्रित पाये गये।

( ४ ) सुम्मा वअस्ना मिन् वअदिहिम्मूसा वि  
आयातिनाऽ इला फ़िर्अउना व मलाऽइही फ़ ज़लमूऽ  
विहाऽ, फ़ऽन्जुर्कयफ़ा काऽना आऽकिवतुऽल् मुफ़िसदीन् ॥

फिर हमने उनके पश्चात् मूसा को फ़िर्अौन और उसके कुलपतियों के दास; सहित अपने चिन्ह (प्रमाण) देकर प्रेषित किया। फिर उनके सम्मुख अत्याचार किया, अतः देखो उपद्रवियों की अन्त में कैसी (अधम) अवस्था हुई !

( ५ ) व काऽला मूसा या फ़िर्अउनु इन्नी रसूलु-  
म्मिरऽब्बिऽल् आलमीन् ॥

और मूसा ने कहा—“हे फ़िर्अौन ! मैं संसार के स्वामी का प्रेरित ( भेजा हुआ-रसूल ) हूँ।

( ६ ) इकीकुन् अलारे असलारे अकूला अलऽ  
 न्लाहि इसलऽऽत् हक्का, कइ जिअ तुकुम् विवदियनति-  
 म्मिर्बिबहुय् फ असिल् मइया वनीरे इसाईल् ॥

इस बात पर दृढ़ स्थिर हैं कि अल्लाह के सम्बन्ध में सत्य  
 के अतिरिक्त अन्य कुछ न कहें; क्योंकि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे  
 पालनकर्ता का प्रमाण लेकर आया हूँ । अतः मेरे साथ इस्राईल  
 के वंश को भेज दे ।

( ७ ) काऽला इन् कुन्ता जिअता विआयतिन्  
 फअति विहारे इन् कुन्ता मिन-स्सादिकीन् ॥

उसने कहा - "यदि तू कुछ प्रमाण लेकर आया है तो वह  
 ला, यदि तू सच्चा है ।"

( ८-९ ) फ अक्का असाऽहु फ इजाऽ हिया सुअ-  
 या-नुम्मुवीतुव्व नज्जआ यदहू फ इजाऽ हिया वय्जारेउ  
 लिआजिरीन् ॥

फिर उसने अपना डंडा डाला तो उसी समय वह साक्षात्  
 सर्प बन गया । और अपना हाथ निकाला तो उसी समय वह  
 धर्शकों को अपने न दिखाई दिया ।

---

ॐ विधायत है कि मरता बड़ा काला आदमी था और जब वह अपना  
 हाथ मोचे में रखना और उने फिर बाहर निकालता, वह अत्यन्त घेत और  
 इतना प्रकाशित हो जाता कि इसके सामने सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ जाता

[ मंजिल २, पारा ९, ल० १४।१८ ]

( १-२ ) काऽल्लुल मलउ मिन कडमि फिर्अउना  
इन्ना हाजा ल साहिरुन् अलीमुथ्युरीहु अय्युस्त्रिजकुम्मिन्  
अजिकुम्, फमाऽजाऽ तअमुरुन् ॥

फिर्अन की जाति के मुखियागण कहने लगे—“निस्सन्देह,  
यह कोई बड़ा जादूगर है, ( जो ) तुमको तुम्हारे देश में से  
वहिष्कृत किया चाहता है । अतः अब फिस आज्ञा का पालन  
किया जाय ।”

( ३-४ ) काऽल्लु३ अजिह् वअखाऽहु व असिल  
फिऽल् मदाऽइनि हाशिरीना । यअतूका विकुण्लि साहि-  
रिन् अलीम् ॥

वे कहने लगे—“उसको और उसके भाई को ठहरा ले  
और अपने परगनों में मुखियाओं को भेज, जिससे वह तेरे  
समीप पढ़ा लिया जादूगर लावे ।”

( ५ ) बजाऽअ-स्सहरतु फिर्अउना काऽल्लु३ इन्ना  
लनाऽ लअजरऽन् इन् कुन्नाऽ नहुऽल गालिबीन् ॥

और फिर्अन के पाल जो जादूगर आये, उन्होंने कहा—  
“क्या हमें अवश्यमेव पारतोषिक प्रदान किया जायगा, यदि  
हम विजयी होंगे ।”

( ६ ) काऽला नअम् व इअकुम् लमिनऽल् मुकर-  
बीन् ॥

उसने कहा—“हां, और तुम मेरे समीप रहा करोगे।”

( ७ ) काऽलूऽ या मूसाऽ इम्माऽ अन्तुऽल् क्रिया  
व इम्माऽ अन्नकूना नहुऽल् शुल्कीन् ॥

उन्होंने कहा—“ हे मूसा ! या तो तू डाल मथया हम डालते हैं ।”

( ८ ) काऽला अल्कूऽ, फलम्माऽ अल्कूऽ सह रूऽ  
अश्रुननाऽसि वऽस्तर्ह्वुहुम् वजाऽऊ विसिहरिन्  
अजीय् ॥

( मूसाने ) कहा—“तुम डालो ।” फिर जब उन्होंने डाला तो उसने मनुष्यों की उष्टि बांध दी और उनको डरा दिया, और षड्हा जादू का कार्य पूरा किया।

( ९ ) व अज् हय्नाऽ इला मूसाऽ अन् अल्कि  
असाऽका, फइजाऽ हियतल् कफु माऽ यश्फिकून् ॥

और हमने मूसा को आश्वासना दी कि (तू) अपना डंडा डाल । अतः ( जब डाला जावे ) वह उनके जादू के डाले हुए पदार्थों को ( सर्प बन कर ) निगलने लगा ।”

( १० ) फ वक़अऽल् हक्कु व बतला माऽ काऽनुऽ  
यश्मलून् ।

तब सत्य का पाला प्रबल प्रमाणित हुआ और जो वह करते थे, मिथ्या सिद्ध हुआ ।



( ११ ) फ़ गुलिवृऽ हुनाऽलिका वऽन् कलवृऽ  
सागिरीन् ॥

अतः वहां पर पराश्रित हुए और लज्जित होकर लौट गए ।

( १२-१३-१४ ) व उज्जिकय-स्सहरन्तु साजिदीन्  
काऽल्लुरे आमन्नाऽ विरन्विऽत्त् आलपीन् । रन्वि मूसा  
व हारुन् ॥

और अन्य जादूगरों ने धरती से शिर झुकाया और कहा  
“हमने संसार के स्वामी को स्वीकार किया जो मूसा और  
हारून का पालनकर्ता है ।”

( १५ ) काऽला फ़िअर्ऽउनु आमन्नुम् विही कऽत्ता  
अन् आजना लकुम्, इन्ना हाजा ल मक्रुम्पकर्तुम्हु  
फ़िऽल् मदीनति लितुस्त्रिजुऽ मिन्हारे अह्लहाऽ, फ़स-  
उफ़ा तअलमून् ॥

फ़िर्ऽन ने कहा — “अभी मैंने तुम्हें आशा प्रदान नहीं की;  
पर तुमने उसे स्वीकार कर लिया । यह एक बड़ा पड़्यंत्र (कपट)  
है जिसे तुमने मेरे नगर में रखा है जिससे कि तुम नगर-  
निवासियों को नगर से बाहर निकालो । परन्तु तुम अन्त में  
देजोगे, क्या होता है ।”

( १६ ) ल उकत्तिअन्ना अयदियहुम् व अर्जुलकुम्मिन  
स्त्रिहाऽफ़िम् सुम्मा ल उसन्तिलवन्नकुम् अम्मईन् ॥

मैं निश्चय ही, तुम्हारे हाथ और दूसरी ओर के पांव फाटूंगा और फिर मैं तुम्हें सूती पर चढ़ाऊंगा ।

( १७ ) कालूरे इन्नारे इत्ता रब्विनाऽ मुन्-  
कलिवून् ॥

उन्होंने कहा—“हमें अपने प्रभु की ओर पुनः ( लौट कर ) जाना पड़ेगा ।”

( १८ ) व माऽ तन्किमु मिन्नारे इल्लाऽरे अन् आ-  
मन्नाऽ वि आयाति रब्विनाऽ लम्माऽ जाऽरअत्नाऽ,  
रब्बनाऽरे अफ्रिगु अलयनाऽ सवन्न तव फफनाऽ मुस्लि-  
मीन् ॥

और तू हमसे इस बात का प्रतिकार लेता है कि हमने अपने प्रभु ( के प्रमाणाँ ) पर—जब कि वे हमारे सामने प्रस्तुत किये गए—विश्वास कर लिया । प्रभो ! हमें थिरता अथवा धैर्य प्रदान कर और हम को सुसहमान ही मार ।”

[मीजल २ पारा ६ रु० १५।३]

( १ ) व काऽलऽल्ल मलज्ज मिन् कज्जमि फिअर्जना  
अतजरु मूसा व कज्जमहू लि शुफिसदूऽ फिऽल्ल अजि व  
यजरका व आलिहतका, काऽला सनुकत्तिलु अब्नाऽरे-  
अहुम्, व नस्तही निसाऽअहुम् व इन्नाऽ फज्जकहुम्  
काऽहिरून् ॥

और फ़िर्आन की जाति के मुखिया कहने लगे--“मूसा और उसके साथियों को क्यों ( जीवित ) छोड़ता है कि केश में उपद्रव उत्पन्न करें और तुझको और तेरी मूर्तियों को विमुख करें । वह कहने लगा कि अब हम उनके पुत्रों का वध करेंगे और उनकी पुत्रियों को जीवित रहने देंगे और फिर हम इनके स्वामी-शासक-हो जायेंगे ।

( २ ) काऽलाऽ मूसा लिऽउ मिहिऽ स्तईऽ नऽ विऽ  
ल्लाहि वऽस्त्रिऽल्ऽ इन्ऽल् अर्जा लिऽल्लाहि यूरिसुहा  
मय्यशाऽउ मिन् इवा दिही, वऽल् आ किऽवतु लिऽल्  
मुत्कीन् ॥

मूसाने अपनी जाति से कहा--“अल्लाह से सहायता की प्रार्थना करो और धैर्य धारण करो । पृथिवी अल्लाह की है, वह अपने भक्तों में से जिसको चाहे उसका संरक्षक नियत करे और अन्त में भय करने वालों का भला है ।”

( ३ ) काऽलूरे ऊज़ीनाऽ मिन्कब्लि अन्तऽ तियनाऽ  
व मिन् वऽदि माऽ जिऽतनाऽ; काऽला असा रब्बुकुम्

\* फ़िर्आन इस्राईलियों को अपने अधीन रखने के लिए यह अत्याचार करता था । भाष्यकारों का कथन है कि फ़िर्आन को स्वप्न हुआ था कि इस्राईल वंश का बालक ने उसका नाश कर दिया अथवा ज्योतिषियों ने उसे कहा था कि इस्राईल वंश का बालक मेरा घातक होगा ।

अय्युहत्तिका अदु व्व कुम् व यस्तखित्तफकुम् फिस्त  
अजि फ यन्जुरा कय्फा तय्मलून ॥

उन्होंने कहा—“हम को तेरे हमारे मध्य आने से पूर्व कष्ट  
रहा, और जबकि तू हमारे पास आगया है” उसने कहा—  
“कदाचित् तुम्हारा प्रभु तुम्हारा शत्रु को नष्ट करेगा और देश  
में तुम लोगों को उसका उत्तराधिकारी बना देगा और वह  
देखेगा कि उसके अन्दर तुम किस प्रकार काम करोगे ?”

[ मजिल २ पारा ९ व १६।१२ ]

( १ ) व लकड़ अखल्लनारे आल फिअरुना वि—  
स्सिनीना व नदिसम्मिन-स्तमराति ल अल्लहुम् यज  
क्करून ॥

और हमने फिअरून वालों को दुर्मितों के दुःख और फलों में  
हानि पहुंचा कर पीड़ित किया है। कदाचित् वह ध्यान दें।

( २ ) फ इजा जारेअतहुमुस्त, हसनतु कास्तुस्तनाऽ  
हाजिही, व इत्तुसिव् हुम् सय्यिअतु यत्तुअह्द विमूसा  
व मम्मअह, अलारे इबसाऽ ताऽइरहुम् इन्दुन्ताहि  
वला किन्ना अदसरहुन् ला यअलफून ॥

फिर जब उनको पुरख उपकार प्राप्त हुआ तो कहने लगे  
कि यह हमारे निमित्त है और यदि क्रोध पहुंचा तो वह उसे  
मूला और उसके साथ धालों का दुर्भाग्य कहने लगे। मुनलो !

उनका दुर्भाग्य अल्लाह ही के पास है; परन्तु बहुतों का मनुष्य ध्यान नहीं देते ।

( ३ ) व काऽल्लुऽ महमाऽ तअतिनाऽ विही मिन  
आयाति लिल तस्हरनाऽ विहाऽ फमाऽ नहु लका वि  
मुअमिनीन् ॥

और वे कहने लगे—“जो तु हमारे पास ऐसा प्रमाण प्रस्तुत करेगा कि जिससे हम पर उससे जादू करे तो हम तुझ पर विश्वास न करेंगे ।”

( ४ ) फ अर्सलनाऽ अलयहिमु-तूफाऽना वऽल्ल  
जराऽदा वऽल्ल कुम्मला व-उज़फाऽदिश्रा व-इमा आ-  
यातिम्मु फऽसलातिन् फऽस्तक् वरुऽ व काऽनुऽ फऽम्-  
म्मुजिमीन् ॥

तब हमने बग पर जल-झावन (आंधी), टिड्डी दल, चिचड़ी मैदक और लोह (आदि) अनेक चिन्ह पृथक् प्रेषित किये । फिर ( भी ) यह लोग अहङ्कार करते रहे और पाप तो इनका काम ही था । \*

\* शाह अब्दुल कादिर कहते हैं “हजरत मूसा को फिरोन से इस बात पर ४० वर्ष तक मुकाबला रहा कि बनी इस्राईल को अपने देश जाने दे । उसने न मोना उनके साथ से यह आपत्तियां आईं—नील नदी चढ़ गई सैत, बाग और घर बहुत मच्छाएँ और टिड्डी सैत खा गईं । मनुष्यों के शरीरों और कपड़ों में चिचड़ियां पड़ गईं । इसी प्रकार प्रत्येक बदार्य में भेदक फल गये और प्रत्येक पानी लोह बन गया । परन्तु कदापि न माना”

५) व लम्माऽ वक्र्या अल्यहिमु-रिज्जु काऽत्तूऽ  
 या मूसऽद् उलनाऽ रवका विमाऽ अहिदा इन्दका, लइन्  
 कशफता अन्नऽ-रिज्जा लहुअ गिनमा लपा व ललुसि-  
 लना मअका वनीरे इलाईल ।

और, जब उन पर प्रकोप प्रगट हुआ तो कहने लगे--“हे  
 मूला ! हमारे वाले अपने प्रभु की प्रार्थना ( उसी प्रकार ) कर  
 जैसा कि उसने तुझे सिला रखी है । यदि तूने हमसे यह  
 प्रकोप हटावा तो, निस्सन्देह, हम तुझ पर निश्चय (प्रिश्वास)  
 करेंगे और तेरे साथ इस्त्राइल की सन्तान को भेज देंगे ।

( ६ ) फ लम्माऽ कशफताऽ अन्हुमु-रिज्जा इलाऽरे  
 अजतिन् हुम् वऽलिगूहु इजाऽहुम् अन्हुम् ॥

फिर जब हमने एक अधत्रि तक उन पर से अपना प्रकोप  
 हटा लिया; और जो अधत्रि अल्लाह ने निश्चित की थी, व्यतीत  
 हो गई तो फिर अधिशामी हो गये ।

( ७ ) फऽन्तकम्नाऽ गिन्हुम् फ अग्रइना हुम्  
 फिऽल् यम्मि वि अन्नहुम् कज्जवूऽ वि आयातिनाऽ व  
 काऽवूऽ अन्हाऽ गाफिलीन् ॥

अतएव हमने उनके साथ प्रतिकार की नीति का अचलम्बन  
 किया और उन्हें गम्भीर जल ( समुद्र ) में डुपो दिया; क्यों कि

उन्होंने हमारी आयतें (आजायें) असत्य टहराई थीं; और उन पर ध्यान न देते थे ।

( ८ ) व अउरस्नुऽऽत् कउमऽऽत्तजाना काऽनुऽ  
यस्तजऽऽफूना मशाऽऽरिऽऽत् अजि व मगाऽऽरिवहऽऽत्तती  
वारकनाऽ फीहाऽ; व तम्मत् कलिमातु रविकऽऽत् हुस्ना  
अला वनीऽ इस्नाईला विमा सवरुऽ; व दम्मर्नाऽ माऽ  
काऽना यस्नुऽ फिऽऽऽनु व कउमुह व माऽ काऽनुऽ  
यऽऽरिशून् ॥

हमने उन मनुष्यों को—जो (फिऽऽऽन के यहां) बलहीन बन गये थे—उस (शाम की) भूमि के पूर्वीय भाग और पश्चिमीय भाग का, जिनमें, हमने (उपजाऊ होने को) समृद्धि दे रखी है, उत्तराधिकार दिलवाया; और इस्नाईल वंश पर,

\* शाह अब्दुलकादिर लिखते हैं—यह सब आपत्तियों उन पर एक सप्ताह के अन्तर से आईं । प्रथम हजरत मूसा फिऽऽऽन को कह चाते कि अल्लाह, तुम पर यह आपत्ति भेजेगा फिर वही आपत्ति आती । जब धवराते, नूसाकी खुशामद करते । उनकी आधी रात से आपत्ति हट जाती । परन्तु फिर अविश्वाली हो जाते । अन्त में यह प्रकोप आया कि आधी रात को सारे नगर में प्रत्येक पुरुष का प्रथम पुत्र मर गया । लोग रूतकों का शोक मनाने लगे मूसा अपनी जाति को लेकर नगर से निकल गये । फिर कई दिन बाद फिऽऽऽन ने धीला किया और इलजम नदी पर जा पकड़ा । मूसाकी जाति बच गई, और फिऽऽऽन सारी सेना समेत डूब गया ।

तेरे प्रभु के उपकार की प्रतिष्ठा पूर्ण हुई; क्योंकि उन्होंने श्रेय-धारणा स्थिर रखी। और, हमने फिर्छौन और उसकी प्रजा के बनाये हुई भवनों और कारीगरी को नष्ट-भूट कर दिया।

( ६ ) व जाऽ वजाऽ वि बनीऽ इस्राईलऽल् वहा  
फ अतऽल् अला कऽमि थ्य अकुफना अलाऽअस्नाऽमिन्ल-  
हुम् काऽलूऽ या मूसऽज् अल्लनाऽ इलाहऽन् कमाऽलहुम्  
आलिहतुन्; काऽला इन्नकुम् कऽमुन् तज्हलून् ॥

और, हमने इस्राईल वंशजों को समुद्र पार उतारा, फिर ऐसी जाति के पास पहुंचे, जो अपनी मूर्तियों की पूजा में प्रवृत्त थी; और (जिसे देख कर उन्होंने मूसासे) कहा—“हे मूसा! हमारे लिए भी एक ऐसीही मूर्तिकी रचना कर दे, जैसी कि इसके पास है।” (मूसा ने) कहा—“तुम लोग मूर्खता करते हो।”

( १० ) इना हाऽ उलाऽइ गुतवरुम्माऽ हुम् फीहि  
व वातिलुम्माऽ काऽनूऽ यअमलून् ॥

यह लोग जो (पूजा) कार्य कर रहे हैं, वह नष्ट होना है,  
और जो यह कर रहे हैं, मिथ्या है।

प्रतिष्ठा पूर्ण होने का तात्पर्य शाम पर इस्राईलियों का शासन होने से है।

इ मूर्ति पूजा और जैसा कि वेजोवी कहता है कि इनकी मूर्तियां व लोगों को नकल थी। इसीसे उन्होंने सोने का यद्दड़ा बनर कर पूजा की।



( ११ ) काऽला अग्यूरऽव्लाहि अब्गीकुम् इलाहऽ

व्व हुवा फ़ज़लकुम् अलऽल् आलमीन् ॥

कहा--“क्या तुम्हारे लिए अल्लाह के—जिसने तुमको समग्र संसार में श्रेष्ठता प्रदान की है--अतिरिक्त अन्य आराध्य देव लादूं ?”

( १२ ) व इजू अन्जयनाकुम्मिन् आलि फ़िर्अर्ना

यसमूनकुम् सूरेऽल् अजाऽवि युक्रतिलूना अब्नारे-  
अकुम् व यस्तहून निसाऽअकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम्  
वलाऽउम्मिरर्विकुम् अजीम् ॥

और, उस समय का स्मरण करो, जब कि हमने फ़िर्अौन के वंशजों से—जो तुम को घोर दुःख देते थे. तुम्हारे पुत्रों का बध कर डालते; और तुम्हारी पुत्रियों को जीवित रहने देते थे--तुम्हें सुरक्षित रक्खा; और इस में तुम्हारे पालनकर्ता का अत्यन्त अनुग्रह है ।

[ मंजिल २ पारा ९ सू० १७ । ६ ]

( १ ) व वा अद्राऽ मूसा सलासीना लय्लतव्व

अत् मम्नाहाऽ वि अश्रिन् फ़तम्मा मीकाऽतु रव्विहीरे

अर्वईना लय्लतन्, व काऽला मूसा लि अखीहि हारू-

नऽख्लुफनी फ़ी क़ब्मी व अस्तिह वलाऽ तत्तविअू-

सवीलऽत् मुफ़सदीन् ॥

और, मूसा से हमने ३० रात्रि की अवधि निश्चित की और उसको (उसमें) दस मिला कर पूर्ण किया, तब तेरे प्रभु की चालीस दिवस की अवधि पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हाऊन से कहा—“मेरी जाति में मेरा स्थानापन्न होकर रह, और अपना सुधार कर तथा कुमार्ग गामियों के पथ का अनुसरण न कर।”

( २ ) व लम्माऽ जाऽआ मूसा लियीकाऽतिनाऽ व कल्लमहू रब्बुहू काऽला रबि अरिनीऽ अन्जुर इल- यका; काऽला लन्तरानी वला किनिऽन्जुर इलऽल् जबलि फ इनिऽस्तकरा मकाऽनहू फ सऽफा तरानी, फलम्माऽ तजन्ला रब्बुहू लिल् जबलि जअलहू दकऽव्व खरा मूसा सह कऽन्, फलम्माऽ अफाऽका काऽला सुब्हानका तुव्तु इलयका व अनाऽ अव्वलुऽल् सुअमिनीन् ॥

मूसा से खुदा ने प्रतिज्ञा की थी कि तुम तूर पर्वत पर एक मास तक अल्ला की आराधना करो, हम तुमको तौरत प्रदान करेंगे। पीछे खुदा ने १ मास के बजाय ४० दिन चिल्ला—फर दिया कि मूसा अपनी आराधना करले। चिल्ला पूरा होने पर तौरत मिली और वह तूर से चले आये। कुछ भाष्यकार यह भी कहते हैं कि मूसा को अल्ला ने ३० दिन तक उपवास करने की आज्ञा दी थी, परन्तु जब ३० दिन दाद सला के मुंह में चढ़वू आने लगी तो उठने अपने दांत साफ किये। इस पर उसे आज्ञा हुई कि उसके मुंह से जो कस्तूरी की गन्ध आती थी वह दांतन से दूर होगई। उसे चाहिये कि १० दिन और शौ जा रखे और मूसा ने ऐसा ही किया।

और, जब मूसा हमारी ( नियत की हुई ) अवधि पर उपस्थित हुआ; और उससे उसके प्रभु ने वार्ता की तो ( मूसा ) कहने लगा—“हे पालनकर्ता ! तू मुझ को अपना दर्शन दे, जिससे कि मैं तुझ पर दृष्टि डाल सकूँ ।” (अल्लाह) बोला—“तू मुझे कदापि न देख सकेगा; परन्तु पर्वत को और देखता रहा जब वह (पर्वत) अपने स्थान पर स्थिर हो जायगा तो तू मुझे आगे देख सकेगा ।” फिर जब उसका पालनकर्ता पर्वत को और प्रगट हुआ तो उसको मिट्टी में मिला दिया; और मूसा अचेत होकर गिर पड़ा । फिर जब सावधान हुआ, कहने लगा—“तेरा स्वरूप शुद्ध है; मैं तेरे पास तोबा (पाप-कामा-प्रार्थना) करता हूँ; और मैंने सब से प्रथम विश्वास किया ।”

( ३ ) काज्जा या मूसाः इन्निऽस्तफय्तुका अल-  
नार्सिस विरिसालाती व विकलाऽमी फखुज्माः आत-  
य्तुका व कुम्मिन-रशाकिरीन् ॥

( अल्लाहने )—कहा, “हे मूसा ! मैंने अपना संदेश भेजकर और (तुझ से) अपने साथ वार्तालाप करके तुझे । अन्य मनुष्यों में विशिष्टता प्रदान की । अतः जो मैंने तुझको प्रदान किया, उसे ग्रहण कर और कृतज्ञ रह ।

( ४ ) व कतब्नाऽलह फिऽल अल वार्सिह मिन्  
कुल्लि शय्इम्मउ इजत व्व त फसीलऽल्लि कुल्लि शय्इन्,

फस्वज हाऽ विकुव्वति व्वअ मुर् कउ मका य अस्वजऽ  
वि अह सनिहाऽ, साऽवुरीकुम् दाऽरऽल् फा सिक्कीन् ॥

और, हमने उसको पट्टिकाओं पर प्रत्येक पदार्थके सम्बन्ध में शिक्षा और प्रत्येक वस्तु को विस्तृत व्याख्या लिख दी। अतः उनको शक्ति के साथ ग्रहण कर, और अपनी जाति से कह कि उसकी श्रेष्ठ शिक्षाओं को ग्रहण किये रहे। अब मैं तुमको दुष्टात्माओं का वास स्थान दिखलाऊँगा।

( ५ ) स अस्सिफु अन् आयातियऽल्लजीना यतक-  
व्वरुना फिऽल् अजि वि गयुरिऽल्, हक्कि व इय्यरउऽ  
कुल्ला आयतिल्लाऽ युअमिनुऽ विहाऽ, व इय्यरउऽ  
सवील-रु रिद लाऽ यत्तखि जूहु सवीलऽन्; व इय्यरउऽ  
सवीलऽल् गय्यि यत्तखि जूहु सवीलऽन्; जालिका वि  
अन्नहुम् कज्जवूऽ वि आयातिनाऽ व काऽनुऽ अन्हाऽ  
गाफिलीन् ॥

और, पृथिवी पर व्यर्थ अहङ्कार करने वाले लोगों का मैं अपनी आयतों से विमुक्त कर दूँगा। और यदि वे समग्र आयतों को भी देखें तो निश्चाल न करें; और यदि वे सुधार का मार्ग देखें तो वे इसे अपना मार्ग निश्चित नहीं करते, और यदि विपरीत मार्ग देखें तो उसे ( अपने लिए सीधा ) मार्ग निश्चित करें। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को असत्य समझा और बनसे अनभिज्ञ रहे।

( ६ ) वऽल्लजीना वऽल्लुऽ विद्यायातिनाऽ व  
 लिङ्गाऽइऽल् आखिरति हयिनुत् अय्याऽल्लु हुम् इल्  
 जऽजऽना इल्लाऽ माऽ काऽनुऽ यऽमलऽन ॥

और जिन्होंने हमारी आयतें और अन्तिम ( प्रलय की )  
 श्रेष्ठ अस्तित्व समझीं, उनके जर्म नष्ट हुए, और जो आचरण  
 करते थे, वही परिणाम प्राप्त करेंगे ।

( मंजिल २ पं ९ क० १ वीं )

( १ ) वऽल्लुऽजा कऽउऽ सुना मिन वऽदीही  
 मिन हूलियिदिम् इऽलऽल् जऽदऽल्लाह सुनाऽरु ;  
 अलाम् चरऽऽ अल्लाह लाऽ मुकन्लिऽमुऽ वलाऽ यहदी-  
 हिम् सर्वालिऽन इऽल्लुऽ व काऽनुऽ कालिमीन् ॥

शोर, सूना की अनुपस्थिति में उसकी जातिने अपने आभू-  
 पणों में एक वत्स बना लिया, उसमें एक भइ और गाय के  
 रंगाने का शब्द था । उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे चार्ता-  
 लाप नहीं करता और न मार्ग दिखाता है; भइ (उसको पूजार्थ)  
 ग्रहण किया और वह अन्वयी थी ।

( २ ) वल्लम्माऽ मुकिला फीऽ अयदीहिम् व राऽउऽ-  
 अन्नऽम् कऽइ जल्लऽ काऽल् लइल्लाय ईम्नाऽ रब्बुऽनाऽ  
 व बगुफिलऽनाऽ लनकूनशा मिनऽल् खासिरीन् ॥

और, जब ( उन्होंने ) पश्चात्ताप किया और समझा कि

हमने नूल की, तो कहा—“यदि हम पर हमारा पालनकर्ता अनुग्रह न करे और हमें क्षमा न करे तो हम निश्चय नष्ट होंगे।

( ३ ) व लम्माऽ रजज्ञा मृसाऽ इत्ता कउमिही गज्वाऽना असिफऽन् काऽला विअसभाऽ खल पतुसूनी मिन् वथुदी अ अजिल्लुम् अत्रा रन्विबुम् ; व अल्कऽल अल्वाहा व अखजा यिरअसि अखीहि यजुर्हरे इलयहि; काऽलऽव्ना उम्वा इक्ऽल कउमऽस्तज्जफूनी व काऽहऽ यक्तुल ननी फलाऽ तुश्चित् वियऽल अत्रु दाऽअ वला तज् अलनी मत्रऽल कउमि-ज्जालिमीन् ॥

और जब सूर्या कुपित और शोकातुर हो अपनी जाति की ओर पुनः आया तो कहने लगा—“तुमने मेरे पश्चात् मेरा क्या दुरा प्रतिनिधित्व किया, अपने पालनकर्ता की आज्ञा में क्यों शीघ्रता की ?”

और, (यह कह कर) वह पट्टिकापें पट्टक दीं; और अपने भ्राता के शिर ( के बशों ) को पकड़ा, और उन्हें अपनी ओर लौचने लगा । उन्होंने कहा—“हे मेरी जननी के जनित ! लोगों ने मुझे निर्बल लयभा; और प्रायः मुझे बध करने का तत्पर थे । अतः मेरे ऊपर मेरे शत्रुओं को मत हँसा, और मुझे पापी पुरुषों से सम्मिलित न कर ।”

( ४ ) काऽला रन्विअफ़िली वलि अखी व अह खिन्नाऽ फी र,इतिका व अन्ता अर्हसु-रहिमीन् ॥

( तब मूसा ) कहने लगा—“हे पालनकर्ता ! मुझको और मेरे भाई को क्षमा कर; और हमारा अपने अनुग्रह में प्रवेश करा; और तू सर्वोपरि अनुग्रह कर्ता है ।

[ सं० २ सिपारा ६ रुकूअ १६।६ ]

( १ ) इन्नऽल्लज़ीनऽत्तखज़ऽऽल् इज्ज़ला सयनाऽ  
लुहुम् गज़बुम्भिरर्विहिम् व ज़िल्लतुन् फिऽल् इयाति-  
हुन्याऽ, व कज़ालिका नज़ ज़िऽल् मुफ्तरीन् ॥

हां, जिन्होंने वत्स (की मूर्ति) की रचना की, उनको अपने पालनकर्ता का प्रकोप पहुंचेगा और वे सांसारिक जीवन में नष्ट होंगे; और असत्यारोपण करने वालोंको हम यही दण्ड देते हैं।

( २ ) वऽल्लज़ीना अमिलुऽ-ससयिआति सुम्मा  
ताऽबूऽमिन् वअदिहाऽ व आमनू३ इन्ना रब्बका मिन्  
वअदिहाऽ लगफूरहीम् ॥

और, जिन्होंने हुकूम कमाये, और उसके पश्चात् क्षमा-  
प्रार्थना की तथा विश्वास किया, उन्हें तेरा दयालु पालनकर्ता  
क्षमा प्रदान करता है ।

( ३ ) वलम्माऽ सकता अम्मूसऽल् मज़बु अखज़-  
ऽल् अल्वाहा व फी नुस्वतिहाऽ हुदऽव्व रलतु  
दिल्लल्लज़ीनहुम् खिरर्विहिम् यर्हवून् ॥

और, जब मूसा का प्रकोप शान्त हुआ, उसने पट्टिकाएँ

उठालीं; और उनके लिखित नियमों में, उनके निमित्त—जो अपने पालनकर्ता से भय करते हैं—पथ प्रदर्शन है, अनुग्रह है।

( ४ ) वऽस्ताऽरा मूसा कउ मह सर्वैः ना रजुलऽ-  
 लिल ग्रीकाऽतिनाऽ, फलम्पाऽ अखजतहुमु-रजफतु  
 काऽला रन्वि लउ शिअता अहलक्तहुम्मिन् कन्लु व  
 इय्याऽया, अतुहलिकुनाऽ विमाऽ फअल-स्तुफहाऽउ  
 मिनाऽ इन् हिया इन्लाऽ फित्ततुका, तुजिन्लु विहाऽ  
 मन्तशाऽउ व तहदी मन्तशाऽउ; अन्ता वलिय्युनाऽ  
 फऽगफिलनाऽ वऽहम्नाऽ व अन्ता खयुरुऽल गाऽ-  
 फिरीन् ।

और, मूसा ने अपनी जाति से चालीस मनुष्य हमारे निश्चित समय को लाने के लिए ग्रहण किये; और जब भूचाल ने उन पर आक्रमण किया, ( मूसा ) कहने लगा—  
 “हे हमारे पालनकर्ता! यदि तू चाहेता, पहले ही उनको और मुझको नष्ट करता। क्या तू एक कार्यके कारण जो हमारे सुख लोगों ने किया—इमको नष्ट करेगा? यह सब तेरा परीक्षण है। जिसको चाहे, तू मार्गभ्रष्ट करे और जिसको चाहे सन्मार्ग पर प्रवृत्त करे। तूहो हमारा संरक्षक है। अतः हमें क्षमा कर; और हम पर दया कर, और तू क्षमा करने वालों में सर्वोपरि है।

( ५ ) वऽस्तुब्लनाऽ फी हाजिहि-हुन्याऽ इसनवऽ



वद फिऽल् आखिरति इन्नाऽ हुन्नारे इत्यका; काऽला  
 अजावीरे वसीबु विही मन् अशाऽउ, व रहती वसिअत्  
 कुल्ला शयइन्, फ सअक्तुबुहाऽ लिज्जतीना यत्तकना  
 व युअतून-ज़क़ाता वऽल्लज़ीनहुम् वि आयातिना  
 युअयिनून् ॥

और, इस संसार में हमारे निमित्त नेकी लिखदे; और  
 अरत (घास्रत) में हम तेरी ओर लौटें। (तब इसने)  
 कहा कि मैं अपने प्रकोप को, जिसपर मैं चाहूँ, डालता हूँ; और  
 मेरी दया प्रत्येक वस्तु पर विस्तृत है। अतः जो भय रखते हैं,  
 ज़क़ात (दान) देते हैं और हमारी आयतों पर विश्वास रखते  
 हैं, उनके नाम उस (दया) को लिख दूँगे।

( ६ ) अल्लज़ीना यत्तविज़न-रूमल-अविय्यऽल्  
 उम्पिय्यऽल्लज़ी यजिदूनहू मत्तूवऽन् इन्दहुम् फि-तउ  
 राति वऽल् इन्जीलि यअमूरुहुम् विऽल् मअरूफि व य-  
 न्हाहुम् अनिऽल् मुनकिरा व युहिऽल् लहुम्-तय्यिवाति  
 व युहरिऽल् अलयहिमुऽल् खवारेइसा व यज़उ अन्हुम्  
 इसहुम् वऽल् अग़लालऽल्लती काऽनत् अलयहिम्, फऽ-  
 ल्लज़ीना आसनूऽ विही व अज़ज़रुहु व नसरुहु वऽत्तव-  
 उऽ-अरऽल्लज़ीरे उन्जिला मअहूरे उलाऽइका इमु-  
 लमुफिलहून् ॥

रसूल, उस निरक्षर नबी, का जो अनुसरण करने हैं कि जिस के सम्बन्ध में तौरत और इंजील में अपने पाल लेल पाते हैं, जो शुभ कर्म करने का आता देता है; और अशुभ कर्मों का निवारण करता है और उनके वास्ते पवित्र पदार्थ विहित बनलाता है तथा अपवित्र पदार्थों को निषिद्ध नियत करता और जुआ, जो उन पर था, उबारता है। अतः जिन्होंने उस पर विश्वास किया और उससे प्रेम किया तथा उसकी सहायता की, प्राचीनता और उसके प्रकाश ॐ का—जो उसके साथ उतरा है—जिन्होंने अनुसरण किया, वही सफल हुए।

[ मं० २ पारा ६, सू० २०।५ ]

( १ ) कुल् या३ अय्युहः—आऽसु इन्नी रसूलुऽज्जलाहि इलय्कुम् जमीअऽ (वि) ज्जलज़ी लह मुल्हु—समावाति वऽब् अज़ि, ला३ इलाहा इन्लाऽ हुदा सु, ली व शुगीतु फ़ आभिनुऽ विज्जलाहि व रसूलिहि—अदिमियऽत् उम्मि- गियज्जलज़ी युअभिहु दिज्जलाहि व कलिमातिही वऽत्तयिऊहु लअल्लकुम् तहत्तदून् ॥

तू कह, "हे लोगों! मैं तुम सब के लिए आत्ताह का पैगम्बर हूँ कि जिसका आसमान और पृथिवी में शासन है। उसके अतिरिक्त अन्य की आराधना (योग्य) नहीं। वह जीवित करता है और मारता है। अतः अत्ताह पर और

उसके प्रेषित उम्मी, अर्थात् निरक्षर नदी, पर-जो अल्लाह और उसके सब वाक्य पर विश्वास करता है—विश्वास करो और उसके आधीन हो, फदाचित् तुम्हें अम्माग विदित हो ।

(२) व गिन् कउमि मूसारे चम्पतुय्यइदूना विज्त्  
हकिक् व विही यअदिलून् ॥

और मूसा की जाति में (कुछ लोगों का) एक समुदाय है; जो सत्य का मार्ग बतलाते हैं; और उसी (की अनुकूलता) पर न्याय करते हैं ।

( ३ ) व कत्अना हुमुस्नतय् अश्रता अस्वास्तञ्  
चममञ् ; व अर् हुयनारे इला मूसारे इजिस्तस्काहु कउ-  
सुहरे अनिऽ जिन्वि असाऽकज्त् हजरा, फञ् वज-  
सत् गिन्हुस्नताऽ अश्रता अयुनञ् ; कइ अलिमा  
कुण्त्तु उनाऽसिम्मश्रवहुम् ; व जल्ललनाऽ अलय्हिमुज्त्  
गमाऽमा व अन्जलना अलय्हिमुज्त्मन्ना व-स्तन्वा;  
कुलूऽमिन्तय्यिवाति माऽ रजकनाकुम् ; व माऽ जलमूनाऽ  
वला किन् काऽनूरे अन्फुसहुम् यज़िलमून् ।

और, हमने उन ( इस्राईलियों ) को बारह जातियों में विभाजित किया, और जब इन जातियों ने उस ( मूसा ) से पानी मांगा तो हमने मूसा को आज्ञा भेजी—“अपनी लाठी से वह पत्थर मार !” तब उससे बाहर बारि-धाराएँ फूट निकलीं जोगों ने अपने अपने घाट पहिचान लिये, हमने उन पर मेघ

की छाया की और उन पर मन्ना व सत्वा उतारे "तुम ( उन ) पवित्र वस्तुओं का भोजन करो कि जो हमने तुम्हें आहार में प्रदान की हैं ।" परन्तु उन्होंने हमारी तो कोई हानि नहीं की किन्तु अपनी हानि करते रहे ।

( ४ ) व इज् कीला लहमुऽस्तुनूऽ हाजिहिऽल कर्षता व कुलुऽ मिन्हाऽ ह्य सु शिअ्तुम् व कूलुऽ हित्तु व्वऽद् खुलुऽस्त वास्वा मुज्जदऽ नगफिलकुम् खतीआतुकुम् , सनजीदुऽल मुहसिनीन् ॥

और, जब उसको आज्ञा हुई कि इस नगर में निवास करो; और इस में से, जहाँ से चाहो, खाओ एवं 'हित्तु' ( अर्थात् पाप क्षमा करें ) कही; और द्वारमें सिजदा ( अर्थात् प्रमाण ) करके हुए प्रवेश करो, तब हम तुम्हारे पास क्षमा करेंगे और उपकारियों को विशेष देंगे ।

( ५ ) फ़बइलऽख़जीना ज़लमुऽ मिन् हुम् कउलऽन् गयर्ऽख़जी कीला लहुम् फ़असन्नाऽ अलयहिम् रिज्जऽम्मिम-स्ममाऽइ विमाऽ काऽनूऽ यज़िलमून् ॥

फिर अन्यायियों ने उसके अतिरिक्त-कि जो उन्हें बताया गया था—और शब्द लिख दिया । अतः हमने उन पर उनके अन्वाब के प्रतिकार में आत्मान से प्रकोप ( अज्ञाव ) अवतीर्ण किया ।

[ मंजिल २, पारा ९, सू० २१ । ६ ]

( १ ) वस् अन्हुत् अनिष्त् कर्पनिष्त्त्रती काष्न्त्  
 हाष्जिरतस्त् वहि इज् यश्चदूना फि-स्मन्ति इज् नश्चती-  
 हिष् हीताष्त्तुहम् यत्सा सन्तिहिष् शुर्ग्याष्च यत्सा लाऽ  
 यश्चित्तूना-लाऽ तश्चनीहिष्, तन्नालिवा. नष्त्तुम् ;  
 विगाऽ काष्न्त् य फ्मुक्त् ॥

और, उनसे उस नगरी की दशा पूछो कि जो समुद्र के तट पर थी । जब छत्त की आग के समन्ध में मर्यादा का उल्लंघन करने लगे, तो फिर उन पर सप्त के दिवस पानी के ऊपर मञ्जुलियां आने लगीं और जिस दिन सप्ताह न हो, न आतीं । इस प्रकार हम उनको परीक्षा करने लगे, क्योंकि यह अनायासकारी थी ।

( २ ) व इज् काऽत्तत् उम्भतुम्निहम् लिमा तद्-  
 जना क्त्तम् (नि) ऽत्लाहु मुह्लिकुहुम् अज् मुश्चिज्-  
 तुहुम् अजाऽवन् शदीदन् ; काऽत्तुऽ मश्चिरतन् इला  
 रन्विकुग् व लश्चत्तुहुम् यद्दुक्त् ॥

और, अब उनमें एक ललुदाय कहने लगा—“उन लोगोंको क्यों शिक्षा करते हो, जिन्हें अल्लाह मानना चाहता है अथवा उन पर प्रचण्ड वक्रोप प्रगट करना चाहता है।” (इस पर वह) कहने लगा—“हमारे पालनकर्ता के सम्मुख आक्षेप दूर करने को और कदाचित् वह भय करें।

(३) फलम्माऽ नसूऽ माऽ जुक्किरुऽ विहीरे अन्नयन्ऽऽ  
 ल्लजीना यन्हउना अनि-स्त्ररेइ व अखज्जन्ऽऽल्लजीना  
 जलमूऽ वि अजाऽविन् वईसिन् विमाऽ काऽनूऽ यफ सु-  
 क्कन् ।

फिर जो उन्हें बतलाया गया था, जब उन्होंने भुला दिया,  
 (तो) हमने उनको बचा लिया जो कुकर्मों का निषेध करते थे  
 और पापियों को उनके आशा-उलंघन के प्रतिकारस्वरूप  
 प्रचण्ड प्रकोप में अस्त किया ।

(४) फ लम्माऽ अतउऽ अम्माऽ नुहुऽ अन्हु कुल्नाऽ-  
 लहुम् कूनऽ किरदतन् खासिईन् ।

अतः जो काम निषिद्ध बतलाया गया था, जब उससे बढ़ने  
 लगे तो हमने आशा दी कि स्थापित वानर बन जाओ ।

(५) इ इन् तअज्जना रब्बुका लयव असन्ना  
 अलयदिम् इत्ता यअमिऽल् क्रियामति मय्यसुमुहुम्  
 सूरअऽल् अजाऽवि; इत्ता रब्बुका लसरीउल् इकाऽव, व  
 इअहू लगफूरर्हीम् ॥

और, वह समय स्मरण करो, जब तुम्हारे पालनकर्ता ने  
 घोषित किया कि प्रलय ( क्रियामत ) के विवस पर्यन्त, वह  
 अवश्यमेव उन ( यद्दुदियों ) के विरुद्ध भेजेगा जो कि उनके  
 साथ कुव्यवहार करेंगे। तेरा पालनकर्ता शीघ्र दण्ड देता है;  
 और वह क्षमाशील और दयालु है ।

(६) व कृतअप्राहम् किऽत् अजि उययऽन, मिन-  
 सु-स्तालि, हुना व मिनहम् दूना जालिका व बलउना इम्  
 निऽत्, हलनाति य-स्तयिथाति हाअल्लहम् यजिउन् ॥

और, हमने उनकी भूमि पर निम्न समुदायों में विभा-  
 जित किया। उनमें से कुछ शुभाचारी और कुछ अन्य प्रकारके  
 थे; और उनकी सुखी और अचखुओं में परीक्षा ली। कदाचित्  
 यह पुनः लौटे।

(७) फ़ सुलफ़ा मिन, व अदि हिम् खल्फु खरि  
 सुऽत् कितावा यअरुजना झरफ़ा हाऽत् अदना व  
 यतूलूना सधुगफ़र लनाऽ, व इयअतिहिम् अर्जु म्मि, खु  
 यअरुजहु अत्तम् युअरुज् अलअतिम् मीसाऽत् कि  
 तावि अल्लाऽ य, क़लुऽ अलउल्लाऽऽदि इल्लऽत्, हका व द-  
 रऽ माऽ फ़ीदि, व-दाहऽत् आखिरतु खयकलिल्ल-  
 जीना यत्, हुना, अफ़लाऽ तयकिल्लून् ॥

और, हमने पर्याप्त उनके ऐसे उत्तर-धिकारी आये, जो  
 पुस्तक के उत्तराधिकारी थे। वे तुच्छ जीवन की सामग्रो लेते  
 हैं और कहते हैं कि (हमारा अपराज) हमको क्षमा होगा;

अ बहुदियों का अल्लाह के साथ विशेषता प्राप्त होने का गर्व था। वह  
 कहा करते थे 'नहु अफ़लाऽऽत् व अहदाऽहु' अर्थात् हम अल्लाह के  
 पुत्र और हमके प्रिय हैं और कुछ दिन के अतिरिक्त ग़र्बादि हमें क्षमा  
 भी न करेगी।

और यदि ऐसी ही सामग्री पुनः आवे तो ले लेवें । क्या उनसे पुस्तक के सम्यन्ध में प्रतिज्ञा नहीं ली गई कि अल्लाह पर सत्यके अतिरिक्त (अन्य असत्य बात) न बोलें, और जो उसमें लिखा है, वही पढ़ें और संघमियों को अन्तिम ग्रह (अर्थात् कयामत काल) श्रेष्ठ है । क्या तुम्हें दान नहीं ?

(८) वऽज्जलज़ीना युमस्सिहूना विऽल् कितावि व अकाऽमुऽस्यलाता; इन्नाऽ ता लुज़ीद अज़रऽल् मुस्लिहीन् ॥

और जो पुस्तक को दृढ़ता से ग्रहण करते हैं, प्रार्थनाएं (नमाज़) स्थिर रखते हैं, हम उन सुधारकों का फल नष्ट न करेंगे ।

(९) व इज् नतज़नऽल् जवला फ़ड् फ़हुम् कअन्नहू जु ल्लतुव्व जन्नूरे अन्नहू वाऽकिडन् विहिम् खुजूऽमा रे आतयनाकुम् विकुव्वति व्वऽज्जुरूऽमाऽफीहि लअल्लकुम् तत्तःकून् ॥

और, जब हमने उनके ऊपर वितान के मानिन्द पर्वत को उड़ाया तो वे डरने लगे कि वह उनके ऊपर गिरेगा । (हमने कहा-) "जो हमने तुम्हें प्रदान किया है, उसे दृढ़ता से पकड़े रहो, और उसे स्मरण करते रहो । कदाचित् तुम्हें भय हो ।"

[ मांजिल २, पात्रा ६, रूकूअ २२ । १० ]

(१) व इज् अरबजा रव्वुका मिन् लनीरे आदग



मिन् जु हरिहिम् जु रिंय्यतहुम् व अशहद हुम् अलाइ अन्फु  
सिहिम्; अलस्तु बिरबिबकुम्; काऽलुऽ वला, शहिदनाऽ  
अन्तकूलऽ यउमऽल् क्रियामति इनाऽ कुन्नाऽ अन्  
हाजाऽ गाफिलीन् ॥

और, जिस समय तेरे पालनकर्त्ता ने आदम के पुत्रों के  
पीठ में से उनकी सन्तान निकाली और उनसे उनके जीवा  
पर (इस प्रकार) वचन भराया कि, “क्या मैं तुम्हारा पालन  
कर्त्ता नहीं हूँ ?” यह (इसलिये किया कि) कहीं अन्तिम दिवस  
(क्रियामत)में यह न कहें कि—“हम उससे अचेत थे ।”

( २ ) अउत्कलूरे इन्नमाइ अश्रका आवाइउनाऽ  
मिन् कब्लु व कुन्ना जु रिंय्यतम्मिन् व अदिहिम्, अफ  
लुहिकुनाऽ विमाऽ फ अलऽल् मुबित्लुन् ॥

अथवा कहो कि शिर्क (द्वैतवाद) तो हमारे पुरुषाओं ने  
पहले ही निकाल दिया और हम तो उनके पश्चात् उत्पन्न हुई  
(उनकी) सन्तान हैं । तू हमको एक कर्म पर, जो अपराधियों  
ने किया है, क्यों नष्ट करता है ?

( ३ ) व कज़ालिका जुफ़स्सिलुऽल् आयाति व  
लअल्लहुम् यजिज़न् ॥

और, इस प्रकार हम आशाओं की विस्तृत याच्य करते  
हैं । अर्थात् वह लोभ लौट आवें ।

( ४ ) वऽत्तु अल्यहिम् नवअऽल्लजीरे आतयनाहु  
 आयातिनाऽ फऽनसलखा मिन्हाऽ फअत्वअहु-शायतानु  
 फ काऽना मिनऽल् गावीन् ॥

और, उनको उस मनुष्य का समाचार सुनाओ कि जिसे  
 हमने अपनी आयतें प्रदान कीं। पश्चात् वह उन्हें त्याग बैठे, फिर  
 उस पर शैतान ने शासन जमाया। फिर वह मार्ग-भ्रष्टों में  
 हुआ।

( ५ ) व लउ शिअनाऽ लरफअनाहु विहाऽ वला  
 किन्नहरे अरुल्ला इलऽत् अर्जि वऽत्तवश्रा हवाहु, फ मस-  
 लुहु कमसलिऽत् कल्वि, इन्तहिऽत् अल्यहि यन्हस अउ-  
 तनुकुहु यन्हस; जालिका मसलुऽत् कउ मिऽल्लजीना  
 कज्जवु वि आयातिना फऽकुसिऽक्कससा लअल्लहुम्  
 यतफक्करुन् ॥

यदि हम चाहते तो उसे ऊंचा उठा लेंगे, परन्तु वह  
 पृथिवी पर गिर पड़ा और अपनी इच्छानुकूल चला। अतः  
 उसका दृष्टांत कुत्ते के मानिन्द है कि उस पर यदि तु कुछ  
 लाव दे तो वह जीभ निकाल दे और छोड़ दे तो जीभ निफाल  
 दे। यह उन लोगों का दृष्टांत है, जो हमारी आयतों को असत्य  
 बतलाते हैं। अतः तु गाथाओं का वर्णन कर, कदाचित् वह  
 ध्यान करें।

( ६ ) सारैअ मसलऽ (नि) ऽल् कउ मुञ्जलीना  
कज्जवूऽ वि आयातिनाऽ व अन्फुसहुम् काऽनुऽ  
यज्जिभून् ॥

जो हमारी आयतों को असत्य बतलावे उनका दण्डित  
दूषित है, और वे आत्म-अत्याचार करते हैं ।

( ७ ) मय्यह् दिऽन्लाहु फ हुबऽल् मुह् तदी, व म-  
य्युज्जित् फ उलारेइका हुमुज्त् खासिरून् ॥

जिसको अल्लाह मार्ग दिखलावे, वही सन्मार्ग को प्राप्त  
करता है, और जिसको अल्लाह मार्ग-च्युत कर दे, वह हामि  
उठावेगा ।

( ८ ) बलकइ जरअनाऽ लि जहन्मा कसीऽर  
मिनऽल् जिनि वऽल् इन्सि लहुम् कुलुबुल्लाऽ यफ्कहना  
विहाऽ व लहुम् अत्रुयुल्लाऽ युन्सिरुना विहाऽ व लहुम्-  
आज़ाऽनु ल्लाऽ यस्मऊना विहाऽ; उलारेइका काऽल्  
अनऽऽमि बल् हुम् अज़ल्लु उलारेइका हुमुज्त्  
शाफितून् ॥

और हमने तर्क के निमित्त अनेकों मनुष्यों और जिनों  
( देशों ) की सृष्टि की है । जिनके हृदय हैं, वह समझते नहीं,  
जिनके नेत्र हैं, वह देखते नहीं, और दान हैं, उनसे शक्य नहीं

सूर्ये ब्रह्मरूपः—म०; २; पारा; ६ ह०; २३ । ५८१

करते। यह लोग चौपायों के मानिन्द हैं; प्रत्युत उनसे अधिक मार्ग-ब्रह्म वह लोग हैं, जो अचेत हैं।

( ६ ) व त्तिन्लाहिऽल् अस्माश्चऽल् हुस्ना फऽ-  
इङ्गहु विहाऽ वज्रहऽऽस्तङ्गीना युलऽिदूना फीरे  
अस्पाश्इही; सयुज्जूना माऽ काऽन्ऽ यञ्मलून् ॥

अल्लाह के सब नाम सुन्दर हैं, अतः वह (नाम) धोलकर ही उसका आवाहन करो; और जो उसके नामों के विषय में टेढ़े मार्ग पर चलते हैं, उन्हें त्याग दो। वह अपनी छति का प्रतिफल प्राप्त करेंगे।

( १० ) व मिञ्चन् खलकनारे उरुतु द्यह्दूना  
विऽल् इङ्गिक्क व विही यञ्मदिलून् ॥

और, हमारी सृष्टिमें एक ऐसा भी लज्जदाय है, जो सन्मार्ग लिखलाता है; और उसी के अनुकूल व्याप करता है।

[ संजिल १, पारा ९ ह० २३ ७ ]

( १ ) वऽन्तङ्गीना कज्जवू वि जायातिनाऽ सनख्खह  
रिजुहम्मिन् इम्मु लाऽ यञ्मलून् ॥

और, जिन्होंने हमारी आयतें अक्षय्य पतलाईं, उनको हम शलैः-शुनैः हन् प्रकार एकड़ेंगे कि जिलले उन्हें पता न चले।

\* उरुतु वें अल्लाह के निर्यामवै नाम छो जात हैं।

( २ ) व उम्ली लहुम् ; इना कयदी मनीन् ॥

और उन्हें ढील देंगा; यद्यपि मेरा कपट पक्का है ।

( ३ ) अब लम् यतफकरुम् माऽ । विसाऽहिबिहि-  
मिन् जिन्नतिन् ; इन् हुवा इल्ला, नज़ीरुम्मुवीन् ॥

क्या उन्होंने नहीं सोचा कि उनके हितैषी ( मुहम्मद ) की मति पर कुछ शैतान का शासन नहीं है; वह तो साक्षात् मय दिलाने वाला है ?

( ४ ) अब लम् यन्जु, रुऽ फी मलकूति-स्समावाति  
वऽल् अज़ि व माऽ खलकऽल्लाहु मिन् शय्द व्व अन्  
ज़साऽ अय्यकूना कदिऽत्तरवा अजलुहुम् फ़ निअरिय  
हदीसिन्, वच्चादह युअ्मिन् ॥

क्या आकाश और पृथिवी के सामान्य तथा उस पस्तु पर जो अल्लाह ने रची है—दृष्टि नहीं डाली ? और यह इसलिए हो कि कदाचित् उनका निश्चित काल ( नाश ) निकट आपहुंचा है । अतः इसके एषवात् क्लिस पर विश्वास लायेंगे ।

( ५ ) मय्युजुलि लिऽल्लाहु फ़ ताऽ हाऽदिया लह;  
व यज़रुहुम् फ़ी तुमूयाऽनिहिम् यअ्महून् ॥

जिस अल्लाह मार्ग—भ्रष्ट करे, उसे कोई स-मार्ग सुमाने-वाला नहीं; और वह उनको उनकी उदरदता में भटकते हुए छोड़ रखता है ।

( ६ ) यस्य अलूनका अनि-स्ताअति अग्याऽना  
 मुर्त्ताहाऽ, कुल् इन्माऽ इन्मुहाऽ इन्दा रवी, लाऽ  
 शुजन्तीहाऽ तिवक्तिहाऽ इन्लाऽ हुवा, सकुलत् फि-स-  
 मावाति वऽत् अर्जि; लाऽ तअतीकुम् इन्लाऽ वगूततन्;  
 यस्य अलूनका क अनका इफिय्युन् अन्हाऽ; कुल् इन्माऽ  
 इन्मुहाऽ इन्दाऽन्लाहि वला किना अक्सर-नाऽसि  
 लाऽ यअलमून् ॥

( हे पैगम्बर ! लोग ) तुझ से उस साइत के सम्बन्ध में  
 पूछते हैं कि ( उस क्रयामत का ) कहीं ठिकाना भी है ?—  
 ( तू इनसे ) कह कि इस ( क्रयामत ) का बोध तो केवल मेरे  
 पालनकर्त्ता अल्लाहके पास है । वही उसको अपनी उल अवधि  
 पर प्रगट करके दिखलावेगा । वह आकाश और पृथिवी में एक  
 भागी घटना है, जो तुम पर आवेगी तो अकस्मात् आवेगी । हे  
 पैगम्बर ! यह लोग ) तुझ से पूछने लगते हैं, मानो तू उसका  
 खोजी है । तू कह—“उसका ज्ञान केवल अल्लाह के पास है;  
 परन्तु प्रायः लोगों में बुद्धि नहीं ।

( ७ ) कुल्लारे अम्बिहू लिन फसी नफुअऽन्वलाऽ  
 जराऽ इन्लाऽ माऽशाऽअन्लाह, यलत् कुन्तु अअलमुऽत्  
 गुय्वा लऽस्तकस्तु मिदऽत् खय्रि, व माऽ मस्तनि-

स्मरुत्, इन् अनाऽ इत्ताऽ नजीरुव्य वशीरन्ति कश्चि  
य्युञ्जिन् ॥

( हे पैगम्बर ! ) तू कह कि मैं न अपने आत्मलाभ का ही  
स्वामी हूँ और न हानि का; परन्तु ( जही होकर रहता है ।

यदि मैं परोक्ष का भेद जानता होता तो मुझे अनेक लाभ  
होते और हानि कदापि न पहुँचती । मैं तो ( केवल ) इतना ही  
हूँ कि विश्वासी लोगों को भय और हर्ष सुनाऊँ ।

[मिजल २ पाग ६ सू० ६४।१८]

( १ ) हुवऽल्लजी खलकश्चिपिस वा हिद-  
तिव्व जश्जला मिन्हाऽ जश्जहाऽ लयस्कुना इलयहाऽ;  
फ़ लम्भाऽ तगरशाहाऽ इमलत् इन्तऽन् खकीफ़ऽन्  
फ़ यरत् विही, फ़ लम्भाऽ इ स्ज़ल इश्शवऽल्लाहा रब्-  
हुमाऽ लहन् आतयत्तनाऽ स्साऽलि, हल्लनकूनन्ना मिन्-  
श्शाकिरीन् ॥

वही ( अल्लाह ) है, जिसने तुमको एक ही व्यक्ति से  
बनाया; और उसी से उलका जोड़ा ( हव्व स्त्री को ) बनाया,  
जिससे कि वह उसके साथ निवास करे । फिर जब पुरुषने स्त्री  
को ढांपा, उसके हल नोसा गर्भ स्थिर हुआ, फिर उसके साथ चलने  
फिरने लगी । फिर जब दोमल हुई तो दोनों ने अपने पानन-

ॐ सिद्धान्त है कि जब हव्व को उगल (गर्भ) रह गया, तो उसे पैंतान

कर्ता अल्लाह को ( इन शब्दों में ) आहूत किया कि यदि तू हमको सर्वथा स्वस्थ ( सन्तान ) प्रदान करे तो हम तुम्हें धन्यवाद दें ।

( २ ) फ़ लम्मा३ आताहुमाऽ साऽलि हऽन् जअला लहू  
शुरका३या फीमा३ आताहुमाऽ फतअलाऽब्लाहु अम्माऽ  
युथिकून् ॥

फिर जब उनको सर्वथा स्वस्थ ( बालक ) प्रदान किया गया तो उसके प्रदत्त पदार्थों समांश ( शरीक ) निश्चित करने लगे । फिर अल्लाह उनके समांश घताने से परे ( पृथक् ) है ।

( ३ ) अयुथिकूना माऽलाऽ यखुक्कु शय्अऽब्बहुम्  
युत्तकून् ॥

किन को समांश ( सांसीदार ) पताते हैं ?--जो एक पदार्थ भी उत्पन्न न कर सके और जो स्वयं उत्पन्न होते हैं ।

ने गर्मान दिये और प्रतिज्ञा की कि यदि वह बालक का नाम अब्दुल्ला ( अल्लाह का सेवक जैसा कि आदम ने लज्बीज, जिया मा ) के एथान में अब्दुल्ला हारस अथवा अलहासिस ( फरिस्तों में गैलान का नाम ) रखेगा तो वह उसे सुदार्थक बालक जनेगा, आदम इस बात पर सहमत हो गया और जब बालक उत्पन्न हुआ, उसे उसी नाम से पुकारा गया जिससे वह तत्काल मर गया । यह कहानी कर्ता त 'जाहन' शब्द से--जिनका अर्थ अर्थात् में धाती जोवने वादा और जो अर्थों में अब्दुल्ला एगिस पदाब्जता है--लिजात-लि की गई है ।



( ४ ) व लाऽ यस्ततीजना लहुम् नसऽव्वलाऽ  
अन्फुसहुम् यन्सुरुन् ॥

और न, उसको सहायता कर सकते हैं, और अपनी ही सहायता करते हैं ।

( ५ ) व इन्तइऊहुम् इलऽल्ल हुदा लाऽ यत्तबिऊ  
कुम् , सवाऽरेउन् अलऽयकुम् अदअउतुमूहुम् अम् अन्तुम्  
साऽमितून् ॥

और, यदि उनको सन्मार्ग पर बुलाओ तो तुम्हारे बतलाने पर न चले, अतः तुम्हारे लिए एक-सा है चाहे उन्हें बतलाओ अथवा मौन रहो ।

( ६ ) इन्नऽल्लजीना तइऊना मिन्दनिऽल्लाहि  
इवाऽहुन् अम्साऽल्लुकुम् फऽइऊहुम् फलऽयस्तजीवूऽ  
लकुम् इन्कुन्तुम् सादिकीन् ॥

जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त आहुत करते हो, यह तुम्हारे जैसे अल्लाह के आराधक हैं, कि यदि उनको निमन्त्रित करो तो उन्हें उचित है कि यदि बह सच्चे हैं तो तुम्हारा निमन्त्रण स्वीकार करें ।

( ७ ) अलऽहम् अर्जुलु व्यम्शूना विहाऽरे अम् लहुम्  
अग्दि व्यविऽशूना विहाऽरे, अम् लहुम् अम्पुनुयुधिसरूना  
विहाऽरे अम् लहुम् आजऽधु व्यस्मऊना विहाऽरे, कुलिऽ

इज्ज, शुरकाश्चा कुम् सुम्मा कीदृनि फलाऽ तुन्जिरुन् ॥

क्या उन ( देवों ) के पैर हैं जिनसे चलते हैं; अथवा उनके हाथ हैं जिनसे ग्रहण करते हैं, अथवा उनके नेत्र हैं जिनसे देखते हैं, अथवा उनके कान हैं जिनसे श्रवण करते हैं? तु कह-अपने साथियों को बुलाओ, फिर मेरे निमित्त पड़्यन्त्र रचो और विलम्ब न करो ।

( ८ ) इना वलिथिय यऽल्लाहुऽल्लजी नज्जलऽल्ल किताबा व हुवा यतवल्ल-स्सालिहीन् ॥

मेरा संरक्षक अल्लाह है, जिसने पुस्तक उतारी है, और शुभ उपासकों की संरक्षता करता है ।

( ९ ) वऽल्लजीना तइज्जना मिन्दूनिही लाऽ यस्त-कीजना नसकुम् वलाश् अन्फुसहम् यन्सुरुन् ॥

और, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त आहूत करते हो, यह तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते और न आत्म-रक्षा कर सकते हैं ।

( १० ) व इन् तइज्जहुम् इलऽल्ल हुदा लाऽ यस्म-ज्जऽ; व तराहुम् यन्जुरुना इलय्का बहुम् लाऽ युन्सिरुन् ॥

और, यदि उनको सन्मार्ग की ओर आमन्त्रित करो, तो कुछ न सुनें; और तू देखे कि वे तेरी ओर घुटते हैं; और कुछ नहीं देखते ।

( ११ ) खुज़िऽल् अफ्वा वअम्मुविऽल् उफि व  
अअरिज् अनिऽल् जाहिलीन् ॥

पूर्णतः क्षमा कर, और शुभ कर्म की आशा दे तथा शूरी  
से दूर रह ।

( १२ ) व इम्माऽ यन्ज़ा मज़का भिन-शाय्तानि  
नज् गुन् फऽस्तइज् विऽल्लाहि, इन्हू समीउन्  
शलीय् ॥

और, यदि तुम्हें फर्सी शैतान की उत्तेजना आवेशयुक्त कर  
दे तो अल्लाह की शरण पकड़, वही सुनता है, जानता है ।

( १३ ) इन्ऽल्लज़ीनऽत्तफऽ इज़ाऽ मस्सहुम् तार-  
इफुम्मिन-शाय्तानि तज़करुऽ फऽ इज़ाऽ हुम्मुन्सिरुन् ॥

जो (अल्लाह का) भय रखते हैं, उन पर जब शैतान की  
माया का प्रभाव पड़े, अल्लाह का स्मरण करते हैं । फिर तब  
उनको बोध हो गया ।

( १४ ) व इक्वाऽनुहु ग् वमुद्दूनुहुम् फिऽल् गयिय  
सुम्मा लाऽ युक्सिरुन् ॥

और, उन (शैतानों) के भाई उनको भूल की ओर प्रवृत्ति  
करते हैं । फिर उसमें कोई न्यूनता नहीं करते ।

( १५ ) व इज़ाऽ लम् तअतिहिम् विआयतिन्  
काऽल् लउल्ऽज्तवय्तहाऽ कुल् इअमार अत्तविउ माऽ  
यू, हारे इलय्या पिररवी हाज़ाऽ वसारइरु पिररबिकुम् व  
इद्वर रऽवृन्ति कऽमियुअमिनुन् ॥

और, यदि कहीं तु उनके पास कुरान की कोई आयत न लेकर जावे तो कहें—“तू क्यों छांटकर न लाया ?” (हे पैगम्बर! मैंने) तू कह कि मैं उसी पर चलता हूँ, जो मेरे पालनकर्त्ता की, और से मुझ पर आशा आवे ।

( १६ ) व इज़ाऽ कुरिअऽलु कुर्आलु फऽस्तमिजऽ लहू व अनिसतूऽ लऽल्लहुम् तु हऽमून् ॥

और, जब कुरान पढ़ा जावे तो उस ओर कान रखो और मौन रहो; कदाचित् तुम पर अदुआ हो ।

( १७ ) वऽज्जुर्बका फी नऽफसका तजर्हऽव्व खीफतऽव्वदूनऽल जहि मिनऽल कऽलि दिऽल गुदुन्वि वऽल आसाऽलि वऽलाऽ तकुम्मिनऽल गाफिलीन् ॥

और, अपने अन्तःकरण में डर कर और (साधारण) वाणी के शब्द से धीमे शब्द में प्रारतः और सायं के समय, अपने पालनकर्त्ता का स्मरण कर और अचेत मत हो ।

( १८ ) इज्जल्लज़ीना इन्दा रव्विका लाऽ यस्त- मियरुना अन् इ वाऽदतिही व युलव्विहू नहू व लहू यस्जुदून् ॥

जो लोग तेरे पालनकर्त्ता के पाल हैं, प्रार्थना से प्रमाद नहीं करते, और उसके शुद्ध स्वरूप का स्मरण करते हैं; और उसी को सिजदा (साष्टांग दण्डवत्) करते हैं ।

---

ॐ कुरान में पञ्चशालीन समाज का नहीं वर्णन नहीं । हाँ, इस आयत में स्पष्टतः सायं प्रारतः मासिक प्रार्थना की ओर संकेत है जो आर्याओं की सभ्यता का अनुकरण है ।

\* ओम् \*

## सूरये-अनफाऽल्

### नवें पारे का शेषांश

मँजिल २ पारा १ ह० १०

( १ ) यस अलूनका अनिऽल्, अनफाऽब्बि; कुलिऽ  
 ल्, अनफाऽल्बु खिन्लाहि व-रसूलि, फऽत्तकुऽऽल्लाहा व  
 अस्त्रिहूऽ जाऽता वयुनि कुम् वअतीउ,ऽऽल्लाहा व रसू-  
 ल्हरे इन् कुन्तुम्मुअमिनीन् ॥

( हे पैगम्बर ! ) लोग तुझ से लूट के धन के सम्बन्ध में  
 पूछते हैं, तू कह "लूट का माल अल्लाह का और पैगम्बर  
 (मुहम्मद सा०) का है। अतः अल्लाह से डरो और परस्पर

ॐ यह सूरत मदीने में हिजरी के दूसरे वर्ष में उतरी। इसमें १० श्लोक  
 और ७५ आयतें हैं। इसका अधिकांश बद्र के युद्ध सम्बन्धी चमत्कारों के  
 सम्बन्ध में है। अनफाल का शब्दार्थ दूरकर माल, अतः सूरत का आरम्भ हो-  
 काफिरों से लूटे हुए माल के विभाजन की मीमांसा करते हुए होता है। बद्र  
 के युद्धमें लूटे हुए मालके सम्बन्ध में मुहम्मद साहब के हरे के रत्नकों ने मुह-  
 म्मदनादिव से यह प्रश्न पूछा था, जिसका उत्तर हुजरत ने यह दिया कि लूट  
 का माल अल्लाह और पैगम्बर का है।

सन्धि करो, और यदि विश्वासी हो तो अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा का अनुसरण करो ।

( २-३ ) इन्नमऽऽल्लु मुअ्मिनुनऽऽल्लजीना इजाऽ जुकारऽऽल्लाहु व जिलत कुल्लुहुय व इजाऽ तुलियत अल्यहिम् आयातुह जाऽदतुहुय ईमाऽनऽ व अल्ला रवियहिम् यतककलनऽऽल्लजीना युकीमून-ससलाता व मिल्माऽ रज्जनाहुय युनफिकून ॥

विश्वासी (मुसलमान) वही हैं कि जब अल्लाह का धर्म आता है, उनके हृदय भयभीत हो जाते हैं; और जब उनके प्राण्य को पढ़ते हैं तो उनका विश्वास बढ़ता है और अपने पालनकर्ता पर विश्वास रखते हैं ।

( ४ ) अल्लारिहका हुगुऽल्ल मुअ्मिनुना इक्कऽन ; लहुय दरजातुन इन्दा रवियहिम् व रागफिरतुव्व रिफ्फुन करीम् ॥ ४ ॥

वही स्वयं विश्वासी (मुसलमान) हैं, उनको अपने पालनकर्ता के पास पदवियाँ (और) जमा और अनुग्रहों का अन्न प्राप्त है ।

( ५ ) कमार अस्सजजा रव्वुका यिन वय्तिका विऽल्ल हदिक व इला फरीकुऽम्मिनऽल्ल मुअ्मिनीना ल कारिहुन ॥ ५ ॥

जैसे तुम्हको तेरे पालनकर्त्ता ने सत्य कर्म के लिए अपने गृह से निष्कासित किया; और यद्यपि एक मौमिन मुसलमानों की मददली इसके विरुद्ध थी।

( ६ ) युजाऽदिलूनका फ़िऽल् हक्क वअद्दा माऽ तवय्यना कअन्नमाऽ युसाऽकूना इलऽल् भउति बहुम् यन्जुरून् ॥ ६ ॥

तुम्हसे सत्य बात प्रगट हुए पश्चात्, विवाद करते हैं, मानो उनको आज्ञा देलते हुये मृत्यु की ओर पठाते हैं।

( ७ ) व इजू यइ दुकुम्ऽल्लाहु इहूद-तारेइफतय्नि अन्नहाऽ लकुम् व तवद्ना अन्ना गय्रा जाऽति-शशउ-कति तकूनु लकुम् व युरीदुऽल्लाहु अय्यु हिक्कऽल् इका विकलिमातिही व यकतअ्रा दाऽविरऽल् काफ़िरीन् ॥ ७ ॥

और, जिस समय अल्लाह तुमसे दो दलों में से एक (पर आक्रमण करने) की प्रतिज्ञा करताथा कि निस्सन्देह वह (लूट) तुम्हारे अधिकारमें आवेगी और तुम(वह)चाहते थे कि जिसमें

---

\* मुहम्मद साहब ने ठहरा लिया था कि उस कुरेश के व्योपातियों के दल पर—जो भूरियाने मक्काको जोरहा था—घोले से आक्रमण करें। अबूसफियान जो इस दल का दलपति था—इस बात को जान गया और मक्का को समाचार भेजा। वहाँ से एक सहस्र शस्त्रधारी मनुष्य चल पड़े इस कारण मुहम्मदसाहब के अनुयायियों में विवाद हुआ, कोई तो आक्रमण करने के पक्ष में थे और कोई विपक्ष में।

तुम्हारे कांटा न लगे और वह तुम्हें मिल जाय, और अल्लाह चाहता था कि सत्य की अपने वाक्यों से पुष्टि करे और काफिरों का पृष्ठ भाग (पीछा) काटे ।

( ८ ) लियु, हकिक्ऽल्, हक्का व युन्तिलऽल्, वाऽ-  
तिला व लउ करिहऽल्, मुजिमून् ॥ ८ ॥

जिससे सत्य को सत्य (सिद्ध) करे और मिथ्या को मिथ्या (सिद्ध) करे और यद्यपि पापी सहमत न होंगे ।

( ९ ) इजू तस्तगीसूना रवकुम् फऽस्तजाऽवा  
लकुम् अनी मुमिहुकुम् वि अल्फिमिनऽल् मलाइइकति  
मुदिफीन् ॥ ९ ॥

और, जब तुमने अपने पालनकर्ता से प्रार्थना की तो उस के निमित्त इस बात को ग्रहण किया कि मैं तुम्हारी सहायता एक सहस्र\* फरिश्तों के साथ करूंगा, और उनके पीछे और भी होंगे ।

( १० ) वमाऽ जअलहुऽल्लाहु इल्लाऽ बुश्रा व  
लि तत्मइन्ना विही कुलूवुकुम्; व मऽ-नसु इल्लाऽ मिन  
इन्दिऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा अजीजुन्, हकीम् ॥ १० ॥

और, यह तो अल्लाह ने केवल शुभ समाचार दिया है:

---

\* स० आल इम्रान आयत १२० में फरिश्तों की संख्या ३००० है इसको यह कह कर समझाया जाता है कि पहले पहले १००० फरिश्ते थे पीछे ३००० हो गये ।



और यह इसलिये कि तुम्हारे मन सन्तुष्ट हों और सहायता तो केवल अल्लाह का और से है, अल्लाह शक्तिशाली और बुद्धिमान है।

( मंजिल, २ परा १, सू० ३२ )

( १ ) इन् युग्मशीकुयु-मुआऽसा आमनतम्मिन्हु व युग्मिज़लु अल्यकुम्बिन-स्तमाइइ माइअल्लि युतह हिरकुयु बिही व युग्महिवा अन्कुयु रिज्ज-शयानानि व लियविना अला कुलुविकुयु व युसुम्बिता विहिऽल् अकदाय् ॥ ११ ॥

जिस समय तुम पर अपनी ओर से रक्षा के लिए निद्रा भेज दी और तुम पर आम्मान की पानी उतारा ( वर्षाया ), जिससे उससे तुम को पवित्र करे और तुमसे शैतान को अपवित्रता दूर करदे और तुम्हारे हृदयोंको दृढ़ करदे और (साथही) तुम्हारे धन (भी) खिर करे।

( २ ) इन् यूही रब्बुका इलऽल् मलाइइकति इन्नी मअङ्गुयु फ़ सुम्बितुऽऽ ल्लज़ीना आमनुऽ; सउल्की फ़ी कुलुविऽल्लज़ीना कफरुऽ-हअवा फ़ऽजिबुऽ फ़उकऽल् अअनाऽकि वऽज्रिवुऽ मिन् हुयु कुल्ला बनाऽन् ॥ १२ ॥

और, जब तेरे पालन-कर्ता ने फरिश्तों को आह्वान भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अतः तुम तुसलपानों के मर्गोंको शुद्ध कर दो, मैं

काफ़िरों के मन में मय डाल दूंगा, अतः उनकी सरदरों द्वारा और उनकी अंगुलियों के अग्रभागों (पोरुओं) पर अघात पहुंचाओ (अर्थात् कुचलो) ।

( ३ ) ज़ालिका वि अन्नहम् शारेकहुऽऽल्लाहा व रदूलह, व मय्युशाऽकिऽल्लाहा व रभूलह, फ इन्ऽ-  
ल्लाहा शदीहुऽल् इफ़ाऽल् ॥ १३ ॥

यह इजतिये कि वह अल्ला और उसके पैगम्बर के वि-  
रोधी हुये और जो कोई अल्ला और उस के पैगम्बर का वि-  
रोधी हुआ तो अल्लाह की भीषण मार है ।

( ४ ) ज़ालिकुम् फज़कहु व अन्ना लिल् काफ़िरीना  
अज़ाव-न्नाऽ ॥ १४ ॥

इस तो तुम चखलो और जाने रहो कि काफ़िरों के लिये  
बोध का दुःख है ।

( ५ ) यारे अय्युहऽऽल्लाजीना आमरु इशाऽ लकी-  
तुहुऽल्लाजीना कफ़रुऽ ज़ह्रुऽन् फ लाऽ तुवरत्तु हुमुऽल्  
अवदार् ॥ १५ ॥

हे ईमान आलो ! जब तुम काफ़िरों से युद्धक्षेत्र में भिड़ो  
तो उनको पीट मत दो ।

( ६ ) व मय्युवलिहिम् यउमइज़िन् हुनुरहरे इरलाऽ  
मुत, हरिफऽन्लि किताऽलिन् अउ मुत, हथियज़ऽन् इला फि

अतिन् फ़क़्ह वाश्आ विग़ज़विम्मिनऽल्लाहि वमअ़्वाहु  
जहनमु; व विअ़्सऽल् मसीर् ॥ १६ ॥

जो मनुष्य उस दिन उन्हें और जो मनुष्य इसके अतिरिक्त मि  
युद्ध की निपुणता दिखाता हो अथवा सेना में जा मिला हो  
उन्हें पीठ दिखावेगा तो उस पर अल्लाह का प्रकोप होगा और  
उसका निवास नर्क है और वह कैसे बुरे स्थान पर ठहरेगा ।

(७) फ़ लम् तक्तुलूहुम् वला किन्नऽल्लाहा क़तल-  
हुम्, व माऽ रमय़ता इज़् रमय़ता वला किन्नऽल्लाहा  
रमा; व लियुब्लियऽल् मुअ़्मिनीना मिन्हु बलाश्अन्  
हसनऽन्, इन्नऽल्लाहा समीउन् अलीम् ॥ १७ ॥

अतः उनको तुमने नहीं मारा, परन्तु अल्लाह ने मारा और  
तूने उस समय जो) मिट्टी फेंकी थी, (वह) तूने नहीं फेंकी परन्तु  
अल्लाह ने फेंकी और क्या मुसलमानों पर अपनी शोर से उच्चम  
उपकार च हता था, निश्चय अल्लाह सुनता जानता है ।

( ८ ) ज़ालिकुम् व अन्नऽल्लाहा मूदिनु कय़दिऽल्  
काफ़िरीन् ॥ १८ ॥

यह तो हो चुका और ज्ञात रखो कि अल्लाह काफ़िरों के  
उपायों को शिथिल करेगा ।

( ९ ) इन्तस्तफ़ितहूऽ फ़ क़इजाश्अकुमुऽल् फ़त हु,  
व इन्तऽल्लहूऽ फ़ हुदा ख़य़रुल्लकुम्, यइन्तऽउदूऽ नउदह,

व लन्तुगिनया अन्कुम् फिअतुकुम् शय्अव्वलउ  
कसुरत् व अन्नल्लाहा मअल्ल मुअमिनीन् ॥ १६ ॥

यदि तुम विजय चाहो तो तुमको अल्लाह की विजय पहुंच चुकी, और यदि रुक जाओ तो तुम्हारा भला है; और यदि पुनः करोगे तो हम भी पुनः करेंगे, और तुम्हारा समुदाय तुम्हारे काम न आवेगा; चाहे अधिक ही क्यों न हो; और स्मरण रखो कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है।

[ मंजिल २ पारा १ रु० ३:६ ]

( १ ) या३ अय्युहऽल्लजीना आमनु३ अतीवऽऽ  
ल्लाहा व रगूलहू वलाऽ तवल्लउऽ अन्हु व अन्तुम् तस्म-  
ऊन् ॥ १० ॥

हे मुसलमानो ! अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा के आधीन रहो उसे सुने पीछे, उससे विमुख मत हो।

( २ ) वलाऽ तकूनऽ कऽल्लजीना काऽल्लू समिअनाऽ  
वहुम् लाऽ यस्मऊन् ॥ २१ ॥

और, वैरी मत हो जिन्होंने कहा कि हमने सुना और वे सुनते नहीं।

( ३ ) इजा शर-इवा निव इन्दऽल्लाहि-स्तुम्मुज्ज  
वुकमुज्जजीना लाऽ यअकिलून ॥ २२ ॥

अल्लाह के यहां निकट पशुओं में वही (काफिर) बहरे  
 यूँगे हैं जिन्हें पौध नहीं ।

( ४ ) व लउ अलिमऽल्लाहु फीहिम् खयरऽल्ल  
 अस्मअहुम् ; व लउ अस्मअहुम् लतवऽल्लउऽ व्वहुम्मु-  
 अरिजून ॥ २३ ॥

और यदि अल्लाह को इनमें कुछ सदगुण दिखाई देता तो  
 उनको सुनाता, और जो इन सबको सुनावे तो पराङ्मुख होकर  
 उलटते लौटें ।

( ५ ) या रे अन्सुहऽऽल्लजीना आमनुऽऽस्तजीबुऽ  
 लिऽल्लाहि व लि-रऽदति इजाऽदथाऽहुम् लिमाऽ युबीकुम् ,  
 वाऽअलमूऽ अलऽल्लाहा यहलु वयनऽल्ल परऽ व कन्बिही  
 व अश्ह इलय्हि तुहऽशरुन् ॥ २४ ॥

हे सुसलमानो ! अल्लाह और उसके पैगम्बर की आवा  
 सुन कर उस पर विश्वास करो जब कि वह तुमको एक (ऐसे)  
 कार्य के लिए-जिसमें तुम्हारा जीवन है-आहन करे; और यह  
 स्मरण रखो कि अल्लाह मनुष्य से उसके मन को रोक लेता है  
 और यह कि तुम को उसी के समीप एकत्रित होना है ।

( ६ ) वऽत्तकूऽ फिलतऽल्लाऽ तुसीयन्नऽल्लजीना  
 शलमूऽ विन्कुम् खाऽऽसतन् वा-अलमूरे अन्नऽल्लाहा  
 शदीदुऽल इकाऽव् ॥ २५ ॥

और, इस उत्पात से घृणा करो: तुम में से अन्यायियों पर विशिष्ट रूप से यह (प्रकोप) अवतीर्ण न होगा; और ज्ञात रहे कि अब्दुल्लाह का आतङ्क कठोर है ।

( ७ ) वऽज्जु कुरुरे इज्जु अन्तुम् कलीलुम्मुस्तज्जु-  
अफूना फ़िल् अज़ि तख़ाऽफूना अय्यतख़रफ़कुम्-जाऽसु  
फ़ आवाकुम् व अय्यदकुम् वि नसिही व रज़ककुम्सिन-  
त्तयिनाति लअल्लकुम् तररुन् ॥ २६ ॥

और, (उस समय का) स्मरण करो जब कि तुम ( मक्का ) देश में अल्पसंख्यक और पराधीनावस्था में पड़े हुये डरते थे कि कहीं तुमको लोग लुट ( न लें, फिर उसने तुमको (मदीने में) स्थान दिया और अपनी सहायता से बल प्रदान किया और तुमको भोजनार्थ पवित्र पदार्थ प्रदान किये कि कदाचित् तुम मृत्युता स्वीकार करो ।

( ८ ) याः अय्युहऽल्लज़ीना आमनूऽलाऽ तख़ुनु-  
ऽल्लाहा व-रमूला व तख़ुनूरे व अमानातिहुम् व अन्तुम्  
तअलमून् ॥ २७ ॥

हे सुखस्वानो ! अब्दुल्लाह और उसके पैगम्बर से छुल मत करो और न ज्ञान पूर्वक अपनी धर्मोदर में धोखा करो ।

( ९ ) वाऽअलमूम् अन्नमाः अम्वाऽल्लुहुम् व अउलाऽ-  
हुहुम् फ़ित्ततु च्व अन्नऽल्लाहा इन्दहरे अज़ुम् अज़ीम् ॥

और यह खान रहे कि तुम्हारी सम्पत्ति और सन्धति  
नाया-मोह है; और यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिकल है ।

[ सं० २ लिपारा-६ नक़्अ ४।६ ]

( १ ) या अय्युहऽऽल्लजीना आपनूरे इन्तसकुन्ला-  
हा यजूअल्लकुम् फुकाऽनऽव यकफ़फ़र्नकुम् सय्यि-  
अनिकुम् व यग़फ़िलकुम्; वऽन्लाहु जुल् फ़ज़िल-  
अज़ीम् ॥ २६ ॥

हे मुत्सलमानो ! यदि अल्लाह से भय करते रहोगे तो वह  
तुम में निरपेक्ष कर देगा और तुम से तुम्हारे पाप उतारेगा  
और तुम्हें क्षमाप्रदान करेगा; और अल्लाह का अनुग्रह  
महान् है ।

( २ ) व इज़् यम्कुरु विकऽल्लजीना कफ़रुऽ लियु-  
स्विनूका अड् यकतुलूका अड् युस्त्रिजूका; व यम्कुरुना  
व यम्कुरु न्लाहु; वऽल्लाहु ख़य्रुऽल् माऽकिरीन ॥३०॥

और जो यम्कुरि कपट करने लगे कि तुमको बिठवें  
अथवा जो तुम्हें अथवा निकाल दें और वह भी कपट करते  
थे और जो यम्कुरि कपट करता था, और अल्लाह सर्वोपरि  
कपटो ।

लूऽ कद् समिअनाऽ लउ नशाऽउ ल कुन्नाऽ मिस्ता  
हाजाऽ इन् हाजाऽ इल्लाऽ असाऽतीरुल् अक्वलीन् ॥३१॥

और जब कोई उन्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुनावे तो कहते हैं कि हम सुन चुके हैं, हम चाहें तो ऐसे सुना सकते हैं, यह कुछ नहीं है; केवल पूर्वजों की कहानियां हैं ।

( ४ ) व इज् काऽलुऽ-ल्लाहुम्मा इन् काऽना  
हाजाऽ हुवऽल् हक्का मिन इन्दिका फ अम्तिर् अल-  
यनाऽ हिजाऽरतम्मिन-स्समाऽइ अविऽअतिनाऽ वि  
अजाऽविन् अलीम् ॥ ३२ ॥

और जब कहने लगे कि हे अल्लाह ! यदि तेरी ओर से यही मत सत्य है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा अथवा हम पर दुःख का झण्ड उतार ।

( ५ ) व माऽ काऽनऽल्लाहु लियअज़िज़वहुम् व  
अन्ता फी हिम्, वमाऽ काऽनऽल्लाहु मुअज़िज़वहुम् व  
हुम् यस्तगिफरुन् ॥ ३३ ॥

और जब तक तू उनमें था, अल्लाह उन पर आतङ्क ( प्रगट ) न करता था; और जब तक वह ( पापों को ) क्षमा करता रहेगा, अल्लाह उन पर आतङ्क प्रगट न करेगा ।

( ६ ) व माऽ लहुम् अल्लाऽ युअज़िज़वहुमुऽल्लाहु  
वऽल्लाहु बहसु यमुदूना अनिऽल् मस्जिदिऽल् हराऽमि वमाऽ



फाऽबू रे अउलिया रेअहू; इन् अउलिया रेउहू रे इल्लऽल्ल  
मुत्तकूना वला किन्ना अक्सरहुम् लाऽ यअल्लमून् ॥३४॥

और उनमें क्या (गुण) है कि अल्लाह उन पर प्रकोप न करे और वह मस्जिद हरा म (काबे में जाने) से रोकते हैं, और (तद्यदि) उसके अधिकारी \* नहीं, उसके अधिकारी तो वही हैं जो संयमी हैं; परन्तु वह प्रायः पवित्र नहीं।

(७) व हाऽफाऽना सलाऽतुहुम् इन्दऽल्ल व्यक्ति  
इल्लाऽ मुकारेअज्व तस्दियतन्; फज कुऽल्ल अजाऽवा  
विषाऽ कुन्तुम् तदफुरन् ॥ ३५ ॥

और उनकी नमाज (प्रार्थना) कुछ न थी; (किन्तु) केवल काबे के पास स्त्रीटियां और तालियां बजाना; (Whistling

परन्तु: कुरैश ही काबा के अधिकारी थे, परन्तु वहाँ मूर्ति पूजा और अशुचित चैद्य कामें थे। इसीलिये कुरान उन्हें काबा का अधिकारी नहीं समझता; अन्यथा काबा तो उनकी कौन के अधिकार सदा में विजय के पश्चात् भी चला आता था।

† It is that they used to go round the Caaba naked, both men and women, whistling at the some time through their frog fingers and clapping their hands.

स्त्री पुरुष काबा की नगे होकर परिक्रमा करते थे और साथ ही ताली और चुन्कियां बजाते थे। इसी आयत का अर्थ पाकर—इसी के असत्य आधार पर आन्त के सुसलमान शखिखों के सामने आज्ञा बजाने से हिन्दुओं को रोकते हैं; परन्तु कुरान की आयत उन्हें यह अधिकार नहीं देती।

वेज्रावो में है कि कोई कहते हैं कि लोग इस प्रकार का कोलाहल मुहम्मद साहब की नमाज में दिव्व डालने को करते थे और कथ्य प्रार्थना करने का बहाना बनाते थे।

d ciapping) था, अतः अपने कुफू का फल आखादन  
ते ।

( ८ ) इन्नज्जलीना कफरुऽ युनुफिकना अम्बाऽ-  
हुयु खियहुदुऽ अन्न सदीलिऽल्लाहि; फ सयुनुफिकनहाऽ  
चा उरुलु अलय हिम् इस्ततन् सुम्मा युगुलनुन ।  
अल्लगीना कफरुऽ इला जहन्नमा युख्शरुन् ॥ ३७ ॥

सो लोग काफिर हैं, अपना द्रव्य ( इस्लामिये ) व्यय करते  
हैं कि ( लोगों को ) अल्लाह के मार्ग से रोकें, अतः असी और  
व्यय करेंगे, पश्चात् (अन्त में) उनको पश्चात्ताप होगा; और  
अन्त में पराजित होंगे और जो काफिर रहेंगे वे नर्क  
( दोज़ख ) का भेजे जावेंगे ।

( ९ ) खियमीजऽल्लाहुऽल खवीसा मिन-तयियवि  
व यज् अलऽल खवीसा बन्नजह अला बयज़िन फ अर्बु-  
मह जमीअऽन् फ यज् अलऽल फी जहन्नमा; उलाश्शका  
हुयुऽल खासिरुन् ॥ ३७ ॥

जिल्ले कि अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक् करे  
और एक अपवित्र को एक ( दूसरे ) अपवित्र पर रखे, फिर  
सब का हार करे, फिर उसको दोज़ख ( नर्क ) में डाले, यही  
होगा हानि आने का तो है ।

[ मैजिल २ पारा ६ रु ५।७ ]

( १ ) कुल्लिल्लज़ीना कफरुइ इय्यन्तहूऽ युगुफ-  
लहुम्माऽ कइ सलफा, व इय्य ऊदूऽ फकइ मज़त् मुन्न-  
तुऽल अव्वलीन् ॥ ३८ ॥

( हे पैगम्बर । ) तू काफ़िरो से कह दे कि यदि ( हमारे विरोध से ) रुके रहोगे तो जो कुछ कर चुके हो तम हो जायगा, और यदि वहां करोगे तो पूर्वजों का आदर्श ( दरइ इनके सामने ) पहले ही व्यतीत हो चुका है ( अर्थात् पूर्वजों के भोगे दरइ के अनुसार इन्हें दरइ भोगना पड़ेगा । )

( २ ) व काऽतिल हुम् इत्ता लाऽ तकूना फित्तनुव्व यकून-दीतु कुल्लुहू लिल्लाहि, फइनिज्जतहउऽ फ इन्नऽ-  
न्लाहा-विमाऽ यअमलू ना वसीर् ॥ ३९ ॥

और ( पैसी अवस्था में ) उनसे युद्ध \* करते रहो जब तक कि उपद्रव ( मूर्ति पूजा ) के सम्बन्ध में <1> किसी प्रकार

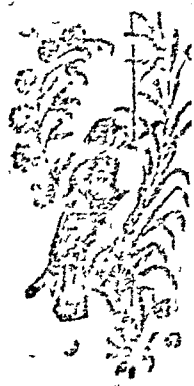
\* 'काऽतिल' का स्पष्ट अर्थ कत्ल करने का है, परन्तु शाह अब्दुल कादिर मौ० रफीउद्दीन, मौ० वली उल्लाह, George Sale, Cannon Sell, J. Passmore and J. M. Bodwell प्रायः सभी इसका अर्थ to fight अर्थात् युद्ध करना अथवा लड़ना करते हैं। अतः हमें भी यही मान्य है।

<1> Mr G. Sell इसका अर्थ इस प्रकार करते हैं—giFht against them un'il there be no opposition in favour of idolatory, and the religion be wholly God's.

विवाद) न रहे और सर्वत्र अल्लाह का मत अथवा  
 नाम (प्रचलित) हो जावे, पश्चात् यदि वह (कुफ़  
 र् मूर्ति पूजादि से) रुक जावे तो अल्लाह उनके कार्य  
 का है।

(३) व इन् तवन्नलड् फाऽअलमूर् अन्नऽल्लाहा  
 लाकुम् ; निअमऽल् मउला व निअम-न्न  
 र् ॥ ४० ॥

और यदि वह न माने तो समझलो कि अल्लाह तुम्हारा  
 धर्मक है, वह कैसा अच्छा समर्थक और कैसा अच्छा  
 धायक है !



# पारा वाऽअलम

( ४ ) वाऽ अलमूरे अन्नमाऽ गनिन्नुम्भिन शय इन्  
 क अन्ना लिन्लाहि खुहुसह व लिर्नलि व लिज्जिल  
 कुर्या दऽल् यनामा दऽल् मन्नाहीनि दऽन्नि-ससबीलि  
 इन्कुन्तुम् आगन्तुम् विन्लाहि वमाऽ अन्नजन्नाऽ अला  
 द्वाब्दिनाऽ यउ मज्हा, पुर्नार्नि यउ मज्हा, तदऽल् जम्-  
 झानि, वज्जलाह अला हुजिल शय इन् कदीर् ॥ ४१ ॥

और धान रहे कि कोई वस्तु लूट के माल में लाओ तो,  
 तुमने उस वस्तु पर—जां हमने अपने भक्त ( मुहम्मद ) पर  
 खेद # के दिन, और उस दिन, जब दो सेनाएं भिड़ीं, उतारी  
 है—विश्वास किया है, इराम से पञ्चमांश अल्लाह के  
 ( और ) पैगम्बर के, सम्बन्धी के, और अनाथ और याचक के  
 तथा पशिक के अगमिल है; और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर  
 शक्तिमान् ( शासक ) है ।

यह का बुद्ध आकस्मिक था, शिरो की इच्छा बुद्ध की न थी। इय से  
 मुसलमानों का निरोह काफिरों पर बढ़ कर गया उधर से अयूनुस निरोह  
 की सहायता को, अला ती निरोह बढ़ कर निकल गया। अयूनुस दोनो  
 सेनाओं का मामना हुआ और मुसलमान विजयी हुए। यदि यह बुद्ध  
 होता तो प्रत्येक अपने बल की प्रशंसा करता, इससे मुसलमानों का सब  
 विदित हो गया ।

( ५ ) इज् अन्तुम् विऽल् उद्दति-हुन्याऽ व हुम्  
 विऽल् उद्दतिऽल् कुस्वाँव-रक्वु अस्फला मिन् कुम् ;  
 वलड् तवाऽअत्तुम् लऽस्तलफ्तुम् फिऽल् मीआदि व  
 स्ता किल्लियकिन्नयऽल्लाहु अम्रऽन् काऽना मफ्ऽलऽ  
 ल्लियह् लिका मन् हलका अन् वधियनति व्व यहा मन्  
 हय्या अन् वधियनतिन् ; व इन्नऽल्लाहा लसमीउन्  
 अलीम् ॥४२॥

और जिस समय तुम वादी के इल और थे और वे उधर,  
 दूसरी ओर थे और अश्वारोही तुम से नीचे पहुँच गये थे;  
 और यदि तुम परस्पर ( लड़ने को ) प्रतिज्ञा कर लेते तो  
 निश्चित (काल) पर न लड़ते; परन्तु अल्लाह को एक कार्य—  
 जो ( उसके यहाँ स्वीकार ) हो चुका था—पूरा कर डालना  
 था, जिससे जिस मरना है वह ( मुसल्मान होने की घोषणा  
 की ) स्पष्टता के साथ मरे और जिस जीवित रहना है वह मौ.

ॐ वद का युद्ध आकस्मिक था, किसी की इच्छा युद्ध की न थी, उधर  
 से मुसल्मानों का गिरोह काफिरों पर चढ़ कर गया, उधर से अबूजहल  
 गिरोह की सहायता को चला। गिरोह बच कर निकल गया। अकस्मात्  
 दोनों सेनाओं का सामना हुआ और मुसल्मान विजयी हुए यदि वह युद्ध  
 न होता तो प्रत्येक अपने बल की प्रगसा करता, इस से मुसल्मानों का  
 बल विदित हो गया।

( मुस्लिम होने की घोषणा की ) स्पष्टता के साथ जीवित रहे; और अल्लाह सुनता है और जानता है ।

( ६ ) इजू युरीकहु मुस्लाहु फी मनाऽभिका कली-  
लऽन्; व लउ अराकहुम् कसीरऽखफशिल्तुम् व ल  
तनाऽज़अ तुम् फिऽल् अम्रि वला किन्नऽल्लाहा  
सल्लामा; इन्नहू अलीमुन् विज़ाऽति-स्सुदूर् ॥४३॥

और जब अल्लाह ने उन्हें तेरे स्वप्न में अल्प संख्यक ( करके ) दिखलाया और यदि वह बहुसंख्यक ( करके ) दिखलाता तो तुम लोग कायरता करते और ( युद्ध ) काटव ( को विवादग्रस्त बना, उस ) में विघ्न डालते; परन्तु अल्लाह ने रक्षा की; उसे—जो बात मनो में है—विदित है ।

( ६ ) व इजू युरीकुमूहुम् इज़िऽल्तकयतुम् फीऽअअयु-  
निकुम् कलीलऽव्व युक्लिलुकुम्फीऽ अअयुनिहिम् लिय-  
किज़यऽल्लाहु अम्रऽन् काऽना मफऽज़लऽन्; व इलऽल्लाहि  
तुर्जिऽल् उमूर् ॥

और जब मुद्भेड़ हुई, उस ( अल्लाह ) ने तुम्हारी दृष्टि में उस सेना के अल्प-संख्यक होने का अनुमान कराया और उनकी दृष्टि में तुम्हारे अल्प-संख्यक होने का अनुमान कराया, जिससे कि अल्लाह एक ( वह ) काम पूरा कर डाले जो ( उसके यहाँ निश्चित ) हो चुका था; और प्रत्येक कार्य की पहुँच अल्लाह तक ही है ।

( मांजिल, २ परा १०, सू० ६।४ )

( १ ) याः अय्युहऽऽल्लजीना आमनुरे इजाऽ  
लकीतुम् फिअतन् फऽस्वुतूऽ वऽऽकुरुऽऽल्लाहा कसीर-  
ऽल्लअल्लकुम् तुफिलहून् ॥४५॥

हे मुसलमानो ! जब किसी सेना से भिड़ो तो ( अपने  
विचार में ) स्थिर रहो; और अल्लाह का अतिशय स्मरण  
करो, कदाचित् तुम विजय प्राप्त करो ।

( २ ) व अतीउऽऽल्लाहा व रसूलहू वलाऽतनाऽजजऽ  
त फफुशलूऽ व तज्जहवा रीहू कुम् वऽस्विरूऽ; इन्नऽल्लाहा  
मअ-स्साबिरीन् ॥४६॥

और अल्लाह और पैगम्बर ( मुहम्मद ) के आधीन रहो  
और परस्पर विवाद अथवा विग्रह न करो; अन्यथा पराजित  
हो जाओगे और तुम्हारी हवा ( प्रतिष्ठा ) बिगड़ जायगी,  
और सन्तोष करो; अल्लाह सन्तोषियों के साथ है ।

( ३ ) व लाऽतकूनूऽ कऽल्लजीना खरजूऽ मिन्दियाऽ-  
रिहिहू वतरऽन्न रिआरेअ-ल्लाऽसि वय सुदूना अन् सवी-  
लिल्लाहि; वऽल्लाह विमाऽ यअमलूना मुहीत् ॥४७॥

और ऐसे बत बनो जैसे वे लोग थे, जो गर्व करते और  
मनुष्यों को ( अपना दर्प ) दिखाते हुए अपने गृहों से निकलते



और ( उन्हें ) अल्लाह के मार्ग से रोकते थे; जो वह करते हैं अल्लाह के अधिकार में है।

( ४ ) व इजू जयना लहुमु-शायतान अर्रुमाय्लहुम् व काऽला लाऽ मालिवा लकुमुऽल् यर्रुमा मिन-बाऽसि व इन्नी जाऽल्लकुम्, फलम्माऽ तराऽअतिऽल् फिम्-सानि नकसा अला अक्विबय्हि व काऽला इन्नी बरीरे उम्मिन्कुम् इन्नीरे अरा माऽ लाऽ तरन्ना इन्नीरे अस्वा-फुऽल्लाहा, वऽल्लाहु शदीदुऽल् इकाव् ॥४८॥

और जिस समय शैतान उनकी दृष्टि में उनके काम संभालने लगा और कहने लगा—“तुम पर आज के दिन कोई विजयों न होगा और मैं तुम्हारा सामी हैं, फिर जब दो सेनायें सम्मुख हुईं अपनी पड़ियों पर उतरी (लौटा) और बोला “मैं तुम्हारे साथ नहीं, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ; और अल्लाह का प्रकोप भीषण है।”

[ मंजिल २-पारा १० सू० ७१० ]

( १ ) इजू यकूलुऽल् मुनाफिकूना वऽल्लज़ीना फी फुलूविहिम्मरज़ुन् गर्रहारे उलाऽइ दीनु हुम्, व मय्यत-वककल् अलऽल्लाहि फ इन्ऽल्लाहा अज़ीजुन् हकीम् ॥४८

बलव मुनाफिक ( कपटी जन ) और जिनके मनों में रोग है,

कहने लगे—“इन (मुसलमान) लोगों को इनके मत ने मदीनमत्त किया है; और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे तो अल्लाह बलवान और बुद्धिमान है।”

(२) व लउ तरा३ इज् यतवफुफऽल्लजीना कफः  
रुऽल्ल मला३इकतु यजिबूना बुजूहहम् व अद्दाऽरहुम्,  
वजूकऽ अजाऽवऽल्ल हरीक ॥५०॥

और कभी तू (उस समय) देखे जिस समय फरिश्ते काफिरोंके प्राण हरण करते हैं उनकी पीठ और उनके मुख पर मारते हैं और (कहते हैं कि) अग्नि का दुःख चखलो।

(३) जालिका विमाऽ कद्यमत् अयदीकुम् व अन्नऽ  
ल्लाहा लयसा विजल्लाऽमिल्लिल्ल अवीद् ॥५१॥

यह उसीका\* प्रतिफल है जो तुमने अपने हाथों से (शुभा-शुभ कर्मों का विपाक) भेजा है; और यह इसलिए कि अल्लाह अपने भक्तों (मनुष्यों) पर अन्याय नहीं करता।

॥ यह आमत-उन आयतों के सर्वथा विरुद्ध है जिन में कहा गया है कि अल्लाह जो चाहता है सो करता है, मनुष्यों से बुरे भले कर्म कराता है, उन्हें मार्ग अष्ट करता है, जो बुरे कर्म हैं वह मनुष्य स्वयं करता है और भले अल्लाह करता है अथवा सन्मार्ग मुसलमानोंने ग्रहण किया है और काफिरों को अल्लाह ने बुरा का जन्मरोगो उत्पन्न किया है, और बहुत से मनुष्यों को दाज्जल भरने के लिए रचा है आदि ० यह आमत इन सब सिध्दा-मन्तव्यों के मूल पर कुठारवास्त करता है और वैदिक कर्मवाद की पुष्टि करती है।

( ४ ) कदअवि आलि फ़िअर्उना—वज्जलज़ीना  
मिन् कन्लिहिम्, कफ़रूऽ विआयातिज्जलाहि फ़ अखज़-  
हुमुज्जलाहु विजु.नूविहिम्, इनज्जलाहा कविश्युन् शदीदुज्ज  
इ.काऽव् ॥

फ़िअर्उन के लोगों की भी—जो उनसे पूर्व थे और ( जो )  
अल्लाह की आयतों को अस्वीकार करते थे—यही दशा हुई,  
अतः अल्लाह ने उनके पापों के कारण उन्हें पकड़ा; अल्लाह  
बलवान् और कठिन दण्ड देने वाला है ।

( ५ ) ज़ालिका वि अन्नज्जलाहा लम् यकु मुग़थिरऽ  
निअमतऽन् अन्अमहाऽ अला कउमिन् हत्ता युग़थिरूऽ  
माऽ वि अन्फुसिहिम्; व अन्नज्जलाहा समीउन् अलीम् ॥

यह इसलिये कहा कि अल्लाह अपने वरदान को—जो  
एक जाति को दिया गया—उस समय तक बदलने वाला नहीं,  
जिस समय तक वह अपने अन्तःकरण की बात को न बदलें,  
और अल्लाह सुनता है, जानता ( भा ) है ।

( ६ ) कदअवि आलि फ़िअर्उना—वज्जलज़ीना मिन्  
कन्लिहिम्, कज़ज़बूऽ वि आयाति रब्बिहिम् फ़ अहकना-  
हुम् विजु.नूविहिम् व अग्रकनार आल फ़िअर्उना, व  
कुल्लुन् काऽनूऽ ज़ालिमीन् ॥ ५४ ॥

यही दशा फिथ्रौन के लोगों की—जो उन में पहले थे—  
हुई, उन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को असत्य कहा,  
अतः उनके पापों के कारण उन्हें नष्ट कर दिया और फिथ्रौन-  
वालों को डूबो दिया और ( वे ) सब के सब अत्याचारी थे ।

( ७ ) इन्ना शर्र-द्वारवि इन्दल्लाहिऽल्लजीना  
कफरुऽ फ हुम् लाऽ युअमिन् ॥५५॥

अल्लाह के यहां सब से पामर पशु वह हैं जो काफिर हैं,  
अतः वह विश्वास नहीं करते ।

( ८ ) अल्लजीना आऽइत्ता मिन्दुम् सुम्मा यन्कु-  
जना अद्दहुम् फी कुल्लि मरतिव्व हुम् लाऽ यत्तकून् ॥

(जनसे तूने याचा भरी है, उनमें फिर वह प्रत्येक वार  
अपना वचन भंग करते हैं और उन्हें भय नहीं ।

( ९ ) फ इम्माऽतस्काफनहुम् फिऽल् हवि फ शर्रिद्-  
विहिम्मन् खल्फहुम् लअल्लहूम् तजक्करून् ॥५७॥

अतः यदि ये कभी युद्ध में तेरे हाथ लग जावें तो ऐसा  
दण्ड दे कि उनके अनुयाई देखकर ( भय से ही ) भाग,  
( और ) कदाचित् शिक्षा ग्रहण करें ।

( १० ) व इम्माऽ तव्वाऽफन्ना मिन् कउमिन् खियाऽनतन्  
फज्न् विन् इलय्हिम् अला सवाऽइन्, इन्ऽल्लाहा  
लाऽ युहिऽवुल् खाऽइनीन् ॥५८॥

और यदि तुम किसी जाति के छल का भय हो तो उन्हें यथा का तथा उत्तर ( छलका उत्तर\* छल करके ) दे; अल्लाह को छली प्रिय नहीं लगते ।

[ मँजिल २ पारा १० रु ८।५ ]

( १ ) व लाऽ यहू सबन्नऽल्लज़ीना कफ़रुऽ सबकुऽ इन्नहुम् लाऽ युअज़िज़ून् ॥५६॥

और काफ़िर लोग यह न समझें कि वह भाग निकले; वह थका न सकेंगे ।

( २ ) व अइहूऽ लहुम्मऽऽस्ततऽतुम्मिन् कुव्वतिव्व मिरिवाऽतिल् खयलि तुहिबूना विही अदुव्वऽल्लाहिवअव्व कुम् व आखरीना मिन्दूनिहिम् व लाऽ तअलमूनहुम्, अल्लाहु यअलमुहुम् ; वमाऽ तुन्फिकूऽ मिन् शय्इन् फी सबीलिऽल्लाहि युवफ़ा इलयकुम् व अन्तुम् लाऽ तुज़लमून् ॥६०॥

इस पर पास्मोर साहब एक टिप्पणी देते हैं—If the Muslims suspected people with whom a league had been made of treachery they might use counter treachery, although the use minds up the remark—“The God loveth not the treacherous, The road to Cominits weaking & treachery is here made Iny अर्थात् आयत में यद्यपि यह आज्ञा है कि खुदा को छली लोग नहीं भाते परन्तु छल करने की आज्ञा दी गई है और यहाँ छल का भाग सरल कर दिया है।

और उनसे युद्ध की योजना करो—जो भी सैन्यशक्ति का संचार छोड़े नांधने से कर सको ( करो ), जिससे अल्लाह के शत्रुओं पर, तुम्हारे शत्रुओं पर और इनके अतिरिक्त उन अन्य लोगों पर—जिन्हें अल्लाह जानता है; तुम नहीं जानते—प्रभाव पड़े; और जो अल्लाह के मार्ग में व्यय करोगे; तुम पर अन्याय न होगा ।

( ३ ) व इन् जन हूऽ लि-स्सलिम् फऽज्जन्हल्लाहऽ व तवक्कल् अलऽल्लाहि; इन्नहू हुव-स्समीउल् अलीम् ॥

और यदि वह सन्धि के लिए भुके तो तू भी उसी और भुके और अल्लाह पर विश्वास कर; निस्सन्देह वही सुनता ( और ) जानता है ।

( ४ ) व इय्युरीदूऽ अय्यरुदुका फऽ इन्ना हस्व-कऽल्लाहु; हुवऽल्लज़ीऽ अय्यदका विनसिही व विऽल् मुअ्मिनीन् ॥६२॥

और यदि वे तुम्हें छोला देना चाहें तो तेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है; उसी ने तुम्हको अपनी सहायता दी और मुस-लमानों को शक्ति प्रदान की ।

( ५ ) व अल्लफ़ा वय्ना कुलूबिहिम् ; लऽ अन्फक्ता माऽ फिऽल् अज़ि जमीअऽम्माऽ अल्लफ़ता वय्ना कुलूबिहिम् वलाकिन्नऽल्लाहा अल्लफ़ा वय्नुहुम् ; इन्नहू अज़ीजुन् हकीम् ॥६३॥

और मुसलमानों के मनो में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया; और यदि तुम भूमगुडल के समस्त काश ध्यय कर देते तो भी इनके मनो में प्रेम उत्पन्न न कर सकते थे। परन्तु अल्लाह ने इन लोगों में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया; निस्सन्देह वह प्रबल और प्रयत्नवान है।

( ६ ) या ३ अय्युहऽ-न्नविद्यु इस्वुकऽल्लाहु व  
मनिऽत्तवऽअका मिनऽल् मुअमिनीन् ॥६४॥

हे पैगम्बर ! अल्लाह और मुसलमान—जो तुम्हारे साथ हुनरमान हुए हैं—तुम्हारे लिये पयःपत हैं।

[ मं० २ पास १० रुकूअ ६।५ ]

( १ ) या ३ अय्युहऽ-न्नविद्यु इ रिजिऽल् मुअमिनीना  
अजऽल् किनाऽलि; इय्यकुम्मिन्कुम् इ श्रुना साऽविरुना  
यगिलऽमिऽअतयूनि, व इय्यकुम्मिन्कुम्मिऽअतुय्यगिलऽ  
अल्फऽम्मिनऽल्लजीना कफरुऽ विअन्नहुम् कऽमुऽल्लाऽ  
यफऽरूहून् ॥६५॥

पैगम्बर ! मुसलमानों को ( काफ़िरो के साथ ) युद्ध के लिये उत्तंजित करो, कि यदि तुम ( मुसलमानों ) में से स्थिर रहने वाले बीस (२०) भी होंगे तो वह दो सौ (२००) पर विजयी होंगे और यदि तुम ( मुसलमानों ) में से ( दो ) सौ

(१००) होंगे तो ( वे ) सहस्र काफ़िरो पर विजय प्राप्त करेंगे; क्योंकि यह ( काफ़िर लोग ) समझते ही नहीं।

(२) अल्अना खफ़फ़ऽल्लाहु अन्कुम् व अलिमा खअन्ना फ़िकुम् जअफ़ऽन्; फ़ इय्यकुम्मिन्कुम्मिऽअतुन् साऽ विरुय्यग़िलवूऽ मिऽअतयनि, व इय्यकुम्मिन्कुम् अल्फ़ु-अय्यग़लिबू अल्फ़यना वि इज़िनऽल्लाहि; वऽल्लाहु मअ-स्साव़िरीन् ॥६६॥

मुसलमानो ! अब अल्लाह ने तुम पर से अपनी आज्ञा का भार हलका किया और समझा कि तुममें निर्धलता है, अतः यदि तुममें से सौ सन्तोषी मनुष्य हों, तो वह दो सौ पर विजयी होंगे और यदि तुममें से सहस्र ( १००० ) हों तो ( वे ) अल्लाह की आज्ञा से, दो सहस्र २००० ) पर विजयी होंगे और अल्लाह सन्तोषियों के साथ है।

( ३ ) माऽ काऽना लिनविय्यिन् अय्यकूना लहु अस्ना हत्ता युस्रिना फ़िऽल् अज़ि; तुरीदूना अर्ज़-हुन्याऽ वऽ ल्लाहु युरीदुऽल् आख़िरता; वऽल्लाहु अज़ीजुन् हक़ीम् ॥६७॥

ॐ पहली इस प्रतिज्ञा के कि एक मुसलमान दस काफ़िरो के लिये काफ़ी है, फलस्वरूप एक मुसलान जलत होगया तब पहली आयत मरुख की गई और दूसरी आयत इस अन्वय युक्त आई कि सौ मुसलमान दो सौ मुसलमानों पर विजयी होंगे।



क्या पैगम्बर को चाहिए कि उसके यहां बन्दों ( कैदी )  
आवें जब तक कि वह पृथ्वी पर ( काफ़िरों का ) रकबा न  
करें; तुम संसार की भूमि चाहें हो और अल्लाह परलोक  
चाहता है; और अल्लाह प्रबल और युद्धिमान है ।

(४) लउलाऽ किताबुम्मिनऽज्जलाहि सवका लमस्स-  
कुम् फीमाऽ अरुजतुम् अजावुन् अजीम् ॥६८॥

यदि अल्लाह का शोर से पहिले से न लिजा होना तो  
तुम पर जो कुछ तुमने किया है, उसके निमित्त कठिन कोष  
उतरता ।

(५) फ कुलऽ भिम्माऽ गनिम्तुम् ह, लालऽन् तय्यि-  
वऽ व्वऽत्तऽऽकुन्लाहा; इन्नऽज्जलाहा गफूर्-रहीम् ॥६९॥

अतः पवित्र और भय गन्मन ( लट्ट के धन ) को  
लाओ और अल्लाह से डरते रहो; अल्लाह क्षमा करने वाला  
दयालु है ।"

म० २ पा० १०. रु० १०.६

याऽ अय्युहऽ-न्नय्यु कुल्लमिन् फीऽअयदीकुम्मि-  
नऽत्त अस्ताऽ इय्यअलमिऽज्जलाहु फी कुल्लुत्रिकुम् खयऽऽ-  
युअतिकुम् खयऽऽरम्मिम्माऽ उखिजा मिन्कुम् व यरिफ-  
लकुम्; वऽज्जलाहु गफूर्-रहीम् ॥७॥

हे पैगम्बर ! जो बन्दीजन तुम्हारे हाथ ( अधिकार ) में हैं उन्हें कहदे—“यदि अल्लाह को तुम्हारे मनों में कुछ भलाई खात होगी तो तुमको जो तुमसे छिन गया उससे अधिक प्रदान करेगा; और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है ।

( २ ) व इय्युरीदूऽ खियाऽनतका फ़क़द ख़ानुऽऽ-  
ल्लाहा मिन्क़व्लु फ़ अम्कना मिन्हुम्; वऽल्लाहू अलीमुन्-  
हकीम् । ७१॥

और यदि उन्होंने तुम्हें धोखा देने की इच्छा की तो ( समझो कि ) अल्लाह से पहले ही कपट\* किया है अतः उसने तुम्हें उन पर शक्ति प्रदान की है; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है ।

( ३ ) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व  
जाऽहदू वि अम्वाऽलिहिम् व अन्फुसिहिम् फ़ी सवीलिऽ-  
ल्लाहि वऽल्लज़ीना आवऽऽव्व नसरूऽ उलाऽइका  
वअज़ुहुम् अउलियाऽउवअज़िन्; वऽल्लज़ीना आमनूऽ  
व लम् युहाऽजिरू माऽल कुम्पिऽव्व लाऽ यतिहिम्मिन् शय्-  
इन् इत्ता युहाजिरूऽ व इनिऽस्तन्सरू कुम् फ़ि-दीनि

७ पा थात् अपने काफिर होने के कारण अल्लाह से छल किया है जैसा कि पहले भी आ चुका है कि काफिर अल्लाह से कपट करते हैं और अल्लाह उनसे कपट करता है । देखो प्रथम खण्ड ।

फ़ अल्यकुमु-न्नसु इल्लाऽ अला क़ुमिन् वयनकुम्  
 व वयनहुम्मीसाऽकुन्, वऽल्लाहु बिमाऽ तअमलूना  
 वसीर् ॥७२॥

जिन लोगों ने ( इस्लाम पर ) विश्वास किया और गृह  
 त्याग और अपने धन और प्राणों से अल्लाह के मार्ग में युद्ध  
 किया और जिन लोगों ने स्थान और साहाय्य दिया वह पर-  
 पस्पर ( एक दूसरे के ) मित्र हैं; और जिनोंने विश्वास किया  
 और गृह नहीं त्यागा तुमको उनकी मित्रता से, जब तक वह  
 गृह न त्याग आवें, कुछ प्रयोजन नहीं, और यदि तुमसे मत में  
 सहायता चाहें तो तुमको ऐसे लोगों की अपेक्षा कि जिनमें  
 और तुममें होड़ है उन्हें सहायता देना आवश्यक है; और  
 अल्लाह, जो तुम करते हो, देखता है ।

( ४ ) वऽल्लज़ीना क़फ़रुऽ वअज़ुहुम् अउलियाऽउ  
 वअज़िन् इल्लाऽ तफ़ुअलूहु तकुन् फ़ित्ततुन् फ़िऽल् अज़ि  
 व फ़साऽदुन् कयीर् ॥

और जो लोग काफिर हैं वे परस्पर एक दूसरे के मित्र  
 हैं; यदि तुम यों न करोगे तो देश में धूम मचेगी ( आन्दोलन  
 उठेगा ) और बड़ा उत्पात होगा ।

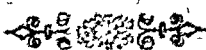
( ५ ) वऽल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरुऽ व जाऽहदूऽ  
 फ़ी सवीलिऽह्लाहि वऽल्लज़ीना आवउऽ व्व नसरु ३

उत्ताशइका हुमुऽल् मुअमिनुना हवकऽन; लहुम्मगिफरतु  
 च्व रिङ्कुन् करीम् ॥७४॥

और जिन लोगों ने विश्वास किया, और गृह त्यागे और  
 अल्लाह के मार्ग में युद्ध किये और जिन लोगों ने स्थान और  
 साहाय्य दिया वही निश्चय मुसलमान हैं; उनको क्षमा मिलेगी  
 और अन्त में अनुग्रह ।

( ६ ) वऽल्लजीना आमनुऽमिन् वअदु व हाऽ-  
 जरुऽ व जाऽहदुऽ मअकुम् फ उत्ताशइका मिन्कुम्; वाऽ  
 वुलुऽऽल् अ हाऽमि वअजु हुम् अउला वि वअजिन् फी  
 किताविऽल्लाहि; इन्ऽल्लाहा वि कुल्लि शयइन् अलीम् ॥७५॥

और जिन लोगों ने ( इस्लाम पर ) पीछे से विश्वास किया  
 और गृहों का त्यागन किया और तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध  
 किया फिर वह तुम्हों में से हैं; और अल्लाह की पुस्तक में  
 सम्बन्धी एक दूसरे के अधिक निकट हैं; निश्चय अल्लाह  
 प्रत्येक पदार्थ से परिचित है ।



### महिला मङ्गलाचार ।

विवाह, पुत्र जन्म, नामकरण अनेक संस्कारों पर उत्तम  
 स्त्रियों के गाने के लिए भजन, दादरा, गारी, होरी, खोइया,  
 प्रार्थना, आदि संग्रहीत हैं पुस्तक अति उत्तम, छपाई सफाई  
 कञ्जाल की शीघ्र मंगाइये । मूल्य ।) प्रेम पुस्तकालय आगरा

## सूरये-तौबा ७

मे० २ पारा १०, सू० ११६

( १ ) वराश्शतुम्मिनज्जलाहि व रसूलिहीरे इल्ल-  
ल्लज्जीना आऽहत्तुम्मिनऽल् मुथ्रिकीन ॥१॥

उन मुशरिकों ( दूत वादियों ) को—जिन से तुमने प्रतिज्ञा  
की थी—अल्लाह को और से और उसके प्रेरित ( पैगम्बर )  
का और से उत्तर है ।

( २ ) फसाहूऽ फिऽल् अजि अरबना अरहुरि  
न्वाऽअलमूरे इन्नकुम् गय् मुअजिजिऽल्लाहि व अन्नज्जलाह  
सुखिज्जल् काफिरीन् ॥२॥

अतः इस देश में चारों महीने घूमलो और बात रहे कि तुम  
अल्लाह को विवश न कर सकोगे और वह भाँ ( बात रहे )  
अल्लाह अविश्वामिथों का अनादर करता है ।

( ३ ) व अजाऽनुम्मिनज्जलाहि व रसूलिहीरे  
इल्ल-आऽसि यऽम्ऽल् हज्जिऽल् अवरि अन्नज्जलाहा  
वरीरेऽम्मिनऽल्; मुथ्रिकीना व रसूलुहः फ इन्तुन्तुम् फ  
हुवा खय्खुल्लकुम् व इन्तवल्लय्हुम् फाऽअलमूरे अन्नकुम्  
गय् मुअजिजिऽल्लाहि; व बरिशरिऽल्लज्जीना कफरुऽ  
वि अजाऽविन् अलीम् ॥३॥

७ सूरये तौबा मदीने में उतरो, उसमें १२६ आयतों और १६ रकू में है ।

और अल्लाह और उस के पैगम्बर को और से बड़े हज के दिन सुना देता है कि अल्लाह और उस का पैगम्बर मुशरिकों से पृथक है, अतः यदि तुम क्षमा प्रार्थना करो तो तुम्हारा हित है, और यदि नोः मा तो तुम अल्लाह को धका न सकोगे, और अस्वीकारियों को दुःख के दरद का सुसमाचार दे ।

( ४ ) इल्लऽल्लाहीना आहतुम्मिनऽल् मुश्रिकीना सुम्मा लम् यन्कुम्कुम् शय्अऽव्व लम् युजाऽहिरुऽ अलयकुम् अहदऽन फ अतिम्मूरे इलयहिम् अहदहुम् ; इला मुदतिहिम् ; इनऽल्लाहा युहिन्वुऽल् मुत्तकीन ॥

परंतु जिन मुशरिकों से तुम्हें होड़ थी, उन्होंने फिर तुम्हारे साथ कुछ अपराध न किया और तुम्हारे मुकाबिले में किसी की सहायता न की, अतः उनसे उनकी नियत अवधि तक प्रतिज्ञा पूर्ण करो; निश्चय अल्लाह को संयमी प्रिय हैं ।

( ५ ) फ इजऽऽनसलखऽल् अरहुऽल् हुऽल् फऽत्तुऽल् मुश्रिकीना ह्यसु वजत्तुम्हुम् व खुज्हुम् वऽहम्हुम् वऽक् उदुऽ लहुऽ हुल्ला मसदिन् फ इन्ताऽवुऽ व अकाऽमु-ससलाता व आतवुऽ-ज्जाता फऽल्लऽ सदीलहुम् इनऽल्लाहा गफूर हीम् ॥

फिर जब पवित्र मास व्यतीत होजायें तो मुशरिकों को

जहां पाओ - मारो, और पकड़ो. घेरो, और उनकी बात में प्रत्येक स्थल पर बैठो, पुनः यदि वे पापक्षमा-प्रार्थना करें और नमाज निश्चित रखें और जकांत दें तो उनका मार्ग छोड़ो; क्योंकि उनको अल्लाह की ओर से पापक्षमा और दया है।

( ६ ) व इन् अहदुम्मिनऽल् मुश्रिकीनऽस्तजाऽरका फ़ अजिह हत्ता यस्पश्ना कलामऽल्लाहि सुम्मा अब्लिग हु मअमनहु ज़ालिका वि अन्नहुम् कउमुल्लाऽ यअलमून् ॥

और यदि कोई मुशरिक तुम से ब्राण चाहे तो उसे ब्राण दो यहां तक कि वह अल्ला का वचन अर्थात् कुरान सुन ले फिर उसको वहां पहुंचा दो जहां वह निर्भय रहे; यह इसलिए कि उन लोगों में ज्ञान नहीं।

[ मंजिल २ पा० १० रू० २।१० ]

( १ ) कय् फ़ा यकूनु लिल मुश्रिकीना अहदुन् इन्दऽल्लाहि व इन्दा रसूलिहीरे इल्लऽल्लजीना आऽहतुम् इन्दऽल् मस्जिदिल् हराऽमि, फ़ मऽस्तकाऽमूऽ लकुम् फ़ऽस्तकीमूऽल् हुम् ; इन्ऽल्लाहा युहिच्चुऽल् मुत्तकीन ॥

सिवाय उन लोगोंके और उसके जिन्होंने तुमको मसजिदुल हराय ( काबा की पवित्र मस्जिद ) के पास का वचन दिया

है अन्य मशरिकों की अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ क्योंकर प्रतिज्ञा होसकती है ? अतः जब तक वह तुमसे सीधे रहें, तुम उन से सीधे रहो; अल्लाह को संप्रती प्रिय लगते हैं ।

( २ ) कय्फा व इय्यज हुरू अलयकुम् लाऽ यर्कुवूऽ फीकुम् इल्लऽव्वलाऽ जिम्मतन् , युर्जूनकुम् विअफ्वाऽहिहिम् व तअवा कुलूयुहुम् व अक्सरुहुम् फासिकून् ॥

सन्धि कैसे रहे ? और यदि वह तुम पर हाथ ( अधिकार पावें तो न तुम्हारे मत का और न प्रतिज्ञा का कुछ लिहाज करें अपने मुंह की बात से प्रसन्न कर देते हैं और उनके मन स्वीकार नहीं करते, और उनमें अनेकों अनाज्ञाकारी हैं ।

( ३ ) इतरड्ऽ विआयातिऽल्लाहि सपनऽन् कलीलऽन् फसद्ऽ अन् सवीलिही; इन्न हुम् सारअमाऽ काऽनूऽ यअमलून् ॥

और उन्होंने अल्लाह की आक्षाओं को अल्प मूल्य पर विक्रय किया फिर उसके मार्ग से भटके रहे; यह लोग जो कर रहे हैं वह बुरे कार्य हैं ।

( ४ ) लाऽ यर्कुवूना फी मुअ्मिनिन् इल्लऽव्वलाऽ जिम्मतन् व उलारेइका हुमुऽल्ल मुअलदन् ॥

न किसी मुसलमान के सम्बन्ध में न दोषदागों का और न बचन का विचार करें और वह अत्याचारी हैं ।



( ५ ) फ़ इन्ताऽवुऽ व अकाऽमुऽ-स्सलाता व आतवु-ज़काना फ़ इख़्वा लुकुम् फ़ि-दीनि; व लुफ़स्सि-लुऽल् आयाति लि क़स्मि व्यअल्लमून् ।

अतः यदि तोबा ( पापक्षमा-प्रार्थना ) करें और नमाज़ स्थिर रखें, और ज़कात देते रहें तो मुहम्मदी मतानुसार तुम्हारे हाथ हैं; और हम जानने वाले पुरुषों के लिए विस्तार पूर्वक भेद प्रगट करते हैं ।

( ६ ) व इन्नकसूऽ अय्माऽनहुम्मिन् वअदि अह् दिहिम् व तअनूऽ फ़ी दीनिकुम् फ़ काऽतिलूरे अइस्मतऽल् कुफ़ि इन्नहुम् लारे अय्माऽना लहुम् लअल्लहुम् यन्तहून् ॥

और यदि प्रतज्ञा के पश्चात् अपनी शपथों का भंग करें और तुम्हारे दीन को दोष दें तो काफ़िरों के प्रमुख पुरुषों से युद्ध करो; उनको शपथ कुछ नहीं, कदाचित् वह संमार्ग पर आवें ।

( ७ ) अलाऽ तुकाऽतिलूना क़ऽगऽन्नकसूऽ अय्-माऽनहुम् व हम्मूऽ विइऽयाऽजि-रऽमलि व हुम् बदऽक़ुम् अऽबला मरऽतिन्; अतऽगऽनहुम्, फ़ऽल्लाहु अहऽक़ु अन्तऽगऽहु इन्कुन्तुम्गुअभिनीन् ॥

ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो कि जिन्होंने अपनी शपथों

को अंग किया और जो इसे चिन्ता में रहे कि पैगम्बरों को पृथक् कर दें और उन्होंने तुमसे पहले इंद्र को, क्या उनसे डरते हो? अतः यदि विश्वासी हो तो तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए ।

( ८ ) काऽतिलूहुम् युञ्जिज्वहुमुऽल्लाहु वि अय्दीकूम व युखिजहिष् व यन्मुकुम् अलयहिष् व यश्फि सुदूरा कड भिम्मुअमिनीन् ॥

उनसे लड़ो, जिससे अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों दण्ड दे और लड़जन करे और तुमको उन पर विजयी बनावे और कितने ही सुखलमानों के मनों को शान्त करे ।

( ९ ) व युज्जहिब् गय्जा कुलूविहिष् ; व यतूवुऽ-  
ल्लाहु अला मय्यशाऽरु; वऽल्लाहु अलीमुन् हकीम् ॥

और उनके मनों का द्वेष दूर करे, और जिसको चाहे अल्लाह क्षमा करेगा; और अल्लाह ज्ञानवान् और बुद्धिमान् है ।

( १० ) अम् हसिन्तुम् अन्तुतरकूऽ व लम्माऽ  
यअलमिऽल्लाहऽल्लाजीना जाऽहदूऽ मिन्कुम् व लम्  
यत्तखिजूऽ मिन्दूनिऽल्लाहि वलाऽ रसूलिही वलऽऽल  
मुअमिनीना वलीजतऽन् ; वऽल्लाहु खवीरुन् विमाऽ  
तअमलन् ॥

क्या जानते हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे और अभी अल्लाह को तुम लोगों में से उन लोगों का ज्ञान नहीं जो लड़े हैं और जिन्होंने अल्लाह और उनके रसूल और मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य किसी को भेदों नहीं माना; और अल्लाह को तुम्हारे कार्यों का सब ज्ञान है ।

[ मंजिल २, पारा १०, सू० ३।८ ]

( १ ) माऽ काऽना लिऽ मुथिकीना अय्यअमुऽ  
मसाजिदऽल्लाहि शाहिदीना अलाऽ अन्फुसिहिम् विऽल्  
कुफ़ि, उलाऽइका हवित्त अअमाऽलुहुम्, व फ़ि-भाऽरि  
हुम् खालिदून् ॥

मुशरिकों ( मूर्ति-पूजकों ) का काम नहीं कि अल्लाह की मसजिदों को बसावें और अपने ऊपर कुफ़ू को स्वीकार करते जावें; वह लोग अपने कामों के कारण नष्ट हुए और वह सर्वदा नर्कागिह में निवास करेंगे ।

( २ ) इन्नमाऽ यअमुऽ मसाजिदऽल्लाहि मन्  
आमना विऽल्लाहि वऽल् यऽ मिऽल् आखिरि व अकाऽ  
म-स्सलाता व आत-ज़काता व लम् यरुशा इल्लऽ  
ल्लाहा फ़ असाऽ उलाऽइका अय्यकूनुऽ मिनऽल्  
सुह्तदीन् ॥

अल्लाह को मसजिदें वही बसावे जिसने अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास किया और नमाज स्थिर रखी और दान दिया और (जो) अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य किसी से न डरा अतः वह लोग प्रतीक्षित हैं कि शिक्षितों में सम्मिलित हों ।

( ३ ) अजअन्तुम् सिकायतस्ल हाजि व इमाऽ-  
रतस्ल मस्जिदिस्ल हराऽमि कमन् आयना विऽन्लाहि  
वस्ल यस्मिस्ल आखिरि व जाऽहदा फी सवीलिऽन्लाहि;  
लाऽ यस्तवना इन्दऽन्लाहि; वऽन्लाहु लाऽ यहदिऽस्ल  
कड म-इन्नालिमीन् ॥

क्या तुमने हाजियों का पानी पिलाना और मस्जिदुलहराम  
( काबा ) का बसाना उसके समान निश्चित किया जिउने  
अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर विश्वास किया और  
अल्लाह के मार्ग में युद्ध किया ? अल्लाह के निकट ( दृष्टि में  
तो ) समान नहै; और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग  
नहीं देता ।

( ४ ) अल्लाजीना आयनुऽ व हाऽजरुऽ व जाऽहदुऽ  
फी सवीलिऽन्लाहि वि अम्याऽलिहिम् व अन्फुसिहिम्  
अअजमु दरजतन् इन्दऽन्लाहि; व जलाऽइका हुमुऽस्ल  
फाऽइजुन् ॥

जिन्होंने ( इस्लाम पर ) विश्वास किया और गृह त्यागन किया और अल्लाह के मार्ग में अपने तन और धन से युद्ध किया उनको अल्लाह के समीप बड़ा पद है और वही सफलता भी प्राप्त हुए ।

( ७ ) सुवर्शिहम् हुम् रन्नुहुम् निरूपतिम्मिन्हु  
व रिज़्वाजनि न्व जन्नाति न्लहुम् फ़ादान इम्मुन्मुकीम् ॥

उनको पालन-फर्जा उनको अपनी ओर से अ-ग्रह, अनु-मोदन और यारों का-दिनमें उनको लिये का आनन्द है-हर्ष-नमाचार देता है ।

( ६ ) ख़ालिदीना फ़ादरे अबदज़् ; इन्नज़लाहा  
इन्दहरे अज़ुन अज़ीम् ॥

उन ( जन्म के क्षणों ) में अन्तकाल पर्यन्त विश्वास करें; निश्चय अल्लाह के यहाँ मरान् प्रतिपाल है ।

( ७ ) या रे अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽ लाऽ  
तत्तद्विजूऽ आचारेअकुम् व इस्वाऽन कुम् अड्लियाऽआ  
इनिऽस्त हन्नुऽऽल् कुफ़ा अलऽल् इमाऽनि, व मय्यतवन्नहु-  
म्मिन्कुम् फ़ उलाऽइका हुमु-ज़्ज़ालिमून् ॥

हे विश्वासियो ( मुसलमानो ! ) अपने पिता और आ-ताओं को अपना मित्र ( वा सहायक ) स्वीकार न करो यदि वह कुफ़ू को इस्लाम ( दीन ) से प्रिय समझें और तुममें से

जिसने उनसे मित्रता की ( वा सम्बन्ध रक्खा ) फिर वही लोग अत्याचारी (और) पापी हैं ।

( ८ ) कुल् इन्काऽना आवाऽउ कुम् व अन्नाऽउ कुम् व इरुवाऽनु कुम् व अजूवाऽजु कुम् व अशीरतु कुम् व अम्वाऽलु (नि) इन्तरऽफ्तुमूहाऽ व तिजाऽरतुन् तरुश-  
उना कसाददाऽ व मसाफिनु तर्जुनहाऽ अ, हव्वा इलय कुम्निनऽल्लाहि व रसूलिही व जिहाऽदिन् फी सवीलिही  
फ तरव्वमूऽ ह, ता यअतियऽल्लाहु बि अन्निही; वऽल्लाहु  
लाऽ यहदिऽल् कउमऽल् फासिकीन् ॥

( हे पैगम्बर ! ) तू कह, यदि तुम्हारे पिता, और पुत्र और  
भाता और तुम्हारी स्त्रियां और तुम्हारे वंशज और तुम्हारी सम्पत्ति  
जो तुमने उपार्जित की है और द्योपार जिसके बन्द होने का भय  
है और अनाथ दासियां जिनकी तुम्हें इच्छा है, तुमको अल्लाह  
और उसके पैगम्बर और उसके मार्ग में शुद्ध करने से अधिक  
प्रिय हैं तो जब तक अल्लाह अपनी आज्ञा ( न ) भेजे तब तक  
प्रतीक्षा करो, और अल्लाह अनाज्ञाकारियों को मार्ग नहीं  
दिखाता ।

[ मंजिल २ पारा १०, रु ४।५ ]

( १ ) लकह नसरकुमुऽल्लाहु फी मवाऽतिना

कसीरतिव्व यड्ना हुनयनिन् इज् अञ्जवन्कुम् कसत्तु  
कुम् फ लम् तुग्नि अन्कुम् शयञ्जव्व जाञ्कत्तु अल्य-  
कुमुल्ल अजु विमाऽ रहुवत्तु सुम्मा वल्लयत्तुम्पुद्धिरीन् ॥

( मुसल्मानो ! ) अल्लाह अनेक अवसरों पर तुम्हारी  
सहायता कर चुका है और ( वियोगतः ) हुनैन के ( युद्ध के )  
दिन, जब कि तुम्हारी बहु-संख्या ने तुम्हें गंवित कर दिया था,  
फिर वह तुम्हारे लिए कुछ भी उपयोगी न हुई और पृथ्वी  
विस्तृत होने के उपरान्त भी, तुम्हारे लिए संकुचित होगी,  
फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले ।

( २ ) सुम्मा अन्जलऽल्लाहु सकीनतहु अल्ला  
रगुलिही व अलऽल्ल मुअमिनीना व अन्जला जुनूदऽल्लम्  
तरउहाऽ व अञ्जवऽल्लजीना कफरुऽ; व जालिका जज़ा-  
उऽल्ल काफिरीन् ॥

फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और मुसल्मानों पर  
अपना सन्तोष उतारा और ( तुम्हारी सहायतार्थ फरिश्तों  
की ) ऐसी सेनायें भेजीं, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं और  
काफिरों को अत्यन्त दारुण दुःख दिया; और काफिरों के लिए  
यही दण्ड है ।

( ३ ) सुम्मा यतूबुऽल्लाहु भिन् वअदि जालिका  
अल्ला मय्यशाऽउ, व ऽल्लाहु गुफूरहीम् ॥

फिर (इसके पश्चात्) अल्लाह जिसको चाहे क्षमा प्रदान करे और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

( ४ ) या३ अय्युहऽऽल्लजीना आमनु३ इन्नमऽऽल् मुश्रिकूना नजमुन् फलाऽ यक्रवुऽऽल् मस्जिदऽऽल् हराऽमा वअदा आऽमिहिम् हाजाऽ, व इन् खिफतुम् अयलतन् फ सउफा युग्नीकुमुऽऽल्लाहु मिन फजिलही३ इन्शा३आ; इन्नऽऽल्लाहा अलीमुन् हकीम् ॥

हे मुसलमानो ! मूर्तिपूजक जो हैं वह मलीन हैं, अतः इस वर्ष के पश्चात् पवित्र मस्जिद ( काबा ) के निकट न आओ, और यदि तुम भिखारियों से भय खाते हो तो आगे अल्लाह यदि चाहे तो तुम्हें अपने अनुग्रह से धनाढ्य बनावेगा; अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

( ५ ) काऽतिलुऽऽल्लजीना लाऽ युअमिनूना विऽल्लाहि वलाऽ विऽल् यउमिऽल् आरिऽरि व लाऽ युह-रिगूना माऽ हरमऽऽल्लाहु व रसूलुहु व लाऽ यदीनूना दीनिऽल् हकिऽ मिनऽऽल्लजीना ऊनुऽऽल् किताबा हत्ता युअतुऽऽल् जिफयता अय्यदि व्वहुम् साऽगिरुन् ॥

शुद्ध करो उन लोगों से—जिनका अल्लाह पर विश्वास नहीं और न अन्तिम दिवस ( क़यामत ) पर । ही जिनका विश्वास है ); जो न उसे निषिद्ध समझें जिसे अल्लाह और



उनके पैगम्बर ने निषिद्ध किया है और सत्य मत (इस्लाम) को स्वीकार करते हैं—वह जो कि पुस्तक वाले हैं; यहाँ तक कि सब एक हाथ से जज़िया कुफ़ू का (कर) और अपमानित होकर देंगे ।

[ मं० २, पारा १०, सू० ५१८ ]

( १ ) व काऽस्ततिऽल्लै यहूदु उऽजयुरु ( नि ) ऽनुऽ-  
ल्लाहि व काऽस्तति-न्नसारऽल्ल मसीहुऽनुऽल्लाहि;  
जालिका कऽल्लुहुम् वि अफ्वाऽहि हिम् , युजाऽहिजना  
कऽल्लऽल्लज्जिना कऽरुऽ मिन् कऽनुऽ काऽतलहुमुऽल्लाहु  
अन्ना युअफ्कऽन् ॥

और यहूदी कहते हैं कि उजैर अल्लाह के पुत्र हैं और नसारा कहते हैं कि मसीह अल्लाह के पुत्र हैं; यह उनके मुँह की बातें हैं, यह उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे हैं जो इनसे पूर्व तो चुके हैं; अल्लाह इन्हें नष्ट करे; यह शैतान के भटकाये हुए फिथर की जा रहे हैं ।

( २ ) इत्तखजूरु अह्वाऽरहुम् व रुह्वाऽन हुम्  
अर्वावऽम्मिन्दूनिऽल्लाहि वऽन्मसीहऽन्ना मर्यमा व मारे  
उमिरुऽ इल्लाऽ लियअबुदूरु इलाह्वाऽहिदऽन् ; लारु  
इलाहा इल्लाऽहुवा; सुबहानहु अम्माऽ युश्रिकऽन् ॥

अल्लाह के स्थान पर इन्होंने अपने विद्वान् और ईश्वर-साधु और मर्याम का पुत्र मसीह पृथक् निश्चित किये हैं; और इन्हें यही आज्ञा हुई थी कि एक मात्र स्वामी को आराधना करें, उसके अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना (उचित) नहीं, वह समांश समझने से रहित है।

( ३ ) युरीदूना अय्युतू फ़िऊनूरज्जलाहि बि अफ़वाऽहि हिम् व यअवज्जलाहु इल्लाऽ अय्युतिम्मा नूरहू व लउ करिहऽल् काफ़िख्नु ॥

चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (अर्थात् इस्लाम) को मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें और अल्लाह को अभीष्ट है कि प्रत्येक प्रकार अपने प्रकाश को पूर्ण करके रहे यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे।

( ४ ) हुवज्जलज़ीऽ अर्सला रसूलहू विऽल् हुदा व दीनिऽल् हक्कि लि युज़्ज़िरहू अल-दीनि कुल्लिही व लउ करिहऽल् मुश्रिकून् ॥

वही है जिसने अपने पैगम्बर को शिक्षा और सत्य मत देकर भेजा है जिससे उल्लेख समस्त संसार पर विजयी बनावे चाहे मुशरिकों को बुरा ही क्यों न लगे ?

( ४-५ ) याऽ अय्युहऽज्जलज़ीना आसलूऽ इन्ना फ़सीरऽभिन्ऽल् अहऽवाऽरि व-रुहऽयाऽनि लयऽकुलूना

भास की रक्षणी उसे पूरा करलीं, फिर जो अल्लाह ने निषिद्ध किया है उसे पवित्र मानते हैं; उनको उनके कुर्रम अच्छे करके दिखाये गये; और अल्लाह अविश्वासी जाति का मार्ग नहीं दिखाता ।

[ सं० २, पासा० १०, सू० ६।५ ]

( १ ) या३ अय्यु हऽऽल्लजीना आमनुऽ माऽ लकुम्, इजाऽ कीला लकुमुऽन् फिऽरुऽ फी सर्वालिऽल्लाहिऽ, स्साऽ फल्लुम् इलऽल् अजिऽ; अरजीतुम् विऽल् इयाति-इन्याऽ मिनऽल् आखिरतिऽ. फऽ माऽ मताऽऽऽल् इयाति-इन्याऽ फिऽल् आखिरतिऽ इल्लाऽ कलील् ॥

हे मुसलमानो ! तुमको क्या होगया है कि जब तुम्हें कहा गया कि अल्लाह के मार्ग में प्रस्थान करो ( तो ) तुम धरती में धसे जाते हो; क्या तुम अन्तिम जीवन को तजकर सांसारिक जीवन पर मुग्ध हुए ? अतः सांसारिक जीवन परलोक के जीवन की अपेक्षा कुछ नहीं प्रत्युत तुच्छ है ।

( २ ) इल्लाऽ तुन्फिरुऽ थु अजिज्व कुम् अजावऽन् इलीमऽव्व यस्तविदल् कऽमऽन् गयऽरकुम् वलाऽ तजुरुहु शयऽऽन् ; वऽल्लाहु अला कुल्लि शयऽन् कदीर ॥

यदि (तुम युद्ध के लिए) न निकलोगे तो तुमको दुःख का दराड देगा और तुम्हारे अतिरिक्त अन्य मनुष्य बदल लावेगा और तुम उसकी कुछ हानि न कर सकोगे; और अल्लाह प्रत्येक पदार्थ पर शक्तिमान है।

(३) इल्लाऽ तन्सुरूहु फ़क़द् नसरहुऽल्लाहु इजू अस्लजहुऽल्लज़ीना कफ़रुऽ सानियऽ सनयनि इजू हुमाऽ फ़िऽल् गाऽरि इजू यकूलु लि साहिबिही लाऽ तहज़न् इन्नऽल्लाहा मअनाऽ, फ़ अन्ज़लऽल्लाहु सकीनतहु अलथहि व-अय्यदहु दिजुनदिल्लम् तरव्हाऽ व जअला कलिमतऽल्लज़ीना कफ़रुऽ-सुपला; व कलिमतुऽल्लाहि हियऽल् उल्याऽ, वऽल्लाहु अज़ीजुन् हकीम् ॥

यदि तुम पैग़म्बर की सहायता न करोगे तो उसकी सहा-

---

ॐ मुसलमान तदक की चढ़ाई के लिए अनिच्छा से गये, गर्नी की अतुथी, सिपाहियों को इतना महान् कष्ट हुआ कि यह सतायी हुई सेना कहलाने लगी। इनके अतिरिक्त मुसलमानों की खेती पड़ी हुई थी और वह उसे सग्रह करने के लिए सज्ज्य ठहरे, इसलिए यह दराड का डर दिखलाया गया कि यदि वे सहाय न करेंगे तो अल्लाह उसी प्रकार सहाय करेगा जैसे कि उसने उस समय की जब मुहम्मद और अबूबकर मक्का के पास एक गुफा में छिपे थे। उस समय, जब अबूबकर दुखी होता, मुहम्मद सा० यह कहकर उसे धैर्य बध्नाते—“अल्लाह हमारे साथ है।” मुहम्मद सा० को फ़ारिस्तों की सहायता मिली हुई थी जो कि मुसलमानों को नहीं दीसते थे।

यता अल्लाह ने की है जिस समय काफ़िरों ने उसको जोड़े से निकाला जाय कि दोनों गुफा में थे, जब अपने मित्र का कहने लगा कि तू रज न कर-अल्लाह हमारे साथ है, फिर अल्लाह ने उस पर अपना ओर से सन्तोष उतारा और उसकी सहायता के लिए वह सेनाएं पहुंची जो कि तुमने नहीं देखीं; और काफ़िरों की बात नीचे डाली; और अल्लाह का कथन सदैव ऊपर है; अल्लाह शक्तिमान् है और बुद्धिमान् है।

( ४ ) इन्फि रूऽ खिफ़ाऽफ़ऽच्च सिक्काऽलऽच्च जाऽ-  
हिदूऽ वि अन्वाऽलिङ्गुम् व अन्फु सिङ्गुम् फी सर्बालिऽ-  
ल्लाहि; ज़ालिङ्गुम् खय रूल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअलमून् ॥

हलके और भारी सभी निकलो और अपने धन और तन से ( अल्लाह के मार्ग में ) बुद्ध करो; यह तुम्हारे लिए, यदि तुममें बुद्धि है तो, सबसे श्रेष्ठ है।

( ५ ) लउ काऽना अरज़न् करीबऽच्च सफ़रऽन्  
काऽसिदऽल्लऽ तवज़फ़ा वलाकिन् वउदत् अलय हिमु-  
श्शुक्कतु; व सयह लिफूना विऽल्लाहि लविऽस्ततअनाऽ  
ल खरज़नाऽ मअकुम् युहिकूना अन्फु सह म्,  
वऽल्लाहु यअलमु इन्नहुम् ल काज़िबून् ॥

यदि कुछ धन प्राप्त होता और यात्रा हलकी होती तो तेरे साथ चलते; परन्तु मार्ग उनको दूर दिखाई दिया; और अब अल्लाह की सौगन्धें खावेंगे कि यदि हमसे हो सकता तो अवश्य तुम्हारे साथ जाते, (इस प्रकार) अपनी आत्मा और अन्तःकरण का विनाश करते हैं; और अल्लाह जानता है—वह झूठे है।

[ मंजिल २ पारा १० रु० ७।१७ ]

( १ ) अफऽऽल्लाहु अन्का, लिमाँ अज़िन्ता लहुम्  
हत्ता यतय्यना लकऽल्लज़ीना सदकूऽ व तअल्लमऽल्  
काज़िवीन् ॥

अल्लाह तुम्हें क्षमा करे, पूर्व उसके कि जो सत्य कहते हैं वह तुम्ह पर प्रगट हो जायँ, और तू झूठों को जान लेता, तूने उन्हें क्यों लुट्टी दी ?

( २ ) लाऽ यस्तअज़िन्तुकऽल्लज़ीना युअमिनूना  
विऽल्लाहि वऽल् यउमिऽल् आखिरि अय्युजाऽहिदूऽ  
वि अम्बाऽलि हिम् व अन्फुसिहिम् वऽल्लाह अली-  
मुन् विऽल् मुत्कीन् ॥

॥ यह आयत तदूर के—जो मदीना और दमस्क के बीच में है—। संग्राम के विषय में है जो सन ६ हिजरी में हुआ। उस समय दज़रत ३०००० मनुष्यों के सेनापति थे। ४२से४५ तक की आयतें हसी युद्ध की यात्रा में उतरी

( हे पैगम्बर ! ) जो लोग अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास रखते हैं, वह तो तुमसे इस बात की छुट्टी मांगते नहीं कि अपने तन और धन से जिहाद में सम्मिलित न हो और अल्लाह संयमियों को भला भाँति जानता है ।

( ३ ) इन्नमाऽ यस्तअ् जिनुकऽल्लज़ीना लाऽ युअ् मिन्ना विल्लाहि वऽल् यउमिऽल् आखिरि वऽर्ताऽवत् कुलूडु हम् फ़ हम् फ़ी रय् बिहिम् यतरइन् ॥

तुमसे छुट्टी वही मांगते हैं जिनका अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास नहीं है और उनके अन्तःकरण सन्देह में पड़े हैं, अतः वह अपने सन्देह में ही भटकते हैं ।

( ४ ) व लउ् अराऽदुऽऽल् खुरूजा ल अअहऽ लह उहत व्वलाकिन् करिहऽल्लाहुऽन् वित्राऽसहुम् फ़ सन्नवत् हम् व कीलऽक् उदुऽ मअऽल् काइदीन् ॥

यदि ( वे युद्धार्थ ) प्रस्थान करना चाहते तो उसका कुछ सामान तैयार करते; परन्तु अल्लाह को उनका उठना अच्छा न लगा, अतः उन्हें उहदी (पूरा आलसी) बना दिया और उन्हें आका मिली कि बैठने वालों के साथ बैठो ।

( ५ ) लउ् खरजूऽ फ़ी कुम्माऽ जाऽदु कुम् इल्लाऽ खवाऽल्ऽव लाऽ अउ जऊऽ खिलालकुम् यब्गानकुमुऽल्

फित्नता, व फी कुम् सम्माऊना लहम्; वऽल्लाहु  
अलीमुन् वि-ज़ालिमीन् ॥

यदि वह तुम्हारे साथ प्रस्थान करते तो वह तुममें दोष के अतिरिक्त अन्य कुछ न बढ़ावे और उपद्रव करने की खोज में तुम्हारे अन्दर घोंड़े दौड़ाते, और तुममें से कुछ लोग उनका गुप्तचर हैं; अल्लाह अत्याचारियों को भले प्रकार जानता है।

( ६ ) लकदिऽवतगवुऽऽत् फित्नता मिन् कब्खु व कल्लवुऽ लकऽत् उमूरा हत्ता जाऽअऽत् हक्कु व जहरा अम् रुऽल्लाहि व हुम् कारिहून् ॥

और पूर्व से विनाश की खोज करते रहे हैं और तेरे कार्यों को विपरीत ( उल्टे ) करते रहे हैं; यहां तक कि सत्य प्रतिज्ञा आ पहुंची और अल्लाह की आज्ञा प्रगट हुई और वह अप्रसन्न ही रहे।

( ७ ) व मिन्हु म्मय्यकूलुऽअजल्ली वलाऽ तफित्नी; अलाऽ फिऽत् फित्नति सकतूऽ; व इन्ना जहन्नमा ल मुहीततुन् विऽत् काफिरीन् ॥

और कुछ उनमें कहते हैं कि मुझको छुट्टी दे और आपत्ति में मत डाल; सुनता है वह तो आपत्ति में पड़े हैं; और अस्वीकारकर्ताओं ( काफिरों ) को नर्क खेरे हुए है।



( ८ ) इन् तुसिक्का हसनतुन् तसुअ ह म् , व इन् तुसिक्का मुसीवतु व्यकूलुऽ कद् अखज्नाऽ अम्रनाऽ मिन क्कव्लु व यतवल्लडऽव्य हुय फरिहून् ॥

यदि तुम्हें कुछ लाभ हो तो वह उन्हें बुरा लगे और यदि आपत्ति आवे तो कहते हैं कि हमने पूर्व ही अपना कार्य संभाल लिया था और प्रसन्न होते हुए लौट जावें ।

( ९ ) कुल्लय्यु सीवनाऽ इल्लाऽ माऽ कतवऽल्लाहु लना, हु वा मड लानाऽ, व अलऽल्लाहि फल यतवक्क लिऽल् सूअ मिनून् ॥

( हे पैगम्बर ! इनसे ) तू कह कि जो अल्लाह ने ( हमारे लिलाट में ) लिख दिया है उसके अतिरिक्त हमें अन्य कुछ न प्राप्त होगा, वही हमारा स्वामी है, और मुसलमानों का उचित है कि अल्लाह पर विश्वास करें ।

( १० ) कुल् हल् तरव्वसूना विनाऽ इल्लाऽ इहदऽल् हु स्नय्यलि; व नइनु न तरव्वमु विकुब् अय्युसीवकु सुल्लाहु वि अजाऽविमिद् इन्दिर्हाऽ अउ वि अयदीनाऽ, फत रव्वसूऽ इन्नाऽ मअकुन्मुतरव्विसून् ॥

यह—ओ भक्तियों में से एक के अतिरिक्त और क्या मार्ग तुम हमारे निमित्त खोजोगे? हम भी तुम्हारे निमित्त यही आशा

लगाये हुए हैं कि अल्लाह तुम्हारे ऊपर अपने पास ले अथवा हमारे द्वारा कुछ भेजे, अतः प्रतीक्षा करो, हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हैं ।

( ११ ) कुल् अन्फिक्, ऽ तउञ्जन् अउकह् ऽ ल्लय्यु-  
तफ़वला मिन्कुम् ; इनकुम् कुन्तुम् कउम् ऽ फ़ासिकीन् ॥

हे पैग़म्बर ! तू कह—धन को चाहे तुम प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से व्यय करो; यह तुम्हारी ओर से स्वीकार न किया जायगा; निश्चय तुम अनाजाकारी हो ।

( १२ ) व याऽ मनअहुम् अन्नुक़वला मिन्हुम्  
नफ़ातुहुम् इल्लाहे अब्रहुम् कफ़रुऽ विस्लाहि व विरम्-  
लिही व लाऽ यअतून—सलाता इल्लाऽ दहुम् कुसाऽला  
वलाऽ युन्फ़िक्, ना इल्लाऽ व हुय़ कारिहून् ॥

इसके अतिरिक्त कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर अविश्वास किया, और नमाज़ नहीं पढ़ी, परन्तु ( यदि पढ़ी भी तो ) आलस्य के साथ और ( दान-ख़ैरात में ) व्यय नहीं किया परन्तु ( यदि किया भी तो ) दुर्भाव से—और किसी प्रकार उनके व्यय का स्वीकार होना बाधक नहीं होगा ।

( १३ ) फ़लाऽ तुअजिक्का अम्थाऽ लुहुब् वलाहे  
अउलाऽहु हुय़ ; इबादाऽ युरीदुऽ ल्लाहु लि युअज़िबहुम्

विहाऽ फ़िऽल् हयाति-इनुयाऽ व तऽइका अन्फुसुहुम्  
व हुम् काफिरून् ॥

अतः तू उनकी सम्पत्ति और सन्तति से साश्चर्य न हो; अल्लाह यही चाहता है कि सांसारिक जीवन में उनको इन वस्तुओं से प्रग्रस्त करे और जब तक उनके प्राण निकलें वह काफिर ही रहे ।

( १४ ) व यद्लिफ़ना विऽल्लाहि इन्नहुम् ल  
मिन्कुम् ; व माऽ हुम्मिन्कुम् वला किन्नहुम् कऽमुय्यफ़ः  
कून् ॥

और अल्लाह की साँगन्ध खाते हैं कि वह निश्चय तुममें से है; और वह तुममें नहीं किन्तु वह लोग डरते हैं ।

( १५ ) लऽ यजिदूना मल्लऽन् अऽ मग़ारातिन्  
अऽ मुदख़लऽल्ल वल्लऽऽ इलय्हि बहुम् यज्महून् ॥

यदि कहीं रक्ता स्थान पावें अथवा कोई गड्ढा वा शिर भुंकाने को स्थान पावें तो उसी ओर रस्सियां तुड़ाते उलटते भागें ।

( १६ ) व मिन्हुम्मय्यलिम्जुका फ़ि-स्सदक़ाति;  
फ़ इन् उअ्तूऽ मिन्हाऽरजूऽ व इल्लाम् युअ्तूऽऽ मिन्हाऽ  
इजाऽ हुम् यस्वतून् ॥

और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुझे जकात बांटने में ताना देते हैं, अतः यदि उसमें से उनको मिले तो प्रसन्न हों और यदि न मिले तभी वह क्रुद्ध हो जावें ।

( १७ ) व लउ अन्नहुम् रजूमारे आताहुमुऽल्लाहु  
 व रसलुह व काऽल्लुऽ हस्तुनऽऽल्लाहु स सुअतीनऽऽल्लाहु  
 यिन फ़ज़िलही व रसलुहरे इन्नारे इल्लऽल्लाहिराऽग़िवून ॥

और क्या अच्छा था यदि वे जो अल्लाह और उसने पैग़म्बर ने उन्हें दिया है उससे प्रसन्न होते और कहते कि हमको पर्याप्त है; अल्लाह और उसका पैग़म्बर हमको अपने अनुग्रह से देता रहेगा, हमको अल्लाह ही चाहिए ।

[ मँजिल २-पारा १० रु ८।७ ]

( १ ) इन्नमऽ-स्सदकातु लिन्फुकराः इ वऽल् मसा-  
 कीनि वऽल् आमिलीना अल्लयूहाऽ वऽल् मुअल्लफ़ति  
 कुल्लुहुम् व फ़ि-रिं काऽवि वऽल् गाऽरिमीना व फ़ी  
 सवीलिऽल्लाहि वऽविन-स्सवीलि; फ़रीज़तम्मिनऽल्लाहि;  
 वऽल्लाहु अलीमुन् हकीम् ॥

जकात ( दान ) भिखमंगों और अनाथों और उस काम पर निर्वाह करने वालों का और ( उनका ) जिनके मनों को

लुभाना है और जो दासता में है और जो तावान भरते हैं और अल्लाह के मार्ग में और मार्ग के पथिक के लिए अल्लाह का निश्चित किया हुआ है; और बुद्धिमान अल्लाह सब जानता है।

(२) व मिन्हुमुस्ल्लजीना युअ्जून-निय्या: व यकूलूना हुना उजुनुन् ; कुल् उजुनु खयारिल्लकुम् युअ्मिनु विस्ल्लाहि व युअ्मिनु लिल् मुअ्मिनीना व रइमतु लिस्ल्लजीना आम्गुड मिन्कुम् ; वस्ल्लजीना युअ्जुना रइल्लज्जलाहि लहुन् अजाअुनु अलीम् ॥

और उनमें से कुछ लोग पैगम्बर को निन्दा करते हैं और कहते हैं यह मनुष्य झोत है; वृ कह-तुम्हार हित के लिए जान है, अल्लाह का विरहास करता है और तुममें से जो मुसलमान हैं उनके साथ अल्लुग्रह है; और तुममें से जो लोग अल्लाह के पैगम्बर को निन्दा करते हैं उनका दुःख का दण्ड है।

(३) यलिफूना विस्ल्लाहि लकुम् लियुजुहुम् ; वस्ल्लाहु व रइल्लुहरे अहक्कु अय्युजुहु इन्काअुड मुअ्मिनीन् ॥

तुम्हारे लम्बुख अल्लाह को सौगन्धें खते हैं कि तुम्हें प्रसन्न करें; और यदि वह सुसलमान हों तो अल्लाह और उसके पैगम्बर को प्रसन्न करना परमावश्यक है।

( ४ ) अलम् यञ्जलमूरे अन्नहू मय्यु हाऽदिदिऽल्लाहा  
व रसूलहू फ़ अन्ना लहू नाऽरा जहन्नमा खाऽलिदऽन्  
फीहाऽ; जालिकऽल् खिज्युऽल् अजीम् ॥

वह जान नहीं चुके कि जो कोई अल्लाह और उसके पैग-  
म्बर से समता (मुकाबला) करे तो उसको नर्कागि (दोजख की  
आग ) है जिसमें वह सदैव रहेगा; यही बड़ी लज्जा है ।

( ५ ) युह ज़रुऽल् मुनाफ़िकूना अन्तुन जज़ला  
अल्लयहिम् सूरतुन् तुनब्विउहुम् वि माऽ फ़ी कुल्-  
यिहिम् ; कुलिऽस्तह् जिजऽ, इन्नऽल्लाहा मुस्लिजुम्माऽ  
तह् ज़रुन् ॥

मुनाफ़िक डरा करते हैं कि उन पर कोई सूरत न उतरें  
कि जो उनका—जो कुछ उनके हृदय में है—रतला दे; ( हे  
पैगम्बर ! उन्हें ) तू कह—हँसी करते रहो जिस वस्तु का  
तुझे भय है उसे अल्लाह प्रगट करन वाला है ।

( ६ ) व लइन् स अल्लतहुम् ल यकूलुन्ना इन्नमाऽ  
कुन्नाऽ नख़ूजु व नल्लइनु; कुल् अविऽल्लाहि व आया-  
तिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्नह् जिजन् ॥

औ— जो तू इनसे पूछे तो कह—हां तो योच च ल और खेल  
करने थे; तू कह—अल्लाह से और उसके वाक्य से और उसके  
पैगम्बर से ठट्ठा करते थे ।

( ७ ) लाऽ तअतज़िरुऽ क़द् कफतुम् वअदा ईमाऽ  
निकुम् ; इन्नअफु अन्तारेइफतिम्मिन्कुम् नुअज़िब  
तारे इफतन् ॐ वि अन्नहुम् काऽनुऽ मुज़िमीन् ॥

वहाने मत बनाओ, तुम विश्वास करके (मुसल्मान होकर)  
काफिर होगए; यद्यपि हम तुममें से किन्हीं को क्षमा करेंगे  
तथापि किन्हीं को दण्ड भी देंगे क्योंकि वह अपराधी थे ।

मं० २ पारा १०. रू० २।६

( १ ) अल् मुनाफ़िक़ीना वऽल् मुनाफ़िक़ातु वअज़ु-  
हुम्मिन् ॐ वअज़िन् यअ मुरूना विऽल् मुन्क़रि व यन्ह-  
उना अनिऽल् मअरूफ़ि व यक्विज्ज ना अयदियहुम् ;  
नसुऽल्लाहा फ़ नसियहुम् ; इन्नऽल् मुनाफ़िक़ीना  
हुमुऽल् फ़ासिकून् ॥

मुनाफ़िज़ ( धर्म कपटी ) स्त्री पुरुष अपने में से एक  
दूसरे के पीछे चलने हैं, बुरी सीख सिखाते हैं और भली बात  
छुड़ते हैं और अपनी मुट्टी बन्द रखते हैं; यह अल्लाह को  
भूल गये तो अल्लाह इनको भूल गया; निश्चय वही मुनाफ़िक़  
अनाज्ञाकारी हैं ।

( २ ) वअदऽल्लाहुऽल् मुनाफ़िक़ीना वऽल् मुना-

फिकाति वऽल् कुफ़ारा नाऽरा जहन्नमा खालिदीना  
फीहाऽ; हिया हस्तुहुम्, व लअनहुमुज्जलाहु, व लहुम्  
अजाऽवुम्मुकीम् ॥

अल्लाह ने मुनाफ़िक मनुष्यों और स्त्रियों और मुनफ़िरों को नकागिन का वचन दिया—उसमें पड़े रहें, उनको वही पर्याप्त है, और अल्लाह ने उनको फटकारा, और उनको स्थायी दुःख है।

( ३ ) कऽज्जलीना मिन कब्लिकुम् काऽनूरे अशदा  
मिन्कुम् कुव्वतव्व अक्सरा अम्वाऽलऽव्व अउलाऽदऽन;  
फऽस्तमत्तऽ वि खलाऽकि हिम् फऽस्तमत्तअतुम् वि  
खलाऽकिकुम् कमऽस्तमत्तअऽज्जलीना मिन कब्लिकुम्  
विखलाऽकिहिम् व खुज्तुम् कऽज्जली खाऽजूऽ; उलाऽ-  
इका हविलत् अअमाऽलुहुम् फि-हुन्याऽ वऽल् आविरति,  
व उलाऽइका हुमुज्ज ख़ासिरुन् ॥

जिस प्रकार तुमसे पूर्व ( पुरुष ) बल में विशेष थे और वे सम्पत्ति और सन्तति अधिक रखते थे; फिर उन्होंने अपने भाग से उस समय लाभ उठाया तो तुम भी अपने भाग से लाभ उठाते हो जैसा उन्होंने—जो तुमसे पहले थे—अपने भाग से लाभ उठाया, तुम भी हँसो करके लगे जैसी उन्होंने



हैं ली की, उनके फार्म हस्त संसार में और अन्तिम दिवस में असफल होने; और वही लोग हानि उठाने वालों में हैं।

( ४ ) अलम् यअतिहिम् नवउऽल्लहीना भिन कञ्जिलहिम् कउमि नूहिन्व आऽदिव्व समूदा व कउमि इब्राहीमा व अरुहावि मद्यना वऽल् मुअतफिकाति; अत-रुम् रुहुहुम् विऽल् वयिनाति, क माऽ काऽनऽल्लाहु लि यऽज्जिमहुम् व ला किन् काऽनूऽ अन्फुसहुम् यऽज्जिमून् ॥

यया इनको उनका—नूऽ की जाति और आद और समूद और इब्राहीम की जातियों और मदीना—निवासियों और उलटी नगरियों के जो उनसे पहले थीं, निवासियों का, सन्देश नहीं पहुँचा ? उन ( जातियों ) के पैगम्बर उनके पास प्रत्यक्ष चिह्न लेकर आये; क्योंकि अल्लाह उन पर अन्याय नहीं करना चाहता था; किन्तु उन्होंने अपने आप अपने ऊपर अन्याय किया ।

( ५ ) वऽल् मुअमिनूना वऽल् मुअमिनातु वअजूहुम् अउलियाऽउ वअज़िन् यअमुरूना विऽल् मअरूफि व यन्हुऽना व अनिऽल् मुन्करि व युकीमून-स्सलाता व युअतून-ज़काता व युतीज़नऽल्लाहा व रसूलह उलाऽइका सयह, मुहुमुऽल्लाहु; इन्नऽल्लाहा अज़ीजुन् हकीम् ॥

और मुसलमान मनुष्य और महिलाएं परस्पर मित्र हैं, वह सुकर्म की आजा देते और कुकर्म से रोकते हैं और नमाज को स्थिर रखते हैं और दान देते हैं और अल्लाह तथा उसके पैगम्बर की आर्धानता करते हैं; यही लोग हैं जिन पर अनुग्रह करेगा; निश्चय अल्लाह बलवान् और बुद्धिमान् है ।

( ६ ) वअद्दल्लाहुऽल् मुअमिनीना वऽल् मुअमिनाति जनातिन् तजी मिनतहूतिहऽऽल् अन्हास् खालिदीना फीहाऽ व मसाकिना तय्यिवतन् फी जनाति अद्निन् ; व रिज्वाऽ मुम्मिनऽल्लाहि अक्वरु; जालिका हुवऽल् फुजुऽल् अजीम् ॥ १

अल्लाह ने मुसलमान मनुष्यों और महिलाओं को बहिष्कार (के बागों) का वचन दिया है कि जिनके निकट नहरें बहती हैं, उसमें वे सर्वदा निवास करें और बागों में बसने के पवित्र गृह; और सबसे अधिक अल्लाह की प्रसन्नता, यह सबसे महान् (मनोनीत) मनोकामना है (जो उन्हें मिलनी है) ।

( मंजिल, २ पारा १०, ह० १०।८ )

( १ ) याश् अय्युह-नविय्यु जाऽहिदिऽल् कुफ्फाऽर वऽल् मुनाफिदीना वऽल्लुज् अलयहिष् व मअ्वाहु जहन्नमु; व दिअ्सऽल् मसीर् ॥

हे पैगम्बर ! काफ़िरोँ और मुनाफ़िकों से लड़ाई कर और उन पर तन्दखोई (सज़ा) कर; और उनका निवास स्थान नर्क है; और वह बहुत बुरा स्थान है।

( २ ) यह लिफूना विज्जलाहि माऽ काऽल्लुऽ, व लक़इ काऽल्लुऽ कलिमतस्तु कुफ़ि व कफ़रुऽ वअदा इस्ताऽ मिहिम् व हम्मूऽ विमाऽलम् यनाऽल्लुऽ, व माऽ नक़मूरे इल्लारे अन् अग़नाहुमुऽल्लाहु व रसूलुहु पिन फ़जिल ही; फ़ इय्यतूवुऽ यकु ख़य़रुऽल्लहुम्; फ़ इय्यतवल्लउऽ युअज़िज़व् हुमुऽल्लाहु अज़ाऽवऽन् अलीमऽन् फ़ि-इन्याऽ वस्तु आख़िरति, व माऽलहुम् फ़िऽल्ल अज़ि मिन्वलिथि-व्वलाऽ नसीर् ॥

यह अल्लाह को सौगन्ध खाते हैं कि हमने नहीं कहा; और निस्सन्देह इन्होंने कुफ़ू का कलमा ( शब्द ) कहा है और मुसलमान होकर काफ़िर हो गये हैं और जो सोचा था वह प्राप्त न हुआ, और यह सब इसका बदला करते हैं कि अ-

कहा जाता है कि अलजल्लास इब्नसबीद ने इस सूरत को कोई ऐसी आयत—जो उक्त तबूक युद्ध में न जाने वालों को धतकारती है—उन कर घोषणा करदी कि जो मुहम्मद साहब अपनी जाति वालों के सम्बन्ध में कहते हैं यदि वह सत्य है तो वे गवों से भी नये-जाते हैं। यह बात मुहम्मद साहब के कान तक पहुँची, उन्होंने उसे बुलवाया जिस पर उसने पक्ष खाकर

ल्लाह और उसके पैगम्बर ने अपने अनुग्रह से इन्हें धनाढ्य कर दिया, अतः यदि पश्चात्ताप करें तो इनके निमित्त हित-फर है, और यदि न मानें तो अल्लाह उन्हें इस लोक और परलोक में दुःख का दरड देगा, और उनका भूतल पर न कोई समर्थक है और न सहायक।

( ३ ) व मिन्हुम्मान् अहदऽल्लाहा ल इन् आतानाऽमिन् फ़ज़िलही ल नस्सइक़ना व लनकूनना मिन्-स्सालि हीन ।

और कुछ उनमें वह हैं कि जि होने अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी कि यदि ( अल्लाह ) हमें अपने अनुग्रह से दे तो हम खैरात करें और हम उपकारियों में सम्मिलित हो जावें ।

( ४ ) फ़ लम्माऽ आताहुम्बिन् फ़ज़िलही वख़िलूऽ बिही व तव्वल्लडऽ व्यवहुम्मु अरिजून ॥

फिर जब उसने उनको अपने अनुग्रह से दिया तो उसमें क्षुण्णता करने लगे और पीठ फेर कर पृथक् हो गए ।

इस कथन में इन्कार किया परन्तु तत्काल, ज्योंही यह आयत उतरी, उसने अपना दोष स्वीकार किया और उसका तौवा स्वीकार हुआ । —वेज़ावी

सुहम्मद साहब के अन्न करने का गुप्त प्रयत्न किया गया था; परन्तु सदीना वालों ने यह कह कर इस काम को न होने दिया कि सुहम्मद सा० और उनके लोगों के हमारे बीच में होने से हमारे व्यापार को बहुत लाभ पहुंचा।

( ५ ) फ़ अअक़वहुम् निफ़ाऽक़न् फ़ी कुल विहिम्  
इला यउमि यल्कूनहू विमाऽ अरुल्लफुऽऽल्लाहा माऽ  
वअदहू व विमाऽ काऽनुऽ यकिज़्ज़ुन् ॥

फिर इस बात पर कि अल्लाह को जो वचन दिया था  
उन्होंने उसके विरुद्ध किया और इस बात पर कि वे झूठ  
बोलते थे, उनके मनों पर उसका प्रभाव वैर भाव रक्खा, जब  
तक कि वे उससे आकर मिलें ।

( ६ ) अलम् यअलमूऽ अन्नऽल्लाहा यअलमु  
सिरहुम् व नज्वाहुम् व अन्नऽल्लाहा अल्लाऽमुल गुयूव ॥

क्या यह बात नहीं कर चुके कि अल्लाह उनका भेद और  
मन्त्र जानता है और यह कि अल्लाह प्रत्येक परोक्ष बात से  
परिचित है ।

( ७ ) अल्लज़ीना यलिमज़ूनऽल मुत्तविईना  
मिनऽल मुअ्मिनीना फ़ि-स्सदकाति वऽल्लज़ीना लाऽ  
यज़िदना इल्लाऽ जुह् दहुम् फ़ यस्वरूना मिन्हुम् सख़िरऽ  
ल्लाहु मिन्हुम् व लहुम् अज़ाऽवुन् अलीम् ॥

वह जो दात देने वाले मुसलमानों को पेट भर कर दोग  
देते हैं और उन्हें भी जो अपने परिश्रम की कमाई के अतिरिक्त  
और कोई ढंग नहीं रखते, फिर उन पर ईंसते हैं; अल्लाह ने  
उनसे हंसी की है और उन्हें दुःख का दण्ड ।

( ८ ) इस्तगिफल हुम् अउलास्तस्तगिफल हुम् ;  
इन्तस्तगिफल हुम् सर्वैना मरतन् फलयगिफरऽन्लाहु  
लहुम् ; जालिका वि अन्नहम् कफरुऽ विऽन्लाहि व  
रसुलिहीः वऽन्लाह लाऽ यह दिऽल कउमऽल फासिकीन ॥

तू उनके निमित्त क्षमा याचना कर अथवा न कर; यदि  
उनके निमित्त सत्तर बार क्षमा मांगे तो भी उनको अल्लाह  
कदापि क्षमा न करे; यह इस कारण कि उन्होंने अल्लाह और  
उसके पैगम्बर को अस्वीकार किया; और अल्लाह अनाजाकारी  
लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

[ मं० २ पा० १० सूत्र ११६ ]

( ९ ) फरिहऽल सुखन्लफना विमकूअदि द्वि  
खिलाऽफा रसुलिऽन्लाहि व करिहऽ अय्युजाऽहिदूऽ वि  
अम्वाऽलिद्विम् व अन्फुयिहिम् पी सवीलिऽन्लाहि व  
काऽलऽ लाऽ तन्किरुऽ फिऽल हरिः कुल् नाऽह जह-  
नमा अराहु दरऽन् ; लउकाऽन्ऽ यफकहन् ॥

जो लोग ( तब्रन संजाम में ) पीछे छोड़ दिये गये थे वे  
अल्लाह और पैगम्बर से प्रथक् बैठकर प्रसन्न हुए और अ-  
ल्लाह के मार्ग में अपने तन और धन से लड़ना उन्हें अप्रिय  
लगा और कहने लगे कि प्रेष्य में मत चलो; ( हे पैगम्बर )

इन्हें) तू कह—दोज़ख़ ( नकाऽग्नि ) और अधिक तप्त है; यदि तुममें विवेक हो।

( २ ) फल यज़् इकूऽ कलीलऽव्वल् यब्कूऽ कसीरऽन् , जज़ाऽअन् विमाऽ काऽन्ऽ यक्सवून् ॥

अतः हँस लेवे थोड़ा और रोवे बहुत सा, जो कमाते थे उसका यह फल है।

( ३ ) फ़ इर्रजअकऽज्जलाहु इला ताऽइफतिम्मिन्हुम् फ़ऽस्तअज़बूका लिल खुरुजि फ़ कुल्लन् तस्रुजूऽ मइया अवदऽव्व लन् तुकाऽतिलूऽ मइया अदुव्वऽन् ; इनकुम् रज़ीतुम् विऽल् कुऽदि अव्वला मरतिन् फ़ऽकऽरदूऽमअऽल् खाऽलिफीन् ।

अतः यदि अल्लाह तुम्हको पुनः उनमें से किसी समुदाय की श्चोर ले जावे तो यह तुम्हसे निकलने के निमित्त निर्देश चाहें तो तू कह—तुम मेरे साथ कदापि न निकलोगे और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध करोगे; तुमको प्रथम बार बैठ रहना प्रिय लगा तो ( अब भी ) पोछे बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

( ४ ) वलाऽ तुसल्लि अलाऽ अहदिम्मिन्हुम्माऽता अवदऽ व्वलाऽ तकुम् अला कब्रिही; इनहुम् कफरूऽ विऽल्लाहि व रसूलिही व माऽन्ऽ वहुम् फ़ासिकून् ॥

और यदि कभी मर जाय तो उनमें किसी पर नमाज न पढ़ और न उसकी क़ब्र पर खड़ा हो; उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर को अस्वीकार किया और अनाज्ञाकारी ( काफ़िर रहते हुए ) ही मरे हैं ।

( ५ ) वलाऽ तुअज़िम्का अम्वाऽलुहुम् व अउलाऽ दुहुम्; इन्माऽ युरीदुऽल्लाहु अय्युअज़िबहुम् विहाऽ फ़ि- हुन्याऽ व तज़हका अन्फुसुहुम् व हुम् काफ़िरून ॥

और उनकी सम्पत्ति और सन्तति से साश्चर्य न हो; अल्लाह को यही अभीष्ट है कि उनको उन वस्तुओं से संसार में दण्डित करे और जब तक उनके प्राण निकले ( तब तक ) वे काफ़िर ही रहें ।

( ६ ) व इज़ाऽ उन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनुऽ विऽल्लाहि व जाऽहिदुऽमथा रसूलिहिऽस्तअ जनका उलुऽ तउलि मिन्दुम् व काऽलुऽ जर्नाऽ नकुम्मअऽलु काऽइदीन् ॥

और जब कोई सूरत उन पर उतारी जाती है कि तुम अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके पैग़म्बर के साथ मिल कर युद्ध करो तो उनमें से जो सामर्थ्यवान् हैं वह छुट्टी मांगते हैं और कहते हैं हमको छोड़ दे, हम ( घर ) बैठनेवालों के साथ ( घर ) रह जावें ।

( ७ ) रजुऽ वि अय्यहूनऽ मअऽलु खयाऽलिफ़ि व तुविअा अला कुलूविहिम् फ़ हुम् लाऽ यफ़कहून ॥



उनको यह अच्छा लगा कि पिछली स्त्रियों के साथ (घनों में) रह जावें और उनके मन पर (मौन) मुद्रा लगा गई तो उनको मोक्ष नहीं।

( ८ ) ला किनि-रन्तु वऽल्लजीना आमनुऽ मअहू जाहदूऽ वि अम्याऽलिहिम् व अन्फुमिहिम् व उलाइइका लहुमुऽल् खयरातु व उलाइइका हुमुऽल् मुफ्लहून् ॥

परन्तु पैगम्बर और जिन्होंने ( इस्लाम अथवा उस पर ) विश्वास किया है और जिन्होंने उसके साथ साथ अपने तन और धन से युद्ध किया है उन्हीं को यश ( प्राप्त ) है और वही सफलता प्राप्त करेंगे।

( ९ ) अअदऽल्लाहु लहुम् जनातिन् तजी मिन- हूतिहऽल् अन्हाऽर खालिदाना फीहाऽऽ जालिकऽल् फज्- जुऽल् अजीम् ॥

अल्लाह ने उनके निमित्त उद्यान उपस्थित कर रखे हैं उनके नीचे नहरें बहती हैं—उनमें निवास किया करे यही महान् मनोकामना पूर्ण होती है।

[ मजिल २ पा० १० स० १२।१० ]

( १ ) व जाऽअऽल् मुअज्जिरूना मिनऽल् अअराऽवि लि युअजना लहुम् व कअदऽल्लजीना कजबुऽल्लाहा व

रसूलहू; स युसीबुज्जलीना कफरूऽ मिन्हुम् अजाऽबुन  
अलीम् ॥

और ऐरावी अर्थात् गंवार लोग बहाने बनाते आये जिससे  
उन्हें छुट्टी मिले और जो अल्लाह और पैगम्बर से झूठे हुए  
घर (घर) बैठ रहे; उनमें जो मुनकिर (अस्वीकारकर्ता) हैं  
उनको अब दुःख का दण्ड मिलेगा ।

( २-३ ) लयसा अल-जुअफा३इ व लाऽ अलऽल  
मर्जा वलाऽ अलऽल्लजीना लाऽ यजिदूना माऽ युन्फि-  
कूना हरजुन् इजाऽ नसहूऽ लिन्लाहि व रसूलिही; माऽ  
अलऽल मुहसिनीना मिन् सबीलिन ; वऽल्लाहु गफूर-  
रहीमुव्वलाऽ अलऽल्लजीना इजाऽ मा३ अतउका लि  
तहमिलहुम् कुन्ता ला३ अजिदु मा३ अहमिलुकुम् अलयहि  
तवल्लउऽव्व अअयुतुहुम् तफीजु मिन-हमइ, हजनऽन  
अल्लाऽ यजिदूऽ माऽ युन्फिकून् ॥

बूढ़ों और रोगियों के लिए कुछ दोष नहीं और न उनके  
लिए जिनको इन्नी प्राप्ति नहीं कि जो व्यर्थ कर सकें ( और  
ऐसी दशा में) जब कि वे अल्लाह और पैगम्बर के साथ शुद्ध हृदय  
(हो कर रहे) हों; उकारों लोगों पर आक्षेप का मार्ग और अल्लाह  
क्षमा करने वाला दयालु है । और न उन पर कि जब तेरे पास  
आय जिससे कि तू उनको सवारो दे; तूने कहा कि मेरे पास

कुछ नहीं कि जिसकी तुम्हको सवारी दूं तब वह उलटते लौटें और उनकी आंखों से इस दुःख में आंसू बहते हैं कि उनकी (इतनी) आय नहीं जो व्यय करें।

( ४ ) इन्नमऽ-स्सवीलु अलऽज्जिना यस्तअजि-  
नूनका बहुम् अग्नियाऽऽ रजुऽ वि अयकूनऽ मअज्ज-  
ख्वाऽलिफि व तवअज्जलाहु अला कुलविहिम् फ हुम्  
लाऽ यअलमून ॥

दोष तो उनही लोगों पर हैं जो तुम्हसे लुट्टी मांगने हैं और धनाढ्य हैं; उन्हें यह प्रिय लगा कि पिछली स्त्रियों के साथ रह जावें और अल्लाह ने उनके मनों पर मुहर की है, अतः वह नहीं जानते।



## कुल्लियात् आर्य मुसाफिर

सृष्टि का इतिहास और पुनर्जन्म आदि विषयों पर धर्मवीर प० लेखराम कृत पुस्तकों का अद्वितीय अनुवाद लगभग १००० पृष्ठ मू० ४) शीघ्र मँगाइये। आहकों को पहुंचने पर थोड़ी काफ़ी बचेंगी।

प्रेम पुस्तकालय, आगरा।

## पारा यत्र तजिरुना ११

( ५ ) यत्र तजिरुना इत्यकुम् इजाऽ रजअतुम् इत्य-  
 द्विम् ; कुल्लाऽ तअतजिरुऽ लन्नुअमिना लकुम् कइ  
 नव्वअनऽऽल्लाहु मिन् अरुनाऽरिक्कुम् ; व सयर्ऽल्लाहु  
 अमल्लकुम् व रसुलुहु सुम्मा तुरदूना इला आलिमिऽल्  
 गय्वि व-शहाऽदति फ युनविउक्कुम् विमाऽ कुन्तुम् तअ-  
 मल्लुन् ॥

मुसलमाना ! जब तुम जहाद से) लौट कर उनकी ओर  
 जाओगे तो वे लोग भांति भांति के बहाने बनावेंगे: (हे पैगम्बर ! )  
 तू कह कि बहाने मत बनाओ हम तुम्हारी बात न मानेंगे,  
 हमको अल्लाह तुम्हारे समाचार बता चुका है और अल्लाह  
 और उसका रसूल तुम्हारे काम अभी देखेंगे । फिर तुम उस-  
 की ओर लौटाये जाओगे जो गुप्त व प्रगट ( कामों को )  
 जानता है, अतः वह तुमको जो तुम्हारा कर रहे हों, ( सभी को )  
 बता देगा ।

( ६ ) स यहूलिफूना विऽल्लाहि लकुम् इजाऽऽ-  
 न्कल्लकुम् इ लय्विमि नि तुअरिज् अन्हुम् ; फ अअरिज्ऽ  
 अन्हुम् ; इन्हुम् रिज्जु व्व मअवाहम् जहन्नमु, जजाश्अन्  
 विमाऽ काऽनुऽ यक्सिऽवुन् ॥

अब ( वे ) तुम्हारे पास अल्लाह की शपथ खावेंगे ~~और~~  
तुम उनके पास ( जहाद से ) लौटकर जाओगे जिससे तुम  
उनसे दरगुजर करो; अतः वह लोग अपवित्र हैं और उनका  
निवास-स्थान नर्क है, जो उनकी करनी का फल है ।

( ७ ) यह लिफूना लकुम् लि तर्जूऽ अन्हुम् , फ  
नू तर्जूऽ अन्हुम् फ इन्नऽन्लाहा लाऽ यर्जा अनिऽल्  
कऽ मिऽल् फासिकीन् ॥

तुम्हारे पास शपथ खावेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ,  
अतः यदि तुम उनसे प्रसन्न होगे तो अल्लाह अनाज्ञाकारी भूटे  
लोगों से प्रसन्न नहीं ।

( ८ ) अल् अअराऽबु अशहु कुफऽव्व निफाऽकऽव्व  
अज्दरु अल्लाऽ यअलमूऽ हुददा मारे अन्नजल्ऽल्लाह  
अला रसूलिही; वऽल्लाहु अलीमुन् इकीम् ॥

पेरावी ( गंवार लोग ) कोरे काफिर और मुनाफिक हैं  
और इसी योग्य हैं कि जो नियम अल्लाह ने अपने पैगम्बर  
पर उतारे हैं उन्हें न सीखें; और अल्लाह ज्ञानवान और बुद्धि-  
मान है ।

( ९ ) व मिनऽल् अअराऽवि मय्यत्ताऽखिजु माऽ  
युन्फिकु मग्रमऽव्व यतरव्वसु विकुमु-दवाऽइरा; अलयहिम  
दाऽइरतु-समुऽइ; वऽल्लाहु समीउन् अलीम् ॥

और कुछ गंवार ऐसे हैं कि उनको जो व्यय करना पड़ता है उसका बदला विचार करते हैं और तुम्हारे विषय में दुर्भाग्यता की प्रतीक्षा करते हैं, उन्हीं पर दुर्भाग्यता आ पड़ेगी; अल्लाह सुनता और जानता है।

( १० ) व मिनऽल् अश्राऽवि मय्युअमिनु विऽ-  
ऽल्लाहि वऽल् यड् मिऽल् आखिरि व यत्तखिजु माऽ  
युन्फिकु कुस्वातिन् इन्दऽल्लाहि व सलवाति रूमलि;  
अलाः इन्नहाऽ कुर्वतुल्लहुम्; सयुदखिलु हुमुऽल्लाहु  
फी र, ह्यतिही; इन्नऽल्लाहा गफूरुर्हीम् ॥

और आंगणों ( गंवारों ) में कुछ ऐसे ( भी ) हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन का विश्वास रखते हैं और जो कुछ ( अल्लाह के मार्ग में ) व्यय करते हैं उसको अल्लाह को समीपता और पैगम्बर की आशोर्वादों का साधन समझते हैं, अतः सुन रखो कि वह ( व्यय करना ) उनके लिए समीपता का ( कारण ) है भी कि अवश्य मरे पीछे अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह में ले लेंगा; निरुन्देश, अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

[ मंजिल २, पारा ११, रु० १३ ]

( १ ) व-स्सायिकूनऽल् अव्वलूना मिनऽल् मुदा-  
जिरीना वऽल् अन्साऽमि वऽल्लज़ीनऽत्तवऊ हुम् विइह-  
साऽनिराऽनियऽल्लाहु अन्हुम् व रज़ूऽ अन्हु व अअदा

लहुम् जनातिन् तजी तहतहऽऽत् अन्हाह खालिदीना  
फीदाः अवदऽन् जालिकऽऽत् फउजुऽऽत् अजीम् ॥

आर हिजरत करने वालों और अन्सार में से जो लोग  
( इस्लाम के स्वीकार करने में ) अग्रणी रहे और सब से पूर्व  
( विश्वासी हुए ) और वह लोग जो इनके पश्चात् शुद्ध हृदय  
से इस्लाम में प्रविष्ट हुए, अल्लाह उनसे प्रसन्न और वे अ-  
ल्लाह से प्रसन्न और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बहिश्त के  
भाग तय्यार कर रखे हैं जिनके निकट नहरें बह रही होंगी  
और यह उनमें सदा-सर्वदा निवास करेंगे; ( और ) यह बड़ी  
भारी सफलता है ।

( २ ) व मिम्मन् हउलकुम्मिनऽऽत् अत्रराऽवि  
मुनाफिकूना; व मिन् अह्लिऽऽत् मदीनति मरदऽ अल-  
निफाऽकि लाऽ तअलमुहुम् ; नह नु नअलमुहुम् ; स  
नुअज़िज़नुहुम्मरतयनि सुम्मा युरदूना इला अजातिन्  
अजीम् ॥

और ( मुसल्मानो ! ) तुम्हारे निकट इर्तीय ग्रामीणों में  
से ( कुछ ) मुनाफिक ( फपटी ) हैं; और स्वयं मदीना नि-  
वाशियों में से ( भी ) जो द्वेष पर दृढ़ ( स्थिर ) हैं उनको  
( हे पैगम्बर ! ) तुम नहीं जानते; हम इनको ( भली भाँति )  
जानते हैं; अतः अभी तो हम ( संसार में ) इनको डबल

(दुगुना) दण्ड देंगे, फिर महान् दुःख की ओर लौटाए जायेंगे।

(३) व आखरुनऽअतरफूऽ वि जुनूबिहिम्  
खलतूऽ अमलऽन् सालिहऽव्व आखरा सण्णियऽन्,  
असऽल्लाहु अय्यतूवा अलयहिम् ; इन्नऽल्लाहा गफूर-  
रहीम् ॥

और कुछ मनुष्य हैं जिन्होंने अपने अपराध को स्वीकार किया और मिले जुले कार्य किये—कुछ अच्छे और कुछ बुरे; अतः आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार कर ले; क्योंकि अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(४) खुज्जु मिन अम्वाऽलिहिम् सदकतन् तुतह् द्वि-  
रुहुम् व तुज्जकीहिम् विहा व सलिल अलयहिम् ; इन्ना  
सलातका सकलुल्लहुम् ; वऽल्लाहु समीउन् अलीम् ॥

(हे पैगम्बर ! यह लोग अपने धन की ख़ैरात बरे तो ) इनके धन का दान ले लिया करो; क्योंकि दान स्वीकार करने से तुम इनको ( इनके पापों से ) पवित्र और पृथक् करते हो और इनको शुभ आशीर्ष दो; क्योंकि तुम्हारा आशीर्वाद इनके लिए सन्तोष है; और अल्लाह सुनता और जानता है।

(५) अलम् यअलमूरे अन्नऽल्लाहा हुवा यक्वलु-  
त्तउवता अन् इवाऽदिही व यअखुज्जु -सदक़ाति व अन्नऽ-  
ल्लाहा हुव-तव्वायु-रहीम् ॥



यथा इन लोगों को इसका बोध नहीं कि अल्लाह ही इन लोगों को जमा-प्रार्थना स्वीकार करता है और वही दान (का धन) लेता और अल्लाह बड़ा जमा-प्रार्थना स्वीकार करने वाला है।

( ६ ) व क़ालिऽय्यामलूऽ फ़ तय्यरऽल्लाहु अमलकुम्  
व रसूलुहु वऽल् मुअ्मिन्ना व सतुरहूना इला आलिमिऽ  
गय्वि व-रशहाऽदति फ़ युनब्विऽकुम् विमाऽ कुनुष  
तअमलून ॥

और ( हे पैगम्बर ! तू ) कह कि तुम आचरण करते रहो, अतः अभी तो अल्लाह तुम्हारे आचरणों को देखेगा और अल्लाह का पैगम्बर और मुसलमान ( भी देखेंगे ) और ( मृत्यु के पश्चात् ) तुम अवश्य उसकी ओर लौटाए जाओगे जो गुप्त और उपस्थित है; ( वह सब ) जानता है फिर जो कुछ तुम संसार में करते रहे हो वह उससे तुमको परिचित कर देगा।

( ७ ) व आखरुना मूर्जउना लि अघ्रिऽल्लाहि  
इम्माऽ युअ्रिज्जु हुम् व इम्मा यतूवु अलय्हिम्  
वऽल्लाहु अलीमुन् हकीम् ॥

और ( कुछ लोग वह हैं कि अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा में उनका नामला मुलतवी है कि वह या तो उनको दण्ड दे अथवा उनकी जमा प्रार्थना स्वीकार करे; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान है।

( ८ ) वऽल्लज्जीनऽत्तखजू, ऽ मस्जिदऽन् जिंराऽरऽव्व  
 कुफ्रऽव्व तफ्रीकऽन् वयन्ऽत् मुअ्मिनीना व इर्साऽदऽ-  
 ल्लि मन् हाऽरवऽल्लाहा व रसूलह् मिन् कब्लु, व ल  
 यह् लिफुन्ना इन् अरदनारे इल्लऽऽत् हुस्ना; वऽल्लाहु  
 युरहहु इन्नहुम् ल काजिवून् ॥

और ( एक प्रकार के मुनाफ़िक यह भी हैं ) जिन्होंने इस  
 उद्देश्य से एक मसजिद बना खड़ी की कि ( मुसलमानों को )  
 हानि पहुंचायें और कुफ्र करे और मुसलमानों में फूट डालें  
 और उन लोगों को शरण दें जो अल्लाह और रसूल के साथ  
 पहले युद्ध कर चुके हैं और पूछा जायगा तो शपथ खाने  
 लगेंगे कि हमने तो भलाई के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार  
 की इच्छा की नहीं; और अल्लाह साक्षी देता है कि यह अवश्य  
 भूटे हैं ।

( ९ ) लाऽ तक्रूम् फ़ीहि अवदऽन्; ल मस्जिदुन्  
 उस्सिमा अल-तक्रा मिन् अव्वलि यऽमिन् अहकुकु,  
 अन्तक़ूमा फ़ीहि; फ़ीहि रिजाऽलुय्युहिब्बूना अय्यततह् हऽऽ;  
 वऽल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तह् द्विमीन् ॥

( हे पैगम्बर ! ) तुम उस मसजिद में कभी जाकर खड़े  
 भी न होना । हाँ, वह मसजिद जिस्का आघार आरम्भ दिवस  
 से संघर्ष पर रक्खा गया है उसका यद्यपि अधिकार है कि तुम  
 उसमें खड़े होकर इमामत करो क्योंकि उसमें ऐसे लोग हैं

जिन्हें भले प्रकार स्वच्छ पवित्र रहना प्रिय है: और अल्लाह को भलो भाँति स्वच्छ पवित्र रहना प्रिय है।

( १० ) अफमन् अससमा बुन्याऽनहू अला तक्वा  
मिनऽज्जलाहि व रिज्वाऽनिन खयल्ल अम्मन् अससमा  
बुन्याऽनहू अला शकाऽ जुम्हिन दार्जिन फज्हाऽ  
विही फी नाऽरि जहन्नमा, वऽज्जलाहु लाऽ यह् दिऽज्ज  
कर्म-इजालिमीन् ॥

भला, जो मनुष्य अल्लाह के भय और उसको प्रसन्नता पर ध्यान भवन का आधार-शिला रखे वह श्रेष्ठ है अथवा वह जो फुसफुसे खोजले-कगारे के किनारे पर अपने भवन की आधारशिला स्थापित करे तो वह भवन उसको नर्क की अग्नि में ले गिरे; और अल्लाह अलाचारी मनुष्यों को शिला नहीं दिया करता।

( ११ ) लाऽ वजाऽज्ज बुन्याऽनुहुमुऽज्जजी बनउऽरी  
वतन् फी कुलुबिहिम् इल्लारे अन्तकत्तआ कुलुबुहुम्  
वऽज्जलाहु अलीमुन् हकीम् ॥

यह भवन जो इन लोगों ने बनाया है, इसके कारण इन लोगों के हृदयों में सर्वदा शक और भय रहेगा यहाँ तक कि इनके हृदयों के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे; और अल्लाह शाता और बुद्धिमान है।

इशाह अब्दुल कादिर ने 'दरलजोनतालज' से लेकर यहाँ तक की

[ मंजिल २ पारा ११ रु १४।८ ]

(१) इन्नल्लाहश्तरा मिनल्ल मुय्मिनीना  
अन्फुसहुम् व अम्वाल्लहुम् वि अन्ना लहुमुल्ल जन्नता;  
युकात्तिलूना फी सबीलिज्जलाहि फ यक्तुलूना व युक्त-  
लूना वअदन् अल्यहि हक्कन् फि-तदराति वल्ल  
इन्जीलि वल्ल कुआनि, व मन् अउफा वि अहदिही

आयतों के विषय में जो हाशिया लिखा है उसमें सभी आवश्यक ऐतिहा-  
निक बातें सभी विद्यमान हैं उसीको हम ज्यों का त्यों उद्धृत किये देते हैं—  
“हजरत मकके से हिजरत कर आये तो मदीने से बाहर—जहाँ एक सुहल्ला  
बनी उमर बिन अफ का था—उतरे । कुछ दिनों के पश्चात् नगर में स्थान  
प्राप्त किया और मस्जिद नववी बनाई । उस सुहल्ले में जहाँ नमाज, पढ़ते  
थे वहाँ लोगों ने मस्जिद बना रखी और समुदाय स्थिर रहा । वह मस-  
जिद कबा के नाम से प्रसिद्ध है । हजरत प्रायः सप्ताह के दिन वहाँ जाते और  
नमाज, पढ़ते । उस सुहल्ले में कुछ मुनाफिकों ने चाहा कि अन्य मस्जिद  
बनावें पहले की हठ पर और अपना समुदाय पृथक् पिणित करें और एक  
राष्ट्र अबू आमर कि इस्लाम के दायरे से निकल गया था उसको हंप से  
बुलाकर वहाँ रारदार और इमाम बनावे । हजरत से चाहा कि पहले एक  
बार आप वहाँ नमाज, पढ़ें तो हजरत समुदाय स्थापित करें । हजरत को उनके  
कपट का पता न था शतः वचन दिया कित्तूक के बुद्ध से लौटेंगे तो पहले  
वहाँ नमाज पढ़ कर नगर में लौटेंगे । हक्कताला ने तहने सावधान कर दिया  
और पहले मस्जिद कबा के लोगों की प्रशंसा की । मनुष्य सावधान रहे कि  
प्रगट में कोई आशयना है और उससे दुष्कामना द्विधी हुई है उसकी यह  
शर्तस्वा है ।”

और अल्लाह ऐसा नहीं कि किसी जाति को जब कि उसे सतपथ पर प्रवृत्त करा चुकीगे, जब तक उन पर (वह बात) प्रगट न करदे कि जिससे उन्हें बचना है—यथ-अष्ट करे निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु से परिचित है।

( ६ ) इन्नल्लाहा लह मुल्कु-स्समावाति वऽल् अर्जि; यु.ह्यी व युमीतु; व माऽ लकुम्मिन्दूनिऽल्लाहि मि व्वलि थिन्वलाऽ नसीर् ॥

निश्चय अल्लाह ही है जिसका आसमान और पृथिवी है, वह जिलाता है और मारता है; अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा समर्थक और सहायक नहीं।

( ७-८ ) लक़ताऽवऽल्लाहु अल-द्वियि वऽल् मुहाजिरीना वऽल् अन्साऽरिऽल्लाजीनऽत्त बऽहु फी साऽग्रतिऽल् उस्तति मिन् वऽदि माऽ काऽदा यजीगु कुलुबु फ़रीकिम्मिन्दुम् सुम्मा ताऽवा अलय्हिम् वह विहिम् रऽफुरहीमुव्व अल-स्सलासतिऽल्लाजीना ख़ुल्लिफ़ुऽ; इत्ताऽ इजाऽ जाऽक़त् अलय्हिमुऽल् अजु विमाऽ रहुवत् व जाऽक़त् अलय्हिम् अन्फुसुहुम् व जन्वऽ अल्लाऽ मलजअ मिन्ऽल्लाहि इन्ताऽ इलय्हि, सुम्मा

ताऽवा अल्यहिम् लि यतूवुऽ; इन्नऽल्लाहा हुव—तन्वावु—  
रहीम् ॥

यद्यपि अल्लाह ने पैगम्बर पर बड़ा ही अनुग्रह किया मुहाजिरों और अन्सार पर ( भी )—जिन्होंने तंगदस्ती के समय में पैगम्बर का साथ दिया जब कि इनमें से किन्हीं किन्हीं के मन विचलित होगये थे—उसी ने अपना अनुग्रह किया; ( कि इनके मनों को संभाल लिया ) निश्चय अल्लाह परम दयालु और बुद्धिमान है । उन तीनों ( मनुष्यों ) पर भी जो ( अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा में ) धीछे छोड़े गये थे; यहां तक कि पृथ्वी विस्तृत होते हुए भी उनके लिए संकुचित होने लगी और वह अपने जीवन से हताश होगये कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी रक्षा नहीं, फिर अल्लाह ने उनकी तौबा ( पाप क्षमा प्रार्थना ) स्वीकार करली जिससे कि ( फिर भी ) क्षमा प्रार्थना करते रहें; निस्सन्देह अल्लाह बड़ा प्रार्थना स्वीकार करने वाला और दयालु है ।

[ मँजिल २ पारा ११ रु १५१४ ]

( १ ) या३ अय्युहऽऽल्लजीना आमनुऽऽत्कुऽऽ-  
न्वाहा व कूनूऽ मअ—स्सादिकीन ॥

हे मुसलमानो ! अल्लाह से डरते रहो और सच्यों के साथ रहो ।

( २ ) माऽ काऽना लि अहिऽत् मदीनति व मन्  
 इऽत्लहुम्मिनऽत् अत्राऽवि अयतखल्लफूऽ अरऽसूलिऽ  
 न्लाहि वलाऽ यर्गवूऽ वि अन्फुऽसिहिम् अन्नफिसही;  
 जालिका वि अन्नहुम् लाऽ युसीवुहुम् जमऽव्व लाऽ नस-  
 वुव्वलाऽ मरुमसतुन् फी सवीलिऽन्लाहि व लाऽ यतऽज्जा  
 मत्तिअऽ यमीऽत् कुफारा वलाऽ यनाऽलूना मिन्  
 अदुव्वि नयलऽन् इल्लाऽ कुतिवा लहुम् विही अमलुन्  
 सालि हुन् ; इन्नऽन्लाहा लाऽ युजीव, अजऽत् मुहऽसि-  
 नीन् ॥

मदीना के निवासियों और उसके आसपास के रहने वाले  
 श्रामीयों को उचित न था कि अल्लाह के पैगम्बर ( के साथ )  
 से पाँछे रह जायें और न यह कि पैगम्बर के प्राणों की अपेक्षा  
 अपने प्राणों से अधिक प्रेम करें; यह इसलिए कि इन ( जहाद  
 करने वालों ) को अल्लाह के मार्ग में प्यास, थकावट और  
 लुब्धा का क्लेश पहुंचता है तो और जिन स्थानों पर काफ़िरों  
 को इनका चलना असह्य प्रतीत होता है वहां चलते हैं तो  
 और शत्रुओं से ( कभी ) कुछ मिल मिला रहता है तो ( दुःख  
 और सुख दोनों दशाओं में प्रत्येक कार्य के बदले इनका शुभ  
 काम लिखा जाता है; निस्सन्देह अल्लाह सच्चे ( हृदय से  
 इस्लाम की सेवा करने वालों ) के फल को नष्ट नहीं होने  
 देता ।

( ३ ) वलाऽ युन्फ़कूना नफ़क़तन् सगीरत व्वलाऽ  
कवीरत व्वलाऽ यक़तज़ना वाऽदियऽन् इल्लाऽ कुतिवा  
लहुम् लि यज़ज़ियहुमुऽऽल्लाहु अहसना माऽ वाऽन्ऽ  
यअमलून् ॥

और ( इसी प्रकार ) थोड़ा अथवा बहुत जो कुछ (अल्लाह के मार्ग में ) व्यय करते हैं और जो घाटियां उन्हें तै करनी पड़ती हैं वह सब ( इनके कर्म-पत्र में ) इनके नाम लिखा जाता है, जिससे कि अल्लाह इनके कर्मों का इन्हें उत्तम से उत्तम फल प्रदान करें ।

( ४ ) व माऽ काऽन्ऽल् मुअ्मिनूना लि यन्फ़रूऽ  
कारेफ़क़तन् ; फ़ लज्ज़लाऽ नफ़रा मिन कुल्लि फ़िक़ति-  
म्पिन् हुम् तारेइफ़तु ल्लि यतफ़क़हूऽ फ़ि दीनि व  
लि युन्ज़रूऽ वाऽम्हुम् इज़ाऽ रजज़ ३ इलय्हिम् लअल्ल-  
हुम् यहज़रून् ॥

और यह उचित नहीं कि मुसलमान सबके साथ ( अपने अपने घरों में से ) निकल खड़े हों और मदीने में आ लें । ऐसा क्यों न किया कि उनके प्रत्येक समुदाय में से कुछ लोग ( अपने घरों से ) निकले होते कि दीन की समझ पैदा करते



और जब (सीत्र समझ कर) अपनी जाति में फिर पहुँचते तो उनको (अल्लाह की अवज्ञा से) डराते जिससे वह लोग (बुरे कर्मों से) बचते।

मं० २ पारा ११, सू० १६।७

( १ ) या रे अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽ काऽतिलुऽऽल्लज़ीना यलूनकुम्मिनऽल् कुफ़ाऽरि वल् यजिदुऽ फ़ी हुम् ग़िलज़तन् ; वाऽअलमूरे अन्नऽल्लाहा मअऽल् मुत्तकीन् ॥

मुसलमानो ! अपने आस पास के क़ाफ़िरों से लड़ो और चाहिये कि तुममें करारापन मालूम करें ( और किसी पर व्यर्थ अत्याचार न करो ) और ज्ञात रखो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो संयमी हैं।

( २ ) व इज़ाऽ माऽऽन्ज़िलत् मूरतुन् फ़ मिन्हुम्म थक़लु अय्युकुम् जाऽदत्हु हाज़िहीरे ईमाऽनऽन् , फ़ अम्मऽऽल्लज़ीना आमनुऽ फ़ जाऽदत् हुम् ईमाऽन व्व हुम् यस्तन्शरुन् ॥

और जिस समय कोई सूरा उतारी जाती है तो मुनाफ़िकों में से कुछ लोग ( एक दूसरे से ) पूछने लगते हैं कि भला इस (सूरा) ने तुममें से किसका ईमान ( विश्वास ) बढ़ा दिया

अतः जो विश्वासी हैं इसने उनका तो विश्वास बढ़ाया और वह अपना हर्ष मनाते हैं ।

( ३ ) व अम्मऽऽल्लजीना फी कुलूविहिम्मरजुन् फज़ाऽदतहुम् रिजसऽन् इत्ता रिजिसहिम् व माऽतूऽ व हुम् काफिरून् ॥

और जिनके मन में रोग है अतः उनको मर्तनता पर मलीनता बढ़ाई और जब तक वह मरे काफिर (ही) रहे ।

( ४ ) अ वलाऽ यरऽना अन्नहुम् युपतनूना फी कुल्लि आऽमिम्मरतन् अउ मरतयनि सुम्मा लाऽयतूयूना वलाऽ हुम् यज़ज़ककूरून् ॥

यह नहीं देखते कि वह प्रत्येक वर्ष एक वा दो बार परीक्षण में आती है, फिर पश्चात्ताप नहीं देखते और न रिश्ता ग्रहण करते हैं ।

( ५ ) व इज़ाऽ माऽ उन्ज़िलत् सूरतुन्नज़रा वअ-  
जुहुम् इत्ता वअज़िन्, इत् यराकुम्मिन् अह दिन  
सुम्ऽऽसरफ़ऽ; सरफ़ऽल्लाहु कुलूबुहुम् वि अन्नहुम्  
कउमुल्लाऽ यफ़कहून् ॥

जब एक सूरत उतरी तो एक दूसरे की ओर देखने लगे कि कोई तुमको देखता है फिर चले गये; अल्लाह ने उनके हृदय इसलिये परिवर्तित कर दिये हैं कि वह लोग ऐसे हैं कि उनमें बुद्धि नहीं ।

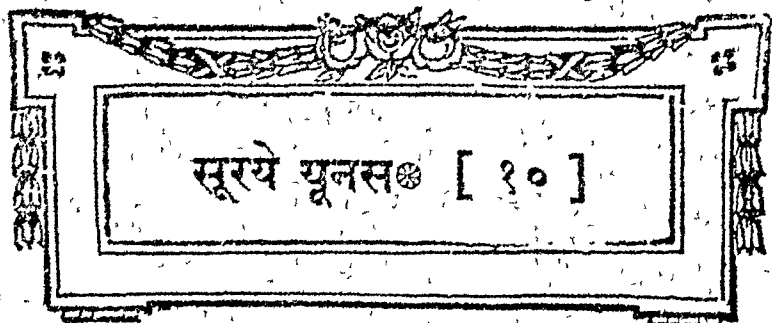
( ६ ) लकड़ जाइअकुम् रसूलुम्मिन् अन्फु सिकुम्  
अजीजुन् अलयाहि माऽ अनित्तुम् हरीसुन् अलपकुम्  
विष्णु मुअ्पिनीना रऊ फर्दाम् ॥

तुम्हारे पास तुम्हों में से पैगम्बर आया है यदि तुमको  
फाट मिले तो उसे भार मालूम होता है, वह तुमसे जो मुस-  
लमान हैं उनको खोज रखता है, वह अनुग्रह रखता है और  
दयालु है ।

( ७ ) फ इन्तज्जलद् फ कुल् हस्वियज्जलाहु लारे  
इलाहा इन्लाऽ हुवा, अलयाहि तवककन्तु व हुवा रब्बुज्ज  
अशिज्ज अजीम् ॥

फिर यदि वह लार्थ तो नू शत—तुम्हको अल्लाह पर्याप्त  
है उसके अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना ( योग्य ) नहीं,  
मैंने उसी पर विश्वास किया और वही वह तस्त का  
स्वामी है ।





[ मं० ३, पारा ११, रु० १।१० ]

( १ ) अलिफ् लाम् रा तिक्का आयातुऽल् फिता-  
विऽल् हकीम् ॥

अलिफ ल म् रा यह आयतें पक्की पुस्तक की हैं ।

( २ ) अकाऽना लिनाऽसि अजवऽन् अन् अल्  
हय्ना इला रजुलिभिन्हुम् अन् अन्जिरि-नाऽसा व  
वरिशरिऽल्लजीना आमनूरे अन्ना लहुम् फदमा सिदकिन्  
इन्दा रब्बिहिम् ; काऽलऽल् काऽफिरुना इन्ना हाजा ल  
साऽइरुम्मुवीन् ॥

असूरये यूनस नामक में उत्तरी इनमें १०६ आयतें और ११ रुकूअ हैं । इन सूरात में यूनस ( Gona ) पंगम्बर का वर्णन है, इसमें साथ ही कुरैश काफिरों को सम्बोधित किया गया है । यह सूरात हिजरी से पूर्व की है । यहूदियों का रिवायतों और इतिहासकी जानकारी से जाना जाता है कि यहूदियों में मुहम्मद साहब के निम्न और परिचित थे ।

क्या लोगों को आश्चर्य हुआ कि हमने उनमें से एक मनुष्य को आह्वान भेजी कि लोगों को भय सुना और (यह हर्ष समाचार दे कि जो कोई विश्वास करे उनको अपने पालनकर्त्ता के यहां सत्य पद है; अविश्वासी कहने लगे—“निस्सन्देह, यह साक्षात् जादूगर है ।”

( ३ ) इन्ना रब्बकुमुज्जलाह ज्जलजी खलक-समावाति वऽल् अर्जा फी सित्ति अय्याऽमिन् मुम्मऽस्तवा अलऽल् अर्शि युद्विरुऽल् अम्ना; माऽ मिन् शफीऽन् इल्लाऽ मिन् वअदि इज़िनही; ज़ालिकुमुज्जलाह रब्बुकुम् फाऽअनुदुह अफलाऽ तज़क्करुन् ॥

( लोगो ! ) तुम्हारा पालनकर्त्ता वही अल्लाह है जिसने छः दिन में आकाश और पृथिवी को उत्पन्न किया फिर अर्श पर जा विराजा ( कि वही से ) प्रत्येक कार्य का प्रबन्ध कर रहा है; उसकी जो पहले आज्ञा हो उसके अतिरिक्त कोई स्फ़ारिश नहीं कर सकता; यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्त्ता है फिर इली की उपासना करो; क्या तुम विचार का प्रयोग नहीं करते ?

( ४ ) इलय्हि मजिउकुय् जमीअऽन्; वअदऽज्जलाहि हक्कऽन्; इअहू यन्दउऽऽल् खलका मुम्मा युईदुह लि यजज़ियऽज्जलीना आमनुऽ व अमिलुऽ-स्सालिहाति विऽल् किस्ति, वऽज्जलीना कफरुऽ लहू म् शराऽजुम्बिन्

इमीमि व्व अजाऽवुन् अलीमुन् विमा काऽनूऽ  
यक्फुरून् ॥

तुम सबको उसीकी ओर लौट जाना है; अल्लाह की प्रतिष्ठा  
सच्ची है; वही उसको बना देगा फिर दुहरा देगा जिससे उन्हें  
फल दे कि जिन्होंने विश्वास किया था और भले कर्मों को  
न्याय से किया था; और जिन्होंने अस्वीकार किया—उन्हें  
खौलता पानो और दुःख का दण्ड पीना है क्योंकि वे अवि-  
श्वासी हुये थे ।

( ५ ) हु वऽल्लजी जअल—शम्सा जियाः अव्वऽल्ल  
कमरा नूरऽव्व कहरह मनाऽजिला लि तअलमूऽ अदद—  
सिसनीना वऽल्ल इसावा माऽ खलकऽल्लाहु जालिका  
इन्लाऽ विऽल्ल हकिः युफसिलुऽल्ल आयाति लि कज्-  
म्मिय्यअलमून ॥

वही है जिमने सूर्य को चमक और चन्द्रमा को प्रकाश  
दनाया और उसकी यात्राएँ निश्चित कीं तो चर्पों की गणना  
और गणित को ज्ञान रक्खो; अल्लाह ने इन्हें सत्य के अतिरिक्त  
और किसी प्रकार नहीं बनाया, वह उन लोगों पर, जिन्हें बुद्धि  
है, भेद प्रगट करता है ।

( ६ ) इना फिऽखितलाऽफि—कलयलि व—चहाऽरि  
वमाऽ खलकऽल्लाहु फि—स्समावाति वऽल्ल अजि ल  
आयाति लि कज्म्मिय्यत्तकून ॥

जो लोग (अल्लाह का) भय मानते हैं उनके लिए रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ अल्लाह ने आकाश और पृथिवी में उत्पन्न किया है उसमें (अल्लाह की सामर्थ्य वा सत्ता के अनेकों) चिन्ह हैं।

( ७ ) इन्नज्जलज़ीना लाऽ यजूना लिक्कारअना व रजूऽ विऽल् हयाति-हुन्याऽ वत्मअन्नूऽ विहाऽ वऽ ज्जज़ीना हुम् अन आयातिना गाफिलून् ॥

जिन लोगों को (मृत्यु के पश्चात्) हमसे मिलने का खटका ही नहीं और जो इस संसार के जीवन से प्रसन्न हैं और निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग हमारे चिन्हों से अपरिचित हैं।

( ८ ) उल्लाऽका मअ्वाहुमु-आऽह विमा काऽनुऽ यविसषून् ॥

वही लोग हैं जिनको कर्तव्य का परिणाम यह होगा कि उनका ठिकाना दोज़ख (होगा)।

( ९ ) इन्नज्जलज़ीना आमनुऽ व अमिलु-स्सालि-हाति यह दीहिम् रब्बुहम् वि ईमाऽनिहिम् ; तज़ी मिनवह-तिहिमुऽल् अन्हारु फी जन्नाति-न्नईम् ॥

जिन लोगों ने विश्वास किया और शुभ कर्म भी किये उनके विश्वास की वरकत से उनको उनका पालनकर्ता

( मोक्ष का ) मार्ग दिखा देगा, कि ( मृत्यु के पश्चात् ) आगम के उपवनों में ( रहेंगे कि ) जिनके निकट नहरें बह रही होंगी।

( १० ) दअवाहम् फीहा सुब्हानक-ल्ताहुम्मा ध तहि यत्तुहुम् फीहा सत्ताऽमुन्, व आखिरु दअवाहम् अनिऽत्तु हम्दु लिऽत्ताहि रविऽत्तु आलमीन् ॥

उनमें ( घुसते ही ) चिल्ला उठेंगे कि हे अल्लाह ! तू पवित्र है और उनमें उनकी शुभ आशिष—सलाम ( अल्लेक ) होगी और अन्त में इस प्रकार पुकारेंगे—सब प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही की है जो संसारों का पालनकर्ता है।

[ मं० ३, पारा ११, रु० २।१० ]

( १ ) व लउ युधजिलुऽत्ताहु लिन्नाऽसि-शररऽ-  
स्तित्त्रजाऽ लहुम् विऽत्तु खय्रि ल कुजिया इत्तयहिम्  
अजलुहुम् ; फ नज़रुऽत्तलजीना लाऽ यजूना लिक्काऽ  
अनाऽ फी तुग्याऽनिहिम् यअमहून् ॥

और जिस प्रकार लोग लाभ के लिए शीघ्रता किया करते हैं यदि उसी प्रकार उनको कुकर्मों के दरुद में हानि पहुंचा दिया करता तो उनकी मृत्यु ( कर्मा की ) हो चुकी होती और हम उन लोगों को—जिन्हें ( मरे पीछे ) हमारे समीप आने का ( किञ्चिन्मात्र ) रुन्देह नहीं हैं—छोड़े रखते हैं कि ( वे ) अपनी उद्दण्डता में पड़े भयका करें।



( २ ) व इजाऽ मसऽल् इन्साऽन-जुर्क दआऽनाऽ  
 लि जन् विहीरे अउ काऽइ नऽन् अउ काऽइमऽन्, फ  
 लम्माऽ काऽफनाऽ अन्हु जेरह मरका अल्लम् यइउनाऽ  
 इला जुर्म्मससह, कज़ालिका जुय्यिना लिल मुत्तिफ़ीना  
 माऽ काऽनुऽ यअमलून ॥

और जब मनुष्य को ( किसी प्रकार का ) कष्ट पहुंच जाता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारे चला जाता है फिर जब हम उसके कष्ट को उससे दूर कर देते हैं तो ऐसा ( निश्चिन्त होकर ) चल देता है कि मानों उस कष्ट के—जा उसको पहुंच रहा था—( दूर करने के ) लिए उसने हमको ( कभी ) पुकारा ही न था; जो लोग सीमा से बाहर पग रखते हैं उनको उनके काम उसी प्रकार भले करके दिखाये गये हैं ।

( ३ ) व लक़इ अहकनऽल् कुरुना मिन कन्लि-  
 कुम् लम्माऽ जलमूऽ व जाऽअतहुम् रुमुलुहुम् विऽल्  
 वय्यिनाति व माऽ काऽनुऽ लि युअमिनूऽ कज़ालिका  
 नज्जिऽल् कउमऽल् मुज्मिनी ॥

और तुमसे पूर्व कितनी उम्मतें ( जातियां ) हो चुकी हैं कि जब उन्होंने कुत्ताल पर बमर कसी, हमने उनको नष्ट कर दिया और उनके पैगम्बर उनके पाल प्रत्यक्ष चमत्कार ( मुअ-जिजे ) लेकर आये और उनको ( इस्लाम पर ) विश्वास

करना सुलभ न हुआ; पापी पुरुषों को हम इसी भाँति दण्ड दिया करते हैं।

( ४ ) सुम्मा जअल्नाकुम् खलाइइफा फिऽल् अजिं  
मिन् वअदि हिम् लि नन्जुरा कयुफा तअमलून् ॥

फिर उन ( की मृत्यु ) के पश्चात् हमने तुम लोगों को उनका पृथ्वी में प्रतिनिधि बनाया जिससे देखें कि तुम लोग कैसे आचरण करते हो।

( ५ ) व इजाऽ तुत्ला अलयहिम् आयातुनाऽ  
बदियनातिन् काऽलऽल्लजीना लाऽ यजूना लिकाऽ  
अनऽऽयति वि कुअनिन् गयुरि हाजाऽ अउवदिह्हु  
कुल् माऽ यकूतु लीऽ अन् उवदि लह्हु मिन् तिल्काऽइ  
नफसी; इन् अत्तविउ इल्लाऽ माऽ युहाऽ इलय्या; इन्नीऽ  
अखाऽफु इन् असयतु रबी अजाऽवा यउमिन् अजीम् ॥

जब हमारी प्रगट आवाज़ें इन लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का (तनिक भी) खटक नहीं वह ( तुमसे ) कहते हैं कि इनके सिवाय कोई और कुरान लाओ अथवा इसीमें हेर-फेर कर दो, ( तुम उनसे ) कहा कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी ओरसे इसमें हेर-फेर करूँ; मेरी ओर जो वही आती है मैं तो उसीका अनुचरण करता हूँ यदि मैं अपने पालनकर्ता की आज्ञा

का उल्लंघन करूँ तो मुझे (क़यामत के) बड़े दिन के दण्ड का भय लगता है।

( ६ ) कुल्लउशाश्अल्लाहु माऽ तलउतुहु अलय-कुम् वलाः अद्राकुम् विही फ़ क़द लविस्तु फ़ीकुम् उमुर्जम्मिन् क़ब्लिही; अफ़लाऽ तअकिलून् ॥

( हे पैगम्बर ! इन लोगों से ) कह-यदि अल्लाह चाहता तो मैं यह ( कुआन ) पढ़कर तुमको सुनाता ही नहीं और न अल्लाह तुमको इससे परिचित करता, इससे पूर्व मैं चिरकाल पथ्यन्त तुम लोगों में रह चुका हूँ; क्या तुम नहीं जानते ?

( ७ ) फ़ मन् अज्लमु मिम्मनिऽफ़तरा अलज्जलाहि क़ज़िवन् अउ क़ज़वा वि आयातिही; इन्नहू लाऽ चृपिलहुल् मुऽज्जिम्नून् ॥

तो इससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर असत्य आक्षेप आरोपित वा उसकी आयतों को असत्य ठहरावे; इसमें तनिक संशय नहीं कि पापी सफलता न करेगा।

( ८ ) व यअनुदूना भिन्दनिज्जलाहि माऽ लाऽ यजुरुहुम् वलाऽ यन्फ़उहुम् व यकलूना हार उलाऽइ हुक़आरेजनाऽ इन्दज्जलाहि; कुल् अतुनविअनज्जलाहा विमाऽ लाऽ तअलमु फ़ि-स्समावाति वलाऽ फ़िऽत् अज़ि, जुहानहू व तआला अम्माऽ शुथिकून् ॥

और (यह) अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं की पूजा करते हैं जो न तो उनको हानि ही पहुंचा सकती हैं और न उनको लाभ ही पहुंचा सकती हैं और कहते हैं कि हमारे यह (उपास्य देव) अल्लाह के यहां हमारे सिफारिशी हैं; (हे पैगम्बर ! इन लोगों से) कह-क्या तुम अल्लाह को ऐसी वस्तु का पता देते हो जिसको न (तू कहीं) आकाश में पाता है और न पृथिवी में; वह इन लोगों के समांश से उच्चतर है।

( ६ ) व माऽ काऽन-न्नाऽनु इल्लाहे उम्मतव्वाऽहिदतन् फऽख्तलफऽ; व लउ लाऽ कलिमतुन् सवकतु मिररिव्विका ल कुज़िया वयनहुम् फी माऽ फीहि यस्तलिफुन् ॥

और (आरम्भ में) लोग (धर्म के) एक ही ढंग पर थे मत भेद तो पीछे हुआ और (हे पैगम्बर ! ) यदि तुम्हारे पालनकर्त्ता को शोर से (प्रलय की) प्रतिज्ञा पूर्व से ही न का हुई होती तो जिन बातों में यह मत भेद दिखा रहे हैं (उन बातों में कभी का) उनके मध्य निर्णय कर दिया गया होता।

( १० ) व यकूलूना लउ लाहे उन्ज़िला अलयहि आयतुमिररिव्विही, फऽ कुल् इन्नमऽऽल् गय्यु लिल्लाहि फऽन्तज़िरुऽ, इन्ती मअकुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

और कहते हैं कि इस (पैगम्बर मुहम्मद) को इसके पालनकर्त्ता की शोर से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया गया ?

अतः ( हे पैगम्बर ! इनसे ) कह दे कि परोक्ष ( मविष्य का ज्ञान ) केवल अल्लाह ही को है तो तुम ( भी अल्लाह की आज्ञा की ) प्रतीक्षा करो, मैं ( भी ) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ ।

[ मं० ३ पास ११ सूकूअ ३ ]

( १ ) व इजा३ अज़ावन्ऽन्नाऽसा र अतम्मिन्  
 प्रदि ज़रा३आ मससत्हुम् इजाऽलहुम्मक्रुन् फी३ आयाऽ  
 नाऽ, कुलिऽल्लाहु अस्तउ मक्रऽन् ; इन्ना रुमुलनाऽ  
 यक्तुवूना माऽ तम्कुरुन् ॥

और जब लोगों को कष्ट पहुँचने के पश्चात् हम ( कष्ट दूर करके अपने ) अनुग्रह का स्वाद चखा देते हैं तो फिर वे हमारी आयतों ( के विरोध ) में प्रपञ्च रचते हैं; ( हे पैगम्बर ! तू इनसे ) कहदे कि अल्लाह का प्रपञ्च ( तुम्हारे प्रपञ्चों से ) अधिक चलता हुआ है; और हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे प्रपञ्चों को लिखते ( जाते ) हैं ।

( २ ) हुवऽल्लज़ी युसयिरु कुम् फ़िऽल् वरि वऽल्  
 बहि इत्ता३ इजाऽ कुन्नुम् फ़िऽल् फ़ुल्कि, व ज़रयना  
 विहिम् विरीहिन् तयिबति व्व फ़रिहू विहाऽ जा३अत्-  
 हाऽ रीहुन् आऽसि फ़ुव्व जा३अहुमुऽल् मउजु मिन्  
 कुबिल मफ़ाऽनिव्व ज़म् अफ़हम् उहीता विहिम् दअवुऽऽ-

न्लाहा मुखिलसीना लहु-दीना, ल इन् अन् जयत्नाऽ  
मिन् हाजिही ल नकूनना मिन्-शशाकिरीन् ॥

वही ( खुदा ) है जो तुम लोगों को थल और जल में लिये लिये फिरता है यहां तक कि किसी समय तुम नौकाओं में होते हो, और वह लोगों को अनुकूल वायु की सहायता से लेकर चलता है और लंग उनकी चाल से प्रसन्न होते हैं (अकस्मात्) नौका को एक हवा का झोका आ लगता है और लहरें प्रत्येक ओर से उन पर आरही हैं और वह समझते हैं कि (बुरी तरह) आ धिरे तो फिर केवल अल्लाह ही को स्वीकार कर उससे प्रार्थना करते हैं कि यदि तू हमारी इससे रक्षा करे तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ होंगे ।

( ३ ) फ लम्मारं अन्जाहुम् इजाऽ हुम् यव्गूना  
फिऽल् अज़ि विग्यरिऽल् हक्कि; याऽ अय्युहनाऽम्  
इन्नमाऽ वग्युकुम् अलाऽ अन्फुसिकुम्मलाऽ अऽल् हयाति-  
हुन्याऽ सुम्मा इलयनाऽ मजिउकुम् फ तुनन्विउकुम् विमाऽ  
कुन्तुम् तअमलून ॥

फिर जब वह उनको ( इस विपत्ति से ) मुक्ति दे देता है तो वह थल पर पहुंचते ही व्यर्थ की उद्वेगडता करने लगते हैं; हे लोगो ! तुम्हारी उद्वेगडता ( का प्रभाव ) तुम्हारी ही आत्माओं पर ( पड़ेगा, यह भी इस ) संसार के ( क्षणिक ) जीवन के लाभ ( हैं अतः इनका आनन्द लूट लो ) अन्त में तुमको

हमारी ओर लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम (उस समय) करते रहे हो, तुमको (उसका शुभाशुभ) बता दूँगे ।

( ४ ) इन्द्रमाऽ मसलुऽत् हयाति-दुन्याऽ कयाऽ  
 इन् अन्जल्लाहु मिन-स्समाऽइ फऽखललता विही नवाऽ  
 तुऽत् अजि मिम्माऽ यत्रकुलु-आऽसु वऽत् अन् आऽसु;  
 हत्ताऽ इजाऽ अखजतिऽत् अजु, जुस्रु फहाऽ वऽज्जयनत्  
 व जना अहुहाऽ अन्नहुम् कादिरुना अलयहाऽ अताहाऽ  
 अम्मुनाऽ लयलऽन् अउनहाऽरऽन् फ जअल्लाहाऽ हसी-  
 दऽन् क अल्लम् तगना विऽत् अमिस; कजालिका नुफ-  
 सिसलुऽत् आयाति लि कऽमियतफकरुन् ॥

सांसारिक जीवन का दृष्टान्त तो केवल जलवत् है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर पृथ्वी को बनस्पति—जिसको मनुष्य और पशु खाते हैं—पानी के साथ मिश्रित हो गई, यहाँ तक कि जय पृथ्वी ने अपना गृहकार कर लिया और शोभायमान हुई और खेतवालों ने समझा कि ( अब ) वह इन पर शक्तिवान् होगये, रात के समय या दिन के समय हमारी आँखा उस पर उतरी, फिर हमने उसे काटकर ढेर कर दिया मानो कल यहाँ खेती थी ही नहीं; जो लोग सोचते समझते हैं उनके लिए हम अपनी आयतें इसी प्रकार विस्तार पूर्वक बर्णन करते हैं ।

( ५ ) वज्रलाह् यद्दुः इला दाऽरि-ससलामि;

व यद्ददी मय्यशाऽइ इला मिराऽतिम्पुस्तकीम् ॥

और अल्लाह लोगों को शान्ति के सदन ( अर्थात् बहिश्त ) की ओर बुलाता है और जिसको चाहता है सोधे मंग की ओर दिख देता है ।

( ६ ) लिज्जलजीना अद्सनुऽऽल् हुस्ना व जिऽयाऽ

दतुन् ; वलाऽ यद्दकु वुजूद्दहुम् कतरुव्व लाऽ जिज्जलतुन् ;

उलाऽइका अस्दावुऽल् जन्नति, हुम् फीहा खालिदून् ॥

जिन लोगों ने ( ससार में ) भलाई की उनके लिए ( परलोक में भी वैसी ही ) भलाई है और कुछ अधिक भी और पापियों की भांति उनके मुखों पर न कालिख पुती होगी और न मलिनता; यही लोग बहिश्ती हैं, वहां सदा रहेंगे ।

( ७ ) वज्रलजीना कसवुऽ-ससयिआति जजाऽउ

सयिय अतिन्, वि मिऽस्तिहाऽ व तर्हकुहुम् जिज्जलतुन् ;

पाऽ लहुम्पिनऽल्लाहि मिन् आऽसिमिन्, क अन्नमाऽ

जगशियत्त वुजूद्द हुम् कित्तअऽम्मिनल्लयत्ति मुज्जिमऽन् ;

उलाऽइका अस्दावु-नाऽरि, हुम्फीहा खालिदून् ॥

और जिन लोगों ने बुरे कर्म किये तो बुरे कर्मों का परिणाम कैना ही ( बुरा ) और इसके मुखों पर मलिनता छा रही होगी; अल्लाह से कोई उनकी रक्षा करने वाला नहीं, मानो



अन्धेरी रात को चादर को फाड़कर उनके टुकड़े उनके मुँह पर उढ़ा दिये गये हैं; यही नारकीय ( दोज़खी ) हैं, वहाँ सर्वदा रहेंगे ।

( ८ ) व यउमा नहशुरुहुम् जमीअऽन् मुम्मा नक़ुल्लिल्लीना अथक़ऽमकाऽनकुम् अन्तुम् व शुरकाऽज्जुम् , फ़ ज़य्यल्लाऽवयनहुम् व काऽला शुरकाऽउहुम्माऽकुन्तुम् इय्याऽनाऽ तअबुदून् ॥

और जिस दिन हम इन सबको ( अपने यहाँ ) इकट्ठे करेंगे, फिर मुशरिकों को आज्ञा देंगे कि तुम और जिनको तुमने ( अल्लाह का ) साझीदार बनाया, वह तनिक अपने स्थान पर टहरें, फिर हम इनमें परस्पर फूट डाल देंगे और इनके शरीर ( इनसे ) कहेंगे कि तुम हमारी पूजा तो कुछ करते नहीं थे ।

( ९ ) फ़ कफ़ा विऽल्लाहि शहीदऽन् वयननाऽ व वयनकुम् इनकुनाऽ अन् इवाअतिकुम् ल गाफ़िलीन्

अतः हमारे और तुम्हारे मध्य केवल अल्लाह ही साक्षी है, हमको तो तुम्हारी पूजा की सर्वथा सुध न थी ।

( १० ) हुना लिका तव्लूऽ कुव्लु नफ़िसम्माऽ अस्लफ़त् व रुदूऽ इलऽल्लाहि मज्ला हुमुऽल् हक्कि व ज़ल्ला अन्हुम्माऽ काऽनूऽ यफ़तरून् ॥

वहां प्रत्येक पुरुष अपने कर्मों की—जो उसने पहिले ही से भेजे हैं—परीक्षा कर लेगा और सब लोग अल्लाह की—जो उनका वास्तविक स्वामी है—और लौटा कर लाये जावेंगे और जो वे पर का वे उड़ाते रहे हैं वह सब उनसे नष्ट हो जावेंगी ।

[ मजिल ३ पा० ११ रु० ४।१० ]

( १ ) कुल् मय्यर्जुकु कुम्पिन—समा३इ वस्ल् अज़ि  
अम्पय्यम्बिकु—सम्भ्रा वस्ल् अन्साऽरा व मय्युग्जिजुस्ल्  
हय्यामिनस्ल् मय्यिति व युग्जिजुस्ल् मय्यिता मिनस्ल्  
हय्यि; व मय्युदव्विरुस्ल् अम्ना, फ स यकूलूनस्ल्लाहु,  
फ कुल् अफलाऽ तत्तकून ॥

( हे पैगम्बर ! इनसे ) पूछो कि तुमको आकाश और पृथ्वी से कौन भोजन देता है अथवा ( तुम्हारे ) कान और नेत्र किसके आधीन हैं और कौन है जो मृतक को जीवित से उत्पन्न करता है; और कौन ( सृष्टि का ) प्रबन्ध चला रहा है; तो तत्क्षण बोल उठेंगे कि अल्लाह; फिर ( तुम इनसे ) कहो कि तुम इस पर भी ( इससे नहीं डरते ।

( २ ) फ जाऽलिकुमुस्ल्लाहु रब्बुकुमुस्ल् हक्कु,  
फ माऽजाऽ वअदस्ल् हक्क इल्लऽ—जल्लालु फ अन्ना  
तुसफून ॥

फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सत्य पालनकर्ता है, फिर

सत्य के विदित हुए पीछे मार्गच्युत होना नहीं तो और क्या है, फिर तुम लोग किधर को फिर चले जा रहे हो ?

( ३ ) कज़ालिका हक्कत कलिमतु गव्विका अलऽ-  
ल्लज़ीना फ़ सकूर अन्नदुम् लाऽ युअमिन्नू ॥

( हे पैग़म्बर ! ) इसी प्रकार तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा अनाज्ञाकारी लोगों पर सत्य होकर रही कि यह किसी प्रकार विश्वास नहीं करेंगे ।

( ४ ) कुल हल् मिन शुरकारइ कुम्पय्यदुऽल  
खल्का मुम्बा युई दुह्द फ़ अन्ना तुअफ़कून् ॥

पूछो—तुम्हारे ठहराये हुए शरीकों में से कोई येता भी है जो सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करे फिर उनको ( मारकर ) पुनः उत्पन्न करे; कहो कि अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करता है और वही उन्हें मारकर पुनः उत्पन्न करेगा तो अब तुम किधर को उलटे जा रहे हो ?

( ५ ) कुल हल् मिन शुरकारइ कुम्पय्यइदीऽ  
इलऽल्ल हक्कि कुलऽल्लाहु यह दी लिल् इक्कि,  
अफ़म्मय्यइदीऽ इलऽल्ल हक्कि अइक्कु अय्युत्तवआ  
अमल्लाऽ यहिदीऽ इल्लाऽ अय्युद्दा; फ़माऽ लकुम्  
कयफ़ा तदकुमून् ॥

( हे पैग़म्बर ! इनसे ) पूछो कि तुम्हारे कोई भी येता है

जो सत्य ( मत ) का मार्ग दिखा सके; कहो—अल्लाह ही सत्य का मार्ग दिखाता है; तो क्या जो सत्य का मार्ग दिखाये वह इसका अधिक अधिकारी है कि उसकी आज्ञा का अनुसरण किया जाय अथवा जो ऐसा ( विवरण ) है कि जब तक दूसरा उसको मार्ग न दिखावे वह स्वयं भी मार्ग नहीं पा सकता; फिर तुम लोगों को क्या हो गया है, कैसे निर्णय करते हो ?

( ६ ) वमाऽ यत्तविउ अक्सरुहुम् इल्लाऽ जन्नऽन ;  
 इन्न-ज़न्ना लाऽ युग्नी मिनऽल् हविक शयऽअऽन ; इन्नऽ-  
 त्लाहा अलीमुन् विमाऽ यफूअलून् ॥

और इन लोगों में से प्रायः कल्पना पर चलते हैं, अतः कल्पना के तुम्हारे सत्य के सम्मुख कुछ उपयोगी नहीं होते; जैसी जैसी मूर्खना यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उनसे पूर्णतः परिचित है ।

( ७ ) वमाऽ काऽना हाज़ऽल् कुअरानु अय्युपतरा  
 मिन्दुनिऽल्लाहि वला किन् तस्दीकऽ ल्लज़ी वयना यद-  
 यदि व त फसीलऽल् किताबि लाऽ रय्वा फीहि मिरबि-  
 ऽल् आलमीन् ॥

और यह कुरान इस प्रकार की पुस्तक नहीं कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई इल्लको अपनी ओर से बना लावे किन्तु जो पुस्तक इसके उतरने से पूर्व की है ( यह ) संसार के प्रा-

लनकर्ता की ओरसे उनकी पुष्टि है और पुस्तकों (की आशाओं) का विस्तार पूर्वक वर्णन है।

( ८ ) अम् यकलूनऽफनराहुः कुल् फअतूऽ वि  
सूरति मिमिऽस्तही वऽइऽ मनिऽस्तनअतुम्पन्दिऽल्लाहि  
इन कुन्तुम् सादिकीन् ॥

क्या यह लोग ( कुरान के विषय में ) यह कहते हैं कि इसको पैगम्बर ने स्वयं बना लिया है तो ( हे पैगम्बर ! इन लोगों से ) कहो कि यदि तुम ( अपने दावे में ) सच्चे हो थोड़े जैसा तुम कहते हो कि मैं इसके बना लेने की शक्ति रखता हूँ तो तुम भी ( भाषा भिन्न होते हुए ) ऐसी परत सूरत ही बनालाओ और यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के अनिश्चित जिसको चाहो ( अपनी नहायतार्थ ) बुझालो ।

( ९ ) वल् कज़ज़वूऽ विमाऽ लम् युहीनूऽ वि  
इल्मिही वल्मभाऽ यअतिहिम् तअवीलुहू, कज़ालिका  
कज़ज़वऽल्लज़ीना मिन् कब्लिहिम् फऽन्जुर कयफा काज़्ना  
आक़िवतु-ज़ज़ालिमीन् ॥

परन्तु उन्होंने उस वस्तु को असत्य ठहराया, जिसके समझने की उनको सामर्थ्य न थी, अब तक उन पर उनका अर्थ प्रगट न हुआ, ऐसे ही पूर्वजों ने झुठलाया सो देखो दुष्टों का क्या अन्त हुआ ।

( १० ) व मिन्हुम्मर्युअमिनु विही व मिन्हुम्मन्लाऽ  
युअमिनु विही; व रब्बुका अअलमु विऽत् मुफिसदीन् ॥

और उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो कुरान पर ( भविष्य  
में ) विश्वास कर लेंगे और कुछ ऐसे हैं जो उस पर विश्वास  
करने वाले नहीं; और ( हे पैगम्बर ! ) तुम्हारा पालनकर्ता  
रूपद्रवियों को भली भांति जानता है ।

[ मंजिल ३ पारा ११, रु० ५:१३ ]

( १ ) व इन् कज़ज़ूका फ़ कुल्ली अमली व लकुम्  
अमलुकुम्, अन्तुम् वरीशजना मिम्माऽ अअमलु व  
अनाऽ वरीशजमिम्माऽ तअमलुन् ॥

और ( हे पैगम्बर ! ) यदि ( इतने समझाने पर भी यह  
लोग ) झुटलाते ही चले जाय तो कहदो कि मेरा कृत्य सुभको  
और तुम्हारा कृत्य तुमको, तुम मेरे कामों के जिम्मेदार नहीं  
और मैं तुम्हारे काम का जिम्मेदार नहीं ।

( २ ) व मिन्हुग्यस्तमिज़ना इलय्का; अफ़अन्ता  
तस्मिज़-स्सुम्मा व लउ काऽनुऽ लाऽ यअकिलून् ॥

और ( हे पैगम्बर ! ) इनमें कुछ लोग हैं कि तुम्हारी  
ओर कान लगाते हैं तो क्या तुम इन बहरों को सुना सकोगे  
जिनमें यद्यपि बुद्धि भी नहीं है ।

( ३ ) व मिन्हुम्मय्यन्जुरु इलय्का अफ अन्ता तह्-  
दिऽल् उम्या व लउ काऽनूऽ ला युगिसरून् ॥

और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी ओर तकते हैं तो क्या तुम अन्धों को मार्ग दिखा दोगे चाहे उन्हें कुछ न दिखाई देता हो ?

( ४ ) इन्नऽल्लाहा लाऽ यज़िलमु-नाऽसा शय्अऽव्वला  
किन्न-नाऽसा अन्फुसहुम् यज़िलमून् ॥

अल्लाह तो मनुष्यों पर रस्ती भर भी अन्याय नहीं करता परन्तु मनुष्य स्वयं अपने ( आत्मा के ) ऊपर अत्याचार करते हैं ।

( ५ ) व यउ मा यह शुरुहुम् क अल्लम् यल्बसूरे  
इल्लाऽ साऽ अतऽम्मिन-न्नहारि यत आऽरफूना बयन्-  
हुम् ; कह खसिरऽल्लज़ीना कज़वूऽ बिलिकाऽइऽल्लाहि  
व माऽ काऽनूऽ मुहतदीन् ॥

और जिस दिन ( अल्लाह अपने पास ) उन्हें एकत्रित करेगा जैसे कि वह न रहे थे परन्तु बड़ी भर दिन, वे परस्पर पहचानेंगे; निरुसन्देह जिन्होंने अल्लाह का मिलना असत्य ठहराया और न आये ( सच्चे ) मार्ग पर ।

( ६ ) व इम्माऽ निरुयन्नका वअज़ऽल्लज़ी नइऽहु

हुम् अउ नतवफयन्नका फ इलयनाऽ मजिउ हुम् सुम्मऽ  
ल्लाहु शहीदुन् अला माऽ यफ़अलून ॥

और ( हे पैगम्बर ! ) यदि हम तुमको उन प्रतिज्ञाओं में से, जो हम उनसे करते हैं, कोई प्रतिज्ञा दिलवावें अथवा हम तेरा प्राण ले लें, अन्त में उनको हमारे पास फिर आना है, फिर अल्लाह उसका साक्षी है जो वह करते हैं ।

( ७ ) व लिकुल्लि उम्मतिरसूलुन् ; फ़ इजाऽ  
जाश्आ रसूलुहुम् कुज़िया वय नहुम् बिऽल् किस्ति व  
हुम् लाऽ युज़्लमून् ॥

और प्रत्येक जाति का एक पैगम्बर ( अपनी जाति के साथ हमारे यहाँ ) उपस्थित होगा तो जाति में और पैगम्बर में न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जायगा; और लोगों पर अत्याचार न होगा ।

( ८ ) व यकूलूना मता हाज़ल् वअदु इन्कुन्तुम्  
सादिकीन् ॥

और ( हे मुसलमानो ! यह लोग तुम्हें ) पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो ( दण्ड की ) प्रतिज्ञा कब पूर्ण होगी ?

( ९ ) कुल्लारे अम्लिकु लि न, फसी ज़रऽव्व लाऽ  
नफ़अऽन् इल्लाऽ माऽ शाश्अल्लाहु; लि कुल्लि उम्मतिन्



अजलुन्; इजाऽ जाआ अजलुहुम् फ लाऽ यस्तआस्रुना  
साऽअतऽव्वलाऽ यस्तकदिमून् ॥

( हे पैगम्बर ! तुम इनसे ) कहो कि मेरा अपना हानि लाभ भी मेरे अपने वश का नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहता है ( वही होता है उसके ज्ञान में ) प्रत्येक जाति का एक दिवस नियत है जब उनका समय आ पहुँचता है तो एक घड़ी भी न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं ।

( १० ) कुल् अरअय तुम् इन् आताकुम् अजाऽव्वुह  
वयाऽतऽन् अउ नहाऽरऽम्माऽजाऽ यस्तअजिलु मिन्हुऽल  
मुजिमीन् ॥

( हे पैगम्बर ! इन लोगों से ) पूछो कि भला देखो तो सही, यदि अल्लाह का प्रकोप तुम पर रातों रात प्रगट हो या दिन दहाड़े, पापी लोग उसके लिये क्योंकर शीघ्रता कर रहे हैं !

( ११ ) असुम्मा इजाऽ माऽ वकऽआ आमन्तुम् बिही  
आल् आना व कइ कुन्तुम् बिही यस्तअजिलून् ॥

तो क्या फिर जब आ प्रगट होगा तबही उसका विश्वास करोगे या अब ? और तुम तो इसके लिए जल्दी मचाया करते थे ।

( १२ ) सुम्मा कीला लिल्लजीना जलमूऽ जूकूऽ  
अजाऽव्वल सुल्दि; इल् तुजजउ ना इल्लाऽ विमाऽ  
कुन्तुम् तकिस्वुन् ॥

फिर ( अन्तिम दिन ) अनायासकारी लोगों को आकाश की जायगी कि अब चिरकालीन प्रकोप चखो, यह जो तुमका दरगुद दिया जा रहा है तुम्हारे अपने ही कृत्यों का परिणाम है।

(१३) व यस्तन् विजनका अ इत्कु हुवा; कुल् ई च रव्वीरे इन्नहू ल ह्क कुव्व मा रे अन्तुम् वि मुअजिजीन ॥

और ( हे पैगम्बर ! यह लोग ) तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम इनसे कहते हो क्या वास्तव में होकर रहेगा, ( तुम इनसे ) कहो—हां, मुझे अपने पालनकर्ता की शपथ; हां, वह निश्चय-पूर्वक अवश्य होकर रहेगा और तुम अल्लाह को पराजित न कर सकोगे।

मं० ३ पारा ११, रु० ६।७

( १ ) व लउ अन्ना लि कुल्लि नफिसन् जलमत  
माऽ फिऽल अजिलऽ फतदत् विही; व असरुऽ-न्नदाऽमता  
लम्माऽरा अयुऽऽल अजाऽवा; व कुजिया वय नहुम्  
विऽल किस्ति व हुम् लाऽ युजलमून ॥

और यदि प्रत्येक प्राणी के पास जिसने पाप किया जितना पृथ्वी में है और वह उसे अपनी मुक्ति के निमित्त डाले; और अपनी लज्जा को छिपाये जब कि दरगुद को देखे; और उनमें न्याय से निर्णय कर दिया जायगा कि उन पर अत्याचार न हो।

( २ ) अलाइ इन्ना लिल्लाहि माऽ फि-रसमावाति  
 वऽल् अजि; अलाइ इन्ना वऽद्दऽल्लाहि हऽकुब्ला  
 किन्ना अकसरहुम् लाऽ यऽल्लमून् ॥

स्मरण रखो कि जो कुछ पृथ्वी और आकाश में है सब  
 अल्लाह ही का है; और स्मरण रखो कि अल्लाह की  
 ( कयामत की ) प्रतिबा सत्य पर ( खिर ) है परन्तु प्रायः  
 मनुष्य विश्वास नहीं करते ।

( ३ ) हुवा युही व युमीतु व इलय् हि तुर्जऊन् ॥

वही जिलाता और मारता है और उसीकी ओर तुम  
 ( सब ) को लौट कर जाना है ।

( ४ ) याइ अय्युहऽ-न्नाऽमु कऽ जाइअतकुम्मऽ  
 इजतुम्मिरा-वकुम् व शिफाइ उल्लिमाऽ फि-सुदुरि व  
 हुदऽव्व र हतुल्लिल् मुअमिनीन् ॥

हे लोगो ! तुम्हारे पालनकर्ता की ओरसे तुम्हारे पास  
 शिक्षा आचुकी और हार्दिक रोगों ( शिक आदि ) की औषधि  
 और विश्वासियों के लिये शिक्षा और अनुग्रह भी आचुका ।

( ५ ) कुल् विफऽल्लिऽल्लाहि व विर हतिही फ  
 वि जालिका फल् यफहूऽ हुवा खय् लम्मिमाऽ  
 यज्मऊन् ॥

( हे पैगुम्बर ! ) कहो कि लोगों को चाहिए कि अल्लाह

का अनुग्रह और उसकी कृपा (अर्थात् कुरान) को पाकर प्रसन्न हों कि जिनके एकत्र करने के पीछे पड़े हैं यह उनसे कहीं श्रेष्ठ है।

(६) कुल् अरअयतुम्मा३ अन्नलऽल्लाहु लकुम्मि-  
रिज्जिक्न् फ जअल्लुम्मिन्हु हराऽमऽव्व हलाऽलऽन्  
कुल् आऽल्लाहु अजिना लकुम् अम् अलऽल्लाहि  
तफतरुन् ॥

(हे पैगम्बर [इन लोगों से] कहो कि भला देखो तो अल्लाह ने तो तुम्हारे लिए भोजन उतारा, और फिर तुमने उसमें से कोई वस्तु हराम (निषिद्ध) और कोई हलाल (अव्यय) टहराली; (हे पैगम्बर!) कहो कि तुमको अल्लाह ने आज्ञा दी क्या अल्लाह पर असत्य आरोप आरोपित करते हो ?

(७) वमाऽ जन्नुऽल्लज्जीना यफतरुना अलऽल्ला-  
हिऽल् कजिवा यऽम्ऽल् कियामति; इन्नऽल्लाहा लजू  
फज्जिन् अल-आऽसि वला किना अक्सरहुम् लाऽ  
यश्कुरुन् ॥

और क्या वह लोग, जो अल्लाह पर लाज्जुन लगाते हैं, प्रलय के दिन का विचार करते हैं; निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर अनुग्रह करता है परन्तु बहुधा कृतघ्नता प्रगट नहीं करते।

[ मँजिल ३ पारा ११ रू ७।१० ]

( १ ) वमाऽ तकनु फी शअनिव्व माऽ तल्लऽ  
मिन्हु मिन् कुरआनि व्व लाऽ तअमलूना मिन् अमलिन  
इल्लाऽ कुन्नाऽ अलयकुम् शुहूदऽन् इज् तुफ़ीजूना फ़ीहि;  
वमाऽ यअ जुवु अर्रव्विका मिम्मिस्काऽलि ज़रतिन् फ़िस्त्  
अज़ि व लाऽ फ़ि-मसमाऽइ वलाऽइ असग़रा मिन् ज़ा-  
लिका वलाऽइ अक़दरा इल्लाऽ फ़ी किताविम्मुबीन् ॥

और तू किसी वंशा में क्यों न हो और कुरान में से कुछ  
( ही ) काम क्यों न करते हो, ( ऐसा ) नहीं ( होता ) कि जब  
तुम कार्य को आरम्भ करते हो, हम तुम्हारे पर उपस्थित न हों;  
और तेरे पालनकर्ता से एक पृथ्वी और आकाश में ज़र्र भर  
भी गुप्त नहीं रहता, और न उससे छोटी वस्तु और न बड़ी  
वस्तु परन्तु वह प्रगट पुस्तक में है।

( २ ) अलाऽ इन्ना अउलियाऽअल्लाहि लाऽ  
ख़ड्फुन् अलयहिम् व लाऽ हुम् यह ज़नून् ॥

सुन रक्खा, जो लोग अल्लाह को शोर हैं उन्हें न भय है  
और न शोक ।

( ३ ) अल्लज़ीना आयनूऽ व काऽनूऽ यत्कन ॥

जो विश्वासी हैं और संयम करते हैं,

( ४ ) लहुमुऽल् वुथा फ़िऽल् हयाति-दुन्याऽ व

फिऽल् आखिरति; लाऽ तब्दीला लिक्लिमातिऽल्लाहि;  
जालिका हुवऽल् फरजुऽल् अज़ीम् ॥

उनको संसार के जीवन का और अन्तिम ( परलोक के )  
जीवन का हर्ष-समाचार ( दिया जाता ) है; अल्लाह की आ-  
शाओं का परिधर्तन नहीं होता; यही महान् मनोकामना ( है।  
जो ) प्राप्त होनी है ।

( ५ ) वलाऽ यह जुन्का फरलुहुम् , इन्नऽल् इज़ज़ता  
लिल्लाहि जमीअऽन् ; हुव-ससमीउऽल् अलीम् ॥

और न उनकी बात से शोकातुर हो—वस्तुतः सब शक्ति  
अल्लाह ही में है; वह ( सब ) सुनता और जानता है ।

( ६ ) अलाऽ इन्ना लिल्लाहि मिन् फि-ससमावाति  
व मन् फिऽत्त अज़ि; वमाऽ यत्तविउऽल्लज़ीना यदज़ना  
मिन्दूनिऽल्लाहि शुरकाऽया; इय्यत्तविउ, ना इल्लऽ-ज़ज़ना  
व इन् हुम् इल्लाऽ यखुमून ॥

सुनते हो, जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में  
है. ( सब ) अल्लाह का है; और यह ( अल्लाह के ) समांश  
पुकारने वाले किसके अनुयायी हैं, ( जब कि ) अल्लाह के  
अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं; परन्तु ( यह तो ) अटकल के अनुयायी  
हैं और अटकलें दौड़ाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं ( कर ते ) ।

( ७ ) हुवऽल्लज़ी जअला लकुमु-नलय्ला लि

तस्कुनुऽ फीहि व-न्नहाऽरा मुन्सिरऽन् ; इना फी जालिका  
ल आयातिल्लि कड्मिय्यस्मऊन् ॥

वही है जिसने तुम्हारे निमित्त रात को रचा ( जिससे )  
कि तुम उसमें विश्राम करो और दिखलाने वाला दिन दिया;  
इसमें उन लोगों के लिए—जो सुनते हैं—चिह्न है ।

( ८ ) काऽलुऽऽत्तखज़ऽल्लाहु वलदऽन् सुव्हानहु;  
हुवऽल्ल गनिय्यु लहु भाऽ फि-स्समावाति वमाऽ फिऽल्ल  
अज़ि, इन् इन्दकुम्मिन् सुल्तानिन् वि हाज़ा; अतकलूना  
अलऽल्लाहि माऽ लाऽ तअल्लमून् ॥

यह कहते हैं अल्लाह ने कोई पुत्र ( उत्पन्न ) किया, वह  
धधित्र है; वही धनी है और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में  
है ( सब कुछ ) उसीका है; उसका तुम्हारे पास कुछ प्रमाण  
नहीं; क्यों तुम अल्लाह के सम्बन्ध में वह बात कहते हो जो  
जानते नहीं ।

( ९ ) कुल् इन्नऽल्लजीना यफ़तरूना अलऽल्लाहिऽ-  
ल्ल फ़ज़िवा लाऽ युफ़िलहून् ॥

[ हे पैग़म्बर ! इनसे ] कह कि जो लोग अल्लाह पर अ-  
सत्य [ आक्षेप ] आरोपित करते हैं उन्हें सफलता प्राप्त नहीं  
होती ।

( १० ) मताऽडन् फि-दुन्याऽ सुम्मा इलयनाऽ

मजिदहुम् सुम्मा नुजीकुहुमुस्त अजाऽव-शदीदा विमाऽ  
काऽनुऽयक्फुरून् ॥

[वह लोग चाहें] संसार में लाभ उठालें फिर उनको  
हमारी ओर लौट आना है फिर हम उनको उस अर्थ में  
बदलें, जो वह करते हैं, भीषण प्रकोप का फल चलायेंगे ।

[म० ३, पारा ११, सू० ८।१२]

(१) वस्तु अलयहिम् नवआ नूहिन् इजाऽस्ता  
लि कउमिही या कउमि इन्काऽना कशुरा अलयकुम्मा-  
काऽपी व तज्जारी वि आयातिऽल्लाहि फ अलऽल्लाहि  
तवकल्लु फ अज्मिज् ३ अत्रकुम् व शुरकाऽअकुम् सुम्मा  
लाऽयकुन् अत्रकुम् अलयकुम् गुम्मतन् सुम्माऽम्ज् ३  
इत्या वलाऽनुजिऽरुन् ॥

और उनको नुह का समाचार सुना कि जय उम्मेने अपनी  
जाति वालों से कहा कि हे जाति । यदि तेरा रहना और अ-  
ल्लाह को आयातों के निषय में मेरा समझाना तुम्हें भार वि-  
दित हुआ है तो मैं अल्लाह पर विश्वास किया अब तुम  
सब एकत्र हो कर अपना कार्य नियत करो और अपने साथियों  
को एकत्र करो फिर तुम्हें अपने काम में सन्देह न रहे फिर  
सुक्रे पर कर लो और सुक्रे अवसर न दो ।

(२) फ इन्तवल्लयतुम् फ माऽसअल्लतकुम्निन् अजिनः



इन् अजिया इन्लाऽ अलऽन्लाहि व उमित् अन् अरुना  
मिनऽल् मुस्तिमीन् ॥

फिर यदि हट जाओगे तो मैं तुमसे [ कोई ] मूल्य नहीं  
चाहता: मैं मूल्य अल्लाह पर है और मुझको आका हुई है  
कि आजाकारी [ हांकर ] रहें ।

( ३ ) फ़ कज़्ज़वूद् फ़ नज्जयनाहु वमम्यअह  
फ़िऽल् फ़न्कि व नअल्लाहुम् खलाइहा व अग्नयनऽ  
ज्जलजीना कज़्ज़वूऽ वि आयातिनाऽ फऽज्जुर कय फ़ा  
काऽना आऽकिवनऽल् मुन्जरीन्

फिर उसको झुठलाया फिर हमने उसकी और जो उसके  
साथ नौका मैं थे [ उनको ] रखा की और उन्हें खल पर ठह-  
राया और जो हमारी आयतों को असत्य ठहराते थे उन्हें हुवा  
दिया अतः जिनको भुय दिलाया था उनका अन्त कैसा हुआ ?

( ४ ) मुम्मा वज़्ज़म्नाऽ मिन वअदिही क्युलऽन्  
इला कऽमिहिम् फ़ जाश्ऊहुम् बिऽल् बय्यिनाति फ़माऽ  
काऽनूऽ लि युअ्मिन्ऽ विमाऽ कज़्ज़वूऽ विही मिन कऽल्लुः  
कज़्ज़ालिका नत वऽ अला कुलविऽल् मुअतदीन् ॥

फिर हमने उसके पश्चान् अयनों जाति में कितने पैगम्बर  
प्रेषित किये फिर उनके पास प्रत्यक्ष चिह्न लाये अतः जो बात  
पूर्व से असत्य ठहरा चुके उस पर कदापि विश्वास करने वाले

न हुए; हम अत्याचारियों के मनों पर इसी प्रकार मुद्रा करते हैं।

( ५ ) सुम्मा वश्र सनाऽ मिन वश्रदिद्विम्पूसा व  
हारुना इला फिश्रउना व मलाऽइही वि आयातिनाऽ  
फऽस्तक्वरुऽ व काऽनुऽ कउ मऽम्मुजिमीन् ॥

फिर हमने उनके पीछे मूसा और हारून को फिश्रॉन और उसके मुखियाओं के पास चिह्न देकर भेजा, फिर [वे] गर्व करने लगे और वह लोग पापी थे।

( ६ ) फऽ लम्माऽ जाश्रअहुमुऽल् हक्कु मिन इन्दि-  
नाऽ काऽलूरे इना हाजाऽ लि सह रुम्मुवीन् ॥

फिर जब उनको हमारे पास से सत्य वार्ता आई, वह क-  
हने लगे—वह तो साक्षात् जादू है।

( ७ ) काऽला मूसाऽ अतकूलूना लिल् हक्क  
लम्माऽ जाश्रअकुम्, अम्हि रन् हाजा, वलाऽ युपिलहु-  
स्साऽइरुन् ॥

मूसा ने कहा—“जब तुम्हारे पास सत्य बात पहुंचे तो [उसे] तुम ऐसा कवते हो; यह कोई जादू है और जादू करने वाले विजय नहीं पाते।”

( ८ ) काऽलूरे अजिअतनाऽ लि तल्फितनाऽ अम्पा-  
वजद्राऽ अल्यहि आवाश्रअना व तकूनाऽ लकुमऽऽल

कित्रियार्थेऽ फिऽल् अर्जिः व माऽ न ह्नु लकुमाऽ वि  
मुअमिनीन् ॥

बह कहते लगे—व्या तुम [ इस वाम्ने ] आवे हो कि  
हमको उस मार्ग से—जिनपर हमने अपने पिता-प्रपितामहों  
को पाया—भटकादे और इन देश में तुम दोनों सु खिा बनो,  
और हम तुम पर विश्वास करने वाले नहीं ।

( ६ ) व काऽला फिऽर्जुऽ अतूनी विकुन्लि साऽ  
रिन् अलीम् ॥

और फिऽर्जु ने कहा—जो जादूगर पढ़ा हो, [ उसे ] मेरे  
पान लाओ ।”

( १० ) फलम्माऽ जाऽत्र-स्त हर्तु काऽला लहु-  
म्माऽ अलकूऽ पाऽ अन्नुऽम्कुक ॥

फिर जब जादूगर आये तो उन्हें जन्ता ने कहा— बालों जो  
तुममें डालते हो ।”

( ११ ) फ लम्माऽ अन्ऽर्ऽ काऽला मूसा माऽ  
जिअ्तुम् विहि-स्सिह रुऽ इन्ऽल्लाहा सयुब्ति लुह, इन्ऽ-  
ल्लाहा लाऽ युस्लिहु, अम्लऽम्फिसदीन् ॥

फिर जब उन्होंने ड ला, मूला बोला—जो तुम लाते हो  
सो जादू है; अब अल्लाह उसको बिगाड़ता है; अल्लाह दुष्टों के  
कार्य नहीं सुधारता ।

( १२ ) व युः हक्कुः ज्लाहुः हक्का विकलिमा-  
तिही लउ करिहिः व मुजिम्न ॥

और अल्लाह सत्य को अपनी आला से सत्य [ सिद्ध ]  
करता है चाहे अपराधी उसको चुग ही सने ।

[ मं० ३, पारा ११, सू० ६।१० ]

( १ ) फ़ारा आमना लि मूसा ३ इल्लाऽ जुःरिय-  
तुम्पिन् कउमिही अला खउफ़िम्पिन् फ़िःर्यउना व मलार्-  
इहिम् अय्यफ़ितनहुम्; व इन्ना फ़िःर्यउना लय्याऽलिन  
फ़िऽल् अजि, व इन्ह ल मिनऽल् मुसिफ़ीन् ॥

फिर मूसा पर उसकी जाति के कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त  
अन्य किसी ने विश्वास न किया [ सो भी ] फ़िःर्यौन और उ-  
नके मुखियाओं से डरने हुए कि वह उन्हें विचलित न करदे;  
और फ़िःर्यौन देश में बलशाली होरहा है, और उसने हाथ  
छोड़ रक्खा [ अर्थात् अत्याचार जारी कर रक्खा ] है ।

( २ ) व काऽला मूसा या कउमि इन्कुन्तुम् आम-  
न्तुम् विऽल्लाहि फ़ अलयहि तवक्कलूरे इन्कुन्तुम्मुःरिल-  
मीन् ॥

और मूसा ने कहा—“हे जातिवालो ! यदि तुमने अल्लाह  
पर विश्वास किया है तो यदि आजकारी हों तो उसी पर  
[ दृढ़ ] विश्वास करो ।”

( ३ ) फ़ काऽल्लूऽ अलऽल्लाहि तवक्कलनाऽ, रब्बनाऽ  
लाऽ तज्जलनाऽ फ़ित्ततल्लिल् क़ुऽमि-ज़ज़ालिमीन् ॥

तब कहने लगे—‘हमने अल्लाह पर विश्वास किया, हे  
पालनकर्ता! इस अत्याचारी जाति की शक्ति की परीक्षा  
हमारे ऊपर न कर ।’

( ४ ) व नज़्जिनाऽ वि रह, मतिका मिनऽल् क़ुऽ-  
मिऽल् काफ़िरीन् ॥

और हमें अपनी दया करके इस काफ़िर क़ौम से मुक्त  
कर ।

( ५ ) व अउ, हयूनाऽ इला मूसा व अस्वीहि अन्  
तवव्वा आलि क़ुऽमि कुमाऽ वि मिस्रा बुयूतऽव्वऽज् अलूऽ  
बुयूतकुम् क़िब्लतव्व अकीमु-स्सलाता; व बरिशरिऽल्  
मुअ्मिनीन् ॥

और हमने मूसा और उसके भाई [ हारून ] को अज्ञा-  
भेजी कि अपनी जाति के लिए मिस्र देश में निवास नियत  
करो और अपने गृह क़िब्ले की ओर निर्माण करो और नमाज़  
स्थिर करो; और मुसलमानों [ अर्थात् विश्वासियों ] को हर्ष  
सम्बाद सुनाओ ।

( ६ ) व काऽला मूसा रब्बनाऽ इन्नका आतयूता  
फ़िअ्उना व मलअहू अनीतव्य अम्वाऽलऽन् फ़िऽल्

हयाति-दु न्याऽ रब्बनाऽ लि युजिल्लूऽ अन् सर्वालिफा,  
रब्बनऽऽतमिस् अलाऽ अम्वाऽलिहिम् वऽऽरदुद् अला कुलू-  
विहिम् फलाऽ युअमिनुऽ हत्ता यरवुऽऽल् अजाऽवऽल्  
अलीम् ॥

शौर मूला ने कहा—“हे हमारे पालनकर्ता ! तूने फिर्माँन  
शौर उसके मुखियाओं को सांसारिक जीवन में ऐश्वर्य और  
धन दिया है, हे पालनकर्ता ! उनके धन नष्ट करदे और उनके  
दृष्टियों को कटोर करदे कि [ उस समय तक ] विश्वास न करें  
जय तक कि दुःख का दगड [ न ] देखें ।

( ७ ) काऽला कद् उजीवऽअवतुकुमा फऽस्तकीमाऽ  
बलाऽ तत्तविआरेनि सर्वालऽल्लजीना लाऽ यअलमून ॥

कहा—तुम्हारा प्रार्थना स्वीकार हो चुकी, अतः तुम दोनों  
हड़ रहो और उनके मार्ग पर मत चलो जो बहानी हैं ।

( ८ ) व जाऽ बजनाऽ विनयीऽ इसाऽईलऽल् वहा  
फ अत्वअदुम् फिअउनु व जुनुदुद् वगयऽव्व अदवऽन् ;  
हत्ताऽ इजाऽ अद्रकहुऽल् गरकु काऽला आमन्तु अनह  
लाऽ इलाहा इल्लऽल्लजीऽ आमनत् विही वनूऽ इसा-  
ईला व अनाऽ भिनऽल् मुस्लिमीन् ॥

शौर इच्चाईल के वंशजों को हमने समुद्र से पार किया  
एदुगडता और अन्याचारिता के साथ फिर्माँन शौर उसके

सैन्य दल ने उसका [ उसके भय तक ] पीछा किया यहाँ तक कि वह ( सैन्य दल फिर्औन सहित ) डूब गया। तब कहा— उसके अतिरिक्त कोई आराधनीय नहीं कि जिस पर इस्त्राईल के वंशजों ने विश्वास किया और मैं आशाकारियों में हूँ।

( ६ ) आरत् आना व कद् असयूता कब्लु व कुन्ता मिनऽल् मुफ़िसदीन् ॥

अब यह कहने लगा—“और तू पहले अनाज्ञाकारी रहा और उपद्रवियों में (सम्मिलित) रहा।”

( १० ) फ़ऽल् यज्मा तुनज्जीका वि बदनिका लि तकूना लि मन् खल्फ़का आयतन् ; व इना कसीरम्पिन— नाऽसि अन् आयातिनाऽ ल गाफ़िलून् ॥

अतः आज तुझको तेरे शरीर से बचावेंगे जिससे तू अपने पीछे आने वालों के लिए चिह्न [ एक प्रकार का प्रमाण ] हो; और निस्सन्देह, अनेक पुरुष हमारी आयतों से अचेत हैं।

[स० ३ पारा ११, सू० १०।११]

( १ ) व लकद् वव्वअनाऽ वनीऽ इस्ताऽईला मुव-

कहावत है कि इस्त्राईल सन्तान को सन्देह हुआ कि फिर्औन भी हुआ कि नहीं। इस पर जिब्राईल ने नगी लोथ को पानी के ऊपर तैरा दिया। कहते हैं कि केवल फिर्औन की ही लोथ तैरती देख शूदी और सब नीचे बैठ गईं और कोई कहता है कि लोथ को निकालकर एक टीले पर डाल दिया; जिससे इस्त्राईल सन्तान देख के धन्यवाद करे और शिजित हो।

इवत्रा सिद्धिक्व रजकनाहुमिन-त्तयिवाति, फमऽऽस्त-  
लफुऽ हत्ता जारेअहुमुऽत् इन्मु; इन्ना रव्वका यक्की  
वयनहुम् यउमऽत् कियामति फी माऽ काऽनुऽ फीहि  
यस्तलिफुन् ॥

और हमने इस्लाम-वंशजों को सत्यता के साथ स्थान दिया  
और शुद्ध वस्तुएं भोजनार्थ प्रदान कीं, अतः उनमें [ उस स-  
मय तक ] फूट नहीं फैली जब तक उनको ज्ञान नहीं आया;  
अब जिस बात में उनका मतभेद था, उसमें तेरा पालनकर्त्ता  
प्रलय के दिन उनका निर्णय करेगा ।

(२) फ इन् कुन्ता फी शक्किम्मिम्माऽ अन्जल्लाऽ इत्यका  
फन्अलिऽल्लजीना तकऊनऽत् फिताया मिन कव्लिका,  
लकद् जाअकऽत् हक्कु मिरिव्विका फलाऽ तकूनन्ना  
मिनऽत् मुम्तरीन् ॥

अतः यदि तू उस वस्तु से, जो हमने तेरी ओर उतारी,  
सन्देह में है तो उनसे पूछले जो तुझसे पूर्व पुस्तक पढ़ रहे हैं,  
नित्सन्देह, तेरे पालनकर्त्ता की ओर से तुझको सत्य बात आई  
है, अतः तू सन्देह करने वालों में मत हो ।

( ३ ) वलाऽ तकूनन्ना मिनऽल्लजीना कज्जबूऽ वि  
आयात्तिऽल्लाहि फ तकूना मिनऽत् खारिरीन् ॥

और उनमें [ सम्मिलित ] मत हो जिन्होंने अल्लाह की



आयतों को असत्य ठहराया फिर तू भी घाटा उठाने वाला म  
होवे ।

( ४ ) इन्नऽल्लहीना इककत् अलयाहिम् कलिमतु  
शविका लाऽ युअमिनून् ॥

जिन पर तेरे पालनकर्ता की आज्ञा सत्य ( भिन्न हुई )  
है वह विश्वास करेंगे ।

( ५ ) व लउ जाश्अतुहुम् कुल्लु आयतिन् इत्ता  
यरघुल् अजाऽवऽल् अलीम् ॥

यद्यपि उन पर समस्त चिह्न पहुंच जावें ( पर मार्गों  
नहीं ) जब तक कि दुःख का दरुद न देख लेंगे ।

( ६ ) फ लउ लाऽ काऽनत् कर्यतुन् आमनत् फ  
नफअहाश् ईमाऽनुहाश् इल्लाऽ कउमा युनुसा, लम्माश्  
आमनुऽ कशफनाऽ अन्हुम् अजाऽवऽल् खिज्जि फिऽल्  
हयाति-हु न्याऽ व मत्तअनाहुम् इलाहीन् ॥

अतः कोई नगरी क्यों न हुई जो विश्वास करती फिर  
उन्को विश्वास लाना उनके काम आता, परन्तु यूनुस की  
जानि ने जब विश्वास किया तो हमने संसार के जीवन में उन  
पर से दुःख का दरुद ढीला कर दिया और एक ( नियत )  
समय तक उनका काम चलाया ।

( ७ ) व लउ शाश्अ रब्बुका लुआमना मन् फिऽल्

अग्निं कुल्लुहुम् जमीअञ्जन् ; अफअन्ता तुक्रिहु-चाऽसा  
हत्ता यकूनूऽ मुअमिनीन् ॥

और यदि तेरा पालनकर्त्ता चाहता तो जिने मनुष्य पृथ्वी पर हैं—सबके सब विश्वास करते; अथ क्या तू लोगों पर बलात्कार करेगा जिससे वे विश्वास युक्त अर्थात् मुसलमान हो जावें ?

( ८ ) व माऽ काऽना लि नफिसन् अन्तुअमिना  
इल्लाऽ वि इजिनऽल्लाहि; व यजअलु-रिजसा अलऽल्ल-  
जीना लाऽ यअकिलून् ॥

और यह किसी प्राणी के वश की बात नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना विश्वासी ( मुसलमान ) बन जावे; और वह उन पर, जो बुद्धि नहीं रखते, मलौनता डालता है ।

( ९ ) कुलिऽन्जुरुऽ माऽ जाऽ फि-स्समावाति वऽल्  
अजि; व माऽ तुगिनऽल् आयातु व-अजुरु अन् कऽमिऽ-  
ल्लाऽ युअमिनीन् ॥

तू कह—देखो तो आकाशों में और भूमि में क्या कुछ है और निह और मास उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो विश्वासी नहीं हैं ।

( १० ) फः हल् यन्तजिरुना इल्लाऽमि स्ला अय्याऽ  
मिऽल्लजीना खलइ विन् कऽल्लिहिम् ; कुल् फऽन्तजिरुऽ  
इन्नी मअकऽमिनऽल् मुन्तजिरीन् ॥

फिर अब उन लोगों की भांति प्रतीक्षा कर रहे हैं जो उनसे पूर्व हो चुके हैं; (हे पैगम्बर ! तुम) कहो-अब प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूँ।

( ११ ) सुम्मा नुनज्जी खुलना वऽल्लज़ीना आ-  
नतूऽ कज़ालिका, हक़ऽन् अलयना नुनजिऽल् मुअ्मि-  
नीन् ॥

फिर हम अपने पैगम्बरों को और उन लोगों को, जो वि-  
श्वासी है, बचा लेते हैं, इस प्रकार यह हमारे अधिकार में है  
कि विश्वासियों को बचालें।

[ मँजिल ३ पारा ११ रु ११।६ ]

( १ ) कुल् याऽ अय्युहऽ-नाऽम् इन्कुन्तुम् फी  
शक्किम्मिन् दीनी फ़लाऽ अअबुदुऽल्लज़ीना तअबुदुना  
मिन्दूनिऽल्लाहि वला किन् अअबुदुऽल्लाहऽल्लज़ी यतव-  
फ़ाकुम् , व उअितु अन् अकूना मिनऽल् मुअ्मिनीन् ॥

( हे पैगम्बर ! तुम ) कहो—हे लोगो ! यदि तुम मेरे मत  
से सन्देह में हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते  
हो मैं नहीं पूजना; परन्तु मैं अल्लाह को पूजता हूँ जो तुमको  
खींच लेना है, और मुझको आज्ञा है कि तुझलान रहूँ।

( २ ) व अन् अकिम् वजहका लि-दीनि हनीफ़ऽन् ,  
व लाऽ तहूनन्ना मिनऽल् मुअ्मिनीन् ॥

और वह कि हर्नाफ होकर अपना मुंह मत पर सीधा कर और शिक ( समांश समझने ) वालों में मत हो ।

( ३ ) वलाऽ तद्दु मिन्दूनिऽल्लाहि माऽ लाऽ यन्फुज-  
का वलाऽ यजुरुका फ इन् फ अल्ला फ इन्नका इजऽ-  
म्मिन-ज्जालिमीन् ॥

और अल्लाह के अतिरिक्त ( अन्य किसी ) ऐसे को न आमन्त्रित करो, ( जो ) न तुम्हारा हित कर सके और न अहित, फिर यदि यह तुमने किया तो तू भी इस समय पापियों में है ।

( ४ ) व इय्यम्सस्कऽल्लाहु वि जुर्निन् फलाऽ काऽ-  
शिफा लहुर इन्ला हुवा, व इय्युरिइका विखय्रिन् फलाऽ-  
राशदा लि फजिलही; युसीवु विही मय्यशाशु मिन्  
इवाऽदिही; व हुवऽल् गफूर-रहीम् ॥

और यदि अल्लाह तुम्हें हानि ( वा दुःख ) पहुंचावे तो उसको उसके अतिरिक्त ( अन्य ) कोई खोलने ( वा दूर करने ) वाला नहीं, और यदि तुम्हें कुछ लाभ पहुंचाना चाहे तो उसके अनुग्रह का कोई करने वाला नहीं; वह अपने सेवकों में से जिसे चाहेता है पहुंचाता है, और वही क्षमा करने वाला बंधालु है ।

( ५ ) जुल् यार अय्युह-नाऽसु कइ जाशअकु-  
युऽल् हयकु मिर्निवकुइ, फ एनिऽह तदा फ इन्नमऽ

यह तदी लि नफिसही, व मन् जल्ला फ इन्माऽ यजिन्नु  
अलयहाऽ; व माऽ अनाऽ अलयकुम् विवर्कल् ॥

( हे पैगम्बर ! तू ) कह—हे लोगो ! तुमको तुम्हारे पा-  
लनकर्ता की ओर से रुख्य आतुका, अब जां कोई मार्ग पर  
आता है उसे अपने भले को मार्ग मिलता है, और जो कोई  
भूला फिरे सो भूला फिरेगा अपने बुरे को; और मैं तुम्हारा  
( कोई ) वकील ( प्राड्विवाक ) नहीं बना हूँ ।

( ६ ) वऽत्तविश्रू माऽ यू हाऽ इलयका वऽस्विर् हत्ता  
यह कुमऽल्लाहु, व हुवा खय्रुऽल् हाकिमीन् ॥

और तू उसी आता का अनुसरण कर जो तेरी ओर पहुंचे  
और जब तक अल्लाह निर्णय करे ( तब तक ) हद ( स्थिर )  
रहे, और वह सबसे श्रेष्ठ अनुग्रह करने वाला है ।

पुनर्जन्म !

पुनर्जन्म !

मुसल्मान ईसाई पुनर्जन्म की सत्ता में विश्वास  
नहीं करते, और भी ऐसे मत हैं, उन्हीं को सन्मार्ग  
समझाने के लिये यह पुस्तक और हिन्दुओं के  
हाथों में हथियार का काम देगी । धर्मवीर प० लेख-  
रामजी आर्य पथिक ने कमाल कर दिखाया है ।  
शीघ्र ही आर्डर भेजें । थोड़ी कापी स्टॉक में है  
यू० २५) प्रेम पुस्तकालय—आगरा ।

## सूर्ये हृद

( १ ) अलिफू लाश्मरा—किताबुन् उह किमत  
आयातुहू, मुम्मा फ़सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् खबीर् ॥

यह पुस्तक है कि जिसकी आयतों ( आज्ञाओं ) की पड़-  
ताल की जा चुकी है फिर एक बुद्धिमान और ज्ञाता की ओर  
से इन्हें कमबद्ध किया गया है ।

( २--३ अल्लाऽतअबुदूरे इल्लऽऽल्लाहा; इन्ननी  
लकुम्मिन्हु नज़ीरुव्व वशीरु व्व अनिऽस्तगिफ़रूऽ रव्वकुम्  
मुम्मा तूबूरे इलय्हि युमत्तिअकुम्मताऽअऽन् हसनऽन्  
इलाऽ अजलिम्मूसम्मव्व युअत्ति कुल्लज़ी फ़जिलन्  
फ़ज़लहू; व इन्तव्वल्लउऽ फ़ इन्नीरे अखाऽफ़ु अलयकुम्  
अज़ाऽवा यउमिन् कबीर् ॥

कि अल्लाह के अतिरिक्त ( किसी को ) न पूजो; मैं तुमको  
उसकी ओर से भय सुनाता और सुसमाचार पहुंचाता हूँ  
और यह कि अपने पालनकर्ता से पाप क्षमा कराओ और  
फिर उसकी आज्ञा लीओ ( जिससे ) कि वह तुमको एक नि-  
श्चित अवधि तक पहुंचावे और प्रत्येक अधिकता वाले को  
अपना अनुग्रह प्रदान करे और यदि तुम फिर जाओगे तो तुम  
पर एक महान् दिवस ( प्रलय ) के प्रकोप ( के प्रगट ) होने  
से डरता हूँ ।

( ४ ) इलल्लाहि मर्जिउ कुम्, व हुवा अला कुन्लि शयुइन् कदीर् ॥

अल्लाह की ओर से तुमको फिर जाना है, और वह प्रत्येक यदार्थ पर शक्ति रखता है ।

( ५ ) अलारे इन्नहुम् यस्नूना सुदूरहुम् लियस्त-  
रफूऽमिन्हु; अलाऽहीना यस्तगूशूना सियाऽवहुम् यअ-  
ल्लमु गाऽयुसिरूना व माऽयुअलिनूना, इन्नहू अलीमुन्  
। विजाति-सुदूर ॥

वह अपने हृदयों को दुहरा नहीं करते जिससे कि वह उससे छिप जायँ, सुनो जिस समय वह अपने वस्त्र ओढ़ते हैं वह जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह खोलते हैं ।

हिन्दू मुसल्मान, ईसाई और आर्य सभी के वच्चे और स्त्रियाँ निरशङ्क होकर पढ़ें, कोई बात असम्भव न पायँगे, शिक्षा और ज्ञान का तो मानो भण्डार ही है— क्या ? वही

आदर्श रामायण

किसकी, गोस्वामी तुलसीदासजी की वस; देर न करें— आजही आर्डर दें जिससे छपते ही आपके पास पहुँचे । प्रेम पुस्तकालय आगरा ।

( ३२ ) पारा वसाऽमिन् दाश्वयतिन्

( ६ ) वसाऽमिन् दाश्वयतिन् फिऽत् अग्निं इत्ताऽ  
अलऽत्तादि रिऽकुदाऽ व ययत्तमु सुस्तर्करहाऽ व मुस्तः  
दअदाऽ, कुल्लुन् फी किलाविष्मुवीन् ॥

और पृथ्वी भर में कोई पेना चर ( प्राणी ) नहीं पाया  
जाता कि जिसे अन्नाह भोजन न देता हो और जहाँ रहना  
है और जहाँ सोया जाता है, ( उसे ) अन्नाह जानता, सब  
जुली पुन्तक में लिखमान है।

( ७ ) व हुवऽत्ताजी खलक-सामावनि चऽत् अग्निं  
फी सितनि अथाभिच्य काऽना अशुं ह् अलऽत्तामाऽ  
त्वियऽत्तुवकुम् अशुकुम् अहऽत्तु अलऽत्तु; व लइन् कुन्ता  
इत्तकुन्तवजऽत्ता पिन्, वअऽत्तु पडति लि यम्-  
लन्तऽत्ताजीना कफऽत्तु इन् हाजाऽत्तु इत्ताऽ सिहऽत्तु-  
वीन् ॥

और वही है जिसने आकाश और पृथिवी छः दिन में नि-  
र्माण किया और उसका तब पानी था कि तुम्हारी जांच  
करे कि तुमों से कौ। शुक्रम करता है; और यदि नू कहे कि  
तुम मृत्यु के पश्चात् ( पुनः जी ) उठोगे तो निश्चय काफिर  
कहने लगेंगे कि यह कुछ नहीं प्रत्युत साक्षात्-जादू है।



( ८ ) व लइन् अख्वनाऽ अन्हमुऽल् अजाऽवा  
इलाऽ उम्गतिम्मअदुदतिल्ल यकूलुन्ना माऽ यह विमूहः  
अलाऽ यउ मा यअ तीहिम् लयसा मअ फऽन् अन्हुम् व  
हाऽका विहिस्माऽ काऽन्ऽ विही यस्तह जिऽन् ॥

और यदि हम नियत समय तक दरिद्र को रोके रहें तो  
व हेंगे कि किस वस्तु ने उसको रोक रक्खा है: खुना जिस दिन  
यह उन पर आ पड़ेगा तो उन पर से न टरेगा और उनको  
वही फेर लेगा कि जिसका वह उपहास करते हैं ।

[ मीजल ३ पारा १२ रु० २।१६ ]

( १ ) व लइन् इज्जकनऽऽल् इन्साऽना मिन्नाऽ रह द-  
नन् सुम्मा नजअनाहाऽ मिन्हु, इन्नह ल यऊसुन् कफूर् ॥

और यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से ( एक बार )  
अनुग्रह का आस्वादन करा दें फिर वह उससे दूर लें, तो  
वह निराश और कृतघ्न हो ।

( २ ) व लइन् अज्जकनाहु नअ माऽआ वअ दा  
जराऽआ मसतुहु ल यकूलुन्ना जहव-स्सयिआतु अनी  
इन्नह ल फरिहुन् फखूर् ॥

और यदि हम उसको कष्ट के जो उसे पहुंचा—पश्चात्  
के आनन्द का आस्वादन करावें तो कहने लगा कि मुझसे दूर  
दूर हुये; निश्चय वह बुराई करते हुये प्रसन्न होंगे ।

( ३ ) इन्लऽल्लजीना सबरुऽ व अमिलुऽ-स्सालि-  
हाति, उलाऽइका लहृ म्मगिफरतु व्व अजरुन कवीर् ॥

परन्तु जो लोग सन्तोषी हैं और शुभ कर्म करते हैं, उनको अनुग्रह है और महान् पुण्य है ।

( ४ ) फलअल्लका ताऽरिकुन् वअजा माऽयूहाऽ  
इलयका व जाऽइकुन् विही सद्रुका अय्यकूलुऽ लउलाऽ  
उन्जिला अलयहि कन्जुन् अउजाऽआ मअहृ मुक्कुन् ;  
इन्नमाऽअन्ता नजीरुन्, वऽल्लाह अला कुल्लि शय-  
इवकील् ॥

फिर कदाचित् तू कुछ छोड़ देने वाला है उसमें से जो हमने तुझ पर प्रेरणा की है तेरा हृदय इससे सन्देह में होगा कहीं ऐसा न हो कि वह कहें—क्यों न उस पर कोई भण्डार उतरा, क्यों न उसके साथ कोई दूत आया तू केवल डर सुनाने वाला है अल्लाह प्रत्येक वस्तु का देखने वाला है ।

( ५ ) अम् यकूलुनऽफतराहु कुल् फअतुऽ वि अथि  
सुवरिम्मिरिल्ही गुफतरयाति व्वऽइऊऽ मनिऽस्ततअ-  
तुम्मिन्दूनिऽल्लाहि इन् कुन्तुम् रात्रिकीन् ॥

क्या कहते हैं ( कि तू ) उसकी बांध लाया है ? तू कह—  
तुम ऐसी एक दस सूरतें बांध कर ले आओ और यदि तुम  
सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिसको बुला सको बुलाओ

के सम्मुख आँगे और साक्षी कहेंगे—यही हैं जिन्होंने अपने पालनकर्ता (अल्लाह) पर असत्य आरोपित किया, सुनहो अत्याचारी लोगों पर अल्लाह की फटकार है जो अल्लाह के मार्ग से रोक्ते हैं और उसमें खोष्ट खोजते हैं और यही परलोक के अविश्वासी हैं।

(११-१२) उल्लाइका लम् यकूनऽ मुअ जिजीना फिऽल्ल अजि व माऽ काऽना लहु म्पिन्दनिऽल्लाहि यिन् अर-  
लियाश्चा युज अफु लहु मुऽल्ल अजाऽनु; माऽ काऽनुऽ  
यस्तनीऊ न-स्समश्चा व माऽ काऽनुऽ युब्सरुन् ॥

वह लोग पृथ्वी में भागकर विवश करने वाले नहीं और इनको अल्लाह के अतिरिक्त (कोई) समर्थक नहीं उनको हुना दराड है, (यह) सुन नहीं सकते थे और न देखते (ही) थे।

(१३) उल्लाइकऽल्लजीना खसिरुऽ अन्फुसहुम् व जन्ना  
अन्हुन्माऽ काऽनुऽ यफतरुन् ॥

वही हैं जो अपने जीवन को नष्ट कर बैठे और उनके (वह) नष्ट हो गया जो असत्य आरोपित करते थे।

(१४) लाऽजरम अन्नहुम् फिऽल्ल आखिरति  
हुमुऽल्ल अरुसरुन् ॥

निस्सन्देह, वही अन्त के दिन हानि उठाने वालों में से है।

(१५) इन्नऽल्लजीना आमनुऽ व अमिलुऽ-सा

लिहाति व अरवतु३ इला रन्विहिम् उलाइइका अस्था-  
बुस्तु जन्नति, हुम् फीहाऽ खालिदून् ॥

निस्सन्देह, जिन्होंने विश्वास किया और भताइयाँ कीं  
और अपने पालनकर्ता की ओर अधीनता की वह जिन्नत के  
लोग हैं, वह उसमें रहा करें ।

( १६ ) मसलुस्तु फरीकयनि कास्तु अअमा वस्तु  
असम्मि वस्तु बसीरि व-स्समीइ; इलु यस्तवियानि  
मसलुन्, अफलाऽ तजक्करुन् ॥

उदाहरण दोनों समुदायों का जैसे एक अन्धा और एक  
बहरा और एक दृष्टता और सुनता; क्या दोनों का दृष्टान्त  
समान है; फिर क्या तुम ध्यान नहीं करते ?

[ मंजिल ३ पा० १२ सू० ३।११ ]

( १ ) व लकइ अर्सल्लाऽ नूहऽन् इला कउमिही३  
इन्नी लकुम् नजीरुम्मुवीन् ॥

और हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि मैं  
तुमको डर सुनाता हूँ ।

( २ ) अल्लाऽ तअबुदू३ इल्लऽल्लाहा; इन्नी३  
अखाऽफु अलयकुम् अजाऽवा यउमिन् अलीम् ॥

कि अल्लाह के अतिरिक्त ( किसी को ) न पूजो, मैं तुम  
पर एक दुःख वाले दिन के दण्ड से डरता हूँ ।

हैं उसे अल्लाह भती भांति जानता है, यह कहें तो मैं अन्याय हूँ

( ८ ) काऽलूस या नूहु, कइ जाऽदलतनाऽ फ अ-  
क्सर्ता जिदाऽलतनाऽ फअतिनाऽ विमाऽ तइदुनाऽ इन्  
कुन्ता मिन-स्सादिकीन् ॥

कहने लगे—हे नूह ! तू हमसे भगड़ा और बहुत भगड़  
बुका, अब यदि तू सच्चा है तो जो हमको प्रतिज्ञा देता है वह  
लेआ ।

( ९ ) काऽला इन्नमाऽ यअतीकुम् बिहिऽल्लाहु  
इन्शाऽआ व माऽ अन्तुम् वि मुअजिजीन् ॥

कहा—यदि चाहेगा तो उसको अल्लाह ही लावेगा और  
तुम न थकाओगे भाग कर ।

( १० ) व लाऽ यन्फउकुम् तुस्हीऽ इन् अरत्तु अम्  
अन्स, हा लकुम् इन् काऽनऽल्लाहु युरीदु अय्युगवियकुम् ;  
हुवा रब्बुकुम् व इलयहि तुर्जजन् ॥

और जो मैं तुमको उपदेश करूँ तो तुमको मेरा उपदेश  
उपयोगी न होगा यदि अल्लाह चाहता होगा कि तुमको बेरा  
खलावे; वही तुम्हारा पालनकर्त्ता है और उसी की ओर लौट  
कर जाओगे ।

( ११ ) अम् यकूलूनऽफतगाहु, कुल् इनिऽफतरयतुह  
फ अलय्या इजामी व अनाऽ वरीऽउम्मिम्माऽ तुजिमुन् ॥

कग ( यह लोग ) कहते हैं कि तू कुरान को बना लाया;  
( हे पैगम्बर ! इन्हें ) तू कह—यदि बना लाया हूँ तो मुझ पर  
मेरा पाप है और जो तुम पाप करते हो उसका मेरा जिम्मा  
नहीं ।

[ मजिल ३ पारा १२, सू० ४।१४ ]

( १ ) व ऊहिया इला नूहिन अन्नहू लन युअ-  
मिना मिन् कउमिका इल्लाऽ मन् कइ आमना फलाऽ  
तव्तइस् विमाऽ काऽनुऽ यफयलून ॥

और नूह के प्रति आज्ञा हुई कि जो ईमान ला चुका उनके  
अतिरिक्त अब ईमान न लावेगा अतः इन कर्मों के काण, जो  
करते हैं, शीकालुर न हो ।

( २ ) वऽस्न इऽत्त फुल्का वि अअयुनिनाऽ व व  
हीनाऽ घलाऽ दुऽदाऽतिवनी फिऽल्लगीना जलमूऽ इन्न  
हम्मुयकून ॥

और हमारे सम्मुख और हमारी आज्ञा से नौका निर्माण  
कर और मुझसे अत्याचारियों के विषय में न बोल, यह नि-  
श्चय बुदाये जायेंगे ।

( ३ ) व यऽनउऽत्त फुल्का व कुल्लमाऽ मर्रा  
अलवहि मलउन्निमन् कउभिदी सखिरुऽ मिन्क फाऽत्ता

इन्तस्वरुहऽ मिन्नाऽ फ इन्नाऽ नस्वरु मिन्नुम् कयाऽ  
नस्वरुन् ॥

और वह नौका का निर्माण करता था और जब उसके पास से उसकी जाति के मुखिया निकलते तो उससे हँसी करते; ( उसने ) कहा—यदि तुम हम पर हँसते हो तो हम तुम पर हँसते हैं जैसे तुम हँसते हो ।

( ४ ) फ सड्फा तअल्लमूना मय्यअतीहि अजाऽनु  
य्युग्जीहि व यिहल्लु अलयहि अजाऽनुम्मुकीम् ॥

अब आगे जान लेंगे कि दण्ड किस पर आता है कि जिससे उसे लज्जित करें और उस पर सदैव का दण्ड प्रगट होता है ।

( ५ ) इत्तारे इजाऽ जाऽआ अमुनाऽ व फाऽरत्त-  
न्तूह कुल्लऽऽ हूमिल् फीहाऽ मिन् कुल्लि जज्जयनिऽ स-  
यनि व अहल्लका इल्लाऽ मन् सबका अलयहिऽल कडलु  
व मन् आमनाऽ व माऽ आमना मअहूर इल्लाऽ कलील ॥

यहां तक कि जब हमारा आका हुई और तन्नर उबलने लगा, हमने कहा—इसमें प्रत्येक प्रकार में से एक जोड़ा दुहरा रखले और अपने घर के लोगों को ( भी चढ़ाले ) फज्तु जिस पर पहले आज्ञा हो चुकी और जो ईमान लाया हो ( उन्हें चढ़ाले ); और कुछ लोगों के अतिरिक्त (अन्यों) ने विश्वास न किया था ।

( ६ ) व काऽल्लऽकर्वूऽ फीहाऽ विस्मिऽल्लाहि  
मजिहाऽ व मुर्साहाऽ; इना रब्बी ल गफूर्रहीम् ॥

और कहने लगा—नौका पर चढ़ उसका बहना और थ-  
मना अल्लाह के नाम से है; निश्चय मेरा पालनकर्ता तमा  
शोल और दयालु है ।

( ७ ) व हिया तजी विहिम् फी मज्जिन् कऽल्ल  
जिवाऽलि व नाऽदा नू हु ( नि ) ऽ ब्नहू व काऽना फी  
मअजिलिया वुनयऽकम्मअनाऽ वलाऽ तकुम्मअऽल्ल  
काफिरीन् ॥

और वह उनको लहरों के पहाड़ के मोनिन्द ले वहती है और  
नूह ने अपने पुत्रों को और जो तट पर रहा करता था (उसको)  
पुकारा कि—“हे पुत्र ! हमारे साथ चढ़ और अविश्यासियों  
के साथ मत रह ।”

( ८ ) काऽला स आवीरे इला जबलिय्यअसिमुनी  
मिनऽल्ल मारेइ; काऽला लाऽ आऽसिमऽल्ल यउमा मिन  
अम्रिऽल्लाहि इल्लाऽ मरीहमा, व हाऽला वयूनहुषऽल्ल  
मज्जु फ काऽना मिनऽल्ल मुयक्रीन् ॥

कहा—मैं किसी पर्वत से लगे रहूँगा कि जो मुझको पानों  
से बचावेगा; ( वह ) कहने लगा—आज अल्लाह की आज्ञा  
से कोई बचाने वाला नहीं परन्तु जिस पर वही दया करे,



और दोभों के बीच लहर आ पड़ी अतः डबने वालों में रह गया ।

( ६ ) व कीला याद अजुज्ज् ई माश्रकि व यासमाशु अकिलई, व गीज्ज् माशु व कुन्नियज्ज् अश्रु वस्तवत् अलज्ज् जूदियि व कीला बुअदज्ज् कड्मि-ज्जालिमीन् ॥

और आशा आई—हे पृथ्वी ! अपना पानी निकल जा और हे आसमान ! थमजा और जल को सुखा दिया और काम हो चुका और जूदी पर्वत पर नौका ठहरी और आशा हुई कि अत्याचारी जातियाँ दूर हों ।

( १० ) व नाश्या तु, हुर्व्वह फ काज्जा रन्वि इन्ज्ज्नी मिन् अहली, व इन्ना वअदकज्ज् हफ्क व अन्ता अहकमुज्ज् हाकिमीन् ॥

और नूह ने अपने पालनकर्ता को बुलाया फिर बोला— हे पालनकर्ता ! मेरा पुत्र मेरे घर वालों है, और तेरी प्रतिष्ठा सच्ची है और तेरी आज्ञा सबसे श्रेष्ठ है ।

( ११ ) काज्जा या नूहु, इन्ह लयसा मिन् अहिका, इन्ह अमलुन् गय ह साज्जि इन् फलाऽ तस् अल्लि माऽ लयसा लका विही इन्हुन् ; इन्नीरे अइ-जुका अन्तकना मिन्ज्ज् जाहिलीन् ॥

कहने लगा—हे नृह ! वह तेरे घर वाली में नहीं, उसके काम व्यर्थ है अतः जो तुझको विदित नहीं मुझको ज्ञात नहीं, मैं तुम्हें उपदेश करता हूँ कि तू सूखों में हो जा ।

(१२) काऽला रन्वि धनीऽ अऊजुविका अन अस  
अलका माऽ लय सा ली विही इलमुन; व इल्लाऽ तगिफली  
व तर्ह मनीऽ अकूमिनऽ ल खासिरीन ॥

कहने लगा—हे पालनकर्ता ! मैं तेरी शरण ग्रहण करता हूँ जिससे कि जो मुझको विदित न हो तुझसे पूछूँ; और यदि तू मुझको क्षमा न करे और न (तू मुझ पर) दया करे तो मैं नाश वालों में हूँ ।

(१३) कीला या नू हुऽह वित् वि सलामिम्मिन्नाऽ  
व वरकातिन अलय का व अलाऽ उपमिम्मिम्मम्पअका;  
व उपमुन सनुमत्तिउहुम् सुम्मा यमस्सुहुम्मिन्नाऽ अजाऽ  
वुन अलीम् ॥

और आशा हुई—हे नृह ! कुशल के साथ हमारी ओर से उतर और हमारी आशियों सहित जो तुम्ह पर और तेरे साथ वाले समुदायों पर है; और कितने (ही) समुदायों को हम लाभ पहुँचायेंगे फिर उनको हमारी ओर से दुःख का दण्ड पहुँचायेंगे ।

(१४) तिक्का मिन अनवाऽइऽल गय् वि नूहीवाऽ  
इलय का; माऽ कुन्ता तअलमुहाऽ अन्ता व लाऽ कऽमुका

मिन् कन्ति हाजाऽ; फऽस्विर् ; इन्ऽत् आक्रिवता लिल  
गुत्तकीन् ॥

यह कुछ समाचार परोक्ष के हैं कि जिनको हम तेरी ओर  
भेजते हैं इनको इससे पूर्व न तु ( ही ) जानता था और न तेरी  
जातः [ जानती थी ] अतः तू सन्तोष रख; निश्चय ही अन्त  
में डर वालों का है।

[ मं० ३, पारा १२, सू० ५।११ ]

( १ ) व इला आऽदिन् अखाऽहुम् हृदऽन् ; काऽत्ता  
या कऽमिऽअबुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन इलाहिन्  
गुयऽरुह, इन् अन्तुम् इल्लाऽ सुफ्तऽन् ॥

और हमने आद की ओर हृद को भेजा; ( वह ) बोला—  
हे जाति ! अल्लाह की आराधना करो उसके अनिर्दिक्त अन्य  
कोई शासक नहीं, तुम सब असत्य कहते हो।

( २ ) या कऽमि लाऽ अस्अलुकुम् अलयऽहि  
अजऽन् ; इन् अजिया इल्लाऽ अलऽल्लजी फऽ तरनीऽ  
अऽल्लाऽ तऽअकिलून् ॥

हे जाति ! मैं तुमसे इस पर मूल्य नहीं मांगता; मेरा मूल्य  
उली पर है जिसने मुझे उत्पन्न किया; फिर क्या तुम नहीं  
समझते।

( ३ ) व या कड्मिऽस्तगिफ्रुऽ रव्यकुम् सुम्मा  
 त्वूर इलय हि युसिलि-स्सभाऽआ अलय कु म्मिद्रऽरऽव्व  
 यजिद्रकुम् कुव्वतन् इला कुव्वतिकुम् बलाऽ ततवल्लाऽ  
 मुज्जिमीन् ॥

अर हे जानि जालो ! अपने पालनकर्ता से पाप क्षमा  
 कराओ फिर उसकी ओर लौटो तुम पर आकाश की धारायें  
 छोड़ दे और तुमको बल पर बल अधिक प्रदान करे और पायी  
 हो कर फिर न जाओ ।

( ४ ) काऽल्लऽ या हृद्दु माऽ जिअ्तनाऽ विवयियनति  
 व्व माऽ नह तु वि ताऽरिकीऽ आलिहतिनाऽ अन् कड् -  
 लिका वमाऽ नह तु लका वि मुअ्मिनीन् ॥

वह कहने लगे—“हे हृद ! तू हमारे पास कुछ प्रमाण के  
 साथ नहीं आया और हम तेरे कहने से अपने ठाकुरों को छो-  
 डने वाले नहीं और हम तुझे ( पैगम्बर ) स्वीकार करने वाले  
 नहीं ।

( ५ ) इन्नकूलु इल्लऽऽ अतराका वअ्जु, आलिह-  
 तिनाऽ विसूऽइन्; काऽला इन्नीऽ उरिहदुऽल्लाहा वऽरहदुऽ  
 अन्नी वरीऽम्मिम्माऽ तुश्रिकून् ॥

हम तो वही कहते हैं कि तुझका हमारे ठाकुरों में से किसी  
 ने बुरी तरह झपट लिया है ( वह ) कहने लगा—“मैं अल्लाह

को साक्षी करना हैं और तुम साक्षी रहो कि मैं उनसे दुःखिन  
हूँ जिन्हें तुम सम्मिलित करते हो ।

( ६ ) यिन्दुनिही फ कीदनी जमीअऽन् सुम्पा लाऽ  
तुन्जिरुन् ॥

इसके अतिरिक्त मेरे निमित्त मिलकर सौ बुराई करो फिर  
तुम्हारा लुट्टी न दो ।

( ७ ) इन्नी तवस्कन्तु अलऽल्लाहि रब्बी व रब्बि-  
कुम् , माऽ यिन् दाऽरब्बतिन् इल्लाऽ हुवा आन्बिजुन्  
विनाऽ सियतिहाऽ; इन्ना रब्बी अला सिराऽति  
म्मुस्तकीम् ॥

मैंने अल्लाह पर, जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है,  
विश्वास किया; कोई पांच धरने ( चलने ) वाला नहीं परन्तु  
उसके हाथ में उसकी शिखा है; जिससन्देह मेरा पालनकर्ता  
सोचे मार्ग पर है ।

( ८ ) फ इन्त वल्लउऽ फकह अल्लगतुकुम्माऽ  
उसिन्तु विहीऽ इलय कुम् ; व यस्तख्लिफु रब्बी कऽयऽन्  
गयऽरकुम् , व लाऽ तजुर्क नहू शयऽअऽनः इन्ना रब्बी  
अला कुन्लि शयऽइन् हफीज ॥

फिर यदि तुम फिर जाओगे तो मैं पहुंचा चुका जो तुमको  
मेरे हीथ भेजा था; और मेरा पालनकर्ता तुम्हारे प्रतिनिधि

किन्हीं और लोगों को (नियत) करेगा, और उसका कुछ न विगाड़ सकोगे; निहसन्देह मेरा पालनकर्त्ता प्रत्येक वस्तु का रक्षक है ।

( ६ ) व लम्माऽ जाऽत्रा अम्नुनाऽ नज्जय नाऽ  
हृदऽव्वऽल्लज्जीना आमनूऽ मअह वि रह मतिम्मिन्नाऽ, व  
नज्जय नाहुम्मिन् अजाऽदिन् गलीज ॥

और जब हमारी आत्मा पहुँची हमने हृद को और जिन्होंने उसके साथ-विश्वास किया था [उनको] अपने अद्भुत-ग्रह से (अपने) वचा दिया, और उनकी उनके भारी दण्ड से रक्षा की ।

( १० ) व तिल्का आऽदुन् जहद् वि आयाति  
रत्विहिम् व असउऽ समुलह वस्तवज्जरे अम्मा कुल्लि  
जव्वाऽरिन् अनीद् ॥

और यह आद (जाति के) थे कि अपने पालनकर्त्ता की बातों को अस्वीकार किया; और न उनके पैगम्बरों को स्वीकार किया और उन ही आशा स्वीकार की कि जो उद्दण्ड थे ।

( ११ ) व उत्तिज्जऽणी हाजिहि-हु न्याऽ लअन-  
तव्व वदमऽल् कियाऽदि अल्लारे इका आऽदऽन् कफरुऽ  
स्ववहुग् ; अलाऽ बुद्धऽऽ ल आऽदिन् कज्जि हद् ॥

और पीछे कृपा-सत के दिन इस संसार में फटकार पाई;

सुनलो आद अपने पालनकर्ता के अविश्वासी हुए; सुनलो आद को—जो हृद की जाति थी—फटकार है।

स० ३ पारा १२, सू० ६।८

( १ ) व इला समूदा अखाऽहुम् सालि हऽन् काऽला या कऽमिऽअबुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् गयऽरुह; हुवा अन्शअकुम्मिनऽल् अजि वऽस्तअपरकुम् फीहाऽ फऽस्तगिऽफरुहु सुम्मा तूवूरे इलयहि; इन्ना कबी करीबुम्मुजीब् ॥

और समूद को और उनके भाई सालह को भेजा, ( वह ) कहने लगा —“हे जाति वालों ! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई शासक नहीं; उसीने तुमको पृथ्वी से रचा और उसमें तुम्हको बसाया अतः उससे जना कराओ और उसकी ओर आओ निस्सन्देह मेरा पालनकर्ता निकट है स्वीकार करने वाला है।

( २ ) काऽलूऽ या सालिहु कइ कुन्ता फीनाऽ मर्जुव्वऽन् कऽला हाजारे अतन्हानारे अन्नअबुदा माऽ यअबुदु आयाऽउनाऽ व इन्ननाऽ ल फी शक्किम्मिन्नाऽ तदऽजनाऽ इलयहि मुरीब् ॥

कहने लगे—हे सालह ! तुम्ह पर हमको आशा थी इससे

पूर्व तू हमको रोकता है कि जिनको हमारे रिता प्रपितामहादि पूजते रहे हैं ( उन्हें ) पूजें और हमनों उसमें सन्देह है जिस ओर तू बुलाता है ।

( ३ ) कास्ता या कउमि अरअयतुम् इन् कुन्तु अला वय्यिन्नतिम्मिररब्बी व आतानी भिन्हु रहू मतन् फ मय्यन्सुरु नी मिनऽल्लाहि इन् असयतुहू फ माऽ तजीदननी गय्रा तरसीर् ॥

वह कहने लगा—हे जानि ! भला देखो तो यदि मुझको अपने पालनकर्त्ता से ज्ञान प्राप्त हो गया और उसने मुझको अपनी ओर से अनुग्रह प्रदान की फिर अल्लाह के आगे मेरी कौन सहायता करे यदि मैं उसको अवज्ञा करूँ अतः तुम हाकिम के अतिरिक्त मेरी कुछ वृद्धि नहीं करते ।

( ४ ) व या कउमि हाजिही नाऽकतुऽल्लाहि लकुम् आयतन् फ जरूहाऽ तअकुल् फीरे अजिऽल्लाहि बलाऽ तमस्तुहाऽ वि सूरेइन् फ यअखुजकुम् अजाऽबुन् करीव् ॥

और हे जानि ! यह उंटनी तुमको अल्लाह का चिह्न है अतः उसे छोड़ दो ( ताकि ) अल्लाह की भूमि में चरती फिरो और उसको बुरी तरह न छेड़ो, ( अन्यथा ) फिर तुमको निकटवर्ती दण्ड अस्मित करेगा ।

( ५ ) फ अजरूहाऽ फ कास्ता तमत्तजऽ फी दाऽरि



कुम् सलासता अघ्याभिन्; जालिका वअदुन गय्क  
मक्जूव् ॥

फिर उसके ( उन्होंने ) पैर काटे तब ( उनसे ) कहा कि  
अपने गृहों में तीन दिन बग्न लो; यह अल्लाह की प्रतिका है ।

( ६ ) फ़ लम्माऽ जाश्आ अझुनाऽ नज्जयनाऽ  
सालि हऽन वऽल्लज़ीना आमनुऽमअहू विरहू मतिम्मिआऽ  
व मिन् खिज़िब यऽमिऽज़िन; इन्ना रब्बका हुवऽल्  
कविऽयुऽल् अज़ीमू ॥

फिर जब हमारी आत्मा पहुँची, हमने सालह की और जो  
उसके साथ थे ( उनको ) अपनी अनुग्रह करके ( प्रलय के )  
दिन की रसवाई से रक्षा की, निश्चय तेरा पालनकर्ता वही  
बलवान और प्रबल है ।

( ७ ) व अख़ज़ऽल्लज़ीना ज़लमुऽ-स्सयहू तु फ़  
अस्वहूऽ फ़ी दियाऽ रिहिम् जासिमीन् ॥

और उन अत्याचारियों को चगाड़ से पकड़ा फिर ( वे )  
अपने गृहों में प्रातःकाल को आँधे पड़े रह गये ।

( ८ ) क अल्लम् यग़नऽ फ़ीहाऽ, अलाश् इन्ना  
समूदाऽ कफ़रुऽ रब्बहुम्; अला बुअदऽन्लि समूद ॥

मानो कि कभी उसमें रहे न थे; सुन लो समूद ने अपने

पालनकर्ता का अविश्वास किया; सुन लो समूह को फट-  
कार है।

[ मं० ३, पारा १२, सू० ७।१५ ]

(१) व लकड़ जाइअत् सुलुनाइ इब्राहीमा विस्त  
बुथा कास्तूस सलामज्ज; कास्ता सलामुन् फ मास  
लविसा अन् जाइआ वि इज्जिन् हनीज् ॥

और हमारे भेजे इब्राहीम शुभ समाचार लेकर पास आचुके  
हैं ( वे ) कहने लगे सलाम; वह बोला—सलाम है फिर देर  
न की कि एक बछड़ा जला हुआ ले आया।

(२) फ लम्मास रआइ अच दिय हुम् लास तुसिल्लु  
इलयहि नकिरहुम् व अउ जसा मिन्हुम् खीफतन् ;  
कास्तूस लास तखफ इन्नाइ उसिल्लनाइ इला कउ मि लूत् ॥

फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने पर नहीं आत ऊपरी  
समझा और हृदय में उनसे भयभीत हुआ; वह बोले—डर मत  
हम लूत की जाति की ओर भेजे हुये आये हैं।

(३) व अम्रा अतुहू काइइमतुन् फ जहिकत् फ  
बशशर्नाहास वि इस्हाका; व मिव्वराइइ इस्हाका यअकूब् ॥

और उसकी खां खड़ी थी तब वह हंस पड़ी फिर हमने  
उसको इस्हाक का; और इस्हाक के पश्चात् याकूब का शुभ-  
समाचार दिया।

आगन्तुकों में लज्जित न करो, क्या तुममें एक भी भैया ननुष्य नहीं है ?

( ११ ) काऽलूऽ लकइ अ लिम्ता माऽ लनाऽ फी  
बनातिका मिन हक्किन्, व इन्नका ल तअल्लसु माऽ  
नुरीइ ॥

( वह लोग ) कहने लगे—तू जानता है कि हमको तेरी  
पुत्रियों से कुछ प्रयोजन नहीं और निश्चय तू जानता है कि  
हम क्या चाहते हैं ?

( १२ ) काऽला लउ अन्ना ली विकुम् कुव्वतन  
अउ आवीइ इला रुवित्तन् शदीइ ॥

( वह ) कहने लगा—कहाँ मुझे तुम्हारा साम्राज्य करने  
की शक्ति होती अथवा किसी बली आश्रय की शरण लेता ।

( १३ ) काऽलूऽ या लूतु इन्ना रुसुलु रव्विका  
सिल्लूइ इलय का फ अस्सि वि अहिका वि कित्तइम्मिन  
ल्लय लि वलाऽ यल्लफित् मिनकुम् अह दन् इल्लाऽ  
अतका; इन्नह सुसीवुहाऽ माऽ असाऽबहुम् ; इन्ना  
इदहुम्—सुव्वु; अलय स—सुव्वु, वि करीव् ॥

न देखे पान्तु तेरी पत्नी कि निस्सन्देह उसको वह पहुंचन  
 हारा है वह जो उन पर पहुंचेगा, निस्सन्देह उनकी प्रतिष्ठा  
 का समय आकाल है क्या प्रातः निकट नहीं ?

( १४-१५ ) फ लम्भाऽ जा३आ अम्रुनाऽ जअल्नाऽ  
 आऽलियहाऽ साऽ फिलहा व अम्रुनाऽ अलयहाऽ हिजाऽ  
 रत म्मिन सिज्जीलिम्मन्सुदिम्मसव्व मतन् इन्दा  
 रव्विका वमाऽ हिया मिन-ज्जालिमीना वि वइइ ॥

फिर जब हमारी आशा पहुंची, हमने वह नगरी ऊंच  
 नीचे कर डाली और हमने उस पर बर-बर खंगर और पत्थर  
 बरसाये जो तेरे पालनकर्त्ता की ओर से चिह्न किये हुये थे  
 और वह नगरी अत्याचारियों से कुछ परे नहीं थी ।

[ मंजिल ३ पारा १२ सू० ८।१२ ]

( १ ) व इला मद्यना अखाऽहुम् शुअयवऽन ;  
 काऽला या कऽमिऽअबुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन इला-  
 हिन गयूरुह; व लाऽ तन्कुमुऽऽत् मिक्याऽला वऽत् मीजा-  
 ऽना इन्नी३ अराकुम् वि स्वय्रि व्व इन्नी३ अखाऽफु  
 अलयकुम् अजाऽवा युऽमिम्मु हीत् ॥

और मद्यन ( जाति ) की ओर उतका सगा शुदेव भेजा;  
 ( उसने ) कहा—हे जाति ! अल्लाह की आराधना करो उनका  
 अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं; और नाप और तोल

में काफ़ी न करो; मैं तुमको संतुष्ट देखता हूँ और तुम पर एक फेंके वाले बिन की आपत्ति (के आने) का मुझे भय है।

(२) व या कउमि अउ फुऽऽल् मिक्याऽला वऽल्  
भीजाऽना विऽल् किस्ति वलाऽतन्वबमुऽ-आऽसा अरयाऽ  
अहुम् वलाऽ तअऽऽउऽ फिऽल् अजि मुऽमिदीन ॥

और हे जाति वालो ! नाव और तौड़ न्यायपूर्वक पूरा करो और लोगों को उनकी वस्तुएँ न घटाओ और पृथ्वी पर उपद्रव न मचाओ।

(३) वकियतुऽल्लाहि खयऽरुल्लकुम् इन्कुनुम्मुअ  
मिनीना, वमारे अनाऽ अलयकुम् वि हफीज् ॥

जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुमको शुभकारो है यदि तुम मुसलमान (विश्वासी) हो, मैं तुम्हारा संरक्षक नहीं।

(४) काऽल् या शुअयबु असलातुका तअऽऽरुका  
अन्न त्रुका माऽ यअबुदु आबाऽउनाऽ अउ अअफ-  
अला फीऽ अम्वाऽलिनाऽ माऽ नशाऽउऽ; इअका ल-  
अन्तऽल् हलीगु-रशीद् ॥

कहने लगे—हे शुऐब ! क्या तेरी नमाज़ (प्रार्थना) तुम्हको सिखाती है कि हम अन्धकार में हैं कि जिनको हमारे पितृगण पृथ्वी से अधधा हम आपसी सम्पत्ति के साथ वह न करें जो हम के हैं तुम्हें तो बड़ा कोमल स्वभाव और समझदार है।

( ५ ) कास्ता या कउमि अत्रयतुम् इन्कुन्तु अला  
वयिनति म्मिर्खी व रजकनी मिन्दु रिज्कन् हसनन् ;  
व मा३ उरीदु अन् एखाजलिफ कुम् इला मा३ अन्हाकुम्  
अन्हु; इन् उरीदु इल्लऽऽल् इस्ताऽ हा मऽऽस्तातऽतु; वमाऽ  
तउ फीकी३ इल्लाऽ विज्जलाहि; अलयहि तदक्कल्लु व  
इलयहि उनीव् ॥

कहने लगा—हे जाति ! देखो तो यह मुझको अपने पा-  
लनकर्ता की ओर से दान हुआ और उसने मुझको भोजन—  
शुभ भोजन दिया; और मैं नहीं चाहता कि जो काम तुमसे  
छुड़ाऊं ( उसे ) पीछे स्वयं करूं; मैं तो जहाँ तक हो सके यहाँ  
सुधारना चाहता हूँ; और जो अल्लाह की ओर से धन आता  
है; मैंने उसी पर विश्वास किया; और उसी की ओर लौटकर  
जाना है ।

( ६ ) व या कउमि लाऽ यजि मन्नकुम् शिकाऽकीऽ  
अयुसीवकुम् मि, स्तु मा३ असाऽवा कउमा नूहिन् अउ-  
कउमा इदिन् अउ कउमा साजलिहिन् ; व माऽ कउमु  
लूतिमिन्कुम् विव ईदु ॥

इसके बाद जाति ! मुझसे दूठ करके वह ( अपराध ) न क-  
ताने के लिये तुम पर वह आपत्ति आ पड़े जैसी कुछ कि, लूट की  
जाति पर या छद्म की जाति पर अथवा सातह की जाति पर  
पड़ी, और लूट की जाति तो तुमसे दूर नहीं ।

[ मंजिल ३ पारा १२-रु ६।१४ ]

( १ ) व लक़द अर्सानाऽ मूसा वि आयातिनाऽ  
व मुस्तानिम्बुवीन् ॥

और मूसा का अपने चिह्नों और स्पष्ट प्रमाण के साथ  
भेज चुके हैं ।

( २ ) इला फ़िअ्रुना व मलाइइही फ़त्तबउऽ  
अम्रा फ़िअ्रुना, व माइ अम्रु फ़िअ्रुना विरशीद ॥

फिअ्रौन और उसके मुखियाओं के पास फिर ( वे ) फि-  
अ्रौन की आज्ञा के अनुकूल चले, और फिअ्रौन की आज्ञा कुल  
अच्छी नहीं है ।

( ३ ) यक़दुमु क़उमहू यउप्रस्तु क्रियामति फ़  
अउरदहुमु-आऽरा; व विअ्रसऽलु विदुऽलु मउरुद ॥

फिर प्रलय के दिन फिअ्रौन अपनी जाति के आगे आगे  
होगा फिर उनको ( दोज़ख की ) अग्नि पर पहुँचावेगा; और  
जिध अग्नि ) पर पहुँचे वह घुरा घाट है ।

( ४ ) वउत् दिउऽ फ़ी हाज़िही लअनत व्व यउ  
मऽलु क्रियामति; विअ्रस-रिफ़दुऽलु मफ़ूद ॥

और इन संसार में पीछे से प्रलय के दिन फ़टकार मिली;  
वह धूग-पारितोषिक है जो प्राप्त हुआ है ।

( ५ ) जालिका मिन अन्वाशेइत्तु कुरा नकुत्तुह  
अलय्का मिन्हाऽ काशेइ मुव्व हसीद् ॥

यद् नगरियों के थोड़े से समाचार हैं जो हम तु को सु-  
नते हैं उनमें कोई अब तक स्थिर हैं और कोई उजड़ गयीं ।

( ६ ) व माऽ जलम्ना हुम् वला किन् जलभूऽ  
अन्फुसहुम् फ माऽ अग्नत् अन्हुम् आलिहत् हुनुऽज्जनी  
यद् ऊना मिन्दुनिज्जलाहि मिन् शय् इ प्लम्भाऽ जाशेअऽ  
अत्रु रन्विका; व माऽ जाऽ हुम् गय् रा तत्वीप् ॥

हमने उन पर अत्याचार नहीं किया किन्तु उन्होंने अपने  
ऊपर स्वतः अत्याचार किया और उनके ( पत्थर के ) देवता  
उनके काम कुछ न आये कि जिनको वह अस्ताह के अतिरिक्त  
बुलाया करते थे जब मेरे पालनकर्ता की आज्ञा आ पहुँची तो  
उन्होंने नाश के अति रक्त और कुछ न बढ़ाया ।

( ७ ) व कजालिका अत्तु रन्विका इजाऽ अलजऽ  
ल्कुरा व हिपा जाऽलिमतुन ; इन्ना अत्तुहरे अलीमुम्  
शदीद् ॥

और मेरे पालनकर्ता की पकड़ ( के प्रकोप ) ऐसी ही  
है जब वह अत्याचारी हैं; किन्तु अत्तुहरे प्रकोप की पकड़  
भयकर दुःख देत है ।

( ८ ) इन्ना फी जालिका ल आयतल्लिमन् स्वाऽफा



अज्ञाऽवऽल् आखिरति; जालिका यउहुम्मज्जु उल्लहु-  
 न्नाऽसु व जालिका यउमुम्मरहूद् ॥

निस्सन्देह इसमें उनके निमित्त चिह्न हैं जो अन्तिम दिवस से डरते हैं; यह एक दिन है जिसमें मनुष्य एकत्र किये जायेंगे और इस दिन की साक्षी मिली हुई है।

( ६ ) व माऽ नुअखिररुहू ३ इल्लाऽ लि अजलि  
 अमअदूद् ॥

हम उसको नियत समय के उपरान्त रोक न रखेंगे।

( १० ) येउ मा यअतिलाऽ तकल्लमु नपमुन् इल्लाऽ  
 वि इज़िनी, फ़ मिन्हुम् शकियुव्व सईद् ॥

जिस दिन वह आ पहुंचेगा तो कोई प्राणी बिना उसकी आज्ञा के न बोल सकेगा; अतः उनमें कोई भाग्यहीन है और कोई सौभाग्यशाली।

( ११ ) फ़ अम्मऽऽल्लज़ीना शकूऽ फ़ फ़ि-न्नाऽरि  
 लहुम् फ़ीहाऽ ज़फ़ीरु व्व शहीकू ॥

अतः जो लोग भाग्यहीन हैं वह (दोज़ख की) अग्नि में हैं उनको वहां चिल्लाना और दौड़ना है।

( १२ ) ख़ालिदीना फ़ीहाऽमाऽ दाऽ मति-स्समावातु  
 वऽल् अज़ु इल्लाऽ माऽ शाइआ रब्बुका; इन्ना रब्बुका  
 फ़ अत्राऽलु ल्लिमाऽ युरीदू ॥

उसमें जब तक आकाश और पृथ्वी रहे रहा करे परन्तु जो तेरा पालनकर्ता चाहे, निस्सन्देह तेरा पालनकर्ता जो वाहता है कर डालता है ।

(१३) व अम्पऽऽल्लजीना सुइदऽ फ फिऽल्  
जन्नति खालिदीना फीहाऽ माऽ दाऽमति-स्समात्रातु  
वऽल्ल अर्जु इल्लाऽ माऽ शाऽआ रब्बुका अताऽअन  
गयरा मजजज ॥

और वह जो सौभाग्यशाली है वह जन्नत में है जब तक आकाश और पृथ्वी रहे उसमें रहा करे परन्तु जो तेरा पालनकर्ता चाहे अन्त देन है ।

(१४) फ लाऽ तकु फी मियतिम्मिम्पाऽ यअबुदु  
हाऽ उल्लाऽइ; माऽ यअबुदुना इल्लाऽ कमाऽ यअबुदु  
आत्राऽउनुम्मिन कल्लु, व इन्नाऽ लमुवपफूहुम् नसीबहुम्  
गयरा मन्कस ॥

अतः तु इन वस्तुओं से धोखे में मत रह कि जिनको यह लगे पूजते हैं; पूजते कुछ नहीं परन्तु उसी प्रकार जिस प्रकार उनसे पहले उनके पिता प्रपितामहादि पूजते थे; और हम उनको उनका भाग यत्ना घटाया हुआ देने वाले हैं ।

[ मोजिल ३ पा० १२ सू० १, १४ ]

(१) व लकइ आतयनाऽ मूसऽल्ल फिताबा फऽल्ल-

लिफ़ा फ़ीहि व लउलाऽ कलिमतुन् सबकत् मिरन्विका  
 ल कुज़िया वय्नुहुम् ; व इन्हुम् लफ़ी शकिम्मिन्ह  
 गुरीव् ॥

हमने उसी को पुस्तक दी फिर उसमें विवेक किया; और  
 यदि एक बात पहले से तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से न आ  
 चुकी होती तो उनमें निर्णय कर दिया गया होता; और नि  
 श्चय उनको इसमें सन्देह है कि मन स्थिर नहीं होता ।

( २ ) व इना कुल्लऽलन्माऽ लयुवपिकयबहुम्  
 रब्बुका अअमाऽलहुम् ; इन्हु विमाऽ यअमलून खवीर् ॥

और जितने मनुष्य हैं तेरा पालनकर्ता उनको उनके लिए  
 पूर्ण देगा; उसको सब पता है जो कि वह कर रहे हैं ।

( ३ ) फऽस्तकिम् कमाऽ अमिता व मन्ताऽवा  
 मअका वलाऽतनगउऽ; इन्हु विमाऽ तअमलूना बसीर् ॥

अनः जैसी तुमको आहवा हुई, तू सीधा चला जा और जि  
 सने तेरे साथ आप जमा प्रार्थना की और मर्यादा का अति  
 क्रमण नहीं किया; वह जो तुम कर रहे हो (उसे वह)  
 देखना है ।

( ४ ) वलाऽ तर्कवुरे इलऽल्लज़ीना ज़लमूऽ फऽ  
 तमस्सऽहु-आऽ व माऽ लहुम्मिन्हनिऽल्लाहि मिन्  
 अउलियाऽश्चा लम्मा लाऽ अन्सऽल्ल

और उनकी और मत भुके जो आयाचारी है फिर तुमको  
 इयग लगेगी और तुमको अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य) कोई  
 सहायक नहीं फिर कहीं सहायता न पाओगे।

( ५ ) व अक्रिमि-स्सलाता तरफयि-बहाऽरि व  
 जुल्फम्मिन-ल्लयलि; इन्नल हसनाति युजूहिन्न-  
 स्सय्यिआति; जालिका जिक्का लि-ज्जाऽकिरीन् ॥

नमाज ( प्रार्थना ) के दोनों सिरे स्थिर रखो और कुछ  
 रोकें; निःसन्देह भलाइयाँ पापों को हटा देती हैं; और यह  
 स्मरण कराने वालों के निमित्त स्मरण कर रहा है।

( ६ ) वऽस्विर् फ इन्नऽल्लाहा लाऽ युजीउ अजऽल्ल  
 मुह सिनीन् ॥

और धीरज कर फिर निःसन्देह ईश्वर भलाई करने वालों  
 का प्रतिफल नष्ट नहीं करता।

( ७ ) फ लड्लाऽ काऽना मिनऽल्ल कुसुनि मिन  
 कन्लि कुम् उलुऽ वक्रियतिय्यन्हुऽना अनिऽल्ल फसाऽदि  
 फिऽल्ल अजि इल्लाऽ कलीलऽन्मिम्मन् अन्नयनाऽ मिन्दुम्,  
 वऽत्तवऽल्लजीना जलमूऽ माऽ उत्तरिफूऽ फीहि व  
 काऽनुऽ मुजिमीन् ॥

अतः उन संघर्षों में तुमसे पहले ऐसे समझने वाले कोई  
 क्यों न हूयें कि जो पृथ्वी में उपद्रव भवान् को रोक्ते थे पर तु

[ मं० ३ पारा १२ सूत्र २।१४ ]

( १ ) लकड़ काऽना फी यूसुफा व इब्नतिहीर  
आयातुल्लि ससाइवीन् ॥

निस्सन्देह यूसुफ और उसके भाइयों के शिष्य में प्रान  
करके वालों के लिए इसमें चिह्न हैं ।

( २ ) इज्जाऽल्लु ल यूसुफु व अय्यहु अ हब्नु इत्तारे  
अवीनाऽमिन्नाऽ व नहनु उस्वतुन् ; इन्ना अवाऽनाऽ  
लफी जलालिम्मुवीन् ॥

जब कहने लगे—“निस्सन्देह यूसुफ और उसका भाई  
हमारे पिता को हमसे अधिक प्रिय हैं और यद्यपि हम बख्तान  
हैं; निस्सन्देह हमारा पिता साक्षात् प्रम में है ।

( ३ ) ( नि ) ऽ वतुल्लु यूसुफा अदितरहु अर्  
थ्यल्लु लकुम् वजहु अवीकुम् व तकनुऽ मिन् व अदिही  
कड्मऽन् सालिहीन् ॥

यूसुफ का बध करदो अथवा उसे किसी दूर दे स फक व  
कि तुम पर-तुम्हारे पिता का एकमात्र ध्यान-तुम्हों पर ही और  
उसके प च त भजे लोगों में हो जागा ।

( ४ ) काऽला काइलुमिन्नुम् लाऽ तऽतुल्लु यूसुफा  
व अल्लु फी गयावतिल्लु जुब्य यल्लकित्तुहु व अ जु-  
हसय्या रति इन्कुन्तुम् फा इल्लोर् ॥

उनमें से एक बोलने वाला कहने लगा—यूसुफ को मार न डालो और उसको कोई बटोही उठा ले जायगा यदि तुम्हें कुछ करना ही है।

( ५ ) काऽलूऽ या अवाऽनाऽ माऽ लका लाऽ तअ-  
मन्नाऽ अला यूसुफा व इन्नाऽ लहू लनाऽ सि हून् ॥

वह कहने लगे—“हे पिता ! क्या कारण है कि तू यूसुफ के विषय में हमारा विश्वास नहीं करता और निस्सन्देह हम तो उस का हितैषी हैं।

( ६ ) असिंहू मअनाऽ गदऽय्यतअ व यलअव  
व इन्नाऽ लहू ल हाफिजून ॥

कल उसको हमारे साथ भेज दें कि वह भली भांति खाय और खेले और हम तो उसके रक्षक हैं।

( ७ ) काऽला इन्नीरे लयहू जुनुवीरे अन् तजहूऽ  
विही व अवाऽफु अय्यअ कुलहु-ज़िज़अ वु व अन्तुम  
अन्हू गाफिलून ॥

उसने कहा—निस्सन्देह यह तो हमारे शोक का कारण है कि तुम उसको लेजाओ और मैं डरता हूँ कि ( कहीं ) उसका भेड़िया खा जायँ और तुम उससे अचेत रहो।

( ८ ) काऽलूऽ लइन् अकलहु-ज़िज़अ वु व नहूनु  
असवतुन् इन्नारे इजऽल्लखासिहून् ॥

और ( जब कि ) हम एक बलशाली समुदाय ( बनये हुये )  
हैं तो हमने सब कुछ नष्ट किया !

( ६ ) फ़ लम्माऽ ज़हवूऽ विही व अज्मज़ऽ अव्यज्-  
अलहू फ़ी गयावतिऽल् जुब्बि, व अउ ह्यनाऽ इल-  
यहि ल तु नवि अन्नहुम् वि अन्निहिम् हाज़ाऽ व  
हुम् लाऽ यशरून् ॥

फिर जब उसको लेकर चले और सहमत हुये कि उसको  
अन्ध कूप में पटकें, और हमने उनकी ओर प्रेरणा की कि तू  
उनको उनका यह कार्य बतला देगा और वह न जावेगा ।

[ १० ] व जाऽज़ऽ अवाऽहुम् इशाऽअय्यक्कून् ॥

और सायंकाल को वह अपने पिता के पास रुदन करते  
हुये आये ।

[ ११ ] काऽलूऽ याऽ अवाऽनाऽ इन्नाऽ ज़हब्नाऽ  
नस्तविकु व तरकना यूसुफ़ा इन्दा मताऽइनाऽ फ़ अक-  
लहु-ज़िज़अज़ु, वमाऽ अन्ता वि मुअ् भिनिन्ननाऽ व  
लउ कुन्नाऽ सादिकीन् ॥

वे कहने लगे—हे हमारे पिता ! निरसन्देह हम परस्पर  
दौड़ करने लगे और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़  
दिया और उसको भेड़िया खा गया, और तू कभी हमारे कथन  
का विश्वास न करेगा यद्यपि हम सच्चे हैं ।

[ १२ ] व जा३ञ् अला कमीसिही विदमिन् कजि-  
विन् ; काऽला बल् सच्चलत् लक्षुम् अन्फुसुक्षुम् अम्रञ् ;  
फ सव्रुन् जमीलुन् ; वऽल्ला हुऽल् मुस्तथाऽल्लु अला माऽ  
तसिफुन् ॥

और उसके कुर्ने पर भूटा लोह लगा लाये; ( उनके ) उस  
( पिता ) ने कहा—कुछ नहीं किन्तु तुम्हारे आत्मा ने तुम्हारे  
निमित्त एक बात बना दी है; अब सन्तोष ही सत्य है; और मैं  
अल्लाह से उस बात पर सहायता चाहता हूँ जो तुम बताते हो ।

[ १३ ] व जा३अत् सय्याऽरतुन् फ अर्सलूऽ वाऽ-  
रिदहुग् फ अद्ला दल्वहू , काऽला या बुश्रा हाजा गुला-  
मुन् ; व असरूहु वि जाऽअतन् ; वऽल्लाहु अलीमुन्  
विमाऽ यत्र मलून् ॥

और व्यौपारियों का एक दल आ पहुँचा फिर अपना पनि-  
हारा भेजा उसने अपना डोल लटकाया; वह कहने लगा—  
“क्या प्रसन्नता की बात है कि यह एक लड़का है” और उसको  
धन समझकर छिपा लिया; और अल्लाह भली भाँति जानता  
है कि जो कुछ वह करते हैं ।

[ १४ ] व शरउहु विसमनिन् वखिसन् दराऽहिमा  
मअदूदतिन् , व काऽनुऽ फीहि मिन-ज्जाहिदीन् ॥

और उसको कुछ मूल्य गिनने के कुछ रूपों के बदले  
प्रेच दिया, और उससे खुशित हो-हे ।



[ मं० ३ पारा १२, सू० ३।६ ]

( १ ) व काऽलऽल्लजिऽतराहु मिन्मिस्ता लिऽन्न  
अतिहीरे अक्रिमी व, स्वाहु असारे अयन्फअनारे अउ  
नत्तखिजहु वल्लदऽन् ; व कज्जालिका मक्कन्नाऽ लि  
गुमुफा फिऽल्ल अजि व लि नुअन्ल्लिमहु मिन् तअन्वी-  
लिऽल्ल अहाऽदीसि; वऽन्लाहु गाऽल्लिबुन् अलारे अघिरी  
वला किन्ना अन्सर-नाऽसि लाऽ तअल्लमून् ॥

और उस मनुष्य ने, जिसने मिस्त्रवाजों से उसे मोल लिया  
था, अपनी स्त्री से कहा—“इसे प्रतिष्ठा से रखना, कदाचित्  
यह हमारे काम आने अथवा हम इसको बेच बनालें”, और  
इस प्रकार हमने यूयुफ को उस देश में इनलिए स्थान दिया  
कि उसको कुछ घटनाओं की व्याख्या करतादे; अर्थात् अपने  
कार्य पर विजयी है परन्तु धनेकों मनुष्य नहीं जानते।

( २ ) व लम्माऽ वल्लमा अशुदहरे आतयनाहु  
हुयमऽ ह्य इल्लमऽन् ; व कज्जालिका नज् जिऽल्ल सुह सि-  
नीन् ॥

और जब वह बल पूर्ण ( युवा ) अवस्था को पहुँचा तो  
हमने उसको आधा और ज्ञान दिया और सुकर्मियों को हम  
पेसा ही प्रतिफल देते हैं।

( ३ ) वराऽ वदत्तहुऽल्लेती हुवा फी वयनिहाऽ

अन्नपिसही व गल्लकतिऽल् अव्वाऽवा व काऽलत् हीना  
लका; काऽला मत्राऽजऽल्लाहि इन्नह रव्वीरे अहसना  
म, स्वाऽया इन्नह लाऽ युफिल्लहु-इज्जालिमून ॥

और उस स्त्री ने जिसके घर में वह रहता था उससे अ-  
पना मन लगाया और द्वार बन्द किये और कहने लगी—शां-  
धता कर; (यूसुफ ने) कहा—अल्लाह की शरण वह मेरा  
प्रिय स्वामी है (उसने) मुझको भली भांति रक्खा है; निश्चय  
जो लोग अन्यायी हैं वह भला नहीं पाते ।

( ४ ) व लकह् इम्मत् विही व हम्मा विहाऽ लउ-  
लारे अरत्रा बुर्हाऽना रव्विही; कज्जालिका ति नसिफा  
अन्हु—स्मूआ वऽल् फुह शारेआ; इन्नह मिन इवाऽऽदिनऽल्  
मल्लसीन् ॥

और निश्चय स्त्री ने उसकी चिन्ता की और मन लगा ही  
चुका था यदि उसने अपने पालनकर्ता की युक्ति न देखी होती;  
पेसा ही हुआ कि हमने उससे दोष और कुकर्म को पृथक्  
रक्खा; निस्सन्देह वह हमारे पवित्र भक्तों में से है ।

( ५ ) वऽस्तवकऽल् वाऽवा; व क़दत् कमीसहू  
हुबुरि व्वअन्फ याऽ सय्यिदहाऽ लदऽल् वाऽवि; काऽलत्  
माऽ जजाऽउ मन् अराऽदा वि अल्लिका सरेअन् इल्लारे  
अय्युस्नना अउ अजाऽवुन् अलीम् ॥

और दोनों द्वार को दौड़े और स्त्री ने उसके कुत का पोछे से फाड़ डाला और दोनों स्त्री के पति से द्वार के पास मिल गये; (स्त्री) कहने लगी—ऐसे मनुष्य को जो तेरे घर में कुकर्म (करना) चाहे और कुछ दगड़ नहीं परन्तु यही कि कारागार में पड़े अथवा दुःख का दण्ड भोगे ।

( ६ ) कास्ता हियराऽ वदन्ती अन्नफसी व शहिदा शाऽहिदुम्बिन् अहिहाऽ, इन् काऽना कमीसुहू कुदमिन् कुबुलिन् फ सदकत् व हुवा मिनऽल् काजिबीन् ॥

यूसुफ ने कहा—इस्तीने मुझसे इच्छा (प्रगट) की कि अपना मन न धामू और स्त्री की ओर से\* एक साजो ने साजो दी, यदि उसके कुत आगे से फटा है तो स्त्री सच्चा है और वह झूठा है ।

( ७ ) व इन् काऽना कमीसुहू कुदा मिनदुबुरिन् फ कजवत् व हुवा मिन-स्तादिकीन् ॥

और यदि उसके कुत पोछे से फटा है तो यह झूठी और वह सच्चा है ।

( ८ ) फ लम्पाऽ रथा कमीसुहू कुदा मिनदुबुरिन् कास्ता इन्हू मिन् कय्दि कुना; इन्ना कय्दा कुन्ना अजीम् ॥

\* एक हज़ीस में आया है कि यह साजो देनेवाला स्त्री का समरा आई था,

फिर जब उस ( स्त्री के पति ) ने उसका कुर्ता पीछे से फटा देखा तो उसने ( अपनी पत्नी से ) कहा कि यह ( तुम स्त्रियों का ) एक विद्या चरित्र है; निस्सन्देह स्त्रियों के चरित्र बड़े ( विचित्र ) होते हैं ।

( ९ ) यूयुफ, अयूरिजू अन् हाजाऽ दस्तगिफ्मी लि जन् विकि, इन्नकि कुन्ति मिनऽत् स्वादिर्न ॥

हे यूयुफ ! यह बात जानें दो, और स्त्री तू अपना पाप क्षमा करा निश्चय है कि तू ही अपराधिनी थी ।

[ सं ३, पारा १२, सू १६ ]

( १ ) व काऽला निस्वतुन् फिऽल् मदीनतिअतुऽल् अजीजि तुराऽवि दुफ्ताहाऽ अन्नफिसही, कइ शगफहाऽ हुब्बऽन; इन्नाऽ ल नराहाऽ फी जलालिगुवीन् ॥

और उस नगर में कई स्त्रियां कहने लगीं—अजीज की स्त्री अपने दास के साथ इच्छा करती है, उसके प्रेम में अपने मन से मोहित होगई, हाथी देखते हैं वह साक्षात् भूल में है ।

( २ ) फ लम्माऽ समिअत् विमक्रिहिन्ना अर्सलत् इलय्दिन्ना व अयूनदत् लहुन्ना मुत्तफअव्व आतत् कुल्ला याऽहिदतिम्मिन्हुन्ना सिक्कीनऽ व्व काऽलतिऽनुज् अलय्दिन्ना, फ लम्माऽ रअयनहूरे अक्वर्नहू व कत्तअना

अय्दियहुन्ना व कुल्ना हाश्रा लिल्लाहि माऽ हाजाऽ  
वशरज्ज्, इन् हाजाऽ इल्लाऽ मुल्कुन् करीम् ॥

जब ( अजीज की ) स्त्री ने उनके ताने सुने उनके बुलवा  
सेजा और उनके निविच ( विशेष ) भोज तय्यार कराया और  
उतमें से अत्येक के हाथ में एक छुरी दी और यूसुफ को उनके  
सम्मुख निकल आने को कहा, फिर जब ( उन्होंने ) उसको  
देखा वे आश्चर्य में आगई और अपने हाथ काट डाले और  
कहने लगीं—अल्लाह रक्षा करे यह व्यक्ति मनुष्य नहीं, यह तो  
कोई महान् फरिश्ता ( खर्गीय दूत ) है ।

( ३ ) काऽखत् फ़ ज़ालिकुन्नऽल्लजी लुम्नुन्नी  
फ़ीहि; व लक़द् राऽवतुह् अन्नाफ़िसदी फ़स्तअसमा; व  
लइल्लम् यफ़ अल् माऽ आमुरुद् ल मुस्जनन्ता व लय-  
कूनऽ म्मिन—साग़िरीन् ॥

( अजीज की ) स्त्री बोली—“सो यह वही है कि जिसके  
वास्ते तुमने मुझको ताना दिया; और मैंने उससे उसकी इच्छा  
को फिर उसने अपने को बचा रक्खा यदि जो मैं कहती हूँ  
( वह ) यह न करेगा तो यह निश्चय बन्दी और अपमानित  
होगा ।

( ४ ) काऽला रब्बि—सिसज्नु अइच्चु इलया  
मिम्माऽ यइज़नीऽ इलयहि; व इल्लाऽ तसिफ़ अन्नी  
कय्दहुन्ना अस्तु इलयहिन्ना व अकुम्मिनऽल् जाहिलीन् ॥

यूसुफ कहने लगा—हे पालनकर्त्ता ! मुझको उस बात से जिस ओर यह बुलाती है—कैद भली लगती है, और यदि तू मुझसे उनके छल को दूर न कर देगा तो मैं उनको ओर जाऊँगा और मुखों में हो जाऊँगा ।

( ५ ) फस्तजाऽवा लह रब्बुह फ सरफा अन्ह कय दहुन्ना; इन्नह हुव—समीऽल् अलीम् ॥

अतः उसके पालनकर्त्ता ने उसको प्रार्थना स्वीकार कर ली फिर उससे उनका छल हटाया; निश्चय वह सुनने वाला और ज्ञानवान् है ।

( ६ ) मुम्मा वदाऽल्हम्मिन् वअदि माऽर अबुऽल् आयाति लयस्जुनन्नह इत्ताहीन् ॥

फिर इन चिह्नों के देखने पर उन्हें यह उचित बात हुआ कि उसे एक समय तक बन्दी रखें ।

[ भँजिल ३ पारा १२ रू० ५।७ ]

( १ ) व दखला मअहु—सिज्ना फ तयानि; काऽला अ हदुहया३ इन्नी३ अरानी३ अअसिरु खप्पन् ;

व काऽल्ऽल् आखर इन्नी३ अरानी अहमिलु फउका रअसी खुब्जऽन् तअकुलु तय र मिन्हु ; नब्विअनाऽ वि तअवीलिही, इन्ना नराका मिनऽल् मुहूसिनीन् ॥

और कारागार में उसके पास दो तरह प्रवेश किये गये; उनमें से एक ने कहा कि मैं देखता हूँ कि मैं मद्य निचोड़ता हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूँ कि मैं अपने तिर पर रोटी उठाये हुये हूँ कि पत्नी उसमें चुगतें हैं हमको उसका अभिप्राय बतला. हम तुम्हें भला मानुस पाते हैं।

( २ ) कास्ता लाऽ यअतीकुमाऽ तथाऽनु तुर्का निहीऽ इस्ताऽ नव्वअतुकुमाऽ वितअवीलिही कस्ता अयअतियकुमाऽ, जालिकुमाऽ पिम्माऽ अन्लमनी रब्बी; इन्ती तरक्तु मिल्लता कऽमिल्लाऽ युअपिनुना विऽल्लाहि व हुम् विऽल् आखिरति हुम् काफिरुन् ॥

( यूसुफ़ ) कहने लगा—जो भोजन तुमको प्रति दिन प्राप्न होता है वह तुम्हारे पास न आने पावेगा और मैं तुमको उसका अर्थ, इससे पूर्व कि यह तुम्हारे पास आवे, बनल ऊंगा; यह ज्ञान है जो कि मुझको मेरे पालनकर्त्ता ने सिखाया है; मैंने उस जाति के मत का परित्याग किया कि जो अल्लाह पर विश्वास नहीं रखती और वह अन्तिम दिवस ले करती है।

( ३ ) वऽत्तदअतु मिल्लता आवाऽऽ इवाहीमा व इस्हाका व यअकूवा; माऽ काऽना लनाऽ अन्नुथिका विऽल्लाहि मिन् शयऽइन्, जालिका मिन् फऽज़िलऽल्लाहि अलयऽना व अल-न्नाऽसि बला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यऽकून् ॥

और मैंने अपने पिता-प्रपितामहादि इब्राहीम और इस्हाक और याकूब का मन ग्रहण किया; हमारा यह कर्त्तव्य नहीं कि किसी वस्तु को अल्लाह का साक्षी (शरीक) करें; यह अल्लाह का हम पर और सब मनुष्यों पर अनुग्रह है परन्तु अनेकों पुरुष हतब नहीं।

(४) या साजि हवयि-सिसजि अत्रर्वाऽनुमुतफ रिक्ना खयस्नु अमिऽल्लाहुऽल्ला वाजि ह दुऽल्ला कहहाऽर ॥  
हे बन्दीग्रह के मित्रो! भला; कई पृथक् पृथक् उपास्यदेव उत्तम हैं अथवा अकेला बली अल्लाह?

(५) माऽ तअबुदना मिन्दनिहीऽ इल्लाऽ अस्माऽ अन सम्पयतुम्हार अन्नुम् व आवाऽ उकुम्माऽ अन्जलऽ-  
ल्लाहु विहाऽ मिन् मुल्लानिन्; इनिऽल्ला हुक्यु इल्लाऽ  
लिल्लाहि; अमरा अल्लाऽ तअबुदऽ इल्लाऽ इय्याऽहुऽ  
जालिक-दीनुऽल्ला कयियु बला किन्ना अक्सर-नाऽसि  
लाऽ यअल्लमून् ॥

उसके सिवाय तुम कुछ नहीं पूजते परन्तु नाम हैं जो कि तुमने और तुम्हारे पिता-प्रपितामहों ने रख लिये हैं उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा; अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य) किसी का शासन नहीं है; उसने आशा दी है कि उसके अतिरिक्त अन्य किसी को न पूजो; यही सन्मार्ग है परन्तु अनेकों लोग नहीं जानते हैं।



( ६ ) फ़ लम्माऽ रज्जुऽ इलाऽ अवीहिम् काऽलूऽ  
याऽ अवाऽनाऽ मुनिऽआ मिन्नऽऽलू कय लु फ़ असिल  
मञ्जनाऽ अखाऽना नक्तल व इन्नाऽ लह ल हाफिजून ॥

फिर जब वह अपने पिता के निकट आये वह बोले— हे  
पिता ! हमसे नाप रुद्र हुई अतः हमारे भाई को हमारे साथ  
भेज कि नाप ले आये निरसन्देह उसके रक्षक हैं ।

( ७ ) काऽला हल् आमनुकम् अलय हि इन्ताऽ  
कमाऽ आमिन्तुकम् अलाऽ अवीहि मिन् कयुऽ फ़ऽल्लाह  
खय रू हाऽफिजुऽ व हुवा अर्हम्-राहिमीन् ॥

इस पर उसने कहा कि मैं तुम्हारी उस पर विश्वास  
करू परन्तु पहले इसके भाई के विषय में विश्वास किया था,  
अतः अल्लाह श्रेष्ठ रक्षक है और सब दयालुओं में श्रेष्ठ  
दयालु है ।

( ८ ) व लम्माऽ फ़तह मताऽअहुम् वजदऽ विजाऽ-  
अतहुम् रुदत् इलय हिम् ; काऽलूऽ याऽ अवाऽनाऽ माऽ  
नवगी; हाजिही विजाऽअतुनाऽ रुदत् इलयनाऽ, व नमीर  
अहनाऽ व नहफ़जु अखाऽनाऽ व नज़्दाऽदु कय ला  
बईरिन् ; जालिका कय लुय्यसीर् ॥

और जब अपनी वस्तु खोली तो देखा कि अपनी सामग्री  
उनको फेर दी गई; वह बोले— हे पिता ! श्रेष्ठ रक्षक क्या चाहिये

हमाती पूंजी तो हमें फेर दी गई अपने निमित्त अन्न लावेंगे और अपने भाई की रक्षा करेंगे और एक ऊंट की नाप अधिक लेंगे, वह नाप आसान है।

( ६ ) कास्ता लन् उर्सिलहू मञ्जुकुम्, हत्ता तुअतूनि अउसिकऽम्पिनऽल्लाहि लतअतुदनी विहीरे इल्लारे अय्यु- हास्ता विकुम्, फ लम्पारे आतउहू मउ सिक्कहुम् कास्ताऽ- ल्लाहु अला माऽ नकूलु वकील् ॥

कहने लगा—मैं उसको कदापि तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक कि मुझे अल्लाह की शपथ लेकर यह प्रतिज्ञा न करोगे कि तुम इसको मेरे पास फिर लाकर उपस्थित करोगे परन्तु यह कि तुम आपही घर जाओ ( तो विवशता है ), फिर जब उन्होंने पिता को अपनी प्रतिज्ञा दे दी तो पिता ने कहा कि यह प्रतिज्ञा जो हम परस्पर कर रहे हैं, अल्लाह उसका धकील है।

( १० ) व कास्ता या वनिय्या लाऽ तदखुलूऽ मिन् वाऽवि व्वाऽहिदि व्वऽदखुलूऽ मिन् अव् वाऽविम्मुत फरिंकतिन् ; व मारे उग्नी अन्कुम्पिनऽल्लाहि मिन् शय्दन् ; इनिऽल् हुक्मु इल्लाऽ लिऽल्लाहि ; अलय्हि तव- कल्लु, व अलय्हि फल् यतक्कलिऽल् मुतवविकलून ॥

और कहा—हे पुत्रो ! एक द्वार से प्रविष्ट न होना किन्तु

पृथक् पृथक् द्वारों से प्रविष्ट होना; और मैं अल्लाह की आज्ञा को तुम पर से तनिक भी नहीं हटा सकता; आज तो केवल अल्लाह ही की है; मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है, और विश्वास करने वालों को उद्दिष्ट है कि उसी पर विश्वास करें।

( ११ ) व लम्माऽ दखलऽ मिन हयसु अमर हुम् अयूहुम्; माऽ काऽना युग्नी अन्हुम्पिनऽल्लाहि मिन शयूऽन इल्लाऽ हाऽजतन् फी नफिस यअकवा कजाहाऽ व इकह लजू इन्मिन्लिमाऽ अल्लम्नाहु बला किन्ना अकसर-जाऽसि लाऽ यअलमून ॥

और जब यह लोग ( उसी प्रकार ) जैसे इनके पिता ने इनसे कह दिया था ( मिस्र में ) प्रविष्ट हुये तो उनको कुछ अल्लाह की किसी वस्तु से न बचा सकता था परन्तु याकूब के हृदय में एक इच्छा थी सो ( पूरी ) कर चुका; और वह तो हयारे निखाने से ज्ञानवान् हुआ परन्तु अनेकों मनुष्यों को ज्ञान नहीं होता।

[ मंजिल ३ पा० १३ रु० ६।१४ ]

( १ ) व लम्माऽ दखलऽ अला यूसुफा आवाऽ इल- यहि अखाऽहु काऽला इलीऽ अनाऽ अखका फलाऽ लव्तइस् विमाऽ काऽवऽ यअमलून ॥

और जब ( यह लोग बुवारा ) यूसुफ के पास गये तो

यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास बिठा लिया ( और धीरे से उससे ) कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ सो उन कामों से जो वे करते रहे हों तू दुःखित मत हो ।

( २ ) फ़ लम्मा जह हज़हुम् बि जिहाऽज़िहिम् ज-  
अल-स्सिकाऽयता फी रह लि अखीहि सुम्मा अज़ज़ना  
मुअज़ज़तुन् अय्यतुहऽऽत् ईरु इन्नकुम् ल साऽरिकून् ॥

फिर जब उनको उनकी सामग्री तय्यार करदी, अपने भाई के बोझ में पीने का वासन रख दिया फिर पुकारने वाले ने पुकारा—“हे व्योपारियो ! तुम निश्चय चोर हो ।”

( ३ ) काऽलूऽ वअऽक्बलूऽ अलयहिम्माऽज़ाऽ तफ़िक-  
दून् ॥

यह पुकारने वालों की ओर मुंह करके पूछने लगे “तुम्हारी क्या वस्तु खो गई ?”

( ४ ) काऽलूऽ नफ़िकदु सुवाऽअऽल् मलिफि व लि  
मन् जाऽआ विही हिम्लु बई रिब्ब अनाऽविहीज़ ईम् ॥

उन्होंने कहा—शाही माप ( पैमाना\* ) हमको नहीं मिलता और जो कोई उसे लावे उसे एक बोझ ऊंट का मिले और मैं उसका प्रतिभू हूँ ।

\* ह० यूसुफ जिस कटोरे में पानी पीते थे उसको अनाज नापने का पैमाना बना लिया था कि अकाल पीड़िता को सन्माल के साथ अन्न दिया जाय और यूसुफ अन्न के बांटन कर काम राज की शेर से करते थे इस लिए उस पैमाने का नाम ( नवाऽऽल मलिफि ) शाही पैमाना—कहलाता था

( ५ ) काऽल्लूऽ तऽल्लाहि लकइ अलिमुम्माऽ  
निअनाऽ लि सुफिसदा फिऽल् अजि वमाऽ कुन्ना साऽ  
गिकीन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तुमको ज्ञात है कि हम  
देश में उपद्रव करने नहीं आये और न हम कभी चोर थे ।

( ६ ) काऽल्लूऽ फमाऽ जज़ारेउहरे इन्कुन्तुम् काजि  
वीन् ॥

कहने लगे—यदि तुम भूटे हो तो फिर उसका दण्ड क्या है ।

( ७ ) काऽल्लूऽ जज़ारेउहरे मब्बजिदा फी रह लिही  
फ हुवा जज़ारेउहरे कज़ालिका नज्जि—उज़ालिमीन् ॥

कहने लगे—जिसके धोम में वह मिले वही उसके बदले  
में जावे; हम अपराधियों को यही दण्ड देते हैं ।

( ८ ) फ वदअवि अउ इयतिहिम् कब्ला वि  
आरेइ अखीहि मुम्मस्तग्रजहाऽ मि च्विआरेइ अखीहि  
कज़ालिका किदाऽ लि युमुफा, माऽ काऽना लि यअ  
खुजा अखाऽहु फी दीनिऽल् मलिकि इल्लारे अय्यशारे  
अऽल्लाहुः नफ उ दरजातिम्मन्नशारेउ, व फउका कुल्लि  
जी इल्मिन् अलीम् ॥

फिर यूसुफ ने पहले अपने भाई की खुर्जी से उनकी खु-  
र्जियां खोजना आरम्भ किया फिर वह पात्र अपने भाई की

खुर्जी से निकाला; हमने इस प्रकार यूसुफ को पडयन्त्र बताना दिया; अन्यथा अपने भाई को उस राजा के न्याय में कदापि नहीं पकड़ सकता था परन्तु जो अल्लाह चाहे (सो होता है); हम जिसको चाहें पद ऊँचा करते हैं, और प्रत्येक ज्ञानवान् से ऊपर एक ज्ञानवान् है।

( ९ ) काऽल्लूरे इय्यसिक् फ़क़द् सरका अखुल्लह्  
मिन् क़ब्लु फ़ असरहाऽ यूसुफु फ़ी नफ़िसही बलम्  
युब्दिहाऽ लहुम् , काऽला अन्तुम् शरूमकाऽनऽन् ,  
वऽल्लाहु अअलमु विमाऽ तसिफून् ॥

कहने लगे—यदि उसने छुराया तो उसके एक भाई ने भी पहल्ले चांगी की है, तब यूसुफ ने अपने मन में धीरे से कहा और उन्हें न बताया, कह—तुम पदवी में और निरुद्य हो, और जो तुम बतते हो ( उसे ) अल्लाह भली भाँति जानता है।

( १० ) काऽल्लूऽ या३ अय्युहऽल्ल अज़ीज़ु इन्ना लहू३  
अवऽन् शयखऽन् क़धीरऽन् फ़ रुज़ अहदनाऽ मकाऽ-  
नहू, इन्नाऽ नराका मिनऽल्ल मुहसिनीन् ॥

वह बोले—हे अज़ीज़ ! इसके बृद्ध और दीर्घायु एक पिता है अतः उसके स्थान पर एक हममें से रखते; हम देखते हैं कि तू उपकार करने वाला है।

( ११ ) काऽला मथाऽज़ऽल्लाहि अन्न अखुजा इल्लाऽ  
मय्यजइनाऽ मताऽअना इन्दहूरे इन्नारे इज़ऽल्ल ज़ालिमून् ।

कहने लगा—अल्लाह शरण में रखें यदि हम (उसके) अतिरिक्त कि जिसके पास अपनी वस्तु पाई अन्य किसी को पकड़े फिर तो हम अन्यायी हुये ।

[ मंजिल ३ पारा १३ सू० ६।१४ ]

( १ ) फलन्मऽस्तऽ य्अमूऽ भिन्हु खलमूऽ नजियऽन्  
 काऽला कवीरु हुम् अलम् नअलमूऽ अना अवाऽकुम्  
 कद् अखजा अलय् कुम्मऽसिकऽम्मिनऽल्लाहि व मिन  
 कऽल्लु माऽ फर्त्तुम् फी यूसुफा फ लन् अत्र इऽल् अजा  
 दत्ता यअजना लीऽ अवीऽ अउ यह कुमऽल्लाहु ली,  
 व हुवा खयऽल् हाकिमीन् ॥

फिर जब उससे निराश हो गये तो एकान्त में परामर्श के लिये बैठे; इनमें से बड़ा बोला—तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह की प्रतिज्ञा ली है और यूसुफ के स्वन्ध में पहले जो अपराध कर चुके हो; अतः जब तक मेरा पिता मुझे आज्ञा न दे अथवा अल्लाह मेरा विवाद सुकादे मैं इन देश से न हटूंगा और वह अल्लाह सबसे महान् शासक है ।

(२) इजिऽइलाऽ अवीकुम् फकूल यार अवाऽना  
 इन्ऽन्का सरका. वमाऽ शहिदनाऽ इल्लाऽ विमाऽ अलि-  
 म्नाऽ व माऽ कुन्नाऽ लिल गयवि हाफिजीन् ॥

फिर अपने पिता के पास जाओ और कहो—“हे मेरे पिता ! पुत्र ने चोरी की, और हमने वही कहा था जो हमें बताया था और हमको परीक्षा की बात का स्मरण नहीं था ।”

( ३ ) वस् अलिऽल् कर्थतऽल्लती कुन्नाऽ फीहाऽ वऽल् ईरऽल्लतीऽ अकवल्नाऽ फीहाऽ, व इन्नाऽ ल सादि-  
कन् ॥

और उस नगर में जिसमें हम थे और उस व्यौपारियों के समुदाय में, जिसमें हम आये हैं पूछलें; और हम निस्सन्देह सत्य कहते हैं ।

( ४ ) काऽला वल् सव्यलत् लकुम् अन्फगुकुम्  
अभ्रऽन्; फ सख्वन् जमीलुन्; असऽल्लाहु अय्यअति-  
यनी विहिम् जमीअऽन्; इन्नहू हुवऽल् अलीमुऽल्  
हकीम् ॥

कहने लगा—“कुछ नहीं किन्तु तुम्हारे हृदय ने एक बात बतलाई है; अब सन्तोष ही ठीक है; कदाचित् अबलाह मेरे पास उन सबको ले आवे; वही धाता और बुद्धिमान है ।

( ५ ) व तवल्ला अन्हुम् व काऽला याऽ असफा  
अला यूमुफा वऽब्यज्जत् अयनाहु मिनऽल् हुजिन फ  
हुवा कजीम् ॥

और उनसे मुंह मोड़ लिया और बोला—शोक यूसुफ पर ।



और उसकी आँखें शोक से श्वेत होगईं अतः वह आपको घोंट रहा था ।

( ६ ) काऽलूऽ तऽल्लाहि तऽफतऽ तऽज्जुरु यूसुफ़ा  
हत्ता तऽकूना हरऽजऽन् अऽ तऽकूना मिनऽल्लाहाऽ लिकीन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तू यूसुफ़ का स्मरण उस समय तक न छोड़ेगा जब तक कि गलत जावे अथवा मर जावे ।

( ७ ) काऽल्ला इन्नमाऽ अश्कूऽ वऽस्सी वऽ हुज्जीऽ  
इल्लाऽल्लाहि वऽ अऽल्लमु मिनऽल्लाहि माऽल्लाऽ तऽल्ल-  
मून् ॥

कहने लगा—मैं तो अपना समाचार और शोक अल्लाह की ओर से ( वह ) जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ।

( ८ ) या वनियऽज्जहवूऽ फतहऽ सऽवूऽ मि यूसुफ़ा  
वऽ अऽखीहि वऽलाऽताऽ यऽअसूऽ मिरूऽहिऽल्लाहि; इन्नहऽ लाऽ  
याऽयऽअसु मिरूऽहिऽल्लाहि इल्लाऽल्ला कऽमुऽल्ला काफिरून् ॥

हे पुत्रो ! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की खोज करो और अल्लाह के अनुग्रह से सिवाय उसके—जो अविश्वासी है—कोई निराश नहीं ।

( ९ ) फऽ लम्माऽ दऽखलूऽ अल्लयहि काऽलूऽ याऽ  
अऽयुहऽल्ला अऽजीजु मऽसनाऽ वऽ अहऽनऽ-ज्जुरु वऽ जिअनाऽ  
वि जिजाऽअतिम्मज्जातिन् फऽ अऽफि लऽनऽल्ला कऽय्ला

व तसद्क अलयना; इन्ऽल्लाहा यज्जिऽल् मुतसदि-  
कीन् ॥

फिर जब उसके समीप प्रविष्ट हुये तो कहने लगे—“हे अजीज ! हम पर और तुम्हारे घर पर कटीरता पड़ी है और हम थोथी पूजा लाये अतः हमको पूरी तौल दे और हम पर दान कर; निस्सन्देह अल्लाह दान देने वालों को शुभ परिणाम देता है।

( १० ) काऽला हल् अलिम्नुम्माऽ फअल्तुम् वि  
यूसुफा व अखीहि इज् अन्तुम् जाऽहिलून् ॥

पूछा—“कुछ पता रखते हो कि जब तुमको समझ न थी ( तब ) तुमने यूसुफ और उसके भाई से क्या किया?”

( ११ ) काऽलूऽआ इन्का ल अन्ता यूसुफु;  
काऽला अनाऽ यूसुफु व हाजाऽ अखी कह मन्ऽल्लाहु  
अलयनाऽ; इन्हु मय्यत्तकि व यस्विर् फ इन्ऽल्लाहा  
लाऽ युजीउ, अज्ऽल् मुह सिनीन् ॥

कहने लगे—क्या तू ही वास्तव में यूसुफ है; कहा—मैं यू-  
सुफ हूँ और यह मेरा भाई है; अल्लाह ने हम पर अनुग्रह की;  
निश्चय जो भाई संयमी हो और स्थिर रहे तो अल्लाह शुभ  
कर्म करने वालों का अधिकार नष्ट नहीं होने देता।

( १२ ) काऽलूऽ तऽल्लाहि लकद् आसरकल्लाहुऽ  
अलयना व इन् कुन्नाऽ ल खातिर्इन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, निश्चय तुमको अल्लाह ने इससे अधिक प्रिय रक्खा; और हम चूकने वाले थे।

( १३ ) कास्ता लाऽ तस्रीवा अलयकुमुस्त यऽमा;  
यगिफरुस्तलाहु लकुम् ; व हुवा अर्ह, मु-राहिमीन् ॥

कहने लगा—तुम पर आज कुछ आक्षेप नहीं; और अल्लाह तुम्हें क्षमा करे और वह सब दयालुओं में (अधिक) दयालु है।

( १४ ) इजू हवूऽ वि कमीसी हाजा फ अन्कह  
अला वजिह अवी यअति वसीरऽन् ; वअतूनी वि अहि-  
कुम् अज्मईन् ॥

मेरा यह कुरा ले जाओ और इसे मेरे पिता के मुंह पर डालो ताकि आंखों से देखता हुआ चला आवे; और मेरे पास अपना समस्त धर ले आओ।

[ सं० ३ पैरा १३ रूकूअ ११।११ ]

( १ ) व लम्माऽ फसलतिस्त ईरु कास्ता अबूहुम्  
इन्नी ल अजिदु री हा यूसुफा लउला अन्तुफनिद्न् ॥

और जब व्यौपारियों का दल पृथक् हुआ उनके पिता ने कहा—मुझे यूसुफ की गन्ध आती है यदि यह न कहो कि बूढ़ा बहक गया।

( २ ) काऽलूऽ तऽल्लमहि इन्नकालफी ज़लालिकऽल्ल  
कदीम् ॥

लोग कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तू अपनी उसी सदा-  
की भूल में है ।

( ३ ) फ लम्भा३ अनजा३अऽल्ल वशीर अल्काहु  
अला वजहिही फऽतदा वसीरन काऽला; अलम् अकुल्ल-  
कुम् ; इन्नी अअलम् मिनऽल्लाहि माऽ लाऽ तअलमून ॥

फिर जब सुसमाचार देने वाला पहुंचा तो उसके मुख  
पर वह कुर्ता डाला तो वह आंखों से देखता हुआ लौटा, कहने  
लगा—( क्या ) मैंने तुम्हें न कहा था; मैं अल्लाह की ओर से  
( वह ) जानता हूँ जो तुम नहीं जानते ।

( ४ ) काऽलू३ या३ अवासनऽऽस्तगिफर लनाऽ  
जुनूवना३ इन्नाऽ कुन्नाऽ खानिईन् ॥

वह कहने लगे—हे पिता ! हमारे पापों को क्षमा करा;  
निस्सन्देह, हम अपराधी थे ।

( ५ ) काऽला सऽफा अस्तगिफर लकुम् रब्बी;  
इन्नह हुवऽल्ल गफूररहीम् ॥

कहा—ठहरे रहो, तुमको अपने पालनकर्ता से क्षमा करा  
ऊंगा, वही क्षमा करने वाला दयालु है ।

( ६ ) फ लम्माऽ दरखलूऽ अला यूसुफा आवा३

इत्यदि अवयदि व काऽलऽहवल्स मिन्ना इन्शाः अऽ-  
ल्लाहु आमिर्नान् ॥

जब यूसुफ़ के पास प्रविष्ट हुये तो यूसुफ़ ने अपने माता-  
पिता को अपने पास स्थान दिया और यदि अल्लाह ने चाहा  
तो मिस्र में आनन्द पूर्वक प्रविष्ट हो । \*

( ७ ) व रफ़्था अवयदि अलऽल अर्शि व  
खर्हऽ लह सुज्जदऽन् , व काऽला याऽ अवति हाजा  
तअशीलु रुअ्याया मिन कब्जु कह जअलहाऽ रबी  
हकऽन् ; व कह अहसना वीऽ इज् अखनी मिन-  
स्सिज्जिन व जाऽथा विकुश्मिनऽल् वइवि मिन वअदि  
अन्नजा-शयतानु वयनी व वयना इस्वती, इन्ना रबी  
लती फुल्लिमाऽ यशाऽउ; इन्नह हुनऽल् अलीमुऽल्  
हकीम् ॥

और अपने पिता को लिटसन पर ऊँचा विजया और  
सब उसके सम्मुख सिजदा ( दखवत् ) करने को गिर गये  
और उसने कहा—हे मेरे पिता ! यह मेरे पहले स्वप्न का अर्थ  
है उसका मेरे पालनकर्ता ने सत्य सिद्ध किया और उसने मेरे  
साथ उपकार किया जब मुझको बन्दीगृह से निकाला और  
तुमको गाँव से ले आया, इसके पीछे शैतान ने मुझमें और  
मेरे भाइयों में विवाद उत्पन्न कर दिया था; निरुन्वेह मेरा पा-

लनकर्त्ता जो चाहता है यत्न से करता है; निस्सन्देह वही जाना और बुद्धिमान है।

( ८ ) रवि कइ आतयूतनी मिनऽल् मुन्कि व अल्ल-  
मनी मिन तअवीलिऽल् अहाऽदीसि, फाऽतिर-स्ममा-  
वाति वऽल् अजि अन्तावल्लियी फ़ि-हुन्याऽ वऽल्  
आखिरनि, तवफ़नी मुस्लिमऽव्व अल् हिक्नी वि-स्सा-  
लिहीन ॥

हे पालनकर्त्ता ! तुने मुझे कुछ शासन दिया और मुझे कुछ  
घटनाओं का आशय सिखलाया, हे आकाश और पृथ्वी के  
उत्पन्न करने वाले ! तू ही लोक परलोक में मेरा प्रतिपालक है;  
मुझे इस्लाम में ही मृत्यु दे और मुझे शुभ कर्मियों में सम्मि-  
लित कर।

( ९ ) ज़ालिका मिन अन वाऽइऽल् गय्वि  
नूदीहि इलय़ का; व माऽ कुन्ता लदय हिम् इज अज्मज़्  
अम्रहुम् वहुम् यम्कुरुन ॥

यइ परोक्ष के समाचार हैं : जिन्हें हम तुम्हको भेजते हैं  
और जब अपना कार्य निश्चित करने लगे और कपट करने  
लगे तो तू उनके पास न था।

( १० ) वमाऽ अक्सर-न्नाऽमि व लउ, हरस्ता  
वि मुअयिनीन ॥

और बहुतेरे मनुष्य विपनास पारने ज्ञाने नहीं वर्यपि सु  
कलचाने ।

( ११ ) व माऽ तस्यलुहम् अलय हि मिन अजिन ;  
इन् इ वा इन्लाऽ जिक्रुणिल्लत् आलमीन् ॥

और तू उनसे इस पर कुछ मूल्य नहीं मांगता: यह तो  
और कुछ नहीं परन्तु समस्त संसार को शिक्षा है ।

[ मं० ३ पाठ १३ इ० १२७ ]

( १ ) व कअथ्यन्मिन आयतिन् फि-स्तमावाति  
वस्त अजि यमुर्ना अलय हाऽ बहुम् अन्हाऽ मुअरिजन् ॥

और आकाश और पृथ्वी पर अनेकों चिह्न हैं जो उन पर  
से बँत जाने हैं और वे उन पर ध्यान नहीं देते ।

[ २ ] न माऽ युअ मितु अक्सरुहुम् विऽल्लाहि इन्लाऽ  
वहुम्मुथिरुन् ॥

और अनेकों पुरुष साथ में साझी किये बिना अल्लाह पर  
विश्वास नहीं करते ।

[ ३ ] अफअमिन् ३ अन्तअतियहुम् गाऽशियतु  
मिन् अजाऽविऽल्लाहि अत् तअतियहुमुस्साऽअतु वगन  
व्यहुम् लाऽ यरुऽरुन् ॥

क्या वह दल बात से निर्भय हो गये हैं कि इन पर अल्लाह:

के प्रकोप की आपत्ति आ पड़े अथवा अकस्मात् प्रलय की घड़ी आ पहुँचे और उनको पता न हो।

[ ४ ] कुल् हाजिरी सवीलीरे अइजरे इलज्जलाहि अला वसीगतिन् अनाऽ दे मनिऽत्तवअजी; व सुव्हानऽ-  
व्लाहि व मारे अनाऽ मिनऽल् शुश्रिकीन् ॥

कहें—यही मेरे पालनकर्ता का मार्ग है मैं अल्लाह की ओर से खुले प्रमाण के साथ बुलाता हूँ।

[ ५ ] वमारे अर्सलनाऽ गिन् क़न्लिहा इब्लाऽ-  
रिजाऽलज्जुहीरे इलय्हिमिन् अहिल् कुरा; अफलम्  
यसीरुरे फिज्ल् अज़ि फ़ यन्जुऽ कयफ़ा काऽना  
अकिवतुऽलज़ीना गिन् क़न्लिहिम्, व लदाऽरुऽल्  
आदिरति खय् ग़न्लि-लज़ीनऽत्तक़ुऽ, अफलऽ तअ-  
किलन् ॥

और हमने तुम्हारे पहले सिवाय मनुष्यों के और किसी को न भेजा कि हम उनको और प्रेरणा करते हैं और वह नगरों के निवासी थे, फिर क्या यह लोग देश में नहीं फिर कि यह दंगल लें कि उन लोगों का—जो उनसे पहले थे—क्या आन्व दुआः निःसन्देह आन्व के दिन का घर संघर्षियों के निमित्त उत्तम है सां क्या उनको जगमग नहीं ?

( ६ ) इत्ताऽ इज़ऽस्तानअस रसूलु व ज़नऽ



अन्नहुम् कद् कुज़िबूऽ जाश्अहुम् नसुनाऽ फ़ नुज़िया  
 अन्नशाश्उ; वलाऽ युरद् वअमुनाऽ अन्निऽल् कउमिऽल्  
 मुजिमीन् ॥

अहाँ तक कि जश् पैगम्बर निराश होने लगे और न वि-  
 श्वास करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तब उनको हमारी  
 सहोयता पहुँची; फिर जिनको हमने चाहा बचा दिया; और  
 हमारा झण्ड पापी जाति से नहीं टरता ।

( ७ ) लक़द् काऽना फ़ी क़ससिहिम् इत्रतुल्लि  
 ललिऽल् अल्वाऽवि; माऽ काऽना हदीसऽय्युफ़तरा वला  
 किन् तस्दीकऽल्लज़ी वयूना यदय् हि व तफ़सीला कुल्लि  
 शायइव्व हुदव्व रहमतल्लिकउमिय्युअमिन्नून् ॥

निस्सन्देह उनके समाचारों से बुद्धिमानों ने अपनी दया  
 का विचार करना है; कुछ गढ़ी हुई बात नहीं है किन्तु उनको  
 ली उनसे पहले हैं, सिद्ध करती है और जो लोग विश्वास लाते  
 हैं उनके निमित्त शिवा और बया है ।



## सूर्ये रश्मिद

[ मंजिल ३ पारा १३, सू० १।७ ]

( १ ) अलिफू लाश्मीश्मूरा तिल्का आयातुऽल्  
किताबि; वऽऽलजीश् उन्जिला इलय्का मिर्बिकऽल्  
हक्कु वला किना अक्सर-दाऽसि लाऽ युअ्मिन्नु ॥

अलिफू लाश्मीश्मूरा—यह पुस्तक की आयतें हैं; और  
जो तेरे पालनकर्त्ता से तुझपर उतरा वह सत्य है परन्तु अनेकों  
विश्वास नहीं करते ।

( २ ) अल्लाहुऽल्लजी रफ़अ-समावाति वि ग्यरि  
अमदिन तरउन्हाऽ सुम्मस्तवा अलऽल् अशिं व  
सख़्खर-शम्सा वऽल् क़मरा, कुल्लुय्यजी लि अजलिम्मु-  
सम्मन्; युदव्विरुऽल् अम्रा युफ़सिसलुऽल् आयाति  
लअल्लकुम् विलिका इइ रव्विकुम् तुअ्किन्नु ॥

देवते हो अल्लाह वह है जिसने स्तम्भ रहित उच्च आ-  
काश रचे फिर अर्श पर स्थित हुआ और सूर्य और चन्द्रमा  
को काम लगाया; प्रत्येक एक निश्चित अवधि तक चलता

सूर्ये रश्मिद मक्के में उतरी इसमें ४३ आयतें और ६ लहय, हैं ।

और अविश्वासी कहते हैं—इस पर अपने पाहनकर्ता की ओर से कोई चिह्न क्यों न उतरा ? तू तो भय सुनानेवाला प्रत्येक जाति को मार्ग बनाने वाला है ।

[ मंजिल ३ पा० १३ रु० २।११ ]

( १ ) अल्लाहु यअलमु तह् मिलु इज्जु उन्सा वमाऽ  
तगीजुऽल् अर्हाऽमु व माऽ तज्दाऽदु व कुज्जु राय् इन्  
इन्दह् वि मिऽदाऽर् ॥

अल्लाह जानता है जो प्रत्येक मादा पेट में रखती है और जो पेट सिकुड़ते हैं और जो बढ़ते हैं; और प्रत्येक वस्तु इसके पास है ।

( २ ) आलिमुऽल् गय् वि व-शहाऽदतिऽत् कवीर-  
ज्जु मुतऽआऽल् ॥

गुप्त और प्रगट का वेत्ता सबसे बड़ा ( और सबसे ) ऊपर है ।

( ३ ) सवाऽउम्मिन्कुम्मन् असर्ऽज्जु कउला व  
मन् जहरा विही व मन् हुवा मुस्तऽकिफन् वि-न्नयलि  
व साऽरिबुन् वि-न्नहाऽर् ॥

तुममें बराबर है जो चुपके बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छिप रटा है और जो दिन को फिरता है ।

( ४ ) लह मृत्प्रक्रियातुम्पिन वयनि - यदय द्वि  
 व मिन व खन्किही यह फजूनह मिन अम्रिज्जलाहि;  
 इन्नज्जलाहा लाऽ युगयिरु माऽ वि कडमिन हत्ता युग-  
 यिरुऽ माऽ वि अन्फुगिहिम् ; व इत्ताऽ अन्नाऽदज्जलाहु  
 वि कड मिन मृत्अन फ लाऽ मरदा लह, वमाऽ लहु  
 म्पिन्दनिही मिब्बाऽत् ॥

उसके फेरे बाल ( फरिजेन ) हैं जो बन्दे के आगे और  
 पीछे से उसको अल्लाह की आज्ञा से पहचाने हैं; अल्लाह किसी  
 जाति की दशा नहीं बदलता जब तक यह ( स्वयं ) न बदल  
 ले जो उनके मनो में है; और जब अल्लाह किसी जाति पर  
 बुराई चाहें, तो वह नहीं हटता; और उसके लिए उसका  
 अतिरिक्त अन्य कोई सहायक नहीं।

( ५ ) हुवज्जलजी युरीकुमुस्त वकी स्वडफज्व  
 तमअज्व गुन्शिउ-स्सहाऽव-स्सकाऽत् ॥

यह आमत उम समय उत्तरी जब अमर इब्नज तफील और तशीद का  
 भाई अरबाद इब्न राबिया मुहम्मद के पास उसे मारने गये। अमर इब्नज से  
 उसके मित्रान्त के मुख्य अन्न पर विवाद कर रहा था कि अरबाद कम्पाल  
 नेक उसके पीछे उने तलवार से मारने गया; परन्तु पैगम्बर को ज्योंही  
 उसके पदमन्त्र का पता लगा उमने अल्लाह से रक्षा के निमित्त प्रार्थना की,  
 जिस पर कि अरबाद पर विश्वास हुआ और अमर के एक Testimonial  
 Book लगा, जिससे वह पूरी दशा में तत्काल मर गया। —न. सदार बेजावी

वही है कि जो तुम्हें भय (दित्राने) को विद्युत् दिव-  
लाता है और आशा [उत्पन्न करने] के लिए घोर शत्रु  
उठाता है।

( ६ ) व युसब्विद्द, — रअद्दु वि हम्मिद्दी वऽल् मलाऽ  
इकतु मिन् खीफातिद्दी; व युमिलु—स्तवाऽऽका फ युसीवु  
विहाऽ मय्यशाऽउ बहुम् युजाऽदिलूना फिऽल्लाहि, व  
हुवा शदीदुऽल् मि हाऽल् ॥

और ( विद्युत् की ) कड़क उसके गुणों का पाठ करती  
है और सब दून भी उसके भय से; और ( यह विद्युत् की )  
गरज भेजता है और जिस पर चाहता है डालना है, और यह  
लोग अल्लाह की बात में\* झगड़ते हैं, और उसकी पकड़  
बढ़ है।

( ७ ) लह दअ वतुऽऽ हकिः; वऽल्लजीना यऽ-  
ऊना मिन्दूनिही लाऽ यस्तजीवूना लहुम् विशय इन्  
इल्लाऽ कवाऽसिति कफरुय हि इलऽल् माऽइ लि यऽल्लुगा  
फाऽहु वमाऽ हुवा विवाऽलिगिही; वमाऽ दुआऽउऽल् काफि-  
रीना इल्लाऽ फी जलाल् ॥

मुसलमानों का विश्वास है कि दो सत्तक फरिश्ते प्रत्येक मनुष्य के  
पाल उसके कृत्यों को लिखने के लिए रहते हैं। यह 'मुध किःवत'—जो एक  
दूसरे के पश्चात् क्रमशः आते हैं इन्हें [ १ ] कतामन और [ २ ] कानिबीन  
कहते हैं। हाका त्रिये व नशान शदकों को 'कुरान जौतु' में मिलेगा।

उली को पुकारना सत्य है; और वह जो उसके अतिरिक्त दूसरों को पुकारते हैं उन्हें कोई उत्तर न दिया जायता परन्तु जैसे कोई अपने हाथ पानी की ओर फैलाये जिससे वह उसके मुंह में पहुंच जाय और वह कभी न पहुंचेगा; और काफ़िरों की सब प्रकार उम भरी है।

( ८ ) व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़ि-स्समावाति वस्त् अज़िं तज़्ज़स्व्व कर्हस्व्व ज़िलालुहुम् विस्त् गुदु त्वि वस्त् असास्त् ॥

श्रीर जो कोई आकाश और भूमि में है, प्रसन्नता और दुःख से अल्लाह को सिजदा करता है और प्रातः और सायं उनकी छुःया है।

( ९ ) कुल् मर्ब्बु-स्समावाति वस्त् अज़िं; कुलिऽ-ल्लाहु; कुल् अफ़ऽत्तख़ज़्तुम्मिन्दूनिहीरे अज़्लियाश्आ लाऽ यम्लिकूना लि अन्कुसिहिम् नफ़्ऽस्व्व लाऽ ज़रऽन्, कल् हल् यस्तविस्त् अअमा वस्त् वसीरु अम् हल् तस्तवि ज़ुलुमातु व-न्नूरु, अम् जज़लूऽ लिल्लाहि शुरकाश्आ ख़ल्कू, कख़ल्किही फ़ तशाऽ वहस्त् ख़ल्कु अलयहिम्; कुलिऽल्लाहु खाऽतिकु कुल्लि शय्ऽस्व्व हुवस्त् वाऽहिदुऽल् कर्हाऽर् ॥

अल्लाह; कह—फिर तुमने उसके अतिरिक्त ऐसे सहायक स्वीकार किये हैं जो अपने भले घुरे के बचाने वाले नहीं; कह (क्या) कोई अन्ध और स्रक्षता समान होता है अथवा कहीं उजाला और अन्धोग समान होता है अथवा उन्होंने अल्लाह के कुछ ऐसे समांश निश्चित किये हैं कि उन्होंने कुछ बनाया है; जैसे अल्लाह ने बनायी है फिर उनकी दृष्टि में सृष्टि मिलती जुलती है; कह—अल्लाह प्रत्येक वस्तु का रचयिता है और वही एकमात्र बली है।

( १० ) अन्जला मिन-स्समाश्इ या अन् फसाऽ-  
 लत् अद्दियतुन् वि कदरिहाऽ फऽहतमल-स्सगुलु ज़बदऽ  
 राऽवियऽन्, व मिम्माऽ यूकिदूना अलयहि फि-त्राऽरिऽ  
 न्तिगाश्आ हिल्यतिन् अउ मताऽ इन् ज़बदुम्मि स्सुह;  
 कज़ालिका यज़िबुऽल्लाहुऽल् हक़का वऽल् वाऽतिला,  
 ज़ अन्मऽ-ज़़बदु फ़ यज़हबु जुफ़ाश्अन् व अम्माऽमा;  
 यन्फ़उ-त्राऽसा\* फ़ यम्कुसु फ़िऽल् अज़ि; कज़ालिका  
 यज़िबुऽल्लाहुऽल् अम्साऽल् ॥

आकाश से पानी उतारा फिर अपने अपने अनुसार धारायें वहीँ फिर वह धारा फूटा हुआ भाग ऊपर लार्दे; और जिस वातु को भूयण ( बनाने ) अथवा सम्पत्ति के निमित्त अग्नि में धौंकते हैं उसमें भी वैसा ही भाग है; इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य निश्चित करता है; फिर वह जो

भाग है वह सूत्र जाता है; और वह जो मनुष्यों के उपयोग में आता है सो पृथ्वी में रहता है; यों अल्लाह दृष्टान्त घटाता है।

( ११ ) लिन्नज़ीनऽस्तजाऽवूऽ लि रब्विहिमुऽल् हुस्ना, वऽल्लज़ीना लम् यस्तजीवूऽ लहू लउ अन्ना लहुम्माऽ फ़िऽल् अज़ि जमीअऽव्वमिऽल्हू मअहू लऽफ्त- दउऽ विही, उलाऽइका लहुम् सूऽउऽल् हिसाऽवि व मअवाहुम् जहन्नमा; व विअऽसऽल् मिहाऽइ ॥

जिन्होंने अपने पालनकर्ता का आदेश माना है उनको भलाई है और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी यदि उनके पास जो कुछ पृथ्वी में है—सबका सब और इतना हो, इसके साथ और भी हो तो, यह लोग अपने बदले में सब दें; इन लोगों का घुरा हिसाव है और उनका स्थान नर्क है; और वह घुरा स्थान है।

[ मं० ३, पारा १३, रु० ३।१३ ]

( १-२ ) अफ़य्य-अलमु अन्नमाऽ उन्ज़िला इलय्का मिरऽन्विकऽल् हक्कु कमन् हुवा अअमा; इन्नमाऽ यतज़क्करु उलुऽल् अन्वाऽविऽल्लज़ीना यूफूना वि अह दिऽन्लाहि व लाऽ यन्कुज़नऽल् मीसाऽक् ॥



भला, जो ननुष्य जानता है कि जो कुछ तुम पर तेरे पालनकर्ता की ओर से उतरा, सत्य है वह उसके समान होगा जो नेत्र विहीन है; उन्हीं को बोध है जिनमें कि बुद्धि है—और जो अल्लाह की प्रतिष्ठा पूरी करते हैं और निश्चय को भंग नहीं करते।

( ३ ) वऽल्लजीना यसिलूना माऱे अमरऽल्लाहु विहीरे अय्यूसला व यरुशरुना रवहुम् व यखाऽफूना सूरेअऽत् हिसाऽव् ॥

और वह जो जोड़ते हैं जिसके जोड़ने की—अल्लाह ने आज्ञा दी है और अपने पालनकर्ता का भय करते हैं और बुरे हिसाब की आशंका रखते हैं।

( ४ ) वऽल्लजीना सवरुऽऽन्तिगाऱेआ वजिह रविहिम् व अक्राऽमु-रालाता व अन्फूऽ मिम्माऽ रि जकूना हुम् सिरऽव्व अलाऽनियत व्व यदूरऊना विऽत् हसनति-स्सय्यिअता उलाऱेइका लहुम् एकव-दाऽर् ॥

और वह जिन्होंने अपने पालनकर्ता का भुकाव चाहने को धैर्य रखा और नमाज ( प्रार्थना ) स्थिर रखी और हमारे दिये हुये में से प्रकृत और गुण व्यय किया वह बुराई के सुकोबिजे में भलाई करते हैं और हन्ही लोगों को अन्त का घर है।

( ५ ) जन्नातु अद्रिय्यइखुलूनहाऽ व मन् सल हा

मिन् आवाश्इहिम् व अज्वाऽजिहिम् व जुर्ियातिहिम्  
वऽल् मलाश्इकतु यद्खुलूना अल्यहिभिन् कुल्लि  
वाऽव् ॥

उसमें सदा रहने को जन्मत ( स्वर्ग ) हैं वहां जायेंगे और उनके पिता प्रपितामहों, और स्त्रियों और सन्त व में जो सुकर्मों होंगे उनके निकट प्रत्येक द्वार से फरिश्ते ( स्वर्गीय दूत ) आते हैं ।

( ६ ) सलामुन अल्यकुम् त्रियाऽ सवर्तुम् फ  
निय्यागा उक्व-दाऽर् ॥

कहते हैं—इसके बदले कि तुम स्थिर रहे तुम पर शान्ति है अतः तुम्हें अन्त का घर भला मिला ।

( ७ ) वऽल्लजीना यन्कुजूना अहदऽल्लाहि मिन्  
वअदि मीसाऽकिही व यकतजना माश् अमरऽल्लाहु  
विहीश् अय्यसला व युफिसदना फिऽल् अजिः उलाश्-  
इका लहुमु-ल्लअनतु व लहुम् सूश्उ-दाऽर् ॥

और जो लोग अल्लाह की प्रतिज्ञा भंग करते हैं और जिस वस्तु को अल्लाह ने जोड़ना कहा उसे काटते हैं और पृथ्वी में उमड़व उठाते हैं; ऐसे मनुष्य हैं कि उनको जाप है और उनको दुःख का घर है ।

( ८ ) अल्लाहु यन्मुतु-रिज्जा लि मय्यशाश्इ व

यकिदरु, व फरिह, ऽ विसल्, ह्याति-हु न्याऽ; व मऽऽल्  
ह्यातु-हु न्याऽ फिऽल् आखिरति इल्लाऽ मताऽय् ॥

अल्लाह जिसको चाहता है अनन्त भोजन देता है और  
(जिसको चाहता है) न्यून कर देता है; और यह सांसारिक  
जीवन परलोक की अपेक्षा कुछ नहीं परन्तु तुच्छ व्यवहार है।

[ मंजिल ३ पारा १३ रु० ४१५ ]

( १ ) व यकूलुऽल्लज़ीना कफरुऽ लउलाऽ उन्ज़िला  
अलय्हि आयतुम्मिररिव्विही; कुल् इन्नऽल्लाहा युज़िन्नु  
मय्यशाऽउ व यरुदीऽ इलय्हि मन् अनाऽन् ॥

और अधिश्वासी कहते हैं कि उस पर कोई चिह्न उसमें  
पालनकर्त्ता की ओर से प्यो नहीं उतरा; कह—जिसको चाहे  
अल्लाह मार्गशुद्ध करता है और वही उसको अपनी ओर मार्ग  
देता है जो उसकी ओर लौटा।

( २ ) अल्लज़ीना आमनुऽ व ततूमइन्नु कुलुबुहुम्  
विज़िक्रिऽल्लाहि; अलाऽ विज़िक्रिऽल्लाहि ततूमइन्नुऽल्  
कुलुव् ॥

उन्होंने विश्वास किया और उनके हृदय अल्लाह की कथा  
से शान्ति ग्रहण करते हैं; सुनते हो, हृदय अल्लाह की कथा से  
ही शान्ति ग्रहण करते हैं।

(३) अल्लजीना आमनूऽ व अमिलुऽ-स्सालिहाति  
तूवा लहुम् व हुस्तु मआव् ॥

जिन्होंने विश्वास किया और सुकर्म-सम्पादन किया  
उनको प्रशंसा है और उनका स्थान अच्छा है ।

( ४ ) कज़ालिका अर्सल्लाका फीरे उम्मतिन् कह  
खलत् भिन् कव्लिहारे उममुल्लि तल्लुवाऽ अलय्हिमुऽ-  
ल्लजीरेअब् हय्नारे इलय्का बहुम् यक्फुरुना वि-रह-  
मानि; कुल् हुवा रब्बी लारे इलाहा इल्लाऽ हुवा,  
अलय्हि तवक्कल्लु व इलय्हि मताऽव् ॥

इसी प्रकार हमने तुम्हको एक जाति के लिए भेजा कि  
उससे पहले ( अनेक ) जातियां हो चुकी हैं जिससे तू उनको  
वह आवा सुनावे जो हमने तेरी ओर भेजी है और वह दयालु  
का विश्वास नहीं करते; तू कह—वही मेरा पालनकर्त्ता है  
उसके अतिरिक्त ( अन्य ) किसी की आराधना ( योग्य ) नहीं,  
मैंने उसी पर विश्वास किया है और मैं उसी की ओर छूटकर  
आता हूँ ।

( ५ ) व लब् अन्ना कुर आनऽन् सुय्यिरत् विहिऽल्  
जिवाऽल् अब् कुत्तिअत् विहिऽल् अर्जु अब् कुल्लिया  
विहिऽल् मड्ता, वल्लिल्लाहिऽल् अम्नु जपीअऽन्,  
अफलम् याऽय् असिऽल्लजीना आमनरे अल्लउ यशाऽरे

येगम्बर की शक्ति न थी कि अल्लाह की आज्ञा के बिना मुम्-  
जिजा ( चमत्कार या करामात ) दिखाये; प्रत्येक समय के  
लिए हमारे यहाँ लेना है ।

( २ ) यम्हुऽऽल्लाहु माऽ यशादेउ व युऽस्वतुः व  
इन्दहूरे उम्मुऽत् किताऽव् ॥

अल्लाह जिसको चाहता है नष्ट कर देता है और जिसको  
चाहता है उसके पास स्थिर रखता है, ( हमारी आज्ञा का )  
पहुँचा देना तुम्हारा काम है और लेना लेना हमारा ।

( ३ ) व इम्माऽ नुरियन्नका बअजऽलजी न इदुहुम्  
अउ नतवफफयन्नका फ इन्नमाऽ अलयकऽत् बलागु व  
अलयनऽत् हिसाऽव् ॥

क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को  
सब ओर से दबाते चले आ रहे हैं और अल्लाह आज्ञा  
देता है कोई उसकी आज्ञा की अवहेलना करने वाला नहीं ।

( ४ ) अबलम् यरउऽ अन्नाऽ नअतिऽत् अर्जा  
नन्कुसुहाऽ मिन् अतूराऽ फिहाऽ; वऽल्लाहु यहकुमु लाऽ  
मुअकिऽवा लि हुन्मिही; व हुवा सरीउऽत् हिसाऽव् ॥

बदनामियों का उच्चार देने के लिये उतरी जो उनकी, अनेकों स्त्रियों के होने  
के कारण, होती थी । क्योंकि, जैसा कि बेजाबी का कथन है, यदि वह सच्चा  
येगम्बर होता तो उसका ध्यान स्त्रियों और सन्तान की उत्पत्ति के स्थान  
में किसी दूसरी ही ओर होता ।

क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को चारों ओरसे दबाते चले आते हैं और अल्लाह आश्ना देता है; कोई उसकी आश्ना का उल्लंघन नहीं कर सकता; और वह अति शीघ्र लेखा लेने वाला है।

( ५ ) व कद् मकरऽल्लज़ीना मिन् क़व्लिहिम् फ़  
लिल्लाहिऽल् मक्रु जमीअऽन् ; यअल्लमु माऽ तक्सिबु  
कुल्लु नफ़िसन् ; व सयअल्लमुऽल् कुफ़ारु लिमन् उकूब-  
दाऽ ॥

और जो लोग इन ( मक्के के काफ़िरों ) से पहले हो चुके हैं उन्होंने भी ( पैग़म्बरों की रक्षा में ) अपने अपने प्रयत्न किये सो प्रयत्न तो सब अल्लाह ही के हैं; मनुष्य जो कुछ कर रहा है, अल्लाह को सब विदित है और काफ़िरों को शत्रु विदित हो जायगा कि किसका परिणाम शुभ है।

( ६ ) व यकूलुऽल्लज़ीना कफ़रुऽ लस्ता मुसलऽन् ;  
कुल् कफ़ा विऽल्लाहि शहीदऽन् वयनी ॥ व वयनकुम् व  
मन् इन्दहू इल्मुऽल् किताब ॥

और काफ़िर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो तुम इनसे कहो कि मेरे और तुम्हारे मध्य अल्लाह और जिनके पास आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान है, वह साक्षी पर्याप्त है।

## सूरये इत्राहीम\*

[ मंजिल ३, पारा १३, सू० १।७ ]

( १-२ ) अलिफू लाश्मूरा किताबुन् अन्जुन्नाहु  
 इलय्का लि तुख्रिज-नाऽसा मिन-ज़ुलुमाति इल-न्नूरि  
 वि इज़िन रन्विहिम् इला सिराऽतिऽल् अज़ीज़िऽल्  
 हमीदिऽल्लाहिऽल्लज़ी लहू माऽ फ़ि-स्समावाति व माऽ  
 फ़िऽल् अज़ि व वय्लुल्लिल् काफ़िरीना मिन अज़ाऽबिन  
 शदीद् ॥

अलिफू लामूरा—एक पुस्तक है जो कि हमने तेरी ओर  
 उतारी कि तू लोगों को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की  
 ओर लावे उनके पालनकर्ता की आज्ञा से बलवान् और  
 महिमा योग्य है। अल्लाह ही है कि जिसका वह सब है जो कुछ  
 आकाश और पृथ्वी में है और काफ़िरों को एक कठिन प्रकोप  
 के कारण शोक है।

( ३ ) ( नि )ऽल्लज़ीना यस्तहिऽव्वुनऽल् हयात-  
 हुन्याऽ अलऽल् आख़िरति व यंसुहूना अन् सबीलिऽ-

\*सूरये इत्राहीम मक्के में उतरी इसमें ७ सूअ और ५२ आयते हैं।

अल्लाहि व यन्बानहाऽ इवजऽन्; उलाइरेका फी जलालिन्  
वई इ ॥

जो परलोक से सांसारिक जीवन को प्रिय समझते हैं और  
अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें खोटे खोजते हैं वह  
दूर भ्रम में पड़े हैं ।

( ४ ) वमा३ अर्सल्लाऽ मिरसूलिन् इल्लाऽ विलि-  
साऽनि कउमिही लि युवयिना लहुम्; फ युजिल्लुऽल्लाहु  
मय्यशा३उ व यहदी मय्यशा३उ; व हुवऽल् अज़ीजुऽल्  
हकीम् ॥

और जब कभी हमने कोई पैगम्बर प्रेषित किया तो (उसको)  
उसी की जातीय भाषा में\* (वार्तालाप करता हुआ भेजा )  
जिससे वह उनको भली भाँति समझा सके; फिर अल्लाह  
जिसको चाहता है, पथभ्रष्ट करता है और जिसको चाहता है  
उपदेश देता है; और वह बलवान और बुद्धिमान है ।

( ५ ) व लकद् अर्सल्लाऽ मूसा वि आयातिना३  
अन् अखिज् कउमका मिन-ज़ुलुमाति इल-भूरि व  
जक्किहुम् वि अय्यामिऽल्लाहि; इना फी जालिका ल  
आयातिल्लि कुल्लि सव्वाऽरिन् शकूर ॥

हमही ने मूसा को अपने चिह्न देकर भेजा कि अपनी



जाति को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाओ और उनको अल्लाह के वह दिवस स्मरण दिलाओ; क्योंकि उनमें से प्रत्येक सन्तोषी और कृतज्ञ के लिये चिह्न हैं।

( ६ ) व इज़्काऽला मूसा लिक्ज़्मिहिऽज़्कुरुऽ निअ-  
मतऽल्लाहि अल्यकुम् इज़् अन्जाकुम्पिन् आलि फ़िअउना  
यमूमूनकुम् सूरे अऽल् अज़ाऽवि व युज़्बि इना अब्नारे  
अकुम् व यस्तहूयूना, निसारेअकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम्  
बलारेअम्मिररबिकुम् अज़ीम् ॥

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा—“अल्लाह के वह उपकार स्मरण करो जब कि उसने तुमको फ़िअौन के मनुष्यों से बचाया कि जो तुमको बुरी तरह दण्ड देते और तुम्हारे पुत्रों का ढूँढ ढूँढ कर बध करते और तुम्हारी स्त्रीजाति (अर्थात् कन्याओं) को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से तुम्हारे सन्तोष की कठिन परीक्षा थी।

[ मंजिल ३ पारा १३ रु० २।६ ]

( १ ) इज़्तअज़्जना रब्बुकुम् लइन् शकतुम् ल  
अज़ीदन्नकुम् व लइन् कफ़तुम् इना अज़ावी लशदीद् ॥

और जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने बता दिया था कि यदि  
तुम हमारा धन्यवाद करने लगे तो हम तुम्हें अधिक दोगे

और यदि तुमने कृतघ्नता की तो तुम पर हमारा कठिन कोप है।

( २ ) व काऽला मूसाऽ इन्तक्फुरूऽ अन्तुम् व  
मन् फिऽल् अर्जि जमीअऽन् फ इन्नऽल्लाहा ल गनिय्युन्  
हमीद् ॥

और मूसा ने कहा—कि तुम और जितने मनुष्य पृथ्वी में हैं सब मिलकर भी अल्लाह की अवज्ञा करो तो भी अल्लाह निश्चिन्त और प्रशंसनीय है।

( ३ ) अलम् यअतिकुम् नवउऽऽल्लज़ीना मिन्  
कब्लिकुम् कड्मि नूहि व्व आऽदि व्व समूदा; वऽल्ल-  
ज़ीना मिन् वअदिहिम् ; लाऽ यअलमुहुम् इल्लऽऽ-  
ल्लाहु, जाऽअत्हुम् रुसलुहुम् विऽल् वथिनाति फ रद् ३  
अय्दियहुम् फीऽ अफ्वाऽहि हिम् व काऽल्लूऽ इन्नाऽ  
कफर्नाऽ विमाऽ उर्सिन्तुम् विही व इन्नाऽ लफी शक्कि-  
म्मिम्माऽ तद्ऊननाऽ इलय्हि मुरीब् ॥

क्या तुमको उन ( लोगों ) के समाचार नहीं पहुंचे जो तुमसे पूर्व की जातियों—नूह की, आद की और समूद की में थे; और जो इनके पश्चात् उत्पन्न हुई उनका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है उनके समीप उनके पैगम्बर चिह्न लेकर आये तो उन्होंने अपने हाथ अपने मुंह में कर लिये और कहने

नगे—जां तुम्हारे हाथ में जा गया, उसे हम नहीं मानने और  
जिनकी ओर तुम हमको बुलाने हो उनके विषय में हम बड़े  
सन्देह में पड़े हुये हैं।

( ४ ) काञ्जत् ननुलुहम् अफिञ्जलादि शक्नु  
फाञ्जतिरि—समावाति वञ्ज् अङ्गिः यद् अङ्कुम् लि यङ्गिफरा  
लकुम्भिन् ननुविकुम् व युञ्जन्तिवर कुम् इलाः अजलिः  
म्युसम्भन् : फाञ्जुरे इन् अन्तुम् इञ्जलाः वशरुम्भि स्तुनाः  
तुरीदना अन्तमुद्ना अम्माः काञ्जा यञ्जुद् भावाः  
उनाः फञ्जुनाः विमुञ्जानिभुर्वान् ॥

उनके पैगम्बरों ने पूछा—“क्या अहनाह ( के विषय ) में  
शंका है कि जिसने आकार और पृथ्वी को उत्पन्न किया।  
वह तुमको बुलाता है जिससे तुम्हारे पाप क्षमा करदे और  
तुमको एक नियत समय तक वास करने दे; कहने लगे—तुम  
नो हमारे मानिन्द मनुष्य होने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं।  
तुम चाहते हो कि हमें उससे रोक दो जिसको हमारे पुरुष  
पूजते थे अतः हम रे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

( ५ ) काञ्जत् लहुम् ननुलुहम् इञ्जनु इञ्जलाः  
वशरु म्भि स्तुकुम् वला किञ्जञ्जलाद्या यमुञ्जु अला मय्य-  
शाः उ भिन् इवाः दिही; व माः काञ्जा लनाः अज-  
अतियकुम् वि सुञ्जानिन् इञ्जलाः वि इञ्जिञ्जलादिः व  
अलञ्जलादि फ ल् यतवक्कलिञ्ज् मुञ्जिनीन् ॥

उनको इनके पैगम्बरों ने कहा—हम भी तुम्हारे मानिन्द मनुष्य हैं परन्तु अल्लाह अपने उपासकों में, जिस पर चाहे, उपकार करता है; और हमारा यह काम नहीं कि तुम्हारे पास अल्लाह की आज्ञा के बिना प्रमाण ले आवें; और विश्वासियों को अल्लाह पर विश्वास करना चाहिये ।

( ६ ) वमाऽ लनाऽ अल्लाऽ नतवक्कला अलऽ-  
ल्लाहि व कद् हदानाऽ सुबुलनाऽ व लनस्विरना अला  
माऽ आजयतुमूनाऽ; व अलऽल्लाहि फल् अतवक्कलिऽल्  
मुतवक्कलूनः ॥

और हमको क्या हुआ कि अल्लाह पर विश्वास न करें और हमको हमारा मार्ग दिखा चुका और हम कष्टों पर, जो हमको देते हो, सन्तोष करेंगे; और विश्वासियों को अल्लाह पर विश्वास करना उचित है ।

[ मं० ३ पारा १३, रू० ३।६ ]

( १ ) व काऽलऽल्लज़ीना कफरूऽ लिऽरुसुलिहिम्  
ल नुऽखिऽजन्नकुम्मिन् अर्जिनाऽ अल् लतऽज़दुना फी मिल्ल-  
तिनाऽ; फ अऽहऽरे इलय्हिम् रऽवुहुम् ल नुऽहिकन-  
ज्जालिमीन् ॥

और काफिरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से अथवा निकाल बाहर करेंगे अथवा तुम हमारे

मत में आ जाओगे: इस पर पैगम्बरों के पालनकर्ता ने  
 और वही भेजी कि हम इन उदरुड लोगों को अवश्य नष्ट  
 करेंगे ।

( २ ) व लनुस्किनन्नकुमुस्ल् अज़ा मिन  
 हिम् ; ज़ालिका लि मिन खाऽफ़ा मकाऽमी व  
 वई इ ॥

और इनके पश्चात् अवश्य तुमको इसी भूमि में  
 यह पुरस्कार उस मनुष्य का है जो हमारी सेवा में बड़े  
 से डरा और हमारे प्रकोप से डरा ।

( ३-४-५ ) वस्तफतहऽ व खाऽवा कुन्हु जब्बाऽ  
 रिन् अनीदि मिम व्वराऽइही जहन्नमु व युस्का मिम्माऽ  
 इन् सदीदियत जर्ऽउह व लाऽ यकाऽदु युसीगुह व  
 यअतीहिऽल् मउ्तु मिन कुल्लि मकाऽनि व्व माऽ हुवा  
 वि मय्यितिन् ; व मिव्वराऽइही अज़ाऽबुन् गलीजू ॥

और उन्होंने विजय कामना की और प्रत्येक विरोधी  
 करने वाला निराश रहा, उसके पीछे नर्क है और उसे  
 का पानी पिलाया जायगा, कि जिसको घूट घूट कर  
 और गले से नहीं उतार सकेगा और उस पर प्रत्येक स्थान  
 मृत्यु चली आती है और वह नहीं मरता और उसके  
 कठिन दण्ड है ।

( ६ ) मसलुऽल्लजीना कफरूऽ विरब्बिहिम् अम्-  
माऽलुहुम् करमाऽदि ( नि )ऽशतदत् विहि-रीहु, फी यल्  
मिन् आऽसिफिन् ; लाऽ यकिदरूना मिम्माऽ कसबूऽ अला  
शयूइन् ; जालिका हुव-ज्जलालुऽल् वूईद् ॥

जो लोग अपने पालनकर्त्ता को नहीं मानते उनका दृष्टान्त  
पेसा है कि उनके आचरण मानो राख हैं कि आंधी के दिन  
उनको हवा ले उड़ी; जो ( कर्म ) यह लोग ( संसार में ) कर  
गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आयगा, परन्तु दर्जे की  
असफलता यही है ।

( ७-८ ) अलम् तरा अन्नऽल्लाहा खलक-स्समा-  
वाति वऽल् अर्जा विऽल् हकिक् ; इय्यशअ युजूहिबुकुम् व  
यअति वि खल्किन् जदीदि व्व माऽ जालिका अलऽ-  
ल्लाहि वि अर्जीजू ॥

क्या तुने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी,  
जैसे चाहियं, बनाये; वह यदि चाहे तो, तुमको मार दे और  
कोई नवीन उत्पत्ति करे; और यह अल्लाह के लिये कठिन  
नहीं ।

( ९ ) व वरजूऽ लिल्लाहि जमीअऽन् फ़ काऽल-  
ज्जुअफारेउऽ लिल्लजीनऽस्तक्बरूरे इनाऽ कुनाऽ लकुम्  
तवअऽन् फ़ हल् अन्तुम्मुगूनूना अन्नाऽ मिन् अर्जाऽविऽ-

ल्लाहि मिन् शयइन् ; काऽल्लुऽ लइ हदानऽऽल्लाहु लहदयना  
कुम् ; सवाऽउन् अलयनाऽ अजजिअनाऽ अम् सवनाऽ  
माऽ लनाऽ मिम्म हीस् ॥

और सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे फिर निर्बल बल-  
वानों से कहेंगे—“हम तुम्हारे पीछे थे अतः तुम हमसे अ-  
ल्लाह का प्रकोप कुछ कम कराओगे” वह कहने लगे—यदि  
हमको अल्लाह-मार्ग पर लाता तो निश्चय हम तुमको मार्ग  
पर लाते; अब हमारे निमित्त समान है चाहे हम अधीर हों  
अथवा सन्तोष करें, हम को मुक्ति नहीं हाता ।

[ मं० ३, पारा १३, रु० ४।६ ]

( १ ) व काऽल्ल-शयत्तानु लम्माऽ कुजियऽल्ल  
अन्नु इन्नऽल्लाहा वअदकुम् वअदऽल्ल हविक व  
वअत्तुकुम् फ अखलपतुकुम् ; व माऽ काऽना लिया अ-  
लयकुम्मिन् सुल्लानिन् इल्लाऽ अन् दअत्तुकुम् फऽस्त-  
जन्तुम् ली, फ लाऽ तलूमूनी वलूमूऽ अन्फुसकुम् ; माऽ  
अनाऽ मुस्लिखिकुम् वमाऽ अन्तुम् वि मुस्लिखिय्या; इन्नी  
कफतु विमाऽ अश्रक्तुमूनि मिन् कव्लु, इन्न-ज्जालिमीना  
लहम् अजाऽवुन् अलीम् ॥

और जब कार्य पूर्ण हो चुकेगा तो शैतान कहेगा—“अल्लाह

ने तुमको सत्य प्रतिज्ञा व्रदान की थी और फिर मैंने झूठी प्रतिज्ञा की, और मेरा तुम पर शासन न था परन्तु मैंने तुमको बुलाया था फिर तुमने स्वीकार कर लिया, अतः सुभा पर आक्षेप मत करो और अपने ऊपर आक्षेप करो; न मैं तुम्हारी पुकार को पहुंच सकता हूँ और न तुम मेरी पुकार को पहुंच सकते हो; मैं खोकार नहीं करता जो कि तुमने मुझे पूर्व साभो उहराया था; निश्चय जो अत्याचारी है उन पर आपत्ति का दण्ड है ।

( २ ) व उद्द्विलज्जलजीना आमन्स व अमिलुऽ-  
स्मालिहाति जनातिन् तजी मिन्नहू तिहऽल् अन्हाह  
खालिदीना फीहा वि इजिन रविहिम् ; तहिग्यतु हुम्  
फीहा सलाम् ॥

और जिन लोगों ने विश्व-सु किया और शुभ कर्म किये थे उनको (वहिगत के) योगों में प्रविष्ट किया कि जिनके निकट नहीं बहती हैं उनमें अपने पालनकर्ता की आज्ञा से सर्वदा रहा करें; वहाँ उनकी पारस्परिक भेट सलाम है ।

( ३ ) अलम् तरा कय्फा जरवज्जलाहु मसलऽन्  
कलिपानन न्यियवतन कशजरतिन् तय्यिवतिन् अस्तुहाऽ  
माऽवितु व्व फर्ड हाऽ फि-स्समाऽइ ॥

क्या तू नहीं देखता कि अलवाह ने एक दृष्टान्त कैसा



घर्षण किया है? पवित्र वचन मानो एक विशुद्ध वृक्ष है उसकी जड़ दृढ़ है और श ख षं आकाश में ( फैली हुई हैं )

( ४ ) तुअती उकुलहा कुल्लदीनिन् वि इज्जि  
रन्विहाऽ; व यज्जिबुज्जलाहुऽल अम्सऽस्ता लिन्नाऽसि  
लअल्लहुम् ततज्जकस्सन् ॥

( वह वृक्ष ) समय पर अपना फल अपने पालनकर्ता को  
शाका से देता है; और अल्लाह लोगों को दृष्टान्त घर्षण करता  
है कदाचित् वह विचार करे ।

( ५ ) व मसलु कलिमतिन् खबीसतिन् कशज  
रतिन् खबीसति ( नि ऽज्जुस्सत्तु मिन फरक्किज्ज अज्जि  
माऽ लहाऽ मिन कराऽ ॥

और बुरे वचन का दृष्टान्त-जैसे निकृष्ट पेड़ जो पृथ्वी  
के ऊपर से उखाड़ लिया गया उसकी कुछ स्थिरता नहीं ।

( ६ ) युस विवतुज्जलाहुज्जलीना आमनुऽ विज्ज  
कज्जलि-स्सऽविज्जि फिज्जल हयातिहुन्याऽ व फिज्जल  
आविज्जि व युज्जिल्लुऽ ल्लाहु-ज्जालिमीना व यफ्फ  
लुज्जला हुमा ऽयशादेअ ॥

अल्लाह विश्वासियों को सांसारिक जीवन में दृढ़ वचन  
से दृढ़ करता है और परलोक में अन्यायों को विचलित कर  
देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है ।

[ मोजल ३ पारा १३ रू० ५।७ ]

( १ ) अलम् तरा इलज्जलीना वदलुऽ निअमतऽ  
 क्लाहि कुफऽव्व अहल्लुऽ कउम्हुम् दाऽरऽत् ववाऽर् ॥

क्या तूने उनकी ओर नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह  
 का बदला कृतघ्नता दिया और अपनी जाति को विनाश के गृह में  
 उतारा ।

( २ ) जहन्नामा, यस्तउन्हाऽ; व विअसऽत्  
 कराऽर् ॥

जो दोजख ( नर्क ) है, ( वे ) उसमें प्रविष्ट होंगे; और ( वह )  
 बुरा स्थान है ।

( ३ ) व जअलुऽ लिक्लाहि अन्दाऽदल्लि युजिल्लुऽ  
 अन् सवीलिही; कुल् तमत्तजुऽ फ इना मसीरकुम् इल-  
 आऽर् ॥

और अल्लाह के सामने ठहराये कि लोगों को उसके मार्ग से  
 भ्रष्ट करें; ( हे पैगम्बर ! इनसे ) तू कह—भुगत लो फिर तुमको  
 ( नर्क की ) अग्नि की ओर लौटना है ।

( ४ ) कुल्लि इवाऽदियऽल्लजीना आमनुऽ युकीमुऽ-  
 स्सलाता व युन्फिकुऽ मिम्माऽ रज्जनाहुम् सिरऽव्व अलाऽ

नियतमिन् क्विलि अग्र्यग्रनिया यउमुल्लाऽ वयउन फीदि  
वलाऽ खिलाल् ॥

( हे पैगम्बर ! ) मेरे भक्तों को, जिन्होंने विश्वास किया है,  
कहो कि वे नमाज को स्थिर रखें और सुन और प्रगट रूप से  
हमारे भोजन में से इससे पूर्व व्यय करें कि वह दिवस आवे कि  
जिसमें न व्योपार है और न मैत्री भाव ।

( ५ ) अल्लाहुऽल्लजी खलक-समावाति वऽल्ल  
अर्जा व अन्जला मिन-समाशइ माश्अन फ अस्त्रजा  
विही मिन-समराति रिऽकऽल्लकुम्, व सख़्वर  
लकुमुऽल्ल फुल्का लि तजिया फिऽल्ल वहि वि अमिही,  
व सख़्वरा लकुमुऽल्ल अन्हार ॥

अल्लाह वह है जिसने आकाश और पृथ्वी को रचना की और  
आकाश से पानी उतारा फिर उससे तुम्हारी मेवा-भोजन निकाला,  
और तुम्हारे काम में नौका दी कि नदी में अल्लाह की आज्ञा से  
चले और तुम्हारे लिये नदियों को उपयोगी सिद्ध किया ।

( ६ ) व सख़्वरा लकुमु-शाम्सा व ऽल्लकमरा दाऽइव-  
यनि, व सख़्वरा लकुमु-ल्लय्लाव-नहाऽर् ॥

और तुम्हारे सूर्य और चन्द्रमा एक नियम में नियुक्त किये  
और तुम्हारे रात्रि और दिन नियुक्त किये ।

( ७ ) व आताकुम्मि कुवित्त माऽ सअल्लुभूहुः व  
इन् नउदुऽ निअमत्तल्लाहि लाऽ तहू मूहाऽ इन्नऽल्ल  
इन्साऽना लज्जल्लुभुन् कफफाऽ ॥

और तुम्हें प्रत्येक वस्तु में से—जो तुमने मांगी—दिया; और  
यदि अल्लाह के उपकार गृहण करो तो पूर्ण नहीं कर सकोगे;  
निश्चय मनुष्य महान् अत्याचारी है।

[ मं० ३, पारा १३, सू०-६।७ ]

( १ ) व इज्जाऽत्ता इब्राहीमु रन्विऽज् अत् हाज्जऽल्ल  
वलदा आमिनऽव्वज्जनुव्नी व वनिय्या अन्नअवुदऽल्ल  
अस्नाऽम् ॥

और जिस समय इब्राहीम ने कहा—“हे पालनकर्ता ! इस  
शहर को शान्ति का कर और मुझको और मेरी सन्तान को सू-  
नियों के पूजने से बचा।

( २ ) रन्वि इन्नहुन्ना अज्जल्लना कसीरऽम्मिन-  
नाऽसि, फ़ मन् तयिअनी फ़ इन्नहू गिन्नी, व मन् असाऽ-  
नी फ़ इन्नका गुफरूर् हीम् ॥

हे पालनकर्ता ! उन्होंने अनेकों मनुष्यों का बहकाया, अतः  
जो कोई मेरे मार्ग पर चला वह तो मेरा है, और जिसने मेरी  
आज्ञा पालन की तो क्षमा करने वाला दयालु है।

( ३ ) रव्यना३ इन्नी३ अस्कन्तु पिन जुरिप्यती  
 विवाऽदिन् ग्युरिजी जर्, इन्, इन्दा वयतिकञ्ज् मु, इरमि  
 रव्यनाऽ लि युकीमुऽस्सलाता फऽज्जुल् अफ् इदताम्पिन-  
 दाऽसि तह्वीरे इत्तय्दिम् वर्जुऽहुम्पिन-स्समराति  
 तञ्जल्लहुम् यरकुस्त् ॥

हे हमारे पालनकर्ता ! मैंने अपनी कुछ सन्तान बच में, जहाँ  
 खेती नहीं होती, तेरे पवित्र गृह के निकट बसाई—हे हमारे पालन-  
 कर्ता ! जिससे कि नमाज स्थिर रखें फिर लोगों में से कुछ के  
 हृदय ऐसे करदे, कि उनकी ओर मुँहें और उन्हें मेवा (फल  
 आदि ) भोजन दे कदाचित्त यह कृतज्ञ हों ।

( ४ ) रव्यना३ इन्नका तञ्जल्लमु माऽ नुरुफ़ी व माऽ  
 नुअलिनु; व माऽ यरुफ़ा अल्लल्लाहि मिन शय्इन् फ़िऽल्  
 अज़ि वलाऽ फ़ि-स्समा३अ ॥

हे हमारे पालनकर्ता ! तू तो जानता है जो हम गुप्त रखें  
 और जो हम प्रगट करें; और अल्लाह पर न पृथ्वी में कुछ छिपा  
 है और न आकाश में ।

( ५ ) अल्ह, इदु लिल्लाहिऽल्लजी बहवा ली अल-  
 ज्ज् किवरि इस्गा, ईला व इस्हाका, इन्ना रव्वी ल समी-  
 ज़ हुअ्रा३अ ॥

अल्लाह को धन्यवाद है कि जिसने मुझे वृद्धावस्था में इस्माइल और इसहाक प्रदान किये; निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता प्रार्थना सुनता है।

( ६ ) रब्बिऽज् ज़ल्नी मुकीम-स्सलाति व मिन जुर्गियती रब्बना वतकञ्चल् दुआऽऽ ॥

हे मेरे पालनकर्त्ता ! मुझे ( इस योग्य ) कर कि मैं नमाज स्थिर रखूँ और हे पालनकर्त्ता ! मेरी सन्तान को भी ( इसी योग्य कर ) और प्रार्थना स्वीकार कर।

( ७ ) रब्बनऽऽगिफ़ली व लि वा लिदय्या व लिल्लु मुअ्मिनीना यल्मा यक्मुऽस्त हिऽसाऽव ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता ! मुझको और मेरे माता पिता को और सब विश्वासियों को, जिस दिन लेखा स्थिर होवे, क्षमा प्रदान कर।

[ मं० ३ पारा १३ रू० ७११ ]

( १ ) व लाऽ तहूसवन्नऽल्लाहा गाऽफ़िलऽन् अम्माऽ यअ्मलु-ज़्जालियूना; इन्माऽ युअ्खिद्वरुहुम् लि यल्मिन् नशरुमु फ़ीहिऽल् अब्साऽर् ॥

और मत समझ कि अल्लाह इन कार्यों से-जो अत्याचारी करते हैं—अनभिन्न है; उनको तू उस दिन पर छोड़ रखता है जिस दिन उनकी आंखें ऊपर लग जावेंगी।

( २ ) मुहूर्तिर्ना मुक्तिर्ना, स्रुसिद्धिम् ताऽ यत्तद्-  
इत्यहिम् तफुद्गुम् व अफुद्दतुद्गुम् इवादिम् ॥

अपने शिर उठाये हूयें दौड़ते होंगे और उनको दृष्टि उनकी  
धोर न लौटेंगी और उनके हृदय उड़ जायेंगे ।

( ३-४ ) व अन्जिरि-नाऽसा यत्पा यत्नीहिमुऽत्  
अजाऽवु फ यकलुऽल्लजीना जलमूऽ रव्वनाऽ अखित्नाऽ  
इलाऽ अजन्तिन् करीविन्नुजिव् दअवतका व नत्तविऽ-  
रुमुला, अयत्तम् तद्गुन्नाऽ अफसन्नुम्भिन् कल्लु माऽ लकुम्भिन्  
जवाऽलिव्व सकन्हुम् फी मसाकिनि ऽल्लजीना जलमूऽ  
अन्फुसहुम् व तययना लकुम् कय्फा फ अन्नाऽ विद्धिऽ  
व जरव्नाऽ लकुमुऽत् अम्साऽत् ॥

और लोगों को उस दिन से भय दिलावे कि उनको प्रकाय आ-  
वेगा तब अत्याचारी कहेंगे—“हे हमारे पावनकर्ता ! हमको कुछ  
समय की छुट्टी दे कि हम तेरा निमन्त्रण स्वीकार करें और पैरा-  
म्बरों के साथ हों, तुम आगे शक्य न खाते थे; क्योंकि तुम्हारे  
निमित्त कोई न्यूनतना नहीं थी और तुम उन्हीं के नगरों में वसे थे  
जिन्होंने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया और तुम पर प्रगट्

हो चुका कि हमने उन पर कैसा किया और हमने तुमको दृष्टान्त बतलाये ।

( ५ ) व कद् मकरुऽ मक्रहुम् व इन्दऽल्लाहि मक्रु-  
हुम् ; व इन् काऽन्ना मक्रुहुम् लि तजृत्ता मिन्दुऽल् जि-  
वाऽल् ॥

और यह अपना छल कर चुके हैं और उनका छल अल्लाह के आगे है ; और उनका छल ऐसा न होगा कि उससे पर्वत टल जायें ।

( ६ ) फ़लाऽ तह सवनऽल्लाहा मुग़्लिफ़ा वअदिही  
रमुल्ह, इन्नऽल्लाहा अज़ीजु न जुऽन्तिक़ाऽम् ॥

अतः यह मत समझ कि अल्लाह अपने पैग़म्बरों से अपनी प्रतिज्ञा पृथक् करेगा; निम्नन्देह अल्लाह बलवान् और परिवर्तन करने वाला है ।

( ७ ) यउमा तुवइलुऽल् अजु ग़य़रऽल् अज़ि व-  
समावातु व वरजूऽ लिन्लाहिऽल् वाऽहिदिऽल् कह-  
हाऽर ॥

जिस दिन इस पृथ्वी में और पृथ्वी बढ़ती जायगी और आकाश ( भी ) और मनुष्य एकमात्र बलशाली अल्लाह के सम्मुख निकल खड़े हों ।